

ं अन्तिक मेह भ जर्गि

015,1x1,1 1810 G3 Mannarhari Pandila Raj nighantu,



महामहोपाध्याय-

# श्रीमन्द्रहरिपिख्डत्वरिचतः।

"निषर्पुना विना वैद्यो विद्वान् व्याकरणं विना। ग्रनभ्यासेन घानुष्कखयो हास्रस्य भाजनम्॥"

पण्डितक्क वपतिना, वि, ए, उपाधिधारिणा, श्रीमज्जीवानन्दविद्यासागरभद्दाचार्यासजेन श्रीश्राशुबोधविद्याभूषणभद्दाचार्य्यण

योनित्यबोधविद्यारत्महाचार्य्येण च

देशान्तरामिधानेन संचिप्तटीकया च समलङ्गतः संस्कृतः

सज्जीकतः प्रकाशितम् ।

दितीय संस्तर गम्।

कितातामहानगर्थाम्

सिद्धेखरयन्त्रे

मुद्भितः।

-00-

इं १८३३।

015,1×1,1

प्रकाशक—पण्डित-श्रीश्राश्चबोध-विद्याभूषणभटाचार्यः
प्राप्तिस्थान—
रनं॰, रमानाथ मजुम्दार ष्ट्रीट्,
श्राम्हार्ष्टं ष्ट्रीट् पोष्ट-श्रिपस । कलिकाता ।

प्रिक्टार — श्रीश्रविनाश्चन्द्र मण्डल । सिडेश्वर प्रेस, ३८१२ श्रिटनारायण दास लेन, कलिकाता।

# श्रय राजनिचरही वर्गानुक्रमेश सूचीपतम्।

| विषया:                 | पृष्ठाङ्काः | विषयाः             | वृष्ठाङ्काः |
|------------------------|-------------|--------------------|-------------|
| <b>सङ्ग्लाचर</b> ग्यम् | 8           | <b>ए</b> ग्रम्     | १८          |
| ग्रस्यमस्तावना         | 7           | ग्रथ गुडूचादि      | वर्गः।      |
| श्रथ श्रानपादिव        | र्गः ।      | गुडूची             | रर          |
| अय जानूपदेशः           | યુ          | मूर्वा '           | २३          |
| जाङ्गलदेशः             | 37          | पटोलम्             | "           |
| साधारणदेशः             | €           | काको ली तद्वेदश्व  | 87          |
| चिलभेदाः               | 99          | <b>माष्रपर्या</b>  | 57          |
| श्रय धरखादिव           | र्वाः ।     | सुद्गपर्या         | FU.         |
| 'अथ भूमिनाम            | 80          | जीवन्ती तद्वेदाश्च | · 585€      |
| तद्भेदादिकञ्च          | ११—१२       | <b>बिङ्गिनी</b>    | 99          |
| भ्रीजनाम तद्वयवादिक    | ख्रर—१३     | कोषातकौ            | .\$0        |
| काननादिनाम             | १३          | विषिक्कू:          | 2)          |
| वृचनाम तद्वयवादिक      | ₹ 18-14     | त्राकाश्चवही       | 52          |
| किंकाद्यः              | 5€          | कटुतुम्बी          | 99          |
| सकरन्दादयः             | 97          | जीमूतकः            | 97          |
| प्रस्कुटनादयः          | 99          | बस्याककाँटकी       | 55          |
| <b>प्र</b> सादयः       | 80          | तित्ततुग्डी        | "           |
| नचलवचाद्यः             | "           | श्राखुकर्यों '     | 77          |

# [4]

| विषयाः                        | पृष्ठाङ्घाः | विषया:                   | पृष्ठाङ्काः    |
|-------------------------------|-------------|--------------------------|----------------|
| <b>५</b> न्द्रवा <b>रु</b> गी | 30          | त्रत्य <b>स्त्रपर्यो</b> | ३८             |
| महेन्द्रवाच्यी                | 27          | ग्रङ्ग पुष्पी            | 97             |
| यवतिता                        | \$8         | म्रावर्त्तकौ             | \$2            |
|                               | 23          | कर्णस्मोटा               | 19             |
| <b>च्रिजटा</b><br>ज्योतिषाती  | \$7         | वद्वी                    | "              |
| तेजोवतौ                       | WANTED !    | त्रमृतस्रवा              | 80             |
|                               | n           | पुचदाती                  | ,,             |
| त्रश्च चुरा                   | **          | पलाशीं                   | 77             |
| नीलपुष्पी                     |             | In the second            |                |
| मोग्टः                        | . »         | श्रथ श्रताह्वादि         | व्याः।         |
| द्रन्दीवरा                    | ,<br>\$8    | ग्रताह्वानाम             | <b>F8</b>      |
| वसान्त्री                     |             | <b>मिश्रेया</b>          | "              |
| सीमवही                        | 9           | <b>ग्राखिपर्यो</b>       | 188            |
| महिषवही                       | 59          | समिष्ठला                 | 20             |
| वसादनी                        | 77          | वृत्ती तद्गेदाश्च        | 88—84          |
| गोपालकर्नटी                   | ₹५          | काएकारी तझें दश्च        | 8 <b>4</b> —8€ |
| कावनासा '                     | ,,,         | पृश्चिपगी                |                |
| काकादनी                       | 99          |                          | 99             |
| गुझा तद्वेदय                  | \$4         | गोच् रस्त द्वेदश्व       | 80             |
| व्रद्धारकसद्भिय               | "           | वासः                     | 25000000       |
| वैवर्त्तिका                   | \$9         |                          | 82             |
| ताखी                          | "           | श्चितावरी                | 99             |
| कार्डीरः                      | "           | धन्वयाससा द्वेदश्च       | 85             |
| जन्तुका .                     | \$c         | त्र जिन <b>दमनो</b>      | No.            |

## [8]

| विषयाः पृष्ठाङ्काः विषयाः पृष्ठाङ्काः वाज्ञची पू० पार्कवः ६१ मार्कवः पू०—पू१ कानजङ्का ६३—६३ पु०—पू१ चुचुस्तद्वेदाञ्च ६२—६३ |           |
|--|-----------|
| वातुःची पू०—पूर काकजङ्घा ६३—६३<br>भूगणपुष्पी तद्वेदश्य ५०—५१   |           |
| भागपुष्पी तद्वेदश्च पू०-पूर जानानाचा   |           |
| चच्चलद्भराय ११ र   |           |
| अवितिश्वा राम्रदेव कर र  |           |
| भ्रायाः ,, सिन्दुवारसाङ्गेदश्च "   |           |
| मुस्तरा भ भ्रेपालिका भ   |           |
| नीली तझेदश्र ५३ मेग्डा   | 3         |
| गता अस्य मनना  | )         |
| वा[वाह्य   | 22        |
| अपानाग्रहान्य स्वर्णनी   | ų         |
| dat  | ,         |
| नहासमङ्गा "  | <b>17</b> |
| महावला "   | ))        |
| चातिबला पूर्   |           |
| भटोटनी "   |           |
| महाराष्ट्री " वासमदंः  | 91        |
| अश्वरान्या पूर्व जादित्यपतः  | 53        |
| श्रेतान्त्री   | \$0       |
| इंपुना जीलासी  | 97        |
| भूतावरा तन्नर्थ  | 97        |
| एसवासुका जातिकामका   | ,,,       |
| तारणः " विषयपिकारेटस   | 45        |
| वालवारा "  |           |
| जयन्तौ ६० वालाञ्जनौ  | , és      |
| कावमाची " कार्पासी तद्वेदश्व   | 6         |
| श्रुतग्रेगो ६१   कोकिलाचः  |           |

# [8]

| . विषया:             | पृष्ठाङ्घाः | विषया:                    | पृष्ठाङ्घाः |
|----------------------|-------------|---------------------------|-------------|
|                      | 90          | वन्दाकः                   | 52          |
| सातला                |             | कुलत्या                   | v           |
| कामवृद्धिः           | "           | तर्यं तर्यं विश्वास       | "           |
| चक्रमर्दः            | "           | चिवि <b>ह्यी</b>          | दर्         |
| <b>(मिक्सिरीटा</b>   | 98          |                           | THE STREET  |
| ग्रथ पर्पटादिवर्ग    | i: 1        | नागशुरही                  | "           |
| अव पपटाास्त          | Transit I   | <b>बुटुम्बिनी</b>         | "<br>~8     |
| पर्पटः               | 80          | खलपद्मिनी                 |             |
| जीवकः                | . 33        | जम्बू:                    | ,           |
| ऋषमः                 | 97          | नागदन्ती                  | "           |
| श्रावगी तद्वेदश्व    | ७५          | विष्णुक्रान्ता            | द्यू        |
| मेदा तज्ञेदश्च       | 94—n€       | कुगञ्जर:                  | 90          |
| ऋि:                  | "           | भूम्यामची                 | "           |
| वृद्धिः              | ,,,         | गोरची                     | <b>Z</b> 6  |
| <b>भूम्रपता</b>      | ee          | गोलोमिका                  | "           |
| प्रसारको             | 91          | <b>इ</b> ग्धफे <b>य</b> ी | 29          |
| पाषाणभेद्स द्वेदाश्व | 70          | चुट्राम्बिका              | 50          |
| ग्रह्वन्या           | 20          | बज्जाह्वी तद्भेदश्च       | 19          |
| वर्ष्टिचड़ा          | 20          | इंसपादी                   | 25          |
| चीरियी               | 57          | काथरा                     | 99          |
| खर्गचीरी             | 50          | पुनर्नवा तद्भेदाश्च       | <u> </u>    |
| त्रायमागा            | ,,          | वसुकः                     | ه في        |
| रहन्ती               | <b>E</b> {  | <b>स</b> िंगी             | "           |
| श्रास्त्री तडेदश     | 27          | त्रलिपलिका                | Toleral ,,  |

## [u]

| ्विषयाः पृष्ठाङ्गाः     | विषया:                      | पृष्ठाङ्घाः |
|-------------------------|-----------------------------|-------------|
| मत्याची ೭०              | चव्यकम् 💮                   | aoş         |
| गुण्डाला ;,             | चित्रवाः                    | 508         |
| भूपाठली ८१              | कार्खः                      | 50          |
| पायदुरफली ,,            | विङ्ङ्गा                    | 50          |
| श्वेता                  | वचा                         | 808         |
| ब्रह्मदण्डी "           | मेध्या                      | 23          |
| ट्रवन्ती                | कुवञ्चः                     | 99          |
| द्रोगपुष्पी तझेदश       | <b>जीरक्स</b> द्गेदाश्च     | 803-608     |
| भागाडू 2३               | नेधिका                      | 1700        |
| गोरचदुग्घी ,,           | <b>च्छिकुपत्री</b>          | ६०म         |
|                         | हिङ्गु तद्गेदश्च            | 5)          |
| श्रष्ठ पिप्पच्यादिवगै:। | <b>अग्निजार</b> सिद्धेदाश्च | १०६         |
| पिप्पत्ती 25            | रास्ना                      | 99          |
| गजीववा '                | खूबैना                      | 500         |
| संद्रली 20              | युच्मेला ।                  | ".          |
| वनिपपाली "              | सैन्ववम्                    | 99          |
| ग्रन्थिकम् "            | सीवर्षलम्                   | 502         |
| भ्रुप्छी - १९           | <b>काचलवग्रम्</b>           | 99          |
| श्राद्रैकम् "           | विडम्                       | 59          |
| मरिचम् टे               | गाढ़ा दिखन गम्              | १०६         |
| श्वेतमरिचम् "           | सासुद्रवाम्                 | 1           |
| घान्यकम् "              | द्रोणियम्                   | .,,         |
| यवानी १९                | ० त्रीषरकम्                 | 350         |
|                         |                             |             |

## [4]

| विषया:                | पृष्ठाङ्घाः | विषयाः             | पृष्ठाङ्घाः |
|-----------------------|-------------|--------------------|-------------|
| रोमकम्                | . 880       | वंश्ररोचना         | १२२         |
| ग्रजमोद् (            | ,,          | मञ्जिष्ठा          | 77          |
| रेगुका                | 888         | <b>चरिट्रा</b>     | १२३         |
| बोलम्                 | ,,          | दाक्हरिद्रा        | १२८         |
| कर्च्र:               | 188         | लाचा               | n           |
| पाठा                  | 7105        | त्रवत्तवः          | 21          |
| वचास्म्               | "           | <b>लो</b> घ्रः     | १२५         |
| त्रस्वेतसः            | <b>११</b> ३ | <b>क्रमुक</b> ः    | 99          |
| कटका                  | 818         | <b>घातकी</b>       | 99          |
| अतिविषा तत्-ग्रोधनञ्च | 97          | ससुद्रफलम्         | \$24        |
| मुखा तद्वेदश्व        | ११५         | निर्विष्रा         |             |
| यष्टीमधुस्तद्वेदश्व   | ११६         | विषनाम             | १२७         |
| मार्जी (मार्गी)       | "           | वसनाभः             | } ,,        |
| पुष्तरमूलम्           | 989         | खावरविषनाम         | - 97        |
| ग्रङ्गी               | "           | भटी तद्गेदश्व      | 279-275     |
| दन्ती तद्वेदश्व       | ११८         | समुद्रफेनम्        | "           |
| दन्तीवीजम् (जयपातः)   | ११८         | त्रफीनन्तद्वेदाञ्च | १२८         |
| बिवृत् तद्भेद्भ       | 982-170     | टङ्यां तद्वेदश्व   | १२६-१३०     |
| त्वचम्                |             | साकुरुग्डः         | . 22        |
| तमालपत्रम्            | ,,          | <b>चिमावली</b>     | ,,          |
| नागकेश्वरम्           | 666         | इस्तिमदः           | १३१         |
| तवचौरम्               | ,,          | खर्जिचार:          | , ,,        |
| तालीसपत्रम्           | . 27        | <b>वव</b> णारम्    | 99          |

#### [0]

| 雪T:<br>(25)<br>(25)<br>(25)<br>(25)<br>(25)<br>(25)<br>(25)<br>(25) |
|---|
| 8€<br>  |
| **<br>**<br>**<br>**<br>**  |
| ,,<br>,,  |
| ,, 689  |
| 889   |
|   |
| 99  |
|   |
| 27  |
| 182   |
| ,,  |
| 288   |
| ,,  |
| 19  |
| १५०   |
| १५१   |
| 27  |
| "   |
| १५३   |
| 7,  |
| 20  |
| **  |
| १५३   |
| "   |
| 91  |

#### [=]

| विषया:                       | पृष्ठाङ्काः    | विषया:                | वृष्ठाङ्काः |
|------------------------------|----------------|-----------------------|-------------|
| करजोड़िः                     | १५३            | चीरतुम्बी             | 860         |
| वास्तूवामानम्                | 848            | भूतुस्बी              | 868         |
| चुक्रम्                      | Se             | <b>क</b> कि इ म       | 19          |
| चिह्नी तद्गेदाश्व            | १५८—१५५        | धाराको भातको          | 99          |
| श्रिगुपत्रगुयाः              | 7,100,9        | <b>इस्तिकोश्रातको</b> | १६२         |
| पालकाम्                      | 1000           | खाइपटोची              | 10          |
| राजग्रािकनी .                | 1              | पटोलस चतुरङ्गुगाः     | 7)          |
| <b>चपोदकौ</b> तद्गेदाश्च     | श्रद           | मृंगाची 💮             | ,,,         |
| कुणझरगुणाः                   | १धू७           | दिवपुष्यौ             | १६३         |
| की सुन्भश्राकगुणाः           |                | ग्रसिग्रिग्बी         | 77          |
| भ्रतपृष्पादखगुराः            | ,,             | कारवद्वी              | "           |
| पत्रतग्डुलौगुगाः             | "              | वर्वाटकी              | 8 8 8       |
| राजिक्।पत्रगुगाः             | 97             | खाइतु(वि) स्विवा      | w           |
| सार्धपपत्रगुगाः              | १पूट           | निष्पावी              | 37          |
| चाङ्गेरीगुगाः                | "              | वृत्तनिष्याविका       | "           |
| घोली तद्भेदय                 | "              | वार्त्ताको            | १६५         |
| जीवग्राकः                    | "              | <b>ड</b> ङ्गरी        | 97.         |
| गौरसुवर्णेशासम्              | . १५७          | बालडाङ्गरिकम्         | १६६         |
| पुनर्नेवा-वसुक्तयोः श्राव    | त्रयाः ,       | खर्बुना               | >9          |
| <b>फन्नग्राद्यिञ्चकनामगु</b> | <b>u</b> i: ,, | वर्कटी .              | 10,00       |
| <b>मियवशाकम्</b>             | 860            | वयुसी                 | १६७         |
| कुपाएडी                      | 7)             | एवांच:                | ,           |
| <b>बुन्मंतु</b> न्बी         | "              | वालुकी                | १६८         |
|                              |                |                       |             |

## [2]

| विषया:              | पृष्ठाङ्घाः  | विषया:                | वृष्ठाङ्काः |
|---------------------|--|-----------------------|-------------|
| <b>बीनकर्क</b> टिका | १६८  | कम्यारी .             | 50=         |
| चिभिंटा             | . 39   | एरगड़स्त द्वेदाश्च    | 305-505     |
| श्रशाग्डुली         | १६८  | <b>चो</b> ग्छ।        | 1           |
| कुडुची              | PARTE IN 199   | खताकरञ्जः             | 9)          |
| श्रष्ट शा           | स्राद्यादिवर्गः।   | कारी तद्वेदश्व        | 59          |
| <b>प्रा</b> खनी     | 808  | <b>सदनसङ्गेदा</b> ञ्च | १८०         |
| जीचरसः              | 503  | विखान्तर:             | १८१         |
| रोह्रोतकः           | 79   | तरटी                  | 75 17 97    |
| एकवीर:              | 1386 - 245 MC  | योवही तद्वेदय         | 121-125     |
| पारिअद्रः           | ६७१  | रामकाग्रह:            | "           |
| खहिर:               | . 99   | यावनात्तः             | 19          |
| श्वेतसार:           | 59   | इचुरः तद्वेदय         | "           |
| रत्नखदिर:           | 808  | सुझ:                  | १८३         |
| विद्खदिर:           | 12 19  | काश्रः                | 30 39       |
| ग्रदिः              | 39   | ग्रंशिरी              | १८८         |
| खादिरसार:           | 99   | स्रितदर्भः तद्वेदश्व  | ;           |
| भामी तझेदश्च        | . १७५  | ब्बना                 | *3)         |
| वर्बुरस्त देख       | १७५ — १७६  | कुत्रणं तद्वेदश्व     | १८५         |
| ग्रविमेदः           | 31   | नलसङ्गेद्य            | 8=#-8=6     |
| पकारखः              | Feb. 1 1 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2   | नौलदूर्वा             | v           |
| द्रकृदी             | 19   | गोबोमो                | 33          |
| निष्यती             | \$00   | मालादूर्वा            | 350         |
| सुडी तक्केट्य       | 1 10   | गग्डाची               | , ,         |
|                     | The second secon |                       |             |

[ 90 ]

| विषयाः १८८ श्रीकाः १८८ श्रीकां १८८ श्रीकां विषयाः १८६ श्रीकां विषयाः १८८ श्रीकां विषयः १८६ श्रीकां १८७ श्रीकां १८० श्रीकां १८८ श्रीकां १८ |  |                 | विषया:                   | पृष्ठाङ्काः |
|---|--|-----------------|--------------------------|-------------|
| हुर्नसाधारणगुणाः १८८ अविश्वन् प्रमद्रादिनगैः। कुन्दुनः भूरणसङ्गेद्दय १८८-१८८ प्रमुद्रः १८५ स्व स्व स्व स्व १८६ स्व स्व स्व स्व स्व १८६ स्व स्व स्व स्व स्व १८७ स्व स्व स्व स्व स्व १८७ स्व स्व स्व स्व स्व १८० स्व स्व स्व स्व स्व स्व १८० स्व स्व स्व स्व स्व स्व १८० स्व  | विषया:   | पृष्ठाङ्काः     |                          |             |
| भूत्यसाहेद्य १८८—१८८ प्रमुद्रः १८६  एखनः "म्हानिम्बलहेद्य १८६  इच्हुदर्मा "मृतिम्बः १८७  त्रेम्पालिनम्बः "  ज्रिम्पालिनम्बः "  ग्रिम्पालिनम्बः । ।  ग्रिम्पालिनम्बः ।  ग्रिम्पालिकः ।  ग्रिम्यालिकः ।  ग्रिम्पालिकः ।  ग्रिम्पालिकः ।  ग्रिम्पालिकः ।  ग्रिम्प | दूर्वासाधारयगुगाः  | , १८८           | भवाणम् सभावादिवर्गः      |             |
| भूत्यस्त इस्य १८६ - १८६ महानिम्बस्त इस्य १८६ ह्युदर्भा गोम् तिका गमाहित्वा १८० मियासिम्यः १८० म | कुन्दुरः   | 20              |                          |             |
| चखलः  इच्रुदर्भा गोमृतिका  प्रिचित्रका गमोंटिका गचारिका गचारिका गच्चानकः ग्रह्मानिकः गण्डा ग्रह्मानिकः गण्डा  | भूत्यसङ्गेदञ्च   | 122-125         |                          |             |
| द्वुदर्भी गोम्(त्रिका  प्रिचिका  निःश्रेणिका  गमीटिका  मज्जरः गिरिम्ः वंश्रपति  सन्यानकः  एटर  पद्विवादः  पद्विवादः  पद्विवादः  पद्विवादः  श्रहेर  प्राम्पदे  प्राम् | चखबः   | w a             | महानिम्बलइद्य            |             |
| गोम् तिका  प्रिक्ति  प्रिक्ति  निः श्रेणिका  गमाँ टिका  मज्जरः  गिरिम्ः  वंश्रपती  मन्यानकः  पश्चित्राहः  पश्चित्राहः  पश्चित्राहः  गुण्डः  गुण्डः  गुण्डासनी  गुण्डासिनी   | द्वदर्भा   |                 | भूनिस्ब:                 | 650         |
| शिक्तिता १८० द्रिन्स्यस्प्रेदेख १८८ गर्मोटिका श्रम्भारी द्रिक्ष १८८ ग्रामिश्रः श्रम्भारी द्रिक्ष १८८ व्यापती श्रम्भारी श्रम्भाराव्यः श्रम्भाराव्यः श्रम्भाराव्यः (क्रिम्भाराभ्यः) १०१ प्राप्तिवादः श्रम्भाराव्यः (क्रिम्भाराभ्यः) १०१ प्राप्तिवादः श्रम्भाराव्यः (क्रिम्भाराभ्यः) १०१ प्राप्तिवादः १८२ प्राप्तिवादः १८२ प्राप्तिवादः १८२ प्राप्तिवादः १८२ व्याप्तिवादः १८३ व्यापतिवादः १८३ व्याप | The same of the sa | sistery C       | नेपालनिम्बः              | 2)          |
| निःश्रेणिका १८० ग्रानिमयस्ति देश १८८ ग्रानिका १८० ग्रानिका ग्रानिका ग्रानिका ते देश १८८ ग्रानिका ग्रामिका १८८ ग्राक्ति १८८ व्यापती ग्रामिका १८१ ग्राक्ति (कार्याका १०१ ग्राक्ति (कार्याका १०१ ग्राक्ति (कार्याका १०१ ग्राक्ति (कार्याका १०१ ग्राक्ति (कार्याका १०२ ग्राक्ति (कार्याका १०३ ग्राका १०३ ग्राक्ति (कार्याका १०३ ग्राक्ति (कार्याका १०३ ग्राक्ति (का |  | and the same of | 'लचुकाश्मर्यः            | 99          |
| गर्मोटिका  मज्जरः  गिरिभूः  ग्रेमका  स्थानकः  ग्रेमका  ग्रेमका  स्थानकः  ग्रेमका  स्थानकः  ग्रेमका  ग्रिका  ग्रेमका  गर |  |                 | अविनमयखद्भेदश्व          | १८८         |
| मज्जरः गिरिभूः  |  |                 | ग्योनाकः तद्वेदश्व       | ,,          |
| गिरिभूः वंश्रपती  सन्यानकः  एडिताहः  एडिताहः  पुरुत्यम्  पुरुत्यम्  पुरुत्यः  गुरुः   |  |                 |                          | १22         |
| वंश्रपत्नी सन्यानकः पिद्धवाद्यः पपुत्रणम् पण्यान्यः गुण्डः विश्ववादः विश्ववादः गुण्डः विश्ववादः |  | "               |                          | 200         |
| मन्यानकः १८१ किथिकारः २०१ पश्चित्राहः ग्रारम्बधः (किथिकारमेदः) ११ प्रत्रियम् प्रायः क्षित्राची ११ प्रायः १८२ दन्द्रयवः ११ प्रायः १८३ किथिकाः २०३ चियका १८३ किथः १८३ किथः १०३ चिराका ग्रायः १८३ किर्झान्दः) २०३ चिर्माका १८३ किर्झान्दः ११   |  | 77              |                          |             |
| पश्चित्राहः ग्राय्यधः (किथिकारमेदः) ११ प्रत्याचः पश्चित्राहः ग्राय्यधः (किथिकारमेदः) ११ प्रत्याचः पश्चित्राचः ११ प्रत्याचः ११ प्रत्याच | वंश्रपती   | 30              |                          |             |
| पटुत्यम् पर्यान्थः " सृश्चितासो "   | मन्यानकः   | १८१             |                          |             |
| परुत्यम् पर्यान्थः ग्रुटजः २०२ ग्रुट्डः १८२ दन्द्रयवः ११ ग्रुट्डासनः १८३ वरमः १०३ चिवाना १८३ वरमः १८३ च्याका १८३ वरमः १८३ च्याका १८३ वरमः १८३ च्याका १८३ वरमः १८३ च्याका १८३ वरमः १८३   | पद्धिवाद्यः  |                 | श्रारम्बद्धः (कार्यकारमद | ) ,,        |
| पखान्धः कुटजः २०२<br>गुग्छः १८२ दन्द्रयवः ११<br>गुग्छकन्दः प्रिरोषः २०३<br>चित्रका १८३ वरष्ठः ॥<br>गुग्छासिनी ॥ गुग्छासिनी ॥ महाकरश्चः (करञ्जमेदः) २०४<br>गृजी  | पटुत्रणम्  | a               | व्रश्चिकाखो              | (3)         |
| गुग्डनन्दः प्रिरोषः २०३<br>चिंग्या १८३ तरझः "<br>गुग्डासिनी " हतकरझः (करझमेदः) २०8<br>गूली " महाकरझः ,,   |  | 2               | कुटजः                    | 404         |
| गुग्डकन्दः प्रिरोषः २०३ प्रश्चिमा १८३ प्रश्च प्रश्चासनी प्रश्चिमा प्रश्चिमा १८३ प्रश्चिम १८३ प्रश्चम १८३ प्रश्चिम १८३ प्रश्चम १८३ प्रस्य १८३ प्रश्चम १८३  | ग्राखः   | १८२             | इन्द्रयवः                | "           |
| च्याका १८३ करझ: "<br>गुग्हासिनी "ठतकरझ: (करझमेदः) २०8<br>भूखी "महाकरझ: ",   |  | sein de Al      | श्रिरीष:                 | इ०इ         |
| गुण्डासिनी "घुतकरञ्चः (करञ्जमेदः) २०8<br>गूली "कहाकरञ्चः ,,   |  | 9.28            | वरष्ठ:                   | Tongs.      |
| भूखो " महावरश्चः  |  | 154             |                          |             |
| 701   |  | "               |                          |             |
| प्रतिकार  | शूली   | 33              |                          | 97          |
| 11.40.  | परिपेत्तम्   | 99              | पूर्तिकरञ्जः             | œ.          |
| हिज्ञतः १८४ । गुक्कतरञ्जः ,,  | हिज्जल:  | 828             | गुक्तरझ:                 | 2)          |

# pa j

| विषया:          | पृष्ठाः                                 | ्रिवयाः<br>। विषयाः              | पृष्ठाङ्काः    |
|-----------------|---|----------------------------------|----------------|
| रीठाकरञ्जः      | 2000                                    | ્રા <mark>ખુંન:</mark>           | - २१२          |
| त्रङ्घोलः       |   | प्र <mark>िंद्</mark> हः         | <b>र</b> १३    |
| नीखद्रचः        | 8 4 5                                   | राधा                             | ,,             |
| सर्जः           |   | <b>र्याखोटः</b>                  | ,,             |
| ग्रम्बर्गाः     | 图 · 图 · 图 · 图 · 图 · 图 · 图 · 图 · 图 · 图 · | SOVER:                           | 77             |
|                 |   | श्रिंभपा तझेदाश्र                | 288            |
| तालद्रुमः       |   | ्रिं <sub>य</sub> पात्रितयसामान् |                |
| ग्रीताल:        | 200                                     |                                  | ,,             |
| हिन्तालः        |   | पीसवीजः                          |                |
| माडः            |   | A-Fit                            | 15             |
| तूखम्           | 99                                      | वस्गः                            | 99<br>500      |
| तमाखः           | <b>३</b> ०३)                            | पुलजीवः                          | <b>२१६</b>     |
| वद्खः           | i m                                     | भन्दापिग्छीतनः                   | 9)             |
| धारावदम्बः      | 39                                      | कांग्रक्तरः                      | 9              |
| भूलोकस्यः       | 550                                     | वारमी तज्ञेदश्व                  | 789            |
| भूनीकदम्बः      | 99                                      | क्षटभी दयगुगाः                   | n              |
| वित्रद्य्वगुणाः | 99                                      | ंचवृज:                           | 17             |
| वानीरः          | 19.                                     | देवसर्षप:                        | 585            |
| बुन्भौ          | 20                                      | लकुष:                            | ,,             |
| वेतसः           | 588                                     | विवाद्यतः                        | ,,             |
| घव:             | 97                                      | ग्रथ करवीरादिवर्गः।              |                |
| धन्वनः          | 97                                      |                                  |                |
| મૂર્જં:         | 93                                      | क्षववीरसङ्ग्रेदाश्व              | 256-525        |
| तिनिम्रः        | रशर                                     | चत्र्र सिद्व स्व                 | <b>777-777</b> |

#### [ 88 ]

| कोविदारः २२३ वासन्तौ २३२ प्रतंसक्षेद्राञ्च २२३ वासन्तौ २३३ प्रतंसक्षेद्राञ्च २२४ प्रतंसक्षेद्राञ्च २२४ प्रतंसक्षः ११ प्रतागः ११ स्वकुन्दः ११ प्रतागः ११ स्वकुन्दः ११ स्वक्वित्तनो ११ स्वकुन्दः ११ स्वकुन्दः ११ स्वक्वित्तनो ११ स्वक्   | faran.                | पृष्ठाङ्घाः | विषया:               | पृशङ्घाः   |
|---|-----------------------|-------------|----------------------|------------|
| प्रतिस्ति रहे स्व   | विषयाः                |             |                      |            |
| भ्रतसन्दारः २२५ मृतस्ताः ॥  मिक्तः ॥  प्रवाशः ॥  प्रवा   |                       |             |                      |            |
| नमेदः , यूधिका तहेदस्र रुश्र—रुश्र<br>प्रवागः , जुङाः , गु<br>प्रवागः , सुचकुन्दः , गु<br>तिखकः , रुश्<br>तिखकत्वग्गुणाः , माधवी , गु<br>पाठखी तहेदस्र , जुन्दः , गु<br>पाठखी तहेदस्र , पु<br>पाठखी तहेदस्र , पु<br>स्वावका , |                       |             |                      |            |
| प्रचागः   | श्चेतमन्दारः          | . ५२४       |                      |            |
| पुनागः  | नमेर्:                | 77          | यूधिका तइ दश्च       | र्वर्-रर्व |
| तिलकः रहह करणी रहेश्र<br>तिलकत्वग्गुणाः   | पलाग्रः               | 99          | <b>कु</b> बः         | 99         |
| तिलकत्वग्गुणाः   प्रास्थः  गणाकारी  गणाकारी  गणाकारी  गणाकारो  गणाकारो  गणाकारो  गणाकारो  गणाकारो  गणा  गणाकारो  गणा  गणा  गणा  गणा  गणा  गणा  गणा  गणा   | पुनागः 📁              | D 12 22     | मुचकुन्दः            | 99         |
| पाठली तडेदश १२७ जुन्दः ११ जुन्दः ११ जुन्दः ११ ज्वाकः १३६ वकः १३६ विका ११ वकः १३६ विका ११ वकः १३८ विज्ञा ११८ विज्ञा १३७ विज्ञा १३० विज्ञा १३० विज्ञा १३० व्याप्तितको ११ विज्ञा १३० व्याप्तिका ११ विज्ञा १३० व्याप्तिका ११ विज्ञा १३० वि   | तिखकः                 | <b>२२६</b>  | वर्षा                | २३५        |
| पाटली तब्रेदस २२७ कुन्दः १३ सम्राक्तः १३६ सम्राक्तः १३६ सम्राक्तिः १३८ सम्राक्तिः १३८ सम्राक्तिः १३७ सम्राक्तिः १३७ सम्रादः १३० सम्रादः १   | तिलकत्वग्रुचाः        | , 99.       | माधवी                | k 90.      |
| प्रश्चोकः ,, वकः २३६ प्रम्पत्रसङ्ख्य २२८ केविका ,, वकः केविका ,, विक्षित्र ,,   | चारखः                 | "           | गणिकारी              | ינו        |
| चम्पनस्तक्षेद्रस्य २२८ केविका ११ वन्ध्रनः ११ वन्ध्रमः ११ विसन्धः १३७ विसन्धः १३७ वन्ध्रमः ११ वन्ध्रमः ११ वन्ध्रमः १३७ वन्ध्रमः १३० वन्ध्रमः १३० वन्ध्रमः १३० वन्ध्रमः १३० वन्ध्रमः १३० वन्ध्रमः १३० वन्ध्रमः १३६ वन्द्रमः १३६ वन्   | पाटली तडेदस           | <b>२</b> २७ | कुन्दः               | 9)         |
| चम्पतास हो देख २२८ के विका  | प्रश्रोकः             | 77.         | वकः                  | २३६        |
| श्चेतकेतको ,, जिसन्धिः २३७<br>स्वर्णकेतको ,, जपा ,,,<br>सिन्दूरी २३० समरादिः ,,,<br>जाती ,, तक्ष्णी २३८<br>सुद्धरः २३१ राजतक्ष्णी ,,,<br>श्चराणिका ,, स्वर्णका ,,,<br>मिस्तिका ,, सिस्टिका, तद्वेदश्च ,,,   |                       | <b>२</b> २८ | नेविका               | 99         |
| ख्यंकेतकी ,, जपा ,, ह्यांकेतकी क्षांचित्र्यो रहे स्मरादि: ,, ह्यांकेतकी क्षांचित्र्यो स्मरादि: ,, ह्यांकेतकी क्षांचित्रं रहे राजतक्यो हिल्ला क्षांचित्रं हिल्ला क्षांचित्रं हिल्ला हिला हिल्ला हिला हिला हिला हिला हिला हिला हिला हि  | वजुत्तः               | . २१८       | बन्धूकः              | (100000000 |
| सिन्दूरी २३० समरादि: ११ जाती १३८ तक्षी २३८ सुद्धर: २३१ राजतक्षी ११ साम्प्रान: ११ सिक्षिया ११ नीखपुष्पा ११ वार्षिका ११ सिक्ष्यिका तहेद्य ११  | श्चेतकेतकौ            | ,,          | विसन्धिः             | 955        |
| जाती अत्र तक्षी २३८ सुद्धर: २३१ राजतक्षी अत्र राजतक्षी अत   | ख्यंकेतकौ             | "           | जपा                  | . ,,       |
| सुद्धरः २३१ राजतस्यो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  | सिन्द्री              | 540.        | स्रमरारि:            | 1          |
| श्रतपत्रिका ,, रक्ताम्हानः ,,<br>महिका ,, किङ्किरातः २३८<br>विह्निका (मिह्निकाभेदः) २३२ नीलपुष्पा ,,<br>वार्षिका ,, भिष्टिका ते हेद्य ,,  | जाती                  | 23-         | तस्यी                | 755        |
| महिना , निङ्किरातः २३८ नीलपुष्पा ,, वार्षिका ,, भिष्टिका निङ्किष्य ,,   | सुद्गर:               | . 448       | राजतस्यौ             | '9         |
| विश्वका (मिश्विकाभेदः) २३२ नीलपुष्पा ,, वार्षिका ,,   | <b>ग्रतप</b> ित्रका   | "           | रक्ताम्बानः          | 39         |
| विश्वका (मिश्वकाभेदः) २३२ नौलपुष्पा ,, वार्षिका ,,  | महिका                 | 9)          | किङ्गिरातः           | 355        |
| वार्षिका ,, भिष्टिका तक्षेद्य ,,  | विद्या (मिद्धिकाभेदः) | रहर         | नीलपुष्पा            | 1 35       |
|   |                       | 3)*         | भिष्टिका तन्नेदश्च   |            |
|   | कलू रोम डिका          | 77          | <b>उष्ट्रका</b> ग्डी | 780        |

## [ \$\$ ]

| विषया:                     | पृष्ठाङ्काः  | विषयाः              | पृष्ठाङ्घाः    |
|----------------------------|--|---------------------|----------------|
|                            |  | चत्यलं तङ्गेदादिकच  | 785-782        |
| तगरस्                      | 780  |                     | 10- 105        |
| दमनखद्भेदय                 | ₹80-788  | पुष्पद्रवः          | .,,            |
| तुलसी                      | 19   | जात्यादीनामामोद-    | -              |
| मस्वः तद्वेदश्च            | 787  | खितिकार             | ाः ६५०         |
| <b>अर्जकस्त</b> द्वे दास्र | ₹87—₹8₹  | श्रथ श्राम्त्रादि   | वर्गः।         |
| तिविधार्जनगुगाः            | "  |                     |                |
| वनवर्वरिका                 | 9)   | त्रासस्तद्भेदाश्च   | रप्र‡— २४५     |
| गङ्गापती                   | 27   | जम्बू सद्वेदाश्व    | र्भूई —र्भू७   |
| पाची                       | "  | पनसस्तद्दीजगुगाश्च  | 99             |
|                            | 788  | कदली तद्वेदाश्च     | २५६—२५८        |
| वालकम्                     | STATE OF THE PARTY | नारिकेलखद्भेदादिक   | च २५६ २६०      |
| वर्षर:                     | 15   | 200                 | 748-747        |
| सुरपर्थम्                  | "  |                     |                |
| षारामग्रीतला               | 784  | चार:                | "              |
| क्रमलम्                    | 27   | मञ्जातकः            | र्वे           |
| पुराइरीकम्                 | 7,   | राजादन:             | "              |
| कोकनदम्                    | ₹8€  | दािंद्म:            | रहें           |
| ' नीलकमलम्                 | 99   | तिन्दुक्छा द्वेदश्च | २६४—२६५        |
| त्रिविधकमखं तद्वेदा        | दिवाच "  | अचोटः               | AND THE PERSON |
| पश्चिनी                    | 25   | पौलुसङ्गेदञ्ज       | २६५—२६६        |
|                            | 789  | पारेवतं तद्वेदस्य   | "              |
| पद्मवीजम्                  |  | <b>मधू कस्त देश</b> | रहे0           |
| स्यालम्                    | , and the second   |                     | र्श्ट          |
| त्राल्वम्                  | " "  | मव्यम्              | 2.2            |
| <b>विश्वलम्</b>            | ₹8'  | द्र   श्रादकम्      | ,,             |

# 1 88

| विषया:                    | पृष्ठाङ्घाः ) | विषयाः              | वृष्ठाङ्काः |
|---------------------------|---------------|---------------------|-------------|
| ट्राचा                    | 785           | तुम्बरः             | श्टर        |
| गोखनी तद्वेदश्व           | 745-742       | बद्राचः             | . »         |
| कर्नारः                   | 200           | विव्व:              | v.          |
| परूषम्                    | 19            | सद्धकी              | र्ट्ड       |
| पिप्पत्तः                 | 2)            | वातवाः              | 828         |
| वटः                       | २७१           | कर्कटः              | 9           |
| वटो                       | ,,            | श्चेयातवाः .        | 77-         |
| त्रश्वत्यिका              | gradient,     | भूकवुँदारकः         | रूटपू       |
| <b>प्रचल</b> इंदय         | रुष्ट         | मुव्यकः             |             |
| चदुम्बर:                  | ,,,           | कर्मदैः             | 10 10 10 10 |
| नयुइम्बरिका               | इ७इ           | तेजःफलः             | र्ट्        |
| नानोइम्बरिना              |               | विकार्टकः           | 19          |
| <b>च</b> हुम्बरत्वचागुगाः | 208           | हरीतको तद्वेदाश     | 1954-955    |
| बदरसङ्गेदाश्च             | ¥08—504       | विभीतकः             | 27          |
| वौजपुरसङ्गेदाश्च          | २७५—२७७       | पूर्गस्तत्फलनाम     | र्टर        |
| त्रामलकौ                  | 607           | वेरी                | "           |
| काष्ठधात्री               | 705           | तैव्वनम्            | 250         |
| चिञ्चः तद्वयवगुणाञ्च      | २७८-२७२       | गौल्यम्             | 99          |
| श्रामातकः                 | 200           | घोग्टा              | " "         |
| नारङ्गः                   | २८०           | पूगविश्रेषगुयाः     | 450-456     |
| निम्बूकः                  | 277           | नागवज्ञी तद्वेदाश्च | १८१—१८8     |
| जम्बीरसाद्गेदश्व          | 750-759       | चूर्यंभेदाः         | No.         |
| कपित्यः                   | 19            |                     |             |

| विषया:                 | पृष्ठाङ्ग       | तप्रयाः                    | पृष्ठाङ्काः |
|------------------------|-----------------|----------------------------|-------------|
| श्रथ चन्द्रनादिव       | वर्गः ।         | भे <b>उ</b> म्             | <b>३१३</b>  |
| श्रीखर्षं तद्वेदाश्च   |                 | ्र(विवा तद्वेदश्व          | ∌68         |
| देवदास तज्जेदम         |                 | ्र <mark>ा</mark> सि इंदिय | ३१8—३१५     |
| चीड़ा                  | \$ all          | वार                        | "           |
| सप्तर्याः              |                 | ्रे <b>ग्यियम्</b>         | ₹१५         |
| सरलः                   |                 | Tag.                       | ₹१€         |
| कुङ्गमं तद्गेदश्च      | ₹               | ्रं <sup>®</sup> यम्       | meller o    |
| प्रियङ्घः              | 10.7            | ्रिक्षेत्र:                | "           |
| क्त स्त्री तड्डेदादिकच | ₹05-€0€         | <sup>्रा</sup> कम्         | \$80        |
| गोरीचना                | 97 (X)          | प्रधीखरीकम्                | "           |
| कर्पूरलङ्गे दादिक च    | \$04-\$00       |                            | \$15        |
| जवादि                  | ***             | शांबरोहियौ तद्वेदश         | 99          |
| तूर्यो                 | E (c)           | म्योविष्ठः                 | 5)          |
| जातीपत्नी              | 205             | <b>उग्नीरम्</b>            | ₹१೭         |
| जातीफलम्               | 20              | निविका                     | "           |
| <b>क्षां</b> विष्      | 97              | श्रय सुवर्णा               | दिवर्गै:।   |
| <b>ल</b> वङ्गम्        | 99              | ्र <sub>ा</sub> वर्षेत्राम | 252 222     |
| खाइसिइराय              | No. of the last | स्वर्णं तद्वेदाश्व         | ३२२—३२३     |
| जटामांसी देते दाश्र    | \$60-\$83       | रीप्यम्                    | ))<br>>na   |
| तुक्कः                 | ,,,             | ताम्रम्                    | 878         |
| गुरगुलुसाईदाश्च        | \$88            | वप                         | "           |
| राखः                   | \$ 5.5.         |                            | <b>२२</b> 4 |
| कुन्दुब्क:             | 27              | रोति: तद्वेदश्व            | "           |

## [ 98 ]

| विषया:                  | पृष्ठाङ्घाः | विषया:                  | वृष्ठाङ्गाः |
|-------------------------|-------------|-------------------------|-------------|
| कांस्यम्                | \$24        | रसाञ्चनम्               | 8 = 5       |
| वर्त्तंबोद्दम्          | ,,          | स्रोतोऽञ्चनन्तद्वचयाञ्च | च च्य       |
| त्रयस्तान्तम्           | "           | कम्पिद्धः               | 21          |
| <b>बो</b> चितहम्        | <b>३</b> २७ | तुत्यं तद्गेदश्च        | · 李章€       |
| मुख्डलोहम्              | AND ST      | पारदः                   | :5          |
| तौद्याम्                | 20          | त्रस्रकः तद्गेदादिकच    | <b>७</b> इइ |
| समसाग्री चित्रधातुदीषाः | ३१८         | स्मटी                   |             |
| मनःश्चिता               | "           | चुन्नवः                 | ३३८         |
| सिन्दूरम्<br>-          | "           | प्रहः                   |             |
|                         | ३२८         | किमिग्रहः               | "           |
| भूनागः<br>चिङ्गलम्      | "           | क्तपर्दः                | 99          |
| गैरिकहयम्               | \$\$0       | ग्रुत्तिः               | 355         |
| तुवरी                   | 99          | जलगुत्तिः               | 39          |
| <b>इरितालम्</b>         | , ,,        | खिरनी                   | 99          |
| गन्धकाराद्वेदादिकञ्च    | 3 \$ \$ \$  | हुम्धपाषायाः            | ₹80         |
| <b>মিলাল</b> র          | ,,          | कर्पूरमिख:              | "           |
| सिक् <b>य</b> कम्       | <b>३</b> ३२ | ्रिकता <b>विका</b>      | "           |
| घातुकासीसम्             | "           | वाङ्ग्रह्मयम्           | 29          |
| पुष्पकासीसम्            | ,,          | विसत्तम्                | \$88        |
| धातुमाचिकं तद्वेदश      | \$\$\$      | त्राखुपात्राचाः         |             |
|                         |             | रत्ननिकत्तिस्तत्पर्याया |             |
| नीलाञ्चननामगुणाः        | "<br>\$\$8  | माणिकां तद्वेदादिकञ्च   |             |
| वु त्याञ्चनम्           |             |                         |             |
| पुष्पाञ्चनम्            | 99          | । मुता                  | ₹85—585     |

## [09]

| विषया: पृष्                | राङ्घाः      | विषयाः पृष्ठाङ्गाः          |
|----------------------------|--------------|-----------------------------|
| प्रवात्तः                  | 885          | यसुनानाम तज्जलगुणाश्व ३५६   |
| मरकतस् ३८८-                | –₹8ધ્ર       | नर्भदाया नाम तज्जलगुणाञ्च " |
| पुष्परागः                  | 97           | चन्द्रभागाजलगुर्याः "       |
|                            | €85          | सरस्रतीनाम तज्जलगुणाञ्च ३५७ |
|                            | -₹8⊏         | मधुमतीजलगुर्याः ,,          |
| गोमेदकः ज्यान              | 97           | भ्रतदुप्रसृतिनदीजलगुगाः "   |
| वैदूर्यम् • • • • •        | ₹82          | भ्रोण-घर्षरक-वेत्रावतीनदी-  |
| नवग्रहरतक्रमः              | 51           | जलगुगाः 🚡                   |
| महारतीपरतानि               | ३५०          | पयोष्णीनदीजलगुषाः ,,        |
| स्मटिकः                    | ,,           | वितस्तानदीजलगुणाः ३५५       |
| सूर्य्यवान्तः              | <b>३५१</b>   | सरयूनदीजलगुणाः              |
| वैक्रान्तम् अस्यसम् क्रिका | 77           | गोदावरीनदीनाम               |
| चन्द्रकान्तः               |              | तज्जलगुगाञ्च ",             |
| राजावर्तः                  | ३५२          | क्रणानदीनाम तज्जवगुणाय "    |
| पेरोजम् ।                  | 97           | मलापद्या-भीमरधी-घट्टगा-     |
| अभोधितधातुरत्नदीषाः        | ३५३          | नदोजलगुगाः ,,               |
| श्रथ पानीयादिवर्गः         | 1            | तुङ्गमद्रानदीनलगुणाः 🤊      |
| पानीयनामगुषाः              | - ३५,8       | वावरीनदीजलगुणाः ३५८         |
| द्वियोदकनामगुणाः           | ","          | नदौविश्रेषजलगुराः "         |
| ससुद्रनाम तज्जलगुणाञ्च     | <b>ँ</b> ३५५ | देशविश्रेषाचदीजलगुगाः "     |
| न्या नाम तज्जलस च गुग      | e :TI        | वालभेदात् नदीजलगुणभेदाः ,,  |
| सामान्यनदीनामः             | 99           | त्रानूपदेशजलगुणाः रि६०      |
| भागोरथौनाम तज्जलगुणा       | य रप्६       | जाङ्गबदेशजलगुषाः            |

## [ 25 ]

| विषयाः पृष्ठाङ्गाः                  | विषयाः पृष्ठाकाः                 |
|-------------------------------------|----------------------------------|
| ताथारयां जलगुयाः ३६०                | जलपानविधिः १६८                   |
| देश्रभूमिमेदात् जलगुयाः ,,          | प्रान्तरीचनलभेदाः "              |
| द्भद्वारिगुवाः ,,                   | धाराहीनां चतुर्यां खरूपम् "      |
| प्रस्वयाजलगुर्याः ,,                | धाराया भेदी "                    |
| तड़ागजतगुर्याः ३५१                  | गाङ्गजसस्यम् "                   |
| वापीजलगुगाः ,,                      | सासुद्रजललचयम् ३६५               |
| कूपजलगुर्णाः ,,                     | गाष्ट्रजलस तच्यान्तरम् "         |
| त्रीद्विद्वतारुयाः ,,               | गाङ्ग्जलगुषाः 🛒 💅                |
| केदारजलगुवाः "                      | चन्द्रकान्तमिष्युतज्ञत्तगुगाः ,, |
| इंसीदकगुराः ३६२                     | सामुद्रभलगुषाः ,,                |
| न्नायपीतोदकगुणाः                    | भूमिविश्रेषे पतितज्ञलस गुवाः     |
| दूषितज्ञल्बच्यम् भ                  | माधिनमासे व्रध्यभावस             |
| रोगविश्वेष श्रोताम्बुपरिवर्ज्जनम् " | दोषोिताः ३६६                     |
| रोगविश्रेषे श्रुतश्रोतजनम् ,,       | सर्वावस्थायामेव जलस्य            |
| पादादिशीनतप्रजलगुषाः ३५३            | देयतानिर्देशः ,,                 |
| ऋतुविश्रेषे पादादिश्चीनतप्त-        | द्रचुमेदाः,                      |
| जलम्                                | साधारण दचनाम ,,                  |
| ऋत्विभेषे ग्राम्यं कौपादिजलम् ,,    | श्रेतेच्नामगुषाः "               |
| उचाजनस्य व्यवद्वारित्यमः            |                                  |
| अवस्थाविश्रेषे श्रीतीषाज्वस्य       | वरङ्गालिनासग्याः ३(७             |
| हितकारिता "                         |                                  |
|                                     | क्रणेचुनामगुणाः                  |
| राती स्थाम्ब्यानस गुणाः             | रक्तेच्नामगुषाः                  |
| समयविश्रेषे जलपानगुणाः . ३६४        | दचुमूलनाम १६८                    |

# زُ وِع أَ

| विषयाः                     | पृष्ठाङ्घाः | विषयाः.                 | पृष्ठाङ्गाः |
|----------------------------|-------------|-------------------------|-------------|
| द्वुद्ग्डमूलमध्याग्रेषु    | des         | मार्घ्य मधुलचयम         | · pop       |
| ् रसविधेषाः ।              | ₹ ₹         | श्रीहालकमधुलचणम्        | 99          |
| दिनस्य समयविश्वेषे अतोच्   | Live a      | दालमधुलचयम्             | 99          |
| ग्या:                      |             | ष्मष्ट्रमधुवर्गाः       | 9           |
| दन्तनिष्यीष्ट्रतेचाः गुबाः | See - 19.   | श्रष्टविधमधुगुगाः       | 100         |
| यावनालग्रंररसगुर्णाः       | . ३६८       | नूतनपुरातनमधुगुगाः '    | 805         |
| पक्षेचुरसगुवाः             | 99          | पक्षाममधुनोः गुगाः      | - 100       |
| गुड़नाम 💮 🗀                |             | मध्वादिगुणाः            | 99 0        |
| पुरातनगुडुगुकाः            |             | ज्ञामधुगुगाः 🔧          | 9           |
| यावनालोञ्चवगुड्गुबाः 🕡     | . 36        | दुष्ठमथुलचग्रम्         | 99          |
| साधारणप्रकरानामगुर्गाः     | \$00        | निदीष-सदीषमधुगुखाः      | Nes.        |
| पश्चेचुप्रर्करागुवाः       | F . 7 37    | मधुप्रकंशनामग्याः       | 99          |
| यावनाली प्रक्रानामगुबा     | [: 99       | मद्यसामान्यनाम तहुवास   | 29          |
| मधुप्रकीरानामगुर्याः       | 306         | गौड़ोमघगुवाः            | 104         |
| तवराजग्रकरा                |             | माध्वीमय ,,             | 33,33       |
| तवराजखाडनामगुयाः           | · .         | पेष्ठोमय ,,             |             |
| मधुसामान्यनाम              | ५७३         | सैन्धीमय ,              | ,,          |
| मथुजातयः                   | · · · · ·   | ऋतुमैद्तः मदाभेद्यवस्या | 1 19/2      |
| माचिकमधुलचयम् ''           |             | कतिचित्मबगुखाः          | \$00        |
| भामरमधुलचयम्               | •           | नवजीखंमध ,,             | 27          |
| चौद्रमधुलचणम्              | "           | मद्मयोगाईनिईंगः         | 1)          |
| पौत्तिकमधुलचयम्            | 29.         | चय चौरादिवर्गः          |             |
| <b>, छात्रकमधुलचणम्</b>    | - 99 (      | दुरधनाम -               | 105         |

## [ 20 ]

|                                 |               | . विषयाः                    | पृष्ठाङ्काः                           |
|---------------------------------|---------------|-----------------------------|---------------------------------------|
| विषया:                          | पृष्ठाङ्काः   |                             | इटइ                                   |
| द्ध्यादिनाम                     | 70€           | कालविश्रेष्ठे हुग्धविश्रेषः |                                       |
| नवनीतनाम                        | ३७८           | ग्रतग्रीतादिचौरगुगाः        | "                                     |
| <b>इतनाम</b>                    | 99)           | वर्ज्जनीयचीरम्              | 9 70                                  |
| तक्रनाम                         | w w           | चीरसेवनविधिः                | 19                                    |
| तक्रविग्रेषः                    | ,,,           | नवप्रसूतायाः चीरदीषाः       | \$28                                  |
| गोमूद-मलवाम                     | "             | मध्य-चिरप्रसूतायाः चीर      | TENNIN .                              |
| गोदुम्धगुणाः                    | \$50          | ग्या दोषाः                  |                                       |
|                                 | All Laws      | अल्यवयस्तादीनां चौरगु       | <b>बाः</b> "                          |
| महिष्रीदुग्धगुणाः               | יוע           | गर्भिखाः चौरगुणाः           | 19                                    |
| श्रजापयो "                      | 2)            | देशवर्षादिविश्रेषात् चौ     | रगणाः                                 |
| सूच्माजपयो "                    |               |                             | इद्ध                                  |
| म्राविकरुग्ध "                  | THE P. 15     | <b>किलाटगुणाः</b>           | 4.8                                   |
| इस्तिनौपयो "                    | ३८१           | गोद्धि "                    | 16                                    |
| श्रश्चीचीर "                    | ,,,,          | महिषीद्धि ,,                | 1. 61 1 22                            |
| गर्दभीचीर ,,                    | ,,,           | त्रजाद्धि ,,                | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
|                                 | 22            | ग्राविकद्धि "               | 99                                    |
| -33-3-                          | - SERVICE AND | हिंदिनौद्धि "               | 29                                    |
|                                 | "             | 3.6                         | ३८६                                   |
| त्रामपक्कहुग्ध "                | ÁC            | 0 3-67                      | Activities of Section                 |
| घारीणचीर "                      | 1020-21       |                             | .92                                   |
| कालविश्रेषे वयोविश्रेषे         | च             | चष्ट्रीदिध "                | 32                                    |
| पीतचीरगु                        | (e) it        | स्तीद्धि "                  | F-1000                                |
| <b>दीर्घकालमपकदुग्धदी</b>       | षाः "         | सामान्यदिध ,,               |                                       |
| <b>च्चरे हुग्धप्रयोगस्य गुग</b> |               | द्धिसेवनविधिः गुणा          | य ३८७                                 |
| जनसंदितपदाचीरगुर                |               |                             | 277                                   |
|                                 |               |                             |                                       |

## [ 88]

| विषयाः                                 | पृष्ठाङ्काः                             | विषयाः पृष्ठाङ्गाः     |
|--|---|------------------------|
| तक्रवयग्याः                            | इदद                                     | एड्क छतगुराः १८३       |
| तक्रखासादिरसानां ग्या                  | 99                                      | इस्तिनीष्टत ,,         |
| रोगादिविश्रेषे तऋख                     | angeno is                               | त्रश्चीष्टत ११ ११      |
| वर्जनोयता                              | कृद्ध                                   | गरंभीष्टत "            |
| <b>अनु</b> जुतोडतसे इतक्रगु <b>णाः</b> | ,,                                      | उद्दोष्टत ,, "         |
| साधारणनवनीत "                          | 99                                      | नारीष्टत "             |
| गोमच्छिथोनवनीत रे,                     | ,,                                      | पुरायाष्ट्रत ,, ३८८    |
| साहिषनवनोतस्य विशेष                    | " "                                     | साधारवाष्ट्रत ,,       |
| सचुजानवनीत "                           | \$20                                    | काञ्चिकनाम ,,          |
| क्रागनवनीत ,,                          | 200                                     | काञ्चितेल "            |
| ग्राविकनवनीत ,,                        | 97                                      | चुक्रनाम ,, ,,         |
| एड्कनवनीत ,,                           | 77                                      | सीवीरकतुषोदकनाम ,, इथ् |
| इस्तिनीनवनीत "                         | stree ,                                 | मत्तवाञ्चिम ,, ,,      |
| अश्वीयनवनीत "                          | malte,                                  | गोमूल "                |
| गर्दभीनवनीत "                          | ३८१                                     | माहिषमूल "             |
| <b>उद्योनवनीत</b> ,,                   | West of the second                      | त्रजासूत ,, ३८६        |
| नारीनवनीत "                            | with a                                  | ग्राविकमूल "           |
| सद्योनवनीत "                           | 99.                                     | इस्तिमूल " "           |
| पर्युषितनवनीत ,,                       | 99                                      | अश्वमूल "              |
| गव्यष्टत "                             | 727                                     | गर्दभमूल "             |
| मिंद्रिषीष्टत ,,                       | "                                       | चष्ट्रमूल " ३८७        |
| ग्रजाप्टत ,,                           | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | मानुषम्त "             |
| माविकष्टत ,,                           | "                                       | गोमूलसाध्यरोगाः        |

# [88]

| :विषयाः              | प्रशासाः | षिषया:                      | पृष्ठाङ्घाः |
|----------------------|----------|-----------------------------|-------------|
| तेषयोनयः ः           | 829      | प्रालिनाम तहेदास            | 808         |
| तिसतेसगुवाः          |          | राष्ट्राचादिशालिसचयम्       | 8.0         |
| स्राम्पतेस ,         | 12       | राजाचनामगुखाः तद्वेदाश्व    | 99          |
| इप्रभतेच "           | 13 925   | षष्टिकनामगुगाः              |             |
| बत्रसीतेस ,          | - Olive  | क्रण्याखिनाम "              | . 808       |
| धानवतेस ,            | 19       | रक्तमालिनाम "               |             |
| एरकतेख "             | 10       | सुब्द्धगासिनाम "            | or Man      |
| कासतेच "             |          | व्यूच्याचिनाम "             |             |
| रहुदीतेस .           | i a a    | मुख्यवासिनाम "              | 8 of        |
| न्यितंस ,            | 1 182    | गम्बग्राखिनाम ,             |             |
| चस्रतेष 🦼 🔐          | 273      | निर्पद्माचि "               | a           |
| ब्रियुतेस ,          |          | त्रीद्रिशांचि "             | 804         |
| च्योतिषतौतैल "       | i        | पृथक् भार्तिनामानि          |             |
| इरीतकोतेल ,          |          | त्रीडिव <b>ष्टिधान्यनाम</b> | . ,,        |
| राजिकातैस ,          |          | कलम्याखिनामगुणाः            |             |
| क्रीमाम्रजतेख ,      | 8.0      | रक्तप्राखिनाम "             | 8.0         |
| विद्यातेल ,          | Grand In | सुगम्बद्यालिनाम "           | der soils.  |
| वर्ष्रतेखनाम ,       | 19.51    | कुष्मग्राचिनाम "            | The Paris   |
| वपुरादितेखम् "       |          | तिखवासिनीशाखिनाम "          | No.         |
| षविधिप्रयुत्ततेखयः . | *        | वक्तप्राखिनाम ,             | 8.5         |
| विषतुन्यता           | 801      | कलाटकनाम ,                  |             |
| षय गास्यादिव         | गैं: ।   | कुषाण्डिकाप्रालिनाम         |             |
| थान्यप्रवारयम्       | 8.5      | क्रम्भणावि ,                | Hery.       |

#### [ 49 ]

| विषया:   | पृष्ठाङ्काः   | विषयाः पृष्ठाङ्गाः           |
|--|---------------|------------------------------|
| कौसुन्धोग्रालिनामग्याः   | 30€           | भृष्टचणकाणाः 8१8             |
| चम्पासभा लिनाम   | 802           | चयाकयूष "                    |
| पश्चित्रशालिनाम ,,   | 21.00 M       | पर्युषितचयोदक ,, ६१५         |
| ग्राचिविभेषाः  |               | वनसुद्गनाम ,,                |
| यावनाखनाम  | u u           | ससूरनाम "                    |
| श्वेतयावनाखनामगुणाः  | 810           | वाखायनाम ,                   |
| तुवरनाम "  | STREET STREET | लखानाम " 8१६                 |
| भारस्यावनाख ,  |               | ष्राद्कीनाम तद्वेदा गुणाष ,, |
| गोध्मनाम   | 888           | कुचित्यनामगुणाः ,,           |
| खचुगोधम "  | (100) 100 W   | चवनाम ,, ११७                 |
| यवनाम "  | 23            | निष्यावनाम ,, तह्नदश्च ,     |
| विगुजयवनाम् "  | Size of       | तिखनाम , ,,,                 |
| सुहनाम "   | 988           | पखलनाम ,, 8१८                |
| अधामुहनाम "  | Priling.      | तिलिविष्टनाम "               |
| भारद्सुहनाम ,  |               | श्रतसीनाम , , , , ,          |
| भूसरसुद्ग "  | d Spiel       | बासरीनाम "                   |
| मुद्रयूष   | <b>598</b>    | राजचवननाम भ 8१८              |
| धान्यनाषनाम "  | nintes        | तीच्यकनाम ,,                 |
| राजमाषनाम "  | 70            | श्चिम्बीधान्यनाम ,,,         |
| चयकनाम "   | e in the last | ग्यामानामगुंगाः ,            |
| म्रामचयाक ,,   | 818           | कोद्रवनाम " ४२०              |
| क्षणचयाम ,,  | 100           | वरकनाम "                     |
| गौरचयक 🤊   | 1 199         | वाजुनाम १० हिन्ति            |
| Company of the compan |               |                              |

## [87]

| विषया:                    | पृष्ठाङ्घाः    | विषयाः पृ                  | ,शङ्गाः  |
|---------------------------|----------------|----------------------------|--|
| नीवारनामगुखाः             | 870            | श्रय मांसादिवर्गः।         |  |
| रागीनाम "                 | 858            | D. CANAL                   | 0511   |
| बुरीधान्य ,,              | "              | मांसनाम                    | <b>४२५</b>   |
| लाजादिनाम "               | 99             | सबीइतइरिणादिमांसगुर्याः    | "  |
| त्रांकुंखानाम "           | 29             | त्याच्यमांसक्यनम्          | 10   |
| पृथुकानाम "               | 845            | मांसानां सामान्यगुणाः      | 874  |
| पूपला ,,                  |                | श्रान्पादिदेशलयोद्गतमांस , | , ,,   |
| विपिटानाम "               | 10             | द्रुतादिगामिनां विलादि-    | ERRIE  |
| हुग्धंवीजानाम "           | 20             | वासिनाञ्च जातिभेदाः        | 23   |
| तप्तमुद्गादि "            | MANUAL SE      | द्रुतगतिसगायां नाम         | and the same of the  |
| श्रर्धपक ।दि "            | 845            | मांसगुणा                   | य ,,   |
| कर्णिका म                 | 97             | विलम्बितगतिसगायां          | the same of the sa |
| दाखिनाम                   | 99             | नाम मांस ,,                | 879  |
| इरितजून ,                 | "              | ध्रवगतिस्रगायां नाम        | a calle to an  |
| ग्रुंकानून "              | 30             | मांस "                     | "  |
| कोषधान्यादि "             |                | विविश्वयानां नाम           |  |
| नव-पुराचादिधान्य "        | D TO THE PARTY | तमांस "                    | "  |
| नव-पुराणचणकादि,,          | 878            | खविग्रयानां नाम            |  |
| वापितादिधान्यानां ,,      | 10             | मांस ,,                    | "  |
| चारोदको द्वतधान्य ,,      | <b>3</b>       | जलेश्रयानां नाम            |  |
| सिन्धभू निससुद्भवधान्य    | 19 10          | मांस "                     | >>   |
| वांतुकामयभूमिधान्य ,      | , ,            | प्रसन्दनानां नाम मांस "    | "  |
| भान्यादीनां ग्रेष्ठत्वनिक | पणम् "         | प्रतुदानां नाम मांस "      | 2)   |

#### [ २५]

| विषया: पृष्ठाङ्का:                             | विषयाः पृष्ठाङ्गाः           |
|--|------------------------------|
| विष्त्रिराणां नाम                              | न्नाच्यनांस ,, ४३१           |
| तन्त्रांसगुणाञ्च ४२८                           | नजुलमांस ,, ,,               |
| स्थानविशेषगतसगपित्यां                          | गोधासांस "                   |
| मांसगुणाः ,,                                   | त्राज्ञामांस ,, ,,           |
| खद्रमांस "                                     | वर्ज्यविवेश्वयमांस "         |
| गवयसांस "                                      | त्रारखकुकुटमांस ,, ४३२       |
| व्ह्नांस "                                     | ग्राम्यकुक्टमांस " "         |
| गोमांस " ४२८                                   | इारोतमांस " "                |
| वनमहिष्रमांस ,, ,,                             | विविधकपोतमांस " "            |
| ग्राममन्दिषमांस " "                            | तित्तिरिमांस "               |
| इिंदामांस ,, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | लावक्सांस ,, "               |
| त्रश्वमांस ", "                                | वर्त्तकमांस ,, ,             |
| <b>च्छूमांस</b> ", ",                          | ग्राम्यारखचटकामांस ,, ४३३    |
| ग्राम्यार व्यगदेशमांस ,, ,,                    | कपिञ्चलमांस " "              |
| एखमांस " "                                     | चकारमांस ", "                |
| कुरङ्गमांस ,, ४३०                              | चक्रवाक्सांस "               |
| सारङ्गमांस ", ",                               | सारसमांस ;, "                |
| ग्रिखरीमांस ,,                                 | जलचरपिचनांस " "              |
| ग्रात्यारखवराहमांस """""                       | वकादिमांस "                  |
| श्रदछङ्गमांस "                                 | मत्यस्य सामान्य " ४३८        |
| क्रागमांस " "                                  | केषाञ्चित् मत्यानां नामानि " |
| श्रीरस्रमांस " ४३                              |                              |
| त्राविकमांस "                                  | गर्गरमत्य " " "              |

#### [ 99 ]

| विषया: पृ               | शकाः        | विषयाः                    | ्र पृष्ठाङ्गाः                          |
|-------------------------|-------------|---------------------------|---|
| भो रमत्यल च ग ग गाः     | 894         | भार्यानाम 💮               | 8इट                                     |
| बालमत्य "               | 99          | नपंसकादिनाम               | "                                       |
| वर्षरमत्स्य " "         | ,,          | राज्ञः प्रधानपत्नौनाम     | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| क्रागलमत्स्य " "        | 1)          | राज्ञः ग्रन्थान्यपत्नीनाम | 880                                     |
| रक्तमत्य ,, ,,          | ,,          | विग्र्यानाम               | <b>3</b> 33                             |
| महिष्रमत्स्य "          | 998         | ब्राह्मग्रनाम             | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| त्रावितमत्य ,, ,,       | . ,,        | चित्रयनाम                 | ,,,                                     |
| वातूकमत्स्य ,, ,,       | ***         | वैग्र्यनाम                | - 11                                    |
| त्रलोमग्रमत्स्य " "     | ,,          | शूट्रनाम                  | 77 77                                   |
| कर्णवशादिमत्य ,, ,,     | "           | सङ्खात्युत्पत्तिकचनम्     | 7 ), V                                  |
| सम्बन्धानां "           | ,,          | बालसामान्यनामानि          | with the last                           |
| इदादिजातमत्यानां "      | "           | वयोविश्रेषात् श्रिशुनामा  | नि ४४१                                  |
| ससुद्रमत्यगुणाः         | 8\$0        | वयोऽनुसारेख बालादि-       | <b>P.19</b> 07                          |
| ग्रैलादिनप्राणिमांसाना- | early!      | संचाविश्रेषः              | 9,                                      |
| मनुत्ती देतुः           |             | कौमाराद्यवस्थावधिः        | 200                                     |
| पक्रमृष्टमांस "         | "           | युव-वृद्धनामानि           | Mirror                                  |
| खौपुरुषभेदेन मांस,      | j,          | बालिकानामानि              | gie 79                                  |
| षय मनुष्यादिवर्गैः।     | <b>SEPR</b> | कन्यानामानि               | 1 (1)                                   |
| नम राजु ना(स्नात)।      | *****       | मध्यमानाम                 | "                                       |
| मनुष्यनाम               | 862         | गुर्वि गौनाम              | 588                                     |
| पुरुषनाम .              | in the      | व्रवानाम                  | 1 27                                    |
| खीनाम                   | 8\$2        | रजखलानाम                  | 2,                                      |
| भर्त्वुनाम              | ø           | वस्थानाम                  | i n                                     |

#### [ 05 ]

| विषयाः                | पृष्ठाङ्घाः    | विषया:               | पृशाङ्घाः                                 |
|-----------------------|----------------|----------------------|---|
| तनुनाम। नि            | 888            | प्रद्रुत्यादिनाम     | 888                                       |
| <b>अव्यवनाम</b>       | THE PARTY OF   | नखनाम                | ), a                                      |
| <b>जिरोनामानि</b>     | W              | प्रपाखादिनाम         | 77.7                                      |
| विद्यादिनाम           | Ni the Control | खननाम                | , is in                                   |
| <b>दृष्टिनाम</b>      | 99             | चू चुकानाम           | mes                                       |
| श्रपाङ्गाहिनाम        | <b>588</b>     | वचीनाम               | 2)  |
| <b>ख</b> लाटादिनामानि | pas in         | कुचिन।स              | 1   |
| ग्रीष्ट्रामानि        | <i>j</i> 97    | मर्म-विकानाम         | and the same                              |
| <b>प्राणनाम</b>       | William .      | नाभ्यादिनाम          | 88€                                       |
| ग्रञ्जस्य नासिकामखस्य | च नाम ,,       | गर्भाष्यनाम          | pister or o                               |
| सुखनाम .              | · · · · · · ·  | प्रामाभ्रयनाम        | 7150                                      |
| चित्रुकादिनाम 🦷       | 11             | पकाश्रयादिनाम        | 9   |
| इन्वादिनाम            | 91 .           | वाद्यादिनाम          | ALL SECTION                               |
| जि <b>द्वादिना</b> म  | 100            | ककुन्दरादिनाम        | 110                                       |
| चिष्टिकादिनाम         | 888            | भगनाम                | 9,  |
| <b>अव्टुनाम</b>       | ער אַ אַ       | सुव्यान              | 77.79                                     |
| ग्रीवानाम             | . 11           | श्रियादिनाम          | AND DISCH                                 |
| क्षकादिनाम            | , 11           | <b>जर्वादिनाम</b>    | . 889                                     |
| <b>ब्रिरादिनाम</b>    | 1911/2018      | जङ्गादिनाम           | " "                                       |
| पार्श्वपृष्ठनाम       | 91             | <b>घुटिका</b> नाम    | TOTAL TOTAL                               |
| बाचुनाम               | 74 PF 535-11   | पार्ष्यादिनाम        | n entre                                   |
| <b>इस्तनाम</b>        | P100000        | पादनाम               | de la |
| करसूचादिनाम           | 71.90          | <b>उत्सङ्गादिनाम</b> | 100000000000000000000000000000000000000   |

#### [ २८ ]

| Company 1                      | शङ्घाः | विषयाः                | पृष्ठाष्ट्रा: |
|--------------------------------|--------|-----------------------|---------------|
|                                | 889    | स्रायु।दिनाम          | 840           |
| चपेटादिनाम                     |        | विविधनाड़ीनाम         | SPREE         |
| ब्रङ्गुष्ठतर्ज्जन्याचीरन्तरालन | म "    |                       | ere (red)     |
| इलनाम                          | 882    | वर्द्धरानाम           |               |
| सरतारतानिम                     | "      | <b>भरौरास्यादिनाम</b> | "             |
| व्यामनाम                       | "      | श्रिरोऽस्थादिनाम      | 84.5          |
| मर्भनाम                        | 910    | पृष्ठास्यादिनाम       |               |
| ममंखानानि                      | "      | पार्श्वाखिनाम         | ,,            |
| <b>लालानाम</b>                 | "      | ग्रात्मनाम            | "             |
| खेद-नेत्रमलनाम                 | 97     | प्रक्रतिनाम           | N.            |
| <b>मलमूलयोर्नाम</b>            | ,      | <b>ग्रहङ्घारनाम</b>   |               |
| वलीनाम                         | 885    | मनोनाम                | N N           |
| पश्चितनाम                      | •)     | सत्तादिगुणनाम         | >>            |
| सप्तधातवः                      | 'n     | <b>त्रच्यवनाम</b>     | 1)            |
| रहनाम                          | "      | द्ग्द्रियनाम          |               |
| रत्तनाम                        | "      | विषयनाम               | 845           |
| मांसनाम                        | 20     | पञ्चभूतनाम            | "             |
| <b>मेदोनाम</b>                 | ,      | श्रय सिंहादिवर्ग      | 1             |
| त्रक्षिनाम                     | , ,,   |                       |               |
| मज्जनाम                        | p      | सिंइनाम               | 8पू र         |
| <b>गुक्रनाम</b>                | 84.    | ग्ररभनाम              |               |
| रसादीनासुत्पत्तिक्रमक्रथन      | म् ;,, | व्याघ्रनाम            | . 22          |
| क्वोममिख्यायोगीम               | "      | चित्रवाचनाम           | "             |
| म्रन्त्र गुलायोर्नाम           | >>>    | ऋचनाम 💮               | ,,            |

# زُ عُفِيً

| विषया:   | पृष्ठाङ्घाः 📗                    | विषया:                      | पृष्ठाङ्काः |
|--|----------------------------------|-----------------------------|-------------|
| तरचुनाम 💮  | :848                             | ग्रास्यवराचनाम              | 842         |
| <b>प्रगालनाम</b>                                   |                                  | घोटकनामानि                  | >>          |
| ईहासगनाम   | 29                               | त्रश्वभेदाः                 | . 19        |
| कुकुरनाम   | 25                               | वर्णभेदेन नामभेदकथनम्       | "           |
| विङ्गलनाम  |                                  | वालघोटकनामानि               | 8प्रैंड     |
| लीमग्रविड़ालनाम                                    | 30                               | त्रश्चिनीनामानि             |             |
| <b>इक्षिनामानि</b>                                 | 844                              | गर्दभनामानि                 | 7)          |
| त्रिविधगजनामा नि                                   | 29                               | त्रश्वायां गर्दभाइत्पन्नस्य |             |
| वालादिचस्तिनामानि                                  | ,                                | नामानि                      | "           |
| करियोनामानि  | 9,                               | क्रागलनामानि 💮              | "           |
| खड़नासानि  | ,,,                              | ग्रज्ञानामानि               | "           |
| <b>उ</b> ष्ट्रनामानि                               | કપૂર્                            | मेषनामानि 💮 💮               | "           |
| महिषनामानि   | 2)                               | स्गभेदानां नामानि           | 84.         |
| सहिषीनामानि  | ,,                               | वानरनामानि                  | "           |
| व्रधनामानि   | 99                               | वानराखां जातिमेदाः          | 95          |
| गवां वर्णभेदाः                                     | ,                                | प्राल्यकनामानि              | and the     |
| भूकटव इंड घ्रमामा नि                               | 840                              | प्रात्यवामेदः तह्योमनाम च   | "           |
| बालव्रवनासानि                                      | ,                                | कोकड्नामानि                 | 848         |
| गवीनामानि  | "                                | नकुलनामानि                  |             |
| वनव्रधनामानि                                       | "                                | सर्पनामानि                  |             |
| वनगवीनामानि  |                                  | विश्रेष-विश्रेष-सर्पेलच्या  | म् . •      |
| वनगवानामान   |                                  | अष्टमहानागादीनां ना         |             |
| चम्रचमरान्यगामानि                                  |                                  | ्दिमुखा <b>द्दिना</b> म     | 847         |
| 2177 777 6 1 2 T 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | THE RESERVE AND PERSONS NAMED IN |                             |             |

## [06]

| विषया:                | पृष्ठाङ्घाः | विषयाः पृष्ठाद्वाः        |
|-----------------------|-------------|---------------------------|
| मूषिकनामानि           | 847         | कच्छपनामानि १६५५          |
| महामूषकनाम            | . S.,       | क्षभं दनामानि ः ४६६       |
| क्कुन्दरीनामानि       | 00000       | मग्ड्यनामानि "            |
| गीघानामानि            | 39.         | राजमण्डूकनामानि ""        |
| गौधेयनामानि           | Style of    | जनीकानामानि 😕 😕           |
| बर्वरीनामानि          | . 849       | दात्यू इनामानि "          |
| गृहगोधिकानामानि       | HEFE DA     | कोपीनामानि ं              |
| क्रवासनामानि ।        | party.      | पश्चिसामान्यनामानि १६७    |
| जाइकनामानि            | "           | रस्थनामानि 💮 🥕 🦸          |
| पश्चीनामानि           | , ,,        | प्रयोगनामानि ।            |
| ज्यंना भनामानि        | 17 17 to    | काष्ठकुष्ट्रनाम 🔧 🤋 .     |
| श्रञ्जलिकानामानि 🔐    | 8\$8        | वारकनामानि 8६८            |
| वृश्चिकनामानि         | · 5. · 10 I | कङ्गनामानि 💮 💛 "          |
| कर्यजनुकानामानि       | detel.      | काकनामानि , ,,            |
| विपौ लिकानामानि       |             | द्रोणकाकनामानि 🖖 🤫        |
| तैलिपपोलिकानामानि     | , , .       | ् चलूकनामानि ,,           |
| क्रणपिपौं लिकानामानि  |             | वबाुबीनामानि ,            |
| मत्कुणनामानि          | ,,          | चर्मकोनामानि ४६८          |
| जलजन्तुनामानि         | - 844       | मयूरनामानि ,,             |
| मस्यनाम               | THE TANK    | मयूरपचादीनां तत्त्वूजनस्य |
| मत्यविश्रेषनामानि     | . 39.       | च नामानि 🙀                |
| <b>श्चिश्चकनामानि</b> | Sorte U.    | क्रीचनामानि ,,,           |
| बुन्भीरनामानि         |             | नीखबी बनामानि ,,,         |

#### taci

| ि विषयाः               | पृष्ठाङ्काः | विषया: पृष्ठांङ्वा:                  |
|------------------------|-------------|--------------------------------------|
| वक्तनामानि             | . 842       | ः ज्ञान्रक्षनामानि १७३               |
| श्रकुनिनामानि          | 800         | रहरिकानामानि तहेदास 898              |
| प्रगानामानि            |             | ्राज्यसारकानामानि , ,,               |
| बलाकानामानि 💮          | , ,,        | क्ष्रत <mark>कानामानि "</mark>       |
| घर्मान्तकासुकीनाम      | 99          | श्राद्योतनामानि ,,,                  |
| चक्रवाक नामानि         |             | भूपरीनामानि ,,,,                     |
| षारसनामानि 💮           |             | दिखपानामानि १७५                      |
| <b>टि</b> ष्टिभीनामानि | 92          | अं काष्ठ अष्टकयोः नामानि ,,          |
| <b>ज</b> लकुबुटकनाम    | 808         | ार्वाजादिपचिविश्रेषागां 💎            |
| तिकानामानि :           |             | नामानि,,                             |
| .जलसर्पनामानि तहिशेषः  | , Ž         | ्रेन <mark>्स</mark> नामानि <u>,</u> |
| क्यनम्                 | 7. 97       | प्रदेशनामानि                         |
| चुद्रसारसलचयान्        | n.          | गटकाः बालचटकयोर्नाम "                |
| इंसनामानि              | 59          | श्रेरव्यवटकनामानि तझेद्य             |
| कल इंसनामानि           | 99          | खायकनामानि 8७६                       |
| राजचं सादिनामानि       | 0           | तिचिरिनामानि तन्नेद्व ,              |
| इंसीनाम                | 568         | च्द्रीज्वाम ,,                       |
| कुक्कुटनामानि          |             | भ्यामानामानि "                       |
| कपोतनामानि             | 99          | खबीतनाम 8७७                          |
| पारावतनामानि तहेदास    | 1           | तैसकीटनाम "'                         |
| कोकिलनामा नि           | <b>₹</b> 08 | इन्द्रगोपनाम "                       |
| को कि जाना मानि        | , 55        | समरना भानि "                         |
| शुक्रनामानि            | 17          | मधुमचिकानामानि "                     |

# [ ३२ ]

| A                        | पृष्ठाङ्गाः | विषया: पृष्ठाङ्गाः                   |
|--------------------------|-------------|--------------------------------------|
| विषयां:                  | 800         | पिटका-मस्रिका-विस्कोट-               |
| वरटानामानि               | 89=         | इन्द्रलुप्तनाम ४५१                   |
| दंशनामानि                |             | गलग्रुग्हो-गलगण्ड-                   |
| मचिकानामानि              |             | दन्ताबुंदनाम "                       |
| मग्रक्नामानि तद्वेदश्व   |             | गुला-पृष्ठग्रस्थि-परिचामग्र्ल-       |
| कालिकनामानि              | ď           | ् नाम भ                              |
| यूकानामानि               | . 0         |                                      |
| पद्मजानामानि             | 20          | जूता-नाड़ीव्रग्य-श्लीपदादि-<br>नाम " |
| श्वेतयूकानामानि          | 805         |                                      |
| कीटसामान्यतवणम्          | 92          | विष्टमानाहाशीनाम "                   |
| कीटिकानामानि             | , ,         | त्रतीसार-ग्रहणी-प्रवाहिका-           |
| मङ्गोरनामानि             | ,,          | विनाम ४८२                            |
| ष्रड्विन्दुकौटनामानि     | 99          | हृद्रोग-श्वास-व्यरनाम 🥠              |
|                          | E PERF      | इन्द्रजादिनाम 🤊                      |
| श्रथ रोगादिवग            |             | रक्तपित्तादिनाम                      |
| व्याधिसामान्यनाम         | 820         | तृष्णा-मदात्यय-मदनाम "               |
| राजयस्मनाम               | 37          | मूर्चा-खरमेदानाग्रदा-                |
| पार्डु-विसर्प-श्रोफ कासन | ाम ,,       | रीचकनाम "                            |
| चुत्-प्रतिभ्याय-नेलामय-  | SERVICE TO  | प्रमेच-मूलअच्छाश्मरौनाम "            |
| सुखरीगनाम                | ,,          | वातव्याधि कम्पनाम ४८३                |
| कुष्ठ-श्वितनाम           | , ,,        | ज्माऽऽल्खाम "                        |
| किलास-प्रिखी पामा-       | 1000        | तुन्द-बाह्याम-रक्तामयनाम "           |
| क गडू नाम                | 828         | जात्तगर्दभक्तनाम "                   |
| सञ्चार्यादिनाम           |             | विद्रवि-हृद्ग्रस्य भगन्दरनाम अ       |

# [ \$\$ ]

| विषयाः                     | पृष्ठाङ्गाः  | विषया:   | पृष्ठाङ्घाः |
|----------------------------|--------------|--|-------------|
| श्रिर:शूलादिनाम            | 829          | वैद्यप्रशंसा   | 820         |
| सन्तापान्तदीचनाम           | -97          | श्रीषधिखननविधिः तत   | मन्त्रय 🤊   |
| अवयवविशेषे दाइस विशे       | ोष-          | <b>श्रीवधमहिमा</b>   | 844         |
| विश्रेषनाम                 | 828          | <b>अष्टाङ्गवाधनम्</b>  | 97          |
| तन्द्राप्रखयनामानि         | 10           | श्रष्टाङ्गायुर्वेदाभिज्ञानभि   | ।चयोः       |
| जनाद-भूतोनादनाम            | 33           | मश्रंसाप्रशंसे   | 852         |
| श्रपसारकैमित्यनाम          | . Tu         | पिखतनामानि   |             |
| वातजादिव्याधिनाम           |              | बुडिनामानि   |             |
| रोगिनामानि                 | 27           | रोगहित्वादिनाम   | 19          |
| रोगिविश्रेषनामानि 📑        | 20           | पष्यभेदास्तब्बच्याच्च  | 820         |
| रोगसुलौ अाचारविश्रेषाः     | 8 <b>Z</b> 4 | विद्लनाम   | 99          |
| चिकित्सानाम                | , D          | पथ्यादिखरूपम्  | ,           |
| <b>जीवधनाम</b>             | . ,,         | <b>अन्ननामानि</b>  |             |
| श्रीष्ठधस्य रसादिपञ्च भेदा |              | ग्रवभेदाः  | 79          |
| रसादीनां खद्धपम्           | 2)           | व्यञ्जननामानि ,  |             |
| सप्तविधकाथनाम तह्यच्या     | च ४८६        | भोजननामानि   | 77          |
| प्रयोगकालमेदे चनुपानस      |              | भोजनभेदाः  | 856         |
| नामभेदः                    | 97           | षड्रसनाम   | , ,         |
| पथ्यनाम                    | 27           | मधुररसः  | 19.         |
| त्रारोग्यनामानि            | 20           | लवगारसः  | 20'         |
| वैद्यनामानि                | 20           | तित्तरसः   |             |
| सदैयलच्यम्                 | A 2 3        | कषायरसः  | D)          |
| <b>सुवैद्यलच्याम्</b>      | 829          | त्रसुरसः   | ,,          |
|                            | 100          | The state of the s |             |

### [8\$]

|                       |              | विषया: पृशङ्काः               |
|-----------------------|--------------|-------------------------------|
| विषया:                | ्पृष्ठाङ्काः |                               |
| कट्रसः                | 858          | तामसिकलचणम् ४८६               |
| मधुररसगुचाः           | 827          | मि <b>यप्रक्रतिलच्यम्</b> »   |
| लवणरसगुणाः            | 97           | गुर्यात्रयत्वचर्यम् ४८७       |
| तिक्षरसगुर्थाः        | ,            | वातस स्वरूपं प्रकीपकालम् "    |
| क्रायरसगुर्थाः        |              | पित्तस खरूपं प्रकीपकालय "     |
| श्रम्बरसगुर्थाः       | 2)           | श्लेषायः खरूपं प्रकीपकालय 🥠   |
| कट्रसगुवाः            | 27           | दोषतयस्य तिष्ठिंचा            |
| वातादिदीषप्त-हिहिरस   |              | भेदनिरूपग्रम् ४८८             |
| निश्रदसनिर्देशः       | \$2\$        | कालस नाम भेदलयच ,,            |
|                       |              | त्रतीतादिकालत्रयस्य नाम "     |
| परस्परिवस्त्रसाः      | ***          | साधारणादीनां चतुर्णां नाम ८८८ |
| रसानां विपाकाः        | 27           |                               |
| तिष्ठिरसमेदाः         | , bi         | भ्रावस्तुतिः ,,               |
| वृं ह्यादिनामानि      | 858          | पलादिनिरूपणम् "               |
| श्रथ सत्त्वादिव       | មិះ រ        | पच-मास-संवत्सरनिरूपणम् 🔑      |
| गण प्रसार्थ           | · 195 .3     | ऋतुनिरूपणम् ""                |
| सत्त्वादिगुणाः तदालका | विषय ४८५     | त्रयनादिनिरूपणम् "            |
| सत्तगुणखरूपम्         | , ,          | पलादिनाम ५ ५००                |
| रजोगुगखरूपम्          | 99           | प्रहर्गाम : ",                |
| तमोगुणखरूपम्          |              | ग्रहीगतनाम ,,,                |
| वायुनामानि            | . ,          | दिवानाम "                     |
| प्रकृतय:              | 82€          | दिनस्य त्रंग्रचतुष्ट्यम्      |
| सात्विकत्वचग्रम्      | 90           | maafa                         |
| राजसिकलचयम्           |              | श्रातपनामानि ,                |
|                       | 77           | अस्तिनातान "                  |

### [ ३५ ]

| विषया:                | पृष्ठाङ्गाः            | विषया: पृष्ठाङ्गा:           |
|-----------------------|------------------------|------------------------------|
| प्रभानामानि           | à 3 o                  | भाद्रपदनामानिः पू०३          |
| सन्धानामानि           | पु०१                   | त्राश्विननामानि ",           |
| क्यांनामानि           | ,,                     | कात्तिंकनासानि ५०8           |
| रातिनामानि            | . 17                   | ਲਾਗੰਗੀਨੰਗਾਸ਼ਾਤਿ              |
| च्योत्सी-तिमसाराविनाम |                        | पौषनामानि                    |
| श्रद्धरातनाम          | ,,                     | 777                          |
| च्योत्सानाम           | , ,                    | स्रतनां स्राह्म              |
| कान्तिनाम .           |                        | 317-16                       |
| श्रन्थकारनाम ,        | यु॰२                   | ਰਸ਼ਕਰਾਸ਼ਾਰਿ                  |
| त्रातपादिगुगाः        | al Ve                  | निदाघनामानि ,                |
| -3-                   | 39                     | A 7.22                       |
| प्रतिपन्नाम           | "                      | वर्षान।मानि पुरुष्           |
| पचदश्रीदयनाम          | 22                     | प्रवचामानि "                 |
| पचय खरूपं तद्वेदश्व   | 20]                    | हैमन्तनामानि ",              |
| शुक्षपचनामानि         | ,,                     | शिशिरनामानि ",               |
| क्रणपद्मनामानि        | "                      | प्रात्यद्विस्तुष्ठद्वम् ,,   |
| मग्डं ल कि प्रयाम्    | ,,                     | . उत्तरायणखरूपम् "           |
| पूर्विमानाम           | Йoэ́                   | दिचयायनस्रह्णम् "            |
| <b>अमावस्थानाम</b>    | ,,                     | विषुवस्य खरूपं नाम च "       |
| पचखरूपम्              |                        | वसरस भेदो नामानि च ५०६       |
|                       | AND THE REAL PROPERTY. | ऋतुविभेषे वायुपवहरास         |
| मासखरूपम्             | 94                     |                              |
| चैत्रनामानि 💮         | , 22                   | दिग्विग्रेषः "               |
| वैग्राख-च्यष्टनामानि  | "                      | पूर्वादिप्रवाहितवायुगुणाः ,, |
| त्राषाढ्-श्रावणनामानि | ,,                     | दिग्लचयम् "                  |
|                       |                        |                              |

### [ 34]

| विषया: पृष्ठाङ्गाः '   | विषयाः पृष्ठाङ्गाः       |
|--|--------------------------|
|  | तिप्रकरानाम ५११          |
| Idealta gar 162  | म्रञ्जनितयनाम ५१२        |
| विवादिन्तार । ना   | तिदोषनाम "               |
| दिक्चतुष्टयस्य सामान्यनाम "                                      | समित्रदीषनाम "           |
| पूर्वद्विययोगीमानि "   | त्रिकास्टकनाम "          |
| पश्चिमीत्तरयोर्नामानि »  | त्रिकार्षिकम् 🥠          |
| विदिग्रः "   | चातुर्भद्रकम् "          |
| विदिक्चतुष्ट्यस्य परिचयः ॥                                       | विजातकं चातुर्जातकच्च 59 |
| जर्ज्वाचीमध्यदिशां परिचयः ५०८<br>प्रङ्जादिक्रमेण मार्गपरिमाणम् » | कटुचातुर्जातकम् ५१३      |
|  | देववाद मः                |
| धान्यमानम् "   | यचकरंमः "                |
| श्रीष्ठचपरिसायम् "   | पञ्चसुगन्धिकम् "         |
| श्रय मित्रकादिवर्गः।   | पञ्चकोलकम् "             |
| वर्गपरिचयः ५०८   | पञ्चवेतसम् "             |
| तिकट्नाम ५१०   | लघ्पञ्चम्लकम् ५१८        |
| त्रिफलानाम ,,  | महापञ्चमूलकम् ै,,        |
| मधुरितपानाम %  | मध्यमपञ्चमूलकम् "        |
| सुगन्धित्रिपालानाम "   | पञ्चामृतयोगः ,,          |
| वराईकम् त्रावपुष्पच "  | दिव्यपचास्तम् ५१५        |
| चवणवयनाम पूरश  | पञ्चगव्यम् "             |
| चारत्रयनाम ,,  | पञ्चनिम्बम् "            |
| सम्तितयनाम "   | पञ्चाम्बर्मालम् ,,       |
| मधुरतयनाम ,,   | पालास्यपञ्चनाम् ,,       |

### [ 09]

| विषया:                | पृष्ठाङ्घाः  | विषया:                     | वृष्टाङ्घाः    |
|-----------------------|--------------|----------------------------|----------------|
| म्रस्त्वर्गः          | <b>ग्र</b> ६ | सर्वीष्रविगयाः             | पूर्०          |
| पश्चिषिडीष्रं चिक्सम् | 97           | विभ्रवार:                  | 99             |
| पचर्रौरीषम्           | 97           | सुगन्धामलकः                | सूर्           |
| पञ्चाङ्गम्            | पुरुष        | सन्तर्पगम्                 | ,,             |
| पंचगरा:               | 7)           | सन्य:                      | ,,             |
| 'पञ्चभूरग्रम्         | ,,           | रत्तवर्गः                  | 7)             |
| मचापचिवषम्            | ,,           | शुक्रवर्गः                 |                |
| <b>उ</b> पविषाि       | a 90         | भाग्यादिः किराताति         |                |
| मूलपञ्चकम्            | पुश्द        | <b>दिविधाष्टादशा</b> ष्ट्र |                |
| तिनोइं पचनोइनच        | "            | <b>प्रिख</b> रियौसन्वानम्  | 477            |
| ग्रहाङ्गपञ्चलोहकम्    | "            | श्रधैकार्थाद               |                |
|                       |              |                            |                |
| चारपञ्चकम्            | "            | तलैकार्थाः                 | प्ररूप्र       |
| लवणपञ्चनं लवणष्ट्ना   |              | द्यर्थाः                   | व्रव—स्रम      |
| चारषट्कम्             | "            | त्रर्थाः                   | त्रप-प्र-      |
| सप्तघातवः             | पूर्ट        | चतुरर्थाः                  | ¥8.€ #85       |
| महारसाष्ट्रकम् .      | "            | पञ्चार्थाः                 | 88¥—488        |
| उपरसाः                | 77           | षड्याः                     | #8#—#8 <b></b> |
| सामान्यरसाः           | "            | सप्तार्थाः                 | पू8ई—पू8७      |
| त्रष्टलोच्यम्         | ,,           | ग्रष्टार्थाः               | ,,             |
| चारदश्रकम्            | 12           | नवार्घाः                   | ¥85            |
| मूलद्राकम्            | <b>पूर</b> • | द्रमार्थाः                 |                |
| मधुरजीवकादिगणः        | "            | एकादश्रार्थाः              | पु8=-पु82      |
| त्रष्टवर्गः           | 97           |                            |                |
|                       |              |                            |                |

# राजनिघर्टी साङ्गितिकाः भन्दाः।

| · ·                                       |       |     | चलाल ।       |
|---|-------|-----|--------------|
| <b>उत्</b> ॰                              |       | *   |              |
| <b>जत्</b> ०<br>वा                        | 30%   |     | कर्णाटः।     |
|   |       |     | कोङ्गण।      |
| कों                                       |       | **  |              |
| गुज                                       |       |     | ्रार्जरः।    |
| गौ  | ,     |     | गौड़: 1      |
| तां                                       |       | • 1 | तामिनः ।     |
| ैते                                       |       |     | तैसङ्गः।     |
| çi :                                      |       | 90  | दाचिणात्यः।  |
| नेपा॰                                     | a jan | :   | नेपाल: !     |
| पञ्जा॰                                    |       |     | पञ्जाव:।     |
| फां                                       |       |     | फारसी।       |
| T. 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 |       |     | महाराष्ट्रः। |
| मं ्                                      |       | 41  |              |
| वम्॰                                      |       |     | ्वस्व इ।     |
|   |       |     | हिन्दी।      |
| हिं                                       |       |     |              |

# राजनिघर्दुः।

### सङ्लाचरगम्।

श्रीकण्डाचलमेखलापरिणमलुक्षीन्द्रवुद्धा रदप्रान्तोत्तिक्षितसंस्तान्दगिलतैः श्रीतैरपां श्रीकरैः।
निर्वाण मदसंच्चरे प्रमुदितस्तेनाऽऽतपत्रश्चियं
तन्वानेन निरन्तरं दिशतु वः श्रीविष्वराजो सुदम्॥१॥
कर्प्रचोदगौरं धतकपिलजटं तीचणं चन्द्रमौलिं
सौधं कुण्डं सुधांश्चं वरयुतमभयं दोश्चतुष्के दधानम्।
वामोत्सङ्गे वहन्तं विविधमणिगणालङ्कतामुक्चनलङ्गीं
श्रवीणीं स्वानुरूपां तमनिश्यमस्तिशाख्यमीशं स्मरामि॥२॥

श्रीमक्षहेग्निल्नासनिर्जरेन्द्रास्तत्राश्चिनावय ततो तितन्द्रवस ।
धन्वन्तरिसरकसुश्चतस्रिस्यास्तेऽप्यायुरागमकतः क्षतिनो जयन्तु ॥ ३ ॥
शक्षुं प्रणम्य शिरसा खगुरूनुपास्य
पित्रोः पदाजयुगले प्रणिपत्य भन्त्या ।
विम्नेशितारमधिगम्य सरस्ततीस्व
प्रारिक्ष भैषजिह्नताय निष्चण्टुराजः ॥ ४ ॥

### श्रय ग्रन्थप्रसावना।

धन्वन्तरोय-मदनादि हलायुधादीन् विखप्रकाध्यमरकोषसभेषरांजी । त्रालोक्य लोकविदितां विचित्त्य शब्दान् द्रव्याभिधानगणसंग्रह एष सृष्टः॥ ५॥ श्रायु:श्रुतीनामतुलोपकारकं धन्वन्तरिग्रत्यमतानुसारकम्। याचचाहे लचणलचाधारकं नामोच्यं सर्वरजापसारकम् ॥ ६॥ निर्देशलच्चपरीचणनिर्पयेन नानाविधौषधविचारपरायणो यः। सोऽधीत्य यत् सकलमेनमवैति सर्वे तसादयं जयति सर्वनिघर्ट्राजः॥ ७॥ नानाविधीषधिरसाह्वयवीर्य्यपाक-प्रस्तावनिस्तरणपण्डितचेतनोऽपि। मुद्यात्यवश्यमनवेच्य निघर्ट्मनं तस्माद्यं विरचितो भिषजां हिताय ॥ ८॥ निघएना विना वैद्यो विद्वान् व्याकरणं विना। ग्रनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम् ॥ ८॥

<sup>\*</sup> राजौ—भोजराज-भेषराजौ।

#### यम्यप्रस्तावना ।

नानादेशविश्रेषभाषितवशाद्यत् संस्कृतप्राक्कताः पश्जंशादिकनान्त्रि नैव गणना द्रव्योचयव्याद्वतौ । तस्मादत्र तु यावतास्त्युपक्कतिस्तावन्त्रया ग्टच्चते पाथोदैः परिपोयते किमखिलं तद्वारि वारां निष्ठेः ॥ १०॥

ग्राभौरगोपालपुलिन्द्तापसाः पान्यास्तयाऽन्येऽपि च वन्यपार्गाः। परोच्य तेभ्यो विविधोषधाभिधा-रसादिबद्धाणि ततः प्रयोजयेत् ११॥ नानाभिधेयसय यत्र शिवाससङ्गा-श्यामादिनाम निगमेषु निवेशितं यत्। प्रस्ताववीर्थरसयोगवशादस्य बुद्धा विस्थ्य भिषजां च धृतिविधेया ॥ १२ ॥ नामानि कचिदिह रूढितः खभावात देश्योत्त्या क्षचन च लाञ्चनोपमाभ्याम्। वीर्येण कचिदितराह्ययादिदेशात् द्रव्याणां भ्वमिति सप्तधोदितानि ॥ १३ ॥ अतीषधीनिवहनासगुणाभिधान-प्रस्तावतस्तदुपयुक्ततयेतराणि। च्वेत्रावनीधरनदीनरतिर्थ्यगादीन् \* व्याख्यागुणैरतिसविस्तरमीरितानि ॥ १४ ॥

एकः कोऽपि सचेतसां यदि मुदे कल्पेत जल्पे गुण-स्तवाम्येऽपि विनार्थनां बहुमतिं सन्तः खयं तन्वते।

<sup>\*</sup> तिर्थंगादीन् इत्यत्न कन्दोऽत्रोधात् पुंख्लम्।

अप्याद्रीक्षतग्रैलसानुगिशलामापीय चान्द्री सुधा-मन्भोधिः कुमुदैर्दृशञ्च जगतां नन्दन्ति केनार्दिताः॥ १५॥

श्रप्रसिद्धाभिधं चात्र यदौषधमुदीरितम् ।
तस्याभिधाविवेकः स्यादेकार्यादिनिरूपणे ॥ १६ ॥
रम्भाश्यामादिनान्तां ये स्वर्गस्तीतरुणीति च ।
श्रयां नानार्थतन्त्रोक्तास्यक्तास्तेऽस्मिनपार्थकाः ॥ १७ ॥
व्यक्तिः कताऽत्र कर्णाट-महाराष्ट्रीयभाषया ।
श्रान्थुलाटादिभाषासु ज्ञातव्यास्तद्दयाश्रयाः ॥ १८ ॥

एतित्तनेत्रगुणनीयगुणानुविद्य-वर्णाब्यवृत्तसितमीतिकवर्गसारम् । कण्ठे सतां सकर्जानईतिधामनाम-चिन्तामणिप्रकरदाम करोतु केलिम् ॥ १८॥

यतानूपादिरस्मादविनरय गुडूचीयताह्वादिकी ही
तत्रान्ते पर्पटादिस्तदुपरि पिटती पिप्पलीमूलकादिः।
याल्याच्यादिः प्रभद्रादिकमनु करवीरादिराम्नादिरन्यस्तस्याये चन्दनादिस्तदनु निगदितः कोमलः काञ्चनादिः॥२०॥
पानीयः चौरपाल्यादिकमनु कथितो मांसमानुष्यकादिः
सिंहादिः स्याद्गदादिस्तदनु भवति सत्त्वाधिको मित्रकोऽन्यः।
एकार्यादिस्तदेतैस्त्रिकरपरिचितैः प्रातिभोन्येष्रसर्गं
वर्गेरासाद्य वैद्यो निजमतहृदये निस्तरां निश्चनोतु॥ २१॥

काश्मीरेण कपर्दिपादकमलद्दन्दार्चनोपार्जित-त्रोसीभाग्ययगःप्रतापपदवी धान्ता प्रतिष्ठापिताः। सेयं श्रीनरसिंहनामिवदुषो स्ववैद्यविद्यास्थितिः
प्रीत्या प्राप्तसुवर्णराजिरचना चित्नोज्ज्वला पीठिका॥ २२॥
श्रन्यत्न विद्यमानलादुपयोगानवेचणात्।
ह्या विस्तरभीत्या च नोत्तो गुणगणो मया॥ २३॥
दति ग्रन्थप्रसावना।

# ः अथ यानूपादिवर्गः।

अध जानूपदेशः।—

नानाचीणीजनानाजलस्रगसहितं निर्भरत्रातशीतं शैलाकीणं कनीयः कुररमुखखगालङ्कतं तास्त्रभूसि । विश्वदृत्रीच्यादिकं यत् स्थलमतिविपुलं नीरसं यस्वनुणां पित्तम्नं श्लेषवातप्रदमुदरगजापासदं स्थादनूपम् ॥ १ ॥

> तचीत्रस्तरस्तिजलचणधारिभूरि-च्छायावतान्तरवहचडुवारिमुख्यम् । ईष्रस्रकाशस्तिलं यदि मध्यमं तत् एतच नातिबह्लाख्यु भवेत्कनीयः ॥ २ ॥ श्रय जाङ्गबरेशः ।—

यत्नानूपविपर्थ्ययस्तनुत्वणास्तीणी धरा धूसरा मुद्गवीचियवादिधान्यप्रलदा तीव्रोष्मवत्युत्तमा । प्राय: पित्तविव्विष्ठिष्ठदतवलाः स्युनीरेजः प्राणिनो गावीऽजास पय: चेरन्ति बद्द तत्क्पि जलं जाङ्गलम् ॥ ३॥

#### राजनिघण्टः।

एतच मुख्यमुदितं खगुणैः समग्र-मल्पाल्पभूरु हयुतं यदि मध्यमं तत्। तचापि कूपखनने सुलभाम्ब यत्तज्-चोयं कनीय इति जाङ्गलकं त्रिरूपम्॥४॥

त्रध साधारगदेगः।--

लक्कोकीलति यत किञ्चिदुभयोस्तज्जाङ्ग्लानूपयोगींधूमोल्ज्ययावनालविलस्नाषादिधान्योद्भवः ।
नानावर्षमग्रेषजन्तुसुखदं देशं बुधा मध्यमं
दोषोद्भृतिविकोपशान्तिसिहतं साधारणं तं विदुः ॥ ५ ॥
तच साधारणं हेधाऽऽनूपजाङ्ग्लयोः परम् ।
यत यत गुणाधिकां तत्र तस्य गुणं भजेत् ॥ ६ ॥
मुख्यं तहेश्रवैषम्यान्नास्ति साधारणं क्षचित् ।
स्त्रात्वाह्मस्त्र तत्त्वस्य तहिधैवेदिमिष्यते ॥ ७ ॥

त्रय चित्रभेदाः।-

च्रितभेदं प्रवच्यामि शिवेनाख्यातमञ्जर्मा ।

ब्राह्मं चात्रं च वैश्वीयं श्रीद्रं चेति यथाक्रमात् ॥ ८ ॥

तत्र चेत्रे ब्रह्मभूमीरु हाळां वारिस्मारं यत्नुशाङ्करकीर्णम् ।

रम्यं यच खेतमृत्सासमेतं तह्याचष्टे ब्राह्ममित्यष्टमूर्त्तिः ॥८॥

तामभूमिवलयं विभूषरं यन्मृगेन्द्रमुखसङ्गुलं कुलम् ।

घोरघोषि खदिरादिदुर्गमं चात्रमेतदुदितं फिनाकिना ॥ १०॥

शातकुक्मनिमभूमिमाखरं खर्णरेश्वनिचतं विधानवत् ।

सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितं वैश्वमाख्यदिदमिन्दुशेखरः ॥ ११॥

म्यामस्यनाच्यं बहुमस्यभूतिदं नसत्तृ वैर्वेब्बुनवृत्तविह्य । धान्योद्भवै: कर्षकानोकहर्षदं जगाद मौद्रं जगतौ वृषध्वज: ॥१२॥

द्रव्यं चेत्रादुदितसनघं ब्राह्म तत् सिंडिदायि चत्रादुत्यं बलिपलितजिडिखरोगापहारि । वैद्याज्ञातं प्रभवतितरां धातुलोहादिसिडी शौद्रादेतज्जनितसिखलव्याधिविद्रावनं द्राम् ॥ १३ ॥

ब्रह्मा प्रत्नः किन्नरेशस्तथा भूरित्येतेषां देवताः स्युः क्रमेण । प्रोक्तास्तत्र प्रागुमावत्तभेन प्रत्येकं ते पश्च भूतानि वच्छे॥१४॥

> पीतस्मुरद्वलयश्रकीरलाश्मरस्यं पीतं यदुत्तमस्यगं चतुरस्वभूतम् । प्रायश्व पीतकुसुमान्वितवीरदादि तत्पार्थिवं कठिनमुद्यदश्रेषतस्तु ॥ १५ ॥

ग्रर्डचन्द्राक्तिभ्वेतं कमलाभं दृषचितम्। नदीनदजलाकीर्णभाष्यं तत् चेत्रमुच्यते ॥ १६ ॥ खदिरादिदुमाकीर्णं भूरिचित्रकवेणुकम्। निकोणं रक्तपाषाणं चेत्रं तैजसमुत्तमम्॥ १७॥

धूमखलं ध्रमद्रवत्परीतं षट्कीणकं तूर्णम्गावकीणम्। शाकीस्तृणैरिच्चितरूचत्वचकं प्रकारमेतत् खलु वायवीयम्॥१८॥ नानावणें वर्त्तुलं तत्प्रशस्तं प्रायः शुभ्नं पर्वताकीणमुचैः। यच खानं पावनं देवतानां प्राप्त चेत्रं तीचणस्त्वान्तरिचम्॥१८॥ द्रव्यं व्याधिहरं बलातिश्यकत् खादु खिरं पार्थिवं स्थादाप्यं कटुकं कषायमखिलं शीतं च पित्तापहम्।

### राजनिषयुः।

यिततां लवणं च दोप्यमक्जिचोणां च तत्तेजसं वायव्यं तु हिमोश्यमन्त्रमवलं स्याद्राभसं नीरसम्॥ २०॥ ब्रह्मा विष्णु स रहीऽस्मादीष्वरीऽय सदाशिव:। द्रत्येताः क्रमतः पञ्च चित्रसूताधिदेवताः ॥ २१ ॥ जिला जवादजरसैन्यमिहाजहार वीर: पुरा युधि सुधाकलभं गरुत्मान्। की वैंस्तदा भुवि सुधायक लै: किलासी-हचादिकं सकलमस्य सुधांश्ररीणः॥ २२॥ तत्रोत्पन्नास्तुत्तमे चेनभागे विप्रीयादी विपुषो यत्र यत्र । चौणीजादिद्रव्यभूयं प्रपन्नास्तास्ताः संज्ञा बिभ्नते तत्र भूयः ॥२३॥ एवं चेतानुगुखोन तज्जा विप्रादिवर्षिन:। यदि वा लच्चणं वच्चाग्यमोद्याय मनीषिणाम् ॥ २४ ॥ किसलयक्षसी प्रकाण्ड्याखादिषु विष्यदेषु वदन्ति विप्रमेतान्। नरपतिमतिलोह्तिषु वैध्यं कनकनिभेषु सितेतरेषु शूद्रम् ॥२५॥ विप्रादिजातिसम्प्रतान् विप्रादिष्वेव योजयेत्। गुणाक्यानिप वचादीन् प्रातिलोम्यं न चाचरेत् ॥२६॥

ग्रपि च।-

विप्रो विप्रायेषु वर्षेषु राजा राजन्यादी वैश्वमुख्येषु वैश्वः।

श्रूद्रः श्रूद्रायेषु शस्तं गुणाच्यं द्रव्यं नैव प्रातिलोम्येन किञ्चित्॥२७
द्रव्यं यदङ्क्र्रजमान्त्रार्य्यास्तत्ते पुनः पञ्चविधं वदन्ति।

वनस्रतिश्वापि स एव वानस्रत्यः चुपो वीरुद्यौषधीश्व ॥ २८॥

त्रेयः सोऽत्र वनस्रतिः फलति यः पुष्पैर्विना तैः फलं

वानस्रत्य द्रति स्मृतस्तनुरसी क्रस्तः चुपः कृष्यते।

या वेज्ञत्यगमादिसंश्रयवद्यादेषा तु वज्ञी मता
प्राच्यादि: पुनरोषधि: फलपरीपाकावसानान्विता ॥२८॥
स्वोपुंनपुंसकत्वेन त्रैविध्यं स्थावरेष्वपि।
श्रुण वच्यामि तज्ञच्य व्यक्तमत्व ययाक्रमम्॥ ३०॥
स्च्वेणुतक्वीकदादयः स्कन्धकाण्डफलपुष्पपज्ञवै:।
स्विग्धदीर्धतनुतामनोरमास्ताः स्त्रियः खलु मता विपश्चिताम्॥३१॥
यत्र पुष्पप्रवालादि नातिदीर्धं न चाल्पकम्।
स्थ्रां परुषमित्येष पुमानुक्तो मनीषिभि:॥ ३२॥
स्त्रीपुंसयोर्धत्व विभाति लच्च दयोरिप स्कन्धफलादिकेषु।
सन्देहदं नैकतरावधारि नपुंसकं तिद्ववधा वदन्ति॥ ३३॥
द्रश्यं पुमान् स्थादिखलस्य जन्तोरारोग्यदं तद्दलवर्षनञ्च।
स्त्री दुर्वेला स्त्रस्यगुणा गुणाच्या स्त्रीष्वेवन कापि नपुंसकः स्थात्३४

तथा च।-

प्राप्नोत्याश्च भिषक् प्रयोगिवषयप्रावीख्यपारीणताऽहं कुर्वाणसुपर्वसंसदगदङ्कारिक्रयाकी श्रलम् ॥३८॥
श्रस्त सतमीखरः श्रुतयशा यमष्टादशप्रभेदविधवाङ्मयास्वृनिधिपारपारीणधीः ।
श्रमुष्य नृहरोशितुः क्रितवरस्य वर्गः क्रतावसावगमदादिमः सदिभिधानचूड़ामणी ॥ ३८॥
इति श्रोनरहरिपण्डितिवर्गित राजनिष्यशी
श्र.नूपादिवर्गः प्रथमः ।

# अय धरखादिवगः।

-0\*0-

त्रय भूमिनाम।—

त्रय धरणि-धरिती-भूतधाती-धरा-भूचिति-मिह-धरणीडा-च्मा-वनी-मिदिनीच्या।

ग्रविनरद्धिवस्ता गी: चमा चौणिरुवी

कुरिप वसुमतीरा काम्यपी रत्नगर्भा॥१॥

चमाऽऽदिमा भूमिरिला वसुन्धरा

वरा च धाची वसुधाऽचलोर्वरा।

विष्कम्भराद्या जगती चिती रसा

पृष्वी च गोता पृथिवी पृथुर्महो॥२॥

चौणी सर्वेसहाऽनन्ता भूतमाता च निश्चला।

भूमी वीजप्रस्ः ग्रामा क्रोड़कान्ता च कीर्तिता॥३॥

अयोर्वरभूमि:।-

सा भूमिरुर्वराख्या या सर्वश्रस्योज्ञवप्रदा। समस्तवस्तूज्ञवनादुर्वरा नाम भूरियम् ॥ ४ ॥ श्रथ मृत्तिकानाम।—

अथ स्रात्तवानाम।—

सृत्युत्तिका प्रशस्ता सा सृत्या सृत्येति चेष्यते ॥ ५ ॥ त्रय चारमकभृमी।—

चारा स्टूषरो देशस्तदानिरणसूषरम्। खिलमप्रहतं प्राहुर्धन्वा तु मरुर्चिते॥ ६॥ (खड्सरादिकरतादिभूमिः।)

त्रय जाङ्गबदेशः।—

सर्प्रायस्तु यो देश: स चोक्तो जाङ्गलाभिध:।
अथ क्रणपाण्ड्भूमो।—

कृष्णसत् कृष्णभूमि: स्यात् पाण्डुभूमिस्त पाण्डुसत्॥०॥ (मं पाण्डरोभुंई। कं करियभूमि निवियभूमि।)

त्रय प्राकेरा भूमिः।—

स प्रार्करः प्रार्किरिलो देशो यः प्रकरान्वितः । सैकतः स्थात् सिकतिलः सिकतावां यो भवेत् ॥ ८॥ (मं वालुवटभूमि । कं मझलभूमि ।)

अध देशनाम।-

देशो जनपदो नीव्वदिषयश्चोपवर्त्तनम्।

प्रदेश: स्थानमास्था भूरवकाश: स्थिति: पदम् ॥ ८ ॥

अय नदीमातृक्तभूमिः देवमातृक्तभूमिय ।-

नदाम्बुजैर्भृतो धान्यैर्नदीमात्म उच्यते। वृष्ट्यम्बुजैसु तैरेष देश: स्याद्देवमात्मः॥ १०॥

### राजनिष्ठग्युः।

हेमात्रकभूमिः।—
नदीवृष्टिजलोडूतैनीनाधान्यैः समावृतः।
देशो ह्यानुगमनात् स हैमात्रक उचते॥ ११॥
प्रथ सुद्रादीनां चैत्रम्।—

मुद्रादोनां चेत्रमुद्भृतिदं यत्तन्योद्गोनं कोद्रवीणं तथाऽन्यत्। त्रेहेयं स्थात् किञ्च शालेयमेवं बुद्धाण्यञ्चाणवीनञ्च विद्यात्॥१२॥

श्रय माथं माषीणं भद्धं भाद्गीनमुम्यमीमीनम्। तित्वं तैलीनं स्यादिति षष्टिकाञ्च यव्यञ्च ॥ १३ ॥ श्राकादेर्यत्न निष्पत्तिरेतत् स्याच्छाकशाकटम्। श्राकशाकिनमित्येतत्त्रया वास्तुकशाकटम् ॥ १४ ॥

श्रव भैतनाम ।—
श्रव गिरि-धरणीभ्र-गोत्र-भूस्त्श्रिखरि-श्रिलोच्चय-ग्रैल-सानुमन्तः ।
चितिस्टग-नगावनीधराद्रिस्थिर-कुधराञ्च धराधरी धरञ्च ॥ १५ ॥
श्रहार्थ्यः पर्वतो ग्रावा कटको प्रस्थवानिष ।
शृङ्गी च वृच्चवांश्वेति ग्रव्दाः भैलार्थवाचकाः ॥ १६ ॥

श्रथ पर्वतावयवनास।—

मध्यमसु नितस्व: स्थात् कटकं मेखला च सा।
तटे तटी प्रपातश्व प्रस्थे सु: सानुसानुनी ॥ १०॥
(मं टेड्ड्जियादि। कं किस्वेद्टादि।)

श्रय श्रिखरनाम।— शृङ्गं तु श्रिखरं कूटं कन्दरं कन्दरा दरी। मं डोङ्गराचेंगिखर। कं कोड्गह्न।) अध गुहानाम।—

विलं गुष्टा शिलासिस्टिर्देवखातञ्च गञ्चरम् ॥ १८॥ (मं पर्वतगुद्धा। वः वट्टदगोरि।)

श्रघ प्रत्यन्तपर्वतादिः।—

<mark>प्रत्यन्तगिरयः पादा गण्डग्रेलाश्च्रतोपलाः।</mark> त्राक्तरः खनिरित्युक्तो धातवो गैरिकादयः ॥ १८ ॥

त्रघ पाषायानाम।-

यावा प्रस्तरपाषाणी दृषदश्मीपनः शिना। लोहानि विविधानि स्युरस्मसारादिसंज्ञया ॥ २०॥

(मंपायक्। कंका हा)

अध कानननाम।-

काननं गहनं सत्रं कान्तारं विपिनं वनम्। अरखमटवी दावो दवश वनवाचकाः ॥ २१॥

(मंराण। कं अटवि।)

त्रशोद्याननाम।—

अन्यदुवानमाक्रीड़ो यत क्रीड़न्ति रागिण:। नृपालयेषु प्रमद्वनमन्तः पुरोचितम् ॥ २२ ॥

( मं घरापासिलमला । तं दित्तिलवनाकु । )

त्रय महारखनाम।-

महावनमरखानी महारखं महाटवी। (मं विस्था वं चेरडवि।)

श्रय उपवननाम।

श्रयोपवनमारामः पुरप्रान्ते वनन्तु यत् ॥ २३ ॥ (मं मले। कंतीट।)

त्रय वचनाम।-

कुजः चितिरहोऽिष्ट्रियः शिखरिपादपौ विष्टरः कुठस्तर्रनोकहः कुरुष्ट-भूरुष्ट-द्रु-द्रुमाः । अगो नगवनस्पती विटिपशाखि-भूजागमा महीज-धरणोरुष्ट-चितिज-वच-शालादयः ॥ २४॥

त्रथ फलित इद्यनाम । -

फिलतः फलवानिष फिलन्य फिली तथा। फिलेग्रहिरबस्यो यः स्थादमीघफलीदयः॥ २५॥

त्रघ बन्धवृत्तनाम।—

श्रथावकिशो ब्रस्थोऽयं विफलो निष्फलोऽफल: । (मं वाच्मारूषु। कं मञ्जेमर:।)

त्रष्य पुष्पादपृष्पाच-फिलतव्वयोर्नाम ।— उत्ती प्रागात्मना भिन्नी वानस्रत्यवनस्रती॥ २६॥

श्रय मूलनाम।—

मूलन्तु नेतं पादः स्यादिङ्गश्चरणिमत्यिप । ( मं वेर । )

त्रथ त्रङ्गरनाम।—

छद्गेदस्बङ्गुरो न्नेयः प्ररोहोऽङ्कृर इत्यपि ॥ २० ॥ त्रय वृत्त्विनतस्वनामः —

श्रवांग्भागोऽस्य बुभ्नः स्यात् नितम्बः सप्टथुर्भवेत्। (मं व्रचबुड़ा कं मरनमोदन्ता)

त्रथ खन्धनाम।-

श्रास्त्रस्थात् प्रकारण्डः स्थात् कारण्डो दरण्डश्च कथ्यते ॥ २८॥ (मं घोरखान्धिया। कं इर्गगोम्बु।)

### धरखादिवर्ग :।

[ १५]

त्रय प्राखानाम।

क्तन्धप्रमाणास्य लतासु शाखाः

क्तन्धोत्रयाखासु भवन्ति यासाः।

(मं साज्ञीखाधी। वं सयाकीम्बु।)

त्रय जटादिनाम।-

जटा: शिरास्तस्य किलावरोहाः

शाखा शिका सज्जिन सारमाहः॥ २८॥

(मं पारम्बे। कं बौललु।)

त्रय वस्तार त्वचोर्नाम।-

निष्कुटं कोटरं प्रोक्तं त्वचि वल्लान्तु वल्ललम्। (मंटोलाञ्चनिकग्रन्तरसालि। वं होलु, मते जलसेका।)

त्रघ मझरीनाम।-

नवपुष्पाद्यशाखाये वसरी मञ्जरी तथा ॥ ३०॥

(मं पञ्जिवया। कं ति लिलु।)

श्रय पर्यनाम।-

पर्णे पत्नं दलं बहें पलाशं कदनं कद:।

(गौ पाता। मं पान। कं एखे।)

अध पञ्चवनाम।-

स्यात्पत्तवः किश्चयः प्रवातः पत्तवं नवम् ॥ ३१ ॥

(मं लोहिते पद्धव। वं केन्द्लिलु।)

त्रथ विखारनाम।

विस्तारो विटपः प्रोत्तः प्रायन्तु शिखरं शिरः।
(मं विस्तारव्रचाचा। कं मरनविस्तारम्।)

### राजनिष्यणुः।

श्रथ पर्योशिरानाभ ।--

मादिः पर्णिशिरा ज्ञेया वृन्तं प्रसंवबन्धनम् ॥ ३३॥ (मंपर्णिशिर। वां कीरवस्।)

ग्रय कलिकानाम।—

कुलचारकजालककलिकासु कुडमले कथिताः।
(मं मुकुले। कं मोगेयपेस्क।)

त्रय पृष्पनाम।—

कुसुमं सुमनः प्रस्नप्रसवसुमं स्नुफुल्लपुष्यं स्थात् ॥३३॥ (मं फुल। कं इविनयेसरः।)

ग्रय मनरन्दनाम।—

मकरन्दो मरन्द्श्व मधु पुष्परसाह्वयम्। 🔑

त्रघ पुष्पसारः।—

पौष्यं रजः परागः स्थान्मधुली धूलिका च सा ॥३४॥

त्रय पुष्पगुक्तनाम।—

गुच्छो गुलुञ्छ: स्तवको गुच्छक: कुसुमोचय:। (मं घींस, थोवानाम। कं गोचलुः।)

श्रय परिमलनाम।— समं परिमलामोद-गन्धसौरभ्यसौरभम्॥ ३५॥

त्रघ प्रस्कुटननास।---

उक्तृभितमुक्तृभं स्मितमुक्तिषितं विनिद्रमुनिद्रम् । उन्मीलितं विकृभितमुद्वुद्वीद्भिद्द्रम्भनमुद्भिनम् ॥३६॥ विकसितह्यसितविकस्वरिकचव्याकीश्रपुद्धसम्पुद्धम् । स्मुटमुद्दितद्वितदीर्थस्पुटितोत्पुद्धप्रपुद्धमेकार्थम् ॥३०॥

### धरखादिवर्गः।

[68]

श्रय मुक्क तिनाम।— निद्राणं मुद्रितं सुप्तं मिलितं मीलितं नतम्। निस्रूणितं सङ्क्षचितं सनिद्रमलसं समम्॥ ३८॥

त्रय प्रसादिनाम।-

त्राहुस्तरूणां पालमत्र श्रस्थं तदाससुत्तं हि शलाटुसंज्ञम् । श्रष्मन्तु वानं प्रवदन्ति गुल्यस्तस्वी प्रकाण्डैरहितो सहीज: ॥३८॥

अध लतानाम ।-

उत्तपं गुल्मिनी वोरुक्षता वस्ती प्रतानिनी। व्रति: प्रतिस्वैषा विस्तीर्णा वीरुदुचते॥ ४०॥ (मं वेलीनाम। कं वेडि।)

अथ नचलवृत्तनाम।-

श्रथ वचामि नचत्रवचानागमलचितान्।
पूज्यानायुष्यदांश्चैव वर्षनात्पालनादपि ॥ ४१ ॥
विषद्ग-धात्री-तर्ग-हेमदुग्धा जम्बून्तया खादिरक्षणवंशाः।
श्रव्यत्यागी च वटः पनाशः प्रचन्तयाऽम्बष्ठतरुः क्रमेण ॥ ४२ ॥
विल्वार्जुनौ चैव विकद्भतोऽय सकेसराः शम्बरसर्जवञ्जलाः।
सपानसार्काश्च शमीकदम्बान्तयाऽऽम्ननिम्बौ मधुकद्वमः क्रमात्४३

अभी नचत्रदैवत्या वचाः स्युः सप्तविंयतिः।

श्रिष्टिक्रमादेषामेषा नचत्रपहितः ॥ ४४ ॥ यस्त्रेतेषामात्मजन्मर्चभाजां मर्च्यः कुर्याद्वेषजादीन्मदान्यः । तस्यायृष्यं श्रीकष्ठत्रञ्च पुत्रो नम्बत्येषा वर्षते वर्षनादीः ॥ ४५ ॥

> त्राचार्याक्ती स्पुष्टमथ वहत्सुश्रुते नारदीये नारायखां कचिदपि तथाऽन्यत तन्त्रान्तरेषु।

> > रा-- २

## [ 8= ]

### राजनिष्ठरंटुः।

ज्ञालाऽपोह प्रथितभिष्जां नातिदृष्टोपयोगं नैवास्माभिर्विपदितभिदं गौरवादुग्रन्थभीते: ॥ ४६ ॥

अध त्यावचनाम।

तालाद्या जातयः सर्वाः ऋमुकः केतको तथा।

खर्जूरोनारिकेलाद्यास्तृगव्याः प्रकोक्तिताः॥ ४०॥

सर्वाणि चार्द्राणि नवीषधानि

स्वीर्थ्यवन्तीति वदन्ति धीराः।

सर्वाणि ग्रुष्काणि तु सध्यमानि

ग्रुष्काणि जीर्णानि च निष्फलानि॥ ४८॥

वास्तृककुटजगुडूचीवासाकुषाग्डकादिश्रतपत्नी।

इत्यादि तु नित्याद्रं गुणवच्छुष्कं यदा तदा दिगुणम्॥ ४८॥

विङ्ङ्गं सधुःमण्डूरो दाङ्मिं पिप्पलो गुडः।

नागवन्नीन्दुश्रशाखाद्याः पुराणाः स्युर्गुणोक्तमाः॥ ५०॥

काठिन्यं सध्यकाठिन्यं सार्दवं चेति तु तिधा।

द्रव्याणामिष्ठ सर्वेषां प्रकृतिः कथ्यते बुधैः॥ ५१॥

द्रव्याणां सन्ति सर्वेषां पूर्वेक्तास्त्रयो गुणाः।

रसो वीर्यं विपाकश्र ज्ञातव्यास्तेऽतियत्नतः॥ ५२॥

रसस्त मधरादिः स्वाहीर्यं कार्यसमर्थता।

ग्रीतमुणाञ्च रूचच स्निग्धं तीन्त्यां गरु ।

परिणामे गुणाब्यत्वं विपाक इति संज्ञितम् ॥ ५३ ॥

पिच्छिलं विशदं चेति वीर्थ्यसष्टविधं स्मृतम् ॥ ५४ ॥

इन्दुः कर्ण्रः।

निष्कुटप्रमदकाननादिषु द्रव्यमेतदिप निर्भुणं भवेत्।
काप्यलीकवचनोपकर्णनात् काप्यसाध्वनितादिसेवनात्॥ ५५॥
जातं समग्राने वल्मीके देशे मूलादिदूषिते।
द्रव्यं नैवोपयोगाय भिषजामुपजायते॥ ५६॥

कन्दं हिमत्तीं शिशिरे च सूलं पुष्यं वसन्ते गुणदं वदन्ति । प्रवालपत्नाणि निदावकाले स्यु: पङ्गजातानि श्रात्मयोगे ॥ ५०॥

निक्बोडुक्बरजम्बाद्या ययाकालं गुणोत्तराः। कन्दादिष्यय सर्वेषां प्रथगेव रसादयः॥ ५८॥

केचित् कन्दे केऽिप सूलेषु केचित् पत्ने पुष्ये केऽिप केचित् फलेषु। लचेवान्ये वल्कले केचिदिस्थं द्रव्यस्तोमा भिन्नभिन्नं गुणाळाः॥५८ देशे देशे योजनदादशान्ते भिन्नान्यादुईव्यनामानि लोके। किञ्चामीषु प्राणिनां वर्णभाषाचेष्टाच्छायाभिन्नरूपा विभाति॥६०॥

श्रनिर्दिष्टप्रयोगेषु सूलं श्राद्धं लगादिषु ।
सामान्योत्ती प्रयोत्तव्यं प्राहुस्तीयं तु नागसम् ॥ ६१ ॥
चूर्णकल्ककषायाणां प्रमाणं यत्र नोदितम् ।
तत्र द्रव्यप्रमाणिन स्वयं बुद्धा प्रयोजयेत् ॥ ६२ ॥
माध्वीकं सर्वमद्यानां मधूनां माचिकं तथा ।
तैलं तु तिलसभूतं धातवो वस्तिसभावाः ॥ ६३ ॥
श्रालीनां रत्तशालिः स्यात् सूप्यानां सुद्ग एव च ।
मूलानां पिप्पलीमूलं फलानां सदनं फलम् ॥ ६४ ॥
त्वचा तु गन्धद्रव्याणां पत्नाणां गन्धपत्रकम् ।
जीवन्तिशाकं शाकानां लवणानाञ्च सैन्धवम् ॥ ६५ ॥

[20]

सामान्यपुष्पनिर्देशात् मालतीकुसुमं चिपेत्।

इत्यमन्येऽपि बोडव्याः प्रयोगा योगलचिताः ॥ ६६ ॥

द्रव्यं वातहरं यत्तत् सकलं दीपनं परम्।

कफहारि समं प्रोत्तं पित्तन्नं मन्ददीपनम् ॥ ६० ॥

यच्छीतवीय्यं गुरु पित्तहारि द्रव्यं तृणां वातकरं तदुत्तम्।

यदुष्पवीय्यं लघु वातहारि श्लेषापहं पित्तकरच्च तत् स्थात्॥६८॥

दति बहुनिधदेशसूध्रसूमी-क्हवनगुद्धालताभिधागुणानाम्। सनिवरसभिधाय लच्च साधा-रणमय तच निशेषतोऽभिधास्ये॥ ६८॥

द्रत्यं भूमीविपनविषयचित्रगोत्रादिनाम-स्तोमाख्यानप्रकरणगुणव्याक्ततिप्रौढ़मेनम् । वर्गं वृद्धा भिषगुपचितानर्गेलात्यन्तसूत्त्य-प्रज्ञालोकप्रकटितिधयामाधिराच्ये भिषच्येत्॥ ७०॥

द्रत्येष वैद्यक्तविकत्यविधानिदान-चूड़ामणी सड़परागमपारगेण । काम्मीरवंशतिलकेन क्रतोपवर्गं वर्गी तृसिंहक्रतिना रचितो द्वितीय: ॥ ७१ ॥

द्ति श्रीनरहरिपख्डितविरचिते राजनिचय्हो धरखादिवर्गी हितीयः।

# अय गुडूच्यादिवगे:।

ASSESSA

गुडूचो चाय मूर्वा च पटोलोऽरखजस्तवा। काकोली च दिधा प्रोक्ता माषपर्णी तथाऽपरे ॥ १ ॥ सुद्रपर्णी च जीवन्ती त्रिविधा चाय लिङ्गिनी। कटुकोशातको चैव कपिकच्छ्स्तथाऽपरे॥ २॥ खलता कट्तुम्बी च देवदाली तथा स्मृता। बस्याकर्कीटकी प्रोत्ता कटुतुग्ड्याखुकर्णिका॥ ३॥ दिधेन्द्रवार्णी चात्र यवतिको खरी तथा। ज्योतिश्वती दिधा चैव दिधा च गिरिकर्णिका॥ ४॥ मोरटश्वाय चेदिन्दी-वरा वस्तान्त्रिका च सा। सोमवल्ली तथा वत्सा-दनो गोपालकर्कटी ॥ ५ ॥ काकतुर्द्धी दिधा चाय गुस्ना दिवृंदरार च। कैवर्ती ताम्त्रवसी च काण्डीरी चाय जन्तुका ॥ ६ ॥ अन्तपर्णी तथा ग्रङ्घ-प्रयो चावर्त्तको तथा। कर्णस्मोटा तथा कट्टी लता चैवास्तस्ववा॥ पुत्रदा च पलाशी च विज्ञेयात्त्व नवाभिधा ॥ ७ ॥ सुमतिभिरित्यमनुक्ता बोडव्या वीरुधः क्रमादेताः। श्रिमन् वीरुद्दर्गे नामा च गुणैश्व कोर्च्यन्ते॥ ८॥ **त्रापानीयात्परिगणनयैवाप्रसिद्धाभिधानां** नाम्त्रामुत्ता परिमितिकथाऽप्यत्र सर्वीषधीनाम्।

साऽिप कािप स्मुटमिभध्या कािप च प्रौढ़िभद्धा प्रोक्ता नोक्ता प्रधितिवषये साऽिप नष्टाङ्कवाक्ये ॥ ८ ॥ तस्मादिह न यतोक्ता नान्नामङ्कादिनिर्मितिः । तत्र तत्राष्टसंख्येव ज्ञेया सर्वत्र स्रितिः ॥ १० ॥ यद्यपि कािप नष्टाङ्क-संख्यानियतिरोच्यते । तत्र स्मुटलबुद्धेयव नोक्ता संख्येति बुध्यताम् ॥ ११ ॥ द्रव्याणां गण्यो नियोगवयतो वीर्य्यं परे प्रोचिरे प्राचीनेने च तद्दयेन निगमेष्क्रक्तिश्विक्तसाक्रमः । तस्यानेगमयोगसंग्रह्विदां संवादवाग्भिस्तथा

ग्रथ गुडू वी।—

त्रेया गुडूच्यम्यत्वत्त्राम्यता ज्वरारिः

श्वामा वरा सुरक्तता मधुपर्णिका च।

क्वित्रोद्ववाऽम्यत्वता च रसायनी च

क्वित्रा च सोमलितिकाऽम्यतसभावा च॥१३॥
वत्सादनी क्वित्रक्ष विश्वव्या भिषक्षिया कुण्डलिनी वयःस्या।
जीवन्तिका नागकुमारिका च स्याक्विद्विका सैव च चण्डहासा१४
श्रन्या कन्दोद्ववा कन्दाम्यता पिण्डगुडूचिका।
बहुक्कित्रा बहुक्हा पिण्डालुः कन्दरोहिणी॥१५॥
पूर्वा वार्षिकराह्वा स्थादुत्तरा लोकसंज्ञिका।
गुडूच्योक्भयोरित्यमेकत्रिंगदिहाभिधाः॥१६॥
जीया गुडूची गुक्कण्यवीर्या तिक्वा कषाया ज्वरनाशिनी च।

दाञ्चार्त्तित्वणाविमरत्तवातप्रमेचपाण्डुभ्नमचारिणी च ॥ १७॥

कन्दोद्भवा गुडूचो च कदुणा सिवपातहा।
विषम्नो ज्वरभूतम्नो बलीपलितनाभिनी॥ १८॥
(संगुलवेलि। कं अमरदवेलि। गुरूचीति कान्यकुलाः।
गलो दति गुजराः। गलाह्न दति पाश्वात्थाः।
तै तिस्मतोगे। हिंगुड्च, घड्छ।गौ गुलुछ।

#### त्रय सूर्वा।--

सूर्वा दिव्यलता मिरा मधुरसा देवी त्रिपर्णी मधुत्रेणी भिन्नदलामरी मधुमती तिक्ता प्रयक्षपर्णिका।
गोकर्णी लघुपर्णिका च दहनी तेजस्त्रिनी सीरटा
देवत्रेणि-मधूलिका-मधुदला: स्यु: पीलुनी रक्तला॥१८॥
सुखीषिता सिम्धपर्णी पीलुपर्णी मधुस्रवा।
ज्वलनी गोपवल्ली चेत्यष्टविंग्रतिसंज्ञका:॥२०॥
मूर्वा तिक्तकषायीच्या हृद्रोगकफवातहृत्।
विमुग्नहृतुष्ठादि-विषमञ्चरहारिणी॥२१॥
(हिं चूर्णहार। मं गोनसफ्ण। तं चागचेटु, सग, चग।
वं मोरवेल, सुहुरसि। तां महला। गौ मूर्वा,
सुर्गा, सुरहर, ग्रीवसुखी, वोड़ाचक्र।)

#### अध पटोलम्।-

स्थात्पटोनः कटुफनः कुनकः कर्वभक्त्रदः। राजनामाऽस्रतफनः पाण्डुः पाण्डुफनो मतः॥ २२॥ वीजगभी नागफनः कुष्ठारिः कासमर्दनः। पञ्चराजिफनो ज्योल्स्री कुष्ठन्नः षोड्गाह्वयः॥ २३॥ पटोलः कटुतिक्तोषाः रसिपत्तवलासिकत्।

कामकाण्डूतिकुष्ठास्टक्-ज्वरदाहार्त्तिनायनः॥ २४॥
(मोरइडोति कान्यकुजाः। हिं परवलः। मं किष्पड्वल, कतुपड़ोलः। ते कोम्युपोटलः। तां कम्बुपुड्ले । मौ पटोलः।

कर्याटि सोगवहो । चुर्रानहारकिष्ववर्यौ दिति गुर्जराः।)

श्रय काकोली।—

काकोली मधुरा काकी कालिका वायसीलिका।
चीरा च श्रांचिका वीरा ग्रुक्ता धीरा च मेदुरा॥ २५॥
ध्वांचीली खादुमांसी च वयःस्था चैव जीविनी।
द्रत्येषा खलु काकोली च्रेया पञ्चदशाद्वया॥ २६॥
काकोली मधुरा स्निष्धा चयपित्तानिलार्त्तिन्त्।
रक्तदाइच्चरन्नी च कफग्रुक्रविवर्षनी॥ २०॥
(गी कांकला। मं कं कट्टवितिग, कालली।
ते' तेलिमणिचेट्ट। एत् कांकोलि।)

ग्रय चीरकाको ।—

दितीया चीरकाको चीरग्रका पयस्विनी ।

पयस्या चीरमधुरा वीरा चोरिवषाणिका ॥ २८ ॥
जीववन्नी जीवग्रका स्यादित्येषा नवाह्वया ।

रसवीर्थ्यविपाकेषु काको स्था सहभी च सा ॥ २८ ॥
(हिं मं हम्काटली । कं इसुगृहवित्ति । गौ चीरकें किला।

अध माषपर्यो ।-

माषपर्णी तु काम्बोजी क्षण्यवन्ता महासहा। ब्राईमाषा मांसमाषा मङ्गल्या हयपुक्तिका॥ ३०॥

हंसमाषाखपुच्छा च पाण्डुरा माषपितका।
काल्याणी वज्रमूली च प्रालिपणी विसारिणी ॥ ३१ ॥
ग्रात्मोद्भवा बहुफला स्वयमृः सुलभा घना।
दृत्येषा माषपणी स्थाटेकविंग्रितिनामका॥ ३२ ॥
माषपणी रसे तिक्ता वृष्या दाहज्वरापहा।
ग्रुक्रवृद्धिकरी बल्या ग्रीतला पृष्टिवर्द्धिनी ॥ ३३ ॥
(गौ माषाणौ। हिं माषोणौ, माषवणो। मं राण्डुड्दौ।
कं रालोडिग्डु, काउटु।)

त्रय सुद्गपर्गी ।—

सुद्गपर्णी चुद्रसहा शिम्बी मार्जारगन्धिका।
वनजा रिङ्गिणी इन्छा सूर्पपर्णी कुरङ्गिका॥ ३४॥
कांसिका काकसुद्गा च वनसुद्गा वनोद्गवा।
अरण्यसुद्गा वन्येति ज्ञेया पञ्चदशाङ्गया॥ ३५॥
सुद्गपर्णी हिमा कास-वातरत्तच्यापहा।
पित्तदाहुज्वरान् हन्ति चचुष्या श्रुक्गद्विक्वत्॥ ३६॥
(गौ सुगानी। हिं माठसुगानी। मं राणसुग। कं काहेसक।
ते पिद्वपेसरचेहु।)

त्रघ जीवन्ती।-

जीवन्ति स्थाजीवनी जीवनीया जीवा जीव्या जीवदा जीवदात्री। शाकन्त्रेष्ठा जीवभद्रा च भद्रा मङ्ख्या च चुद्रजीवा यशस्या॥ ३७॥ शृङ्गाटो जीवपृष्ठा च काञ्चिका ग्रग्रिक्षिका।
सुपिङ्गलेति जीवन्ती च्रेया चाष्टाद्ग्राभिधा ॥ ३८॥
जीवन्ती मधुरा ग्रीता रक्तपित्तानिलापहा।
चयदाहज्वरान् हन्ति कफवीर्थ्यविवर्षिनो ॥ ३८॥
(कं मं लाहानिहरियवेलि. किरियहाले। गौ जीवन्ती,

जीवद्, जियाती।)

अय वहज्जोवन्तौ।—

जीवन्थन्या वहत्पूर्वा पुत्रभद्रा प्रियद्वरी ।

सध्रा जोवपृष्ठा च वहज्जीवा यशस्त्ररी ॥ ४० ॥

एवमेव वहत्पूर्वा रसवीर्थ्यवलान्विता ।

भूतविद्रावणी ज्ञेया विगाद्रसनियासिका ॥ ४१ ॥

(मं रोग्ही हरिखवेलि । कं किरियहाले । हिरियहाले ।)

ग्रय खर्यजीवन्ती :-

हिमा हमवती सीम्या त्य्यात्यिहिं माश्रया। स्वर्णपर्णी सुजीवन्ती स्वर्णजीवा सुवर्णिका॥ ४२॥ हिमपुष्पी स्वर्णलता स्वर्णजीवन्तिका च सा। हमवत्ती हेमलता नामान्यस्याश्रतुर्देश॥ ४३॥ स्वर्णजीवन्तिका वृष्या चत्तुष्या मधुरा तथा। शिश्रिरा वातिपत्तास्र स्टाइजिद्दलवर्षनी॥ ४४॥ (मं हमहरिग्ववित्त। वं होवंग्यदहाति। हिं सोगाजीवहा।

गौ खर्गजीवन्ती।) अय लिङ्गिनो।—

लिङ्गिनी बहुपता स्थादोखरी शैवमिलका।

स्वयभूर्लिङ्गसभूता लिङ्गी चित्रफलाऽस्रता ॥ ४५ ॥ पण्डोली लिङ्गजा देवी चण्डापस्तिभानी तथा । श्रिवजा शिववज्ञी च विज्ञेया षोड़शाह्वया ॥ ४६ ॥ लिङ्गिनी कटुक्णा च दुर्गन्धा च रसायनी । सर्वसिडिकरी दिव्या वस्था रसनियामिनो ॥ ४० ॥ (मं वाड्वली । कं चाकदोखं, पञ्चग्रिया, ईम्वरलिङ्गी । गो पञ्चगुड्का, श्रिवलिङ्गिनी ।)

अध कीवातकी।—

कोषातको क्रतिक्छिद्रा जालिनी क्रतविधना ।
च्लेड़ा स्रितिक्ता घर्णाली स्टइङ्गफिलिनी तथा ॥ ४८ ॥
कोशातकी तु शिशिरा कटुकाऽल्पकषायका ।
पित्तवातकफ्ष्मी च मलाधानिवशोधिनी ॥ ४८ ॥
(गौ घोषालता । हिं करदतरद । ते वौर, उत्तेरिण ।
मं कट्रोडकी, कं काहीरे ।)

अध कपिकक्ः।

किषकक्त्रात्मग्रहा स्वयंग्रहा महर्षमी।
लाङ्ग्ली कुण्डली चण्डा मर्कटी दुरिमग्रहा॥ ५०॥
किपिरीमफला गुहा दुःस्पर्धा कच्छुराः जया।
प्रावृष्ण्या शूक्रिश्ची बदरी गुरुरार्षभी॥ ५१॥
शिख्वी वराहिका तीच्णा रीमालुर्वनश्करी।
कीश्ररीमा रीमवल्ली स्थात् षड्विंश्रतिनामका॥ ५२॥
किपिकच्छुः स्वादुरसा वृष्णा वातच्यापहा।
शीतिपत्तास्तहन्त्री च विक्रता व्रणनाश्चिनी॥ ५३॥

### राजनिष्युः।

[ 35]

(गौ त्राल्कुग्री, दया, धुनारगुड़, ग्रुयाग्रिम्बी। हिं कौँव। मं कुहिरी। तें दुलगुण्डि। कं कप्सकूहरी, नसुकूगुरि।) त्रय त्राकाग्रवही।—

खवस्राकाणवसी स्थादस्पर्णा व्योमवस्तिका।

ग्राकाणनामपूर्वा सा वस्नीपर्यायगा स्मृता ॥ ५४ ॥

ग्राकाणवस्नी कटुका मधुरा पित्तनाणिनी।

वृष्णा रसायनी बच्णा दिव्यीषधिपरा स्मृता ॥ ५५ ॥

(भं ग्रमखेलि। कं ग्राकाणवेलि। नलसुदवेलि इति पाश्चात्याः।

गौ ग्रालीकलता, ग्राकाणवेल। की ग्रमखेल्।)

### ग्रथ कटुतुम्बी।—

कट्तुम्बी कटुफला तुम्बिनी कटुतुम्बिनी।
वहत्फला राजप्रती तिक्तवीजा च तुम्बिका॥ ५६॥
कटुतुम्बी कटुम्तीच्णा वान्तिकत् म्बासवातिजत्।
कासन्नी ग्रोधनी ग्रोफ-व्रण्यूलविषापन्ना॥ ५०॥
(गो तितलान। हिं कडुटुभिया, तुम्बी, तितलीको। मं कं
कडुभां प्ला, कडुड्धी, कहिसोरे। ते चैतिग्रानव।)

श्रध जीमृतकः।—
जीमृतकः कण्टफला गरागरी
विणी सहा कोश्रफला च कट्फला।
घोरा कदम्बा विषहा च कर्कटी
स्थाद्देवदाली खलु सारमूषिका॥ ५८॥
वृत्तकोशा विषष्ती च दाली लोमश्रपिका।
तुरिक्का च तर्कारी नामामिकोनविंश्रतिः॥ ५८॥

देवदाली तु तिक्तीश्या कटु: पाग्डुकफापहा।
दुर्नामखासकासन्नी कामलास्त्रतनाश्रनी॥ ६०॥
(गो पौतघोषा, देयाताड़ा। हिं घघरवेल, सनैया। मं देवदाली।
कं देवडङ्गरी। ते डानरगण्डि, लताविश्रेष्ठमु, देवलि इति।)

अय बन्धाककाँटको।-

बस्या देवी बस्यकर्कीटका स्थानागारातिर्नागहन्त्री मनोन्ना।
पण्या दिव्या प्रवदात्री सुकन्दा श्रीकन्दा सा कन्दवसीम्बरी च॥६१
सुगन्धा सर्पद्रमनी विषकण्टिकानी वरा।
कुसारी सूतहन्त्री च नामामित्यूनविंमिति:॥६२॥
बस्याकर्कीटकी तिका कटूण्या च कफापहा।
स्थावरादिविषन्नी च मस्यते सा रसायने॥६३॥
(गौ तितकांकाड़ो, तित्कांकरोत्त। हिं वाम्खखासा, वाभूखसा,
वाम् कांकरीत्त। कं वज्जेमड्वागत्ता। मं वं वंभाकण्टोत्ती।)

अथ तित्तत्त्राखी।—

तित्ततुग्ही तु तित्ताख्या कटुका कटुतुग्हिका।
विस्वी च कटुतित्तादि-तुग्हीपर्य्यायमा च सा॥ ६४॥
कटुतुग्ही कटुन्तित्ता कप्पवान्तिविषापद्या।
अरोचकास्विपत्तन्नी सदा पथ्या च रोचनी॥ ६५॥
(मं कं कहुतोग्हिलो, कहितोहे, तीतकुन्दर, वनटिग्हुराकहुन्ना।
हं कटतराइ। गौ तितकुन्दुरुकी।)

त्रय त्राखुकर्णी।— स्यादाखुकर्णी क्रिषका द्रवन्ती चित्रा सुकर्णीन्दुक्कर्णिका च। राजनिषयुः।

न्यग्रोधिका सूषिकनागकणीं
स्याहृश्विकणीं बहुकणिका च ॥ ६६ ॥
माता सूमिचरी चण्डा श्रस्त्ररी बहुपादिका ।
प्रत्यक्ष्रेणी वृषा चैव पुत्रश्रेण्यद्विश्रृह्वया ॥ ६० ॥
श्राखुकणीं कटूणा च कफपित्तहरा सदा ।
श्रानाहच्चरश्रुजार्ति-नाशिनी पाचनी परा ॥ ६८ ॥
(हं मं भोपली । कं विश्वहरूहे । गो इन्हरकाणीपाना ।)

त्रय दन्द्रवाच्यो।--

एन्द्रोन्द्रवारुख्यरुषा सृगादनी
गवादनी चुद्रसहेन्द्रचिर्भिटा।
स्र्या विषन्नी गुणकिष्कामरा
माता सुवर्षा सुफला च तारका॥ ६८॥
वषभाची गवाचो च पीतपुष्पीन्द्रवज्ञरी।
हेमपुष्पी चुद्रफला वारुणी बालकिष्रया॥ ७०॥
रक्तेर्वारुविषलता प्रक्रवज्ञी विषापहा।
प्रस्ता विषवज्ञी च चेयोनिर्विषदाह्यया॥ ७१॥
रन्द्रवारुणिका तिका कटुणीता च रेचनी।
गुल्मिपत्तोदरस्रेष-क्रिमिकुष्ठच्चरापहा॥ ७२॥
(मंद्र्वारुखा। कं हानेके। गो राखालनाडु, राखालग्रमा, खन्दरुकी, मामालाडु। हिं दन्द्रारुख, वड़ी दन्द्रफला।)

त्रथ महेन्द्रवाक्यो।-

महेन्द्रवार्णी रम्या चित्रवत्ती महाफला। सा माहेन्द्री चित्रफला त्रपुसी त्रपुसी च सा॥ ७३॥

# गुड्चादिवर्गः।

[ 38 ]

श्रात्मरचा विश्वाला च दीर्घवज्ञी ब्रहत्फला। स्याद् ब्रह्मारुणी सीम्या नामान्यस्याश्वतुर्दश ॥ ७४ ॥ महेन्द्रवारुणी ज्ञेया पूर्वीक्तगुणभागिनी। रसे वीर्यो विपाने च किच्चिदेषा गुणाधिका॥ ७५ ॥ (मं विष्ठ इन्द्रवारुणि। कं हिरियहामेक्षे। गौ वड्माकाल। राखालश्रमा वा।)

अथ यवतिक्ता।—

यवितता महातिता दृढ्पादा विसिर्णि । नाजुली नेत्रमीला च मिंडिनी पत्रतण्डुली ॥ ७६ ॥ तण्डुली चाचपीड़ा;च स्ट्यापुष्पी यमस्तिनी । माईष्वरी तित्तयवा यावी तित्तेति षोड़म ॥ ७० ॥ यवितता सितताऽन्ता दीपनी क्चितत्परा । किमिजुष्ठविषम्नग्राम-दोषम्नी रेचनी च सा॥ ७८ ॥ (मं यवीवी । कं मिंडिनो । यवेची इति लोके ।)

त्रथ रुट्रजटा !--

रीट्री जटा रुट्रजटा च रुट्रा सीम्या सुगन्धा सुहता घना च। स्यादीखरी रुट्रसता सुपता सुगन्धपता सुरभिः शिवाह्ना॥ ७८॥

पत्रवन्नो जटावन्नो रुद्राणी नेत्रपुष्तरा।
महाजटा जटारुद्रा नामा विंग्यतिरीरिता॥ ८०॥
जटा कटुरसा म्हास-कासच्चद्रोगनाग्रिनी।
भूतविद्राविणी चैव रचसाच्च निवर्हिणी॥ ८१॥
(मं ईश्वरी। कं रुद्रजटा। गौ जटालङ्का।)

त्रघ च्योतिषती।—

च्योतिषती खर्णनताऽननप्रभा

च्योतिर्नता सा कटभी सुपिङ्गला।

दीप्ता च मेध्या मतिदो च दुर्जरा

सरस्रती स्यादमृतार्कसंख्यया॥ ८२॥

त्रघ तजीवतो।—

तेजीवती बहुरसा कनकप्रभाऽन्या तीच्या सुवर्णनकुली लवणाग्निदीप्ता। तेजिस्वनी सुरलताऽग्निफलाऽग्निगर्भा स्थालङ्गुणी तदनु शैलसुता सुतैला॥ ८३॥

सुवेगा वायसी तीव्रा काकाण्डी वायसादनी। गीर्जता श्रीफली सीम्या ब्राह्मी लवणिकंश्वका॥ ८४॥ पारावतपदी पीता पीततेला यशस्त्रिनी।

मिध्या मिधाविनी धीरा स्थादेकितंश्रदाह्मया ॥ ८५ ॥ ज्योतिषाती तिक्तरसा च रूचा किञ्चिकटुर्वातकफापहा च। दाहप्रदा दीपनकच मिध्या प्रचाञ्च पुष्णाति तथा दितीया॥ ८६ ॥ (कं कङ्गुणी दोनि। कौगुएरडु। गौ लताफटकी, ते वेकुडुतोगे।

हिं मं मालकाङ्गोगी, काकुमर्दनिका।)

त्रय त्रयनुरा।—
त्रयन्तराद्रिकर्णी च कटभी दिधपुष्पिका।
गर्दभी सितपुष्पी च खेतस्यन्दापराजिता॥ ८०॥
खेता भद्रा सुपुष्पी च विषद्दन्ती चिरेकधा।
नागपर्यायकर्णी स्थादखाह्वादिन्त्ररी स्मृताः॥ ८८॥

# गुडूचादिवर्गः ।

[ ३३ ]

गिरिकणीं हिमा तिक्ता पित्तीपद्रवनाशिनी।
चत्तुष्या विषदोषन्नी व्रिदोषश्मनी च सा ॥ ८८॥
(मंवं पाण्डरीसूपली। कं विलियगिरिकर्णिके। गौ श्वेतापराजिता।
हिं विष्णुक्रान्ति। ते नक्षनेलगुमिरी।)

अय नौलपुष्पौ।-

नीलपुष्पी महानीला स्थानीला गिरिकर्णिका।
गवादनी व्यक्तगन्धा नीलस्थन्दा षड़ाह्मया॥ ८०॥
नीलाद्रिकर्णी शिशिरा सितका रक्तातिसारव्वरदाहहन्ती।
विच्छिदिकोन्सादमदभ्त्रसार्त्तिश्वासातिकासामयहारिणी च॥८१॥
(मं नोलसूपलो। कं नोलगिरिकर्णिके। गौ नीलापराजिता।)

त्रय मोरटः।—

मोरट: कीर्णपुष्पश्च पीलुपत्नो मधुस्रव:। घनमूलो दीर्घमूल: पुरुष: चीरमोरट:॥ ८२॥ मोरट: चीरबहुलो मधुर: सकषायक:। पित्तदाहुज्बरान् हन्ति वृष्यो बलविवर्द्धन:॥ ८३॥ (मं चीरमहुरिस। कं हालुकोगे। गौ लताकड़ार।)

अध दन्दीवरा।-

इन्होवरा युग्मफला दीर्घ वक्तोत्तमारणी।
पुष्पमञ्जरिका द्रोणी करका निलका च सा॥ ८४॥
इन्होवरा कटुः श्रीता पित्तक्षेषापद्वारिका।
चन्नुष्या कासदोषन्नी वर्णक्रिमिहरा परा॥ ८५॥
(मं उतर्राण। कं क्रुहिरी।)

रा-३

# [88]

# राजनिष्ठण्टुः।

त्रघ वस्तान्त्री।-

वस्तान्त्री वृषगत्थाख्या सेषान्त्री वृत्तपित्रता।

ग्रजान्त्री वोकडी चैव स्थादित्येषा षड़ाह्वया॥ ८६॥
वस्तान्त्री स्थालटुरसा कासदोषविनाणिनी।

वीजदा गर्भजननी कोर्त्तिता भिषगुत्तसै: ॥ ८७॥

(मं वोकडो। कं कुर्काटगियमेद।)

त्रघ सोमवल्ली।-

सोमवत्ती महागुल्मा यज्ञश्रेष्ठा धनुर्लता।
सोमार्चा गुल्मवत्ती च यज्ञवत्ती दिजप्रिया।
सोमचीरा च सोमा च यज्ञाङ्गा रुद्रसंख्यया॥ ८८॥
सोमवत्ती कटुः शीता मधुरा पित्तदाहनुत्।
हिश्णाविशोषश्मनी पावनी यज्ञसाधनो॥ ८८॥
(सोमवही सर्वभाषा।)

त्रथ महिषवज्ञो।—

सीम्या महिषवत्नी च प्रतिसोमान्त्रवित्तका।
श्रपत्रवित्तका प्रोत्ता काण्ड्याखा षड़ाह्नया।
स्वीर्थ्यविपाने च सोमवत्नीसमा सृता॥ १००॥
(हिं हिरहिंगे। मं महिषवेति। कं ग्राम्यवित्ता।)

त्रघ वसादनी।-

वक्सद्नी सोमवत्ती विक्रान्ता सेचकाभिधा। पातालगरूड़ी तार्ची सीपणी गारूड़ी तथा॥ १०१॥ वासनी दीर्धकाण्डा च दृढ़काण्डा महाबला। दीर्घवत्ती दृढ़लता नामान्यस्यायतुर्देग्॥ १०२॥

# गुडूचादिवर्गः।

[ ३५ ]

वत्सादनी तु सधुरा पित्तदाहास्त्रदोषनुत्। वष्या सन्तर्पणी रूचा विषदोषविनाशिनी ॥ १०३॥ (मं वासनि। कं दागुड़ि।)

श्रथ गोपालकर्कटी।—
गोपालकर्कटी वन्या गोपालकंटिका तथा।
चुद्रेर्वाक्: चुद्रफला गोपाली चुद्रचिर्भटा॥ १०४॥
गोपालकर्कटी श्रीता मधुरा पित्तनाशनी।
मूत्रकच्छाश्मरीमेष्ट-दाष्ट्रशोधनिक्तन्तनी॥ १०५॥
(गौ कुन्दक्को, केंचुड़ा। चिंगीक्मा। मंगोवलकांकड़ी।
कं मूलसीत।)

त्रथ कानासा।

काकनासा ध्वाङ्वनासा काकतुग्छा च वायसी।
सुरङ्गी तस्करस्वायुर्ध्वाङ्कतुग्छा सुनासिका॥ १०६॥
वायसाङ्वा ध्वाङ्कनखी काकाचा ध्वाङ्कनासिका।
काकप्राणा च विज्ञेया नामान्यस्यास्त्रयोदश्॥ १००॥
काकनासा तु मधुरा शिशिरा पित्तहारिणी।
रसायनी दार्ब्धकरी विश्रेषात् पिततापहा॥ १०८॥

(गौ वड़श्चेतगुड़काँ उसी । हिं के उयाठँ टी, के उयाठौँ ड़ी । मं वड़िसि-कहुडसि । कं हिरियकागेदोखें । ते वेससिन्दिचेट्ट, पुस-

गुलिविन्द्चेष्ट्, कालिदोग्डचेष्ट् ।)

श्रय काकादनी।—

काकादनी काकपीलुः काकण्रिक्वी च रत्तला। ध्वाङ्कादनी वत्त्रग्रल्या दुर्मीहा वायसादनी ॥ १०८॥

# [ 3 ]

# राजनिघर्एं:।

काकतुग्डी ध्वाङ्गनखी वायसी काकदन्तका।
ध्वाङ्गदन्तीति विजेयास्तिस्वय दग्र चाभिधाः॥ ११०॥
काकादनी कट्रणा च तिक्ता दिव्यरसायनी।
वातदोष्रहरा रुचा पिततस्तिभानी परा॥ १११॥
(मं साङ्गीकहुडिख। कं किरियकागेदोग्डे।
उत् ॰ काड्यिएया।)

### त्रय गुझा ।—

गुन्ता चूड़ामणि: सौम्या शिखण्डो क्षणालाऽरुणा। ताम्त्रिका शीतपाकी स्यादुचटा क्षणाचूड़िका॥ ११२॥ रक्ता च रिक्तका चैव काम्भोजी भिल्लिभूषणा। वन्यास्या मानचृड़ा च विज्ञेया षोड़शाह्वया॥ ११३॥

अय श्वेतगुङ्गा।—

हितीया खेतकासोजी खेतगुष्ट्रा भिरिण्टिका।
काकादनी काकपीलुर्वक्रण्या षड़ाष्ट्रया॥ ११४॥
गुष्ट्राहयन्तु तिक्तोषां वीजं वान्तिकरी ग्रिफा।
गूलमं विषक्तत् पत्रं वश्ये खेतन्त्र ग्रस्यते॥ ११५॥
(हिंगुष्ट्रा दोनि। मं गुलुगुन्ने। कं एरडु। इत् रुद्र।
हिं सोगकाद्व। गौ कुंच।)

त्रय वहरास्तः।—
वहरास्त त्राविगी जुङ्गको दीर्घवाजुकः।
वहः कोटरपुष्पी स्थादजान्त्री छागलान्त्रिका॥ ११६॥
जीर्णदास् हितीया स्थाज्जीर्णा फन्नी सुपुष्पिका।
त्रजरा स्त्रापता च विज्ञेया च षड़ाह्नया॥ ११७॥

# गुड्चादिवर्गः।

[ 0,5]

वृषदारुद्धं गौत्यं पिच्छिलं कफवातहृत्। बच्यं कासामदोषघं दितीयं स्वत्यवीर्य्यदम् ॥११८॥ (मंदोनि फार्स्डि। कं एरडुमुष्टे। गौ वीजताड्क । हिं विधासा।)

#### अध कैवर्त्तिका।-

कैवर्त्तिका सुरङ्गा च लता वज्ञी द्वुमाक् हा।
रिङ्गिणी वस्त्ररङ्गा च भगा चेत्यष्टधाऽभिधा॥ ११८॥
कैवर्त्तिका लघुर्वृष्या कषाया कफनामनी।
कासम्बासहरा चैव सैव सन्दाग्निदोषनुत्॥ १२०॥
(गो केश्रोटासुता, केश्रुरसुता। कैवर्त्तिका मालवे प्रसिद्धा।)

#### अध ताली।-

ताली तमाली ताम्त्रा च ताम्त्रवही तमालिका।
सूच्यवही सुलोमा च ग्रोधनी तालिका नव॥ १२१॥
ताम्त्रवही कषाया स्थात् कफदीषविनाशनी।
सुखकरहोत्यदीषन्नी श्लेषश्चिकरी परा॥ १२२॥

(तामवद्वोति चिवकूटदेशे प्रसिदा।)

#### त्रथ काग्डीरः।—

काण्डीरः काण्डकटुको नासासंवेदनः पटुः । उग्रकाण्डस्तोयवल्ली कारवल्ली सुकाण्डकः ॥ १२३॥ काण्डीरः कटुतिल्लोण्यः सरो दुष्टव्रणात्तिनुत् । लूतागुल्लोदरप्लीह-शूलमन्दाग्निनाशनः॥ १२४॥ (मं काण्डविल । कं मणिगुग्विल गो करना एक्टे।)

### राजनिघण्टुः।

[ ३८ ]

#### त्रघ जन्तुका।—

जन्तुका जन्तुकारी च जननी चक्रवर्त्तिनी।
तिर्ध्यक्पाला निशान्धा च बहुपता सुपितका॥ १२५॥
राजक्षणा जनेष्टा च किपकच्छुफलोपमा।
रज्जनी स्च्यवज्ञी च भ्यमरी क्षण्यविज्ञका॥ १२६॥
विज्जिज्ञका वृच्चहा ग्रन्थिपणी सुविज्ञका।
तक्वज्ञी दीर्घफला एकविंश्यतिसंज्ञका॥ १२०॥
जन्तुका शिश्यरा तिक्ता रक्तिपत्तकफापहा।
राहृद्धणाविभिन्नी च क्चिक्कहोपनी परा॥ १२८॥
(जन्तुका नालवे प्रसिद्धा। हिं पापड़ो।)

#### त्रय त्रत्यस्यपर्यो ।—

श्रत्यस्मपर्णी तोन्त्या च कण्डुला विस्त्रिस्या। विस्ती करवडादिश्व वनस्थाऽरख्यवासिनो॥ १२८॥ श्रत्यस्मपर्णी तोन्त्यास्ता प्लीहश्चलविनाशनो। वातहृद्दीपनी रुचा गुल्प्रस्नेशासयापहा॥ १३०॥ (संकर डवेलि। क' हैगोलि। गो श्रामस्ल।)

#### अध प्रद्वापुष्यी।-

शङ्घपुष्पी सुपुष्पी च शङ्घाद्वा कम्ब्मालिनी।
सितपुष्पी कम्बुपुष्पी मध्या वनविलासिनी॥ १३१॥
चिरिग्टी शङ्कसुमा भूलम्बा शङ्घमालिनी।
द्रत्येषा शङ्कपुष्पी स्थादुक्ता दादशनामिसः॥ १३२॥

# गुड्चादिवर्गः।

[ 36]

ग्रङ्गपुष्पी हिमा तिक्ता मिधाक्तत् खरकारिणी। ग्रह्मतादिदीषन्नी वशीकरणसिंदिदा॥ १३३॥ (मं ग्रङ्गुली। कं ग्रङ्गपुष्पी। वं ग्रङ्गीनी।)

अय आवर्त्तको।-

श्रावत्तेको तिन्दुिकनो विभाग्हो विषाणिका रङ्गलता मनोज्ञा। सा रत्तपुष्पी महदादिजालो सा पीतकोलाऽपि च चर्मरङ्गा॥१३४॥ वामावर्त्ता च संयुक्ता भूसंख्या ग्रश्मिसंयुता। श्रावर्त्तको कषायास्ता ग्रीतला पित्तहारिणो॥१३५॥

> ( त्राहुलो तलः उविद्वा, भगतवत्नीति च कोङ्गणे प्रसिद्धा। गौ सोखामुखी।)

> > त्रघ वर्णस्कोटा।—

कर्णस्कोटा श्रुतिस्कोटा निपुटा क्षणतग्र्डुला। चित्रपणी स्कोटलता चिन्द्रका चाईचिन्द्रका॥ १३६॥ कर्णस्कोटा कटुस्तिका हिमा सर्वविषापहा। ग्रहभूतादिदोषन्नी सर्वव्याधिविनाणिनी॥ १३०॥ (मं कानफोड़ी। क' हिडिविडिके। गौ काग्रिक्डा।)

अध कड्डो।—

कट्टी कटुकवत्ती च सुकाष्ठा काष्ठवित्तका।
सुवत्ती च महावत्ती पश्चमोहिनका कटुः॥ १३८॥
कट्टी तु कटुका ग्रीता कप्रश्वासार्त्तिनाश्चनी।
नानाज्वरहरा रूचा राजयच्मिनवारिणी॥ १३८॥
(मं कटुकी। तें रेमदृ।)

### [ 08 ]

### राजनिष्ठयः

अध अस्तस्वा।

त्रेयाऽस्तस्त्रवा वृच्चाक्हाख्या तोयविद्यक्ता । घनविद्यो सितलता नामिभः श्रमिस्रता ॥ १४० ॥ उत्ताऽस्तस्त्रवा पथ्या देषित्तिता रसायनी । विषन्नी व्रणकुष्ठादीन् कामलां ख्वयथं जयेत्॥ १४१ ॥ (मं श्रम्तविद्य । श्रम्तस्रवा चित्रक्रूटदेशे प्रसिद्या ।

गौ बदन्तीलता।)

अय पुतदाती:-

पुत्रदात्री तु वातारिभांमरी खेतपुष्पिका।

वत्तपत्नाऽतिगन्धालुर्वेभिजाता सुवत्तरी ॥ १४२ ॥

पुत्रदात्री तु वातन्नी कटुरुणा कफापहा।

सुरिभ: सर्वदा पथ्या बस्थादोषिवनाश्रनी ॥ १४३ ॥

(पुत्रदािय मालवे प्रसिद्धा।)

श्रय पलाशो।--

पनाशी पत्रविक्षी च पर्णविक्षी पनाशिका।
खुरपर्णी सुपर्णी च दोर्घविक्षी विषादनी॥ १४४॥
श्रम्लपती दीर्घपत्री रसाम्ला चाम्लका च सा।
श्रम्लातकी काष्त्रिका च स्थाचतुर्दश्याऽभिधा॥ १४५॥
पनाशी नष्ठरस्या च मुखदोषविनाशनी।
श्ररीचकहरा पथ्या पित्तकोपकरी च सा॥ १४६॥
(पनाशी नागरदेश प्रसिद्धा। कास्मीरे श्रटोति ख्याता।)
दृति बहुविधविक्षीस्तोम-नामाभिधान-

प्रगुणगुणयथावहर्णनापूर्णमेनम् ।

# गुडूचादिवर्गः।

[88]

सुललितपदसभें वर्गनामा च वैद्यः
सदिस बहुविलासं व्यासवहग्रातनोतु ॥ १४७ ॥
दीप्ता दीधितयस्तथाऽस्ततमसध्वंसाय भानोदिव
व्यातन्वन्ति निजं कजां विजयते वोय्ये विक्डी च याः । \*
तासामेव विलासभूमिरसमो वर्गः युतो वोक्धां
वोक्डर्ग इति प्रतीतमहिमा नैसर्गिकयों गुणैः ॥ १४८ ॥
प्राप्ता यस्य परिग्रहं विविधसहीरेकचूड़ामणेस्तीव्राखोषधयः स्ववन्ति सहसा वीर्याखजर्यादिव ।
तस्यायं तृहरेः क्षती स्थितिमगाहर्गो गुड्चादिकस्तान्तीयोकतयाऽभिधानरचनाचूड़ामणी कोर्त्तितः ॥ १४८ ॥
इति श्रीनरहरिपाखितविरचित राजनिचय्टो
गुड्चादिवर्गस्तृतीयः।

<sup>\*</sup> दौप्ता द्राहि।—तथा याः (वौक्षः) मानोः दौप्ता दीधितयः द्रव अस्वतमसम्बंसाय कृजां रोगाणां विक्तौ निजं (यत्) वौर्यं व्यातन्वन्ति (तच्च वौर्यमिति भ्रेषः) विजयते सर्वोत्कर्षेण वक्तते द्रव्यन्वयः। यदा,—तथा याः (वोक्षः) भानोः दीप्ता दौधितय द्रव अस्वतमसम्बंसायं विक्तौ निजं वौर्यं व्यातन्वन्ति (तद्दौर्यं) कृजां रोगं विजयते विनाम-यतौत्यन्वयः।

# अय शताह्वादिवर्गः।

यताह्वा चैव सिश्रेया शालिपणी समष्ठिला। . . व्रह्नती कण्टकारी च दिधा स्थात् प्रश्चिपर्णिका ॥ १ ॥ दिधा गोच्चरकश्चैव यासी वासा शितावरी। धन्वयासद्वयं चान्नि-दसनी वाकुची तथा॥ २॥ ग्रणप्रयो दिधा चैव तिविधा गरपुङ्किका। ग्रणीऽम्बष्ठा दिधा नीली दिधा गोजिह्निका स्मृता ॥ ३॥ ग्रपामार्गेहयं पञ्च-बला राष्ट्री महादि च ।\* हयगन्धा च हपुषा श्रतावय्यौँ दिधा मते ॥ ४ ॥ एलबालुकतैरएशौ कलिकारी जयन्तिका। काकमाची श्रुतश्रेणी सङ्गराजस्त्रिधा मतः॥ ५॥ काकजङ्घा तिधा चुच्चः त्रिविधः सिन्दुवारकः। भेग्डा स्थात् प्रवदा चैव तका स्वर्णु लिकाह्वया ॥ ६ ॥ खुखुस: सिम्हडी चैव चेयो वन्यकुसुमाका:। द्याद्रखः कासमर्देश रविपत्नी दिधाऽस्त्रिका ॥ ७ ॥ त्रजगन्धाऽऽदित्यभक्ता विषमुष्टि हिंधा परा। कालाञ्जनी दिकार्पासी दिविधः कोकिलाचकः ॥ ८ ॥

<sup>\*</sup> महादि चीत । — क्रतसमासान्तः महा दति प्रब्द ग्रादिर्थस्मिन् तद् यथा तथा, क्रियाविश्रेषणमेतत् ; तेन महाराष्ट्रोति प्रब्दो लभ्यते दूर्वाथै: ।

सातला कामवृद्धिय चक्रमर्दीऽय भिन्भिरा। यताह्वाद्याः क्रमेणैव चुपाः प्रोत्ता यथागुणाः॥ ೭॥

अथ प्रताहानाम !-

श्रताह्वा श्रतपुष्पा च सिसिघीषा च पोतिका।
श्रहिच्छ्ताऽप्यवाक्पुष्पी साधवी कारवी श्रिफा॥१०॥
सङ्घातपित्रका छत्रा वज्रपुष्पा सुप्रिष्पका।
श्रतप्रस्ना बहला प्रष्पाह्वा श्रतपित्रका॥११॥
वनपुष्पा सूरिपुष्पा सुगन्धा स्ट्यपित्रका।
गन्धारिकाऽतिच्छ्ता च चतुर्विश्रितिनासका॥१२॥
श्रताह्वा तु कटुस्तिक्वा स्विग्धा श्लेषातिसारनुत्।
ज्वरनेत्रत्रण्यो च वस्तिकर्मणि शस्यते॥१३॥
(गो श्रल्पाशाक। हिं सोफौ। म सोफ्। वं विष् सोफ्।
क्रिं सव्वसिगे।)

अध मिश्रयानाम।-

मिश्रेया तालपणीं च तालपता मिशिस्तथा।
शालिया स्थाच्छीतिशिवा शालीना वनजा च सा॥ १४॥
श्रवाक्पुष्पी मधुरिका छता संहितपुष्पिका।
सुपुष्पा सुरसा वन्या ज्ञेया पञ्चदशाह्वया॥ १५॥
मिश्रेया मधुरा सिग्धा कटुः कफहरा परा।
वातिपत्तोत्यदोषन्नी भ्रीहजन्तुविनाशनो॥ १६॥
(मं वनस्डफा। कं कासव्यक्तिं। गौ वनश्रुल्फा। हिं साँया,

विष् सो पा। तें पेहिजिल कुर्य। तां सोहिकिरे।)

## राजनिघयुः।

[88]

अथ प्रालिपणीनाम।—

स्थान्कालिपणी सुदला सुपितिका

स्थान सीम्या कुमुदा गुहा भुवा।
विदारिगन्धाऽ ग्रमती सुपिणका

स्थाहीर्घमूलाऽपि च दीर्घपितिका॥ १७॥

वातन्नी पीतिनी तन्ती सुधा सर्वानुकारिणी।

ग्रोफन्नी सुमगा देवी निश्वला त्रीहिपणिका॥ १८॥

सुमूला च सुरूपा च सुपता ग्रमपितिका।

ग्रालिपणी ग्रालिदला स्थादूनितंग्रदाह्यया॥ १८॥

ग्रालिपणी रसे तिक्ता गुरूष्णा वातदोषन्त्।

विषमच्चरमहार्थः-ग्रोफसन्तापनाग्रनी॥ २०॥

(मं भूदसेवरा, सालवण्। ते सप्पाकुपीव। के सुकलुम्बीने।

हिं सरिवन्। गौ ग्रालपाणि, क्रालानि। उत् ग्रारपणि।)

श्रय समिष्ठलानाम।—

समष्ठिला च भग्छीरो नद्यास्त्रश्वास्त्रगस्यप्टन्।
कालास्तः कण्टिकपलीऽप्युपदंशो मुनिद्धयः ॥ २१ ॥
नद्यास्तः कटुक्णाश्च कचो मुखिवशोधनः ।
कपत्रातप्रश्यमनो दाहलहीपनः परः ॥ २२ ॥
(मं काकुम्बा। क'तोरेमाछ। हिं ककुँ श्रा।)

श्रय वहतीनाम ।— वहती महतिक्रान्ता वात्तीकी सिंहिकाकुली । राष्ट्रिका स्थलकण्टा च भण्टाकी तु महोटिका ।। २३॥ बहुपत्री कग्टतनुः कग्टालुः कट्फला तथा। डोरली वनवन्ताकी नामान्यस्याश्वतुर्देश ॥ २४॥ वहती कटुतिक्तोष्णा वार्ताजञ्ज्वरहारिणी। श्ररोचकामकासन्नी खासहृद्रोगनाश्रनी॥ २५॥ (मं डोरलो पाण्डरी। क' वनमग्टी, हैग्गुलु।)

अय सर्पतनुनाम।-

वृहत्यन्या सपैतनुः चिवका पीततग्डुला।
पुत्रप्रदा बहुफला गोधिनीति षड़ाह्यया॥ २६॥ चिवका वहतो तिक्ता कटुक्ष्णा च तत्समा।
युक्त्या द्रव्यविश्वेषेण धारासंस्तक्षसिहिदा॥ २०॥

अय श्रेतहहतीनाम।

खेताऽन्या खेतवहती ज्ञेया खेतमहोटिका।
खेतसिंही खेतफला खेतवार्त्ताकिनो च षट्॥ २८॥
विज्ञेया खेतवहती वातस्रेषमिवनाश्रनी।
रूचा चाच्चनयोगेन नानानेत्रामयापहा॥ २८॥
(हिं वाईण्टा। वं होरिलविङ्गनी। तें कुक्माची। तां चैमचुण्ट।
सं पाण्टरीहोरली। कं विलियगृहु। गौ व्याकुह्।)

अय कारकारीनाम।

कर्ण्यारी कर्ण्यकिनी दुःस्पर्भा दुष्पृधर्षिणी।
चुद्रा व्याम्नी निदिग्धा च धाविनी चुद्रकर्ण्यका॥ ३०॥
बहुकर्ण्या चुद्रकर्णा चेया चुद्रफला च सा।
कर्ण्यारिका चित्रफला स्थाचतुर्देशसंच्चका॥ ३१॥

कर्ण्या कट्र्षा च दीपनी खासकासजित्।
प्रतिष्यायात्तिदोषन्नी कप्पवातज्वरात्तिनृत्।। ३२ ।।
(मं रिङ्ग्यो। क' भटकटेया, नेलगृह्व। हिं कर्ण्येलो, रिङ्गिनो।
ते व्राकुड़ीचेटु। उत् कर्ण्यमारिष। गो कर्ण्यकारि।)
व्रष्ट सितकर्णारिकानाम।—

सितकारादिका खेता चेत्रद्रती च लच्मणा।
सितिसंही सितचुद्रा चुद्रवार्त्ताकिनी सिता।। ३३।।
क्षित्रा च कटुवार्त्ताकी चेत्रजा कपटेखरी।
स्थात्रि:स्नेहफला रामा सितकारा महीषधी॥ ३४॥
गर्दभी चन्द्रिका चान्द्री चन्द्रपुष्पा प्रियङ्करी।
नाकुली दुर्लभा रासा हिरेषा द्वादशाह्वया॥ ३५॥
खेतकारादिका क्या कटुणा कफवातनुत्।
चच्चथा दीपनी चेया प्रोक्ता रसनियामिका॥ ३६॥
(मं श्वेतरिङ्गणी। कं श्वेतभटकटैया, विलियनेलगुड्डा)

त्रय पृश्चिपर्यों नाम ।—
स्यात् पृश्चिपर्यों कलसी महागुहा
मृगालिवना धमनी च मेखला ।
लाङ्गलिका क्रोष्टुकपुच्छिका गुहा
मृगालिका सैव च सिंहपुच्छिका ॥ ३०॥

पृथक्पणी दीर्घपणी दीर्घा क्रोष्ट्रकमेखला। चित्रपर्ण्यपिता च म्बपुच्छाऽष्टादणाष्ट्रया॥ ३८॥ पृत्रिपणी कटूणास्ता तिक्ताऽतीसारकासजित्। वातरोगज्वरोन्माद-व्रणदाहिवनाण्यनी॥ ३८॥

## भताह्वादिवर्गः ।

[08]

(गौ चा कुलिया। हिं पोठवन, पोतवन। पठोनो। मं सेवरा। ंकं निवयल बोने, पिठोनो। तें कीला कुपोना। छत् ऋष्टपणि।)

अय गोचुरनाम।—

स्याद्गोत्तुरो गोत्तुरकः त्तुराङ्गः खदंष्ट्रकः कर्ण्यक-भद्रकर्ण्यते । स्याद् व्यालदंष्ट्रः त्तुरको सहाङ्गो दुश्रक्रसश्च क्रमशो दशाह्यः ॥४०॥ (गौ गोख्रो । हिंगोत्तुरशूल । उन् गोख्रा । मं वेडिलौ-सराटो । कं दोडुनिगिल, गोख्रा )

अध चुद्रगोच् रनाम।—

चुद्रोऽपरो गोच्चरकस्त्रिकग्टकः कग्टो ष्रङ्को बहुकग्टकः चुरः। गोकग्टकः कग्टफ्लः पलङ्कषः चुद्रचुरो भच्चटकश्रणद्रुमः ॥४१॥ स्थलशृङ्गाटकश्चैव वनशृङ्गाटकस्त्रथा।

इच्चगन्धः खादुक्तच्दः पर्य्यायाः षोड्ण स्मृताः ॥ ४२ ॥ स्यातासुभौ गोच्चरकौ सुशोतलौ बलप्रदौ तौ मधुरौ च बृंहणौ । क्षच्छाश्मरीमेहिवदाहनाशनौ रसायनौ तत्र बहद्गुणोत्तरः ॥४३॥

(मं दोक्ति सराटिय।चेगुण। कं एरड्नेग्गिलगुण।)

अघ यासनाम।-

यासी यवासी बहुकास्टकीऽत्यकः चुद्रेङ्गुदी रोदनिका च कच्छ्रा। स्याद् बालपत्रोऽधिककास्टकः खरः सुदूरमूलो विषकास्टकोऽपि सः॥ ४४॥

श्रनन्तस्तीन्याकण्टश्च समुद्रान्तो मरूज्ञवः। दीर्धमूलः सून्तपत्नो विषष्ठः कण्टकालुकः।

# [ ४८ ] , राजनिष्यः।

तिपर्णिका च गान्धारी चैकविंग्रितनामिः ॥ ४५ ॥ \* यासो मधुरितकोऽसी ग्रीतः पित्ताक्तिदाहिजित् । बलदीपनकत्तृष्णा-कफच्छिदिविसर्पजित् ॥ ४६ ॥ (ते वं धमासा, पित्ररेगटीटुलगोखिः । गौ हरालमा । हिं जवासा, हराला । मं वेलिकासुलो । क' विह्नाइकवे । तां तोरेद्दहुलु । )

#### श्रय वासकनाम।

वासक: सिंहिका वासा भिषद्माता वसादनी।
ग्राटरूष: सिंहमुखी सिंही कग्छीरवी वृष: ॥ ४० ॥
ग्रितपणी वाजिदन्ता नासा पञ्चमुखी तथा।
सिंहपणी सृगेन्द्राणी नामान्यस्यास्तु षोड्ग ॥ ४८ ॥
वासा तिक्ता कट्: शोता कासन्नी रक्तपित्तजित्।
कामलाकफवैकल्य-ज्वरखासच्चयापहा ॥ ४८ ॥
(ते ग्रह्मर। तां ग्रघडोड़े। गौ वासक। हिं ग्रडुलसा। मं ग्रह्मा,

### अय शितावरीनाम।-

त्राडुलिसा। क' त्रयडूसा, त्रडूसा, त्राडसोगे।)

श्रितावरी श्रितावर: स्चाह्न: स्चिपत्रकः । श्रीवारक: श्रिखी वस्तु: स्वस्तिक: स्निष्ठसकः ॥ ५०॥ कुरुट: कुक्कुट: स्ची-दल: खेतास्बरोऽपि सः । मिधाकद्गाहकस्रेति श्रेय: पञ्चदशाह्नय: ॥ ५१॥

<sup>\*</sup> त्रत्र यासं विष्ठाय यवासाद्यः प्रज्दा यासपर्यायवाचका दति बोध्यम्, त्रन्यया दाविंग्रतिसंज्ञा स्यादित्यर्थः।

# शताह्वादिवर्गः।

[86]

श्चितावरसु संग्राही कषायोश्यस्त्रिदोषजित्।

मिधाऽक्चिप्रदो दाह-ज्वरहारी रसायन: ॥ ५२ ॥

(गौ ग्रुग्रुनिग्राक। हिं चणपत्तो, ग्निरोत्रारो। मं सुरडाहके।

क' खडकतिरा। तें सुनिष्णमनिग्नाकसु। चं कुञ्कुनिया।)

#### त्रथ धन्वयासनाम।—

धन्वयासी दुरालका तास्त्रमूली च कच्छुरा।
दुरालमा च दु:स्पर्भा धन्वी धन्वयवासक: ॥ ५३ ॥
प्रवोधनी स्त्यदला विरूपा दुरिभग्रहा।
दुर्लभा दुष्पुधर्मा च स्थाचतुर्दश्यसंज्ञका ॥ ५४ ॥
दुरालका कटुस्तिका सोश्णा चाराम्तिका तथा।
सध्रा वातिपत्तिष्ठी ज्वरगुल्मग्रमेहजित् ॥ ५५ ॥
(गौ दुरालमा। हिं यवासा, दुराला। वं धनासा। मं
विलिकासुली। वं विश्वदुक्वे। तें पिनरेगटौटुलगोखिड)।

#### अध चुद्रदरालमानाम।—

श्रन्या चुद्रदुरालका मरुखा मरुसका।
विशारदाऽजभचा स्थादजादन्युष्ट्रभिचका॥ ५६॥
कषाया कफद्वचेव ग्राहिणी करभिप्रया।
करभादनिका चेति विज्ञेया द्वादश्यभिधा॥ ५०॥
दुरालका दितोया च गौल्याक्तञ्चरकुष्ठनुत्।
स्वासकासभ्रमन्नी च पारदे श्रद्धिकारिका॥ ५८॥
(मं साङ्गीविलिकासुली। कं किकविद्वद्ववे।)

रा-8

अय अग्निद्मनीनाम।-

अथाग्निदमनी विक्त-दमनी बहुकर्ण्यका।
विक्तिया चुद्रदु:स्पर्भा चुद्रकर्ण्यादिका तथा।
मर्च्येन्द्रमाता दमनी स्थादित्येषा दभाद्वया॥ ६०॥
कर्ण्या चाग्निदमनी रूचा वातकफापहा।
रचिक्तहीपनी हृद्या गुल्मग्नीहापहा भवेत्॥ ६१॥
(मं अग्निद्वया, धमासाभेद। कं चित्तर्ये। गौ दुरालमा-

भेद, ''ग्रोला" दति मतान्तरम्।)

त्रघ वाकुचीनाम। -

वाक् ची सोमराजी च सोमवज्ञी सुविज्ञका।
सिता सितावरी चन्द्र-लेखा चान्द्री च सुप्रमा॥ ६२ ॥
कुष्ठहन्त्री च कास्बीजी प्रतिगन्धा च वलुजा।
स्मृता चन्द्रामिधा राजी काल्माषी च तथैन्द्रवी॥ ६३ ॥
कुष्ठदोषापहा चैव कान्तिदाऽवलुजा तथा।
चन्द्रामिधा प्रभायुक्ता विंग्रति: स्थान्तु नामत:॥ ६४ ॥
वाकुची कटुतिक्कोण्णा क्रिमिकुष्ठकफापहा।
वान्दोषविषकण्डूति-खर्जुप्रथमनी च सा॥ ६५ ॥

( हिं वाव्यो, वुकचो । मं वाज्यो । कं वाज्यिगे । वं वाम्बयो । तां वोगिविद्वलु । गौ सोमराज, हाक्रुच । )

त्रय गगप्यीनाम।— ग्रगपुष्पी वहत्पुष्पी ग्रणिका ग्रगचिर्यका। पीतपुष्पी स्थूलफला लोमग्रा मास्यपुष्पिका॥ ६६॥ Digitized by eGangotri and Sarayu That Funding by of IKS

Jangamawadi Math, Varanesi

भवा भिन्न भवा कि प्राप्त विकास करें।

प्रताहादिवर्ग: । [ ५१ ]

श्रणपुष्पी रसे तिक्ता कषाया कप्मवातिन्।
त्रजीर्थेञ्चरदोषष्ट्री वसनी रक्तदोषन्त्॥ ६०॥
(गौ वनश्रण, सन्भनिया। हिं घागरी, वनश्रणद्व, श्रणहुली।
(मं खिलिहिला। कं श्रणवीज, गिलुगिचि।)
त्रथ चुद्रश्रणपुष्पीनाम।—

तियाऽन्था स्त्यपुष्पा स्यात् त्तुद्रग्रणपुष्पिका ।
विष्टिका स्त्यपणीं च वाणाह्वा स्त्यघिरिका ।
ग्रणपुष्पी त्तुद्रतिका वस्या रसंनियामिका ॥ ६८ ॥
वतीयाऽन्या वत्तपणीं खेतपुष्पा महासिता ।
सा महाखेतघरि च सा महाग्रणपुष्पिका ॥ ६८ ॥
महाखेता कषायोष्णा ग्रस्ता रसनियामिका ।
कुत्हलेषु च प्रोक्ता मोहनस्तस्थनादिषु ॥ ७० ॥
(मं साङ्गोकिलिहिला, पायहरौखिलिहिला । हिं फ्रणफुणा ।
कं विक्रिणिलुगुचि, मते काडिविष्टि । गौ श्वेत श्ररख्याण ।)

त्रथ प्ररपुद्धानाम्।—
प्ररपुद्धा कार्यसुद्धा वार्यपुद्धा वार्यपुद्धा वार्यपुद्धा व प्रद्रविधा। ११॥
प्रराभिधा च पुद्धा स्थाच्छेताच्या सितसायका।
सितपुद्धा खेतपुद्धा ग्रुश्नपुद्धा च पञ्चधा॥ १२॥
प्ररपुद्धा कटूणा च क्रिसिवातक्जापहा।
प्रेता लेषा गुणाच्या स्थात् प्रयस्ता च रसायने॥ १३॥
(हिं प्ररफ्षा का। व दां जङ्गलोक्जलयो। तें तेद्ववेंपद्विचेट्ट।
तां कोद्धुक्षयेविद्धाः। मं दोनिजनिज्ञिया, उद्भिता।
कं येरद्धकोग्नि। गौ प्ररपुद्धाः।)

# राजनिष्युः।

[42]

#### त्रघ कार्यपुद्धानाम। —

श्रन्या तु कग्टपुङ्का स्यात् कग्टानुः कग्टपुङ्किका। कग्टपुङ्का कटूणा च क्रमिश्चलविनाश्रनी॥ ७४॥ (मं कग्टिच्झली। कं मुहुगोगि।)

#### अध प्राचाना । -

श्रणस्तु माल्यपुष्पः स्थादमनः कटुतित्तकः ।

निशावनो दोर्घशाखस्त्वकारो दीर्धपद्ववः ॥ ७५ ॥

श्रणस्त्वकः कषायश्व मलगभीस्त्रपातनः ।

वान्तिकदातकप्रनुज्-ग्रेयस्तीव्राङ्गमर्दजित् ॥ ७६ ॥

(स्तिं श्रणः। ते श्रनमन्तिः, जनपनर, रेज्जचेट्ट्। तां जनव्यनर्।

दां जनवकनर्। मंगौ श्रणः। कं श्रणवुः।)

#### त्रय अन्वष्टानाम। —

श्रम्बष्ठाऽम्बालिकाऽम्बाला श्राम्बाऽम्बष्ठिकाऽम्बिका । श्रम्बा च माचिका चैव दृढ्वल्ला मयूरिका॥ ७०॥ गन्धपत्री चित्रपुष्पी श्रेयसी मुखवाचिका । कित्रपत्रा भूरिमसी विद्येया घोड्शाह्वया॥ ७८॥ श्रम्बष्ठा सा कषायान्सा कफकग्छर्जापद्या। वातामयबलासमी रुचिक्कद्दीपनी परा॥ ७८॥ (गौ श्राम्डा। श्रम्बाडा, श्रम्बरीति च दिच्यापये। हिं महुया। माचिका, साकुरुख दति च पश्चिमदेशे क्याता। मं श्रांवाडा। कं पुडोन।) अथ नौलीनाम।-

नीली नीला नीलिनी नीलपत्नी
तुत्था राज्ञी नीलिका नीलप्रधी।
काली घ्यामा ग्रोधनी श्रीफला च
ग्राम्या भट्टा भारवाही च मोचा॥ ८०॥
कृष्णा व्यञ्जनकेशी च रञ्जनी च महाफला।
ग्रमिता क्षीतनी नील-केशी चारिटका मता॥ ८१॥
गम्धपुष्पा घ्यामिलिका रङ्गपत्नी महाबला।
स्थिरङ्गा रङ्गपुष्पी स्थादेषा त्रिंग्रदाह्मया॥ ८२॥
नीली तु कटुतिक्तीष्णा केघ्या कासकफामनुत्।
मकित्वोदरव्याधि-गुल्मजन्तुज्वरापहा॥ ८३॥
(मं नीलीचे भाष्ट्र। ते नह्नपेट्टगेरिट, पेट्टनोलिचेट्टु।
गौ नीलगाह्य। वं हिं नीली।)

त्रय महानौलीनाम।—

श्रन्या चैव महानोली श्रमला राजनीलिका।
तुत्या श्रीफलिका मेला केशार्हा स्थापितका॥ ८४॥
महानीली गुणाच्या स्थाद्रङ्गश्रेष्ठा सुवीर्थ्यदा।
पूर्वीक्तनीलिकादेश्या सगुणा सर्वकर्मसु॥ ८५॥

(मं विडिलनीली। कं हिरियनीली।)

श्रथ गोजिह्वानाम।—

गोजिह्ना खरपत्रो स्थात् प्रतना दार्विका तथा। अधोमुखा धेनुजिह्ना अधःपुष्पी च सप्तधा॥ ८६॥ गोजिह्वा कटुका तीव्रा शीतला पित्तनाश्रनी। व्रणसंरोपणी चैव सर्वदन्तविषात्तिंजित्॥ ८७॥ ( हिं पाथरो, गोमो, गोजियालता, दाड़ीशाक। तें येहुना-लुकचेष्ट, भरिलिकचेष्टु। गौ दाख्रियाक। मं घाउना। कं यलुनालगे, पथरी, गोजिहा।)

अथ अपामार्गनाम।

अपामार्गसु शिखरी किणिही खरमञ्जरी। दुर्येह्याप्यधःशस्यः प्रत्यक्षुष्यी सय्रकः ॥ ८८॥ काण्डकण्टः ग्रैखरिको मर्कटी दुरभिग्रहः। विश्रिय पराक्षुष्पी कर्छी मर्कटपिप्पली ॥ ८८॥ कटुर्माष्ट्रिरिको नन्दी चवकः पंतिकग्रदकः। मालाक एट ख कु ज ख त्रयोविं प्रतिनामक: ॥ ८०॥ अपामार्गसु तिक्तोषाः कट्य कफनायनः। अर्थः अष्टूदरामम्रो रत्तद्वद् याहि वान्तिसत् । ८१। ( िं लट्जीरा, चिरचिरा। तें उत्तरेगी। मं त्रावाडा।

कं उत्तरणे, चिचिरा। गौ त्रापाङ्।)

श्रय रक्तापामार्ग-चुद्रापामार्गनाम ।—

अन्यो रत्तो द्यपामार्गः चुट्रापामार्गकस्तथा। श्राघटको दुग्धनिका रक्तविन्द्दल्पप्रतिका ॥ ८२ ॥ रक्तीऽपामार्गकः शीतः कट्कः कफवातनुत्। व्रणकण्ड्विषप्तय संग्राही वान्तिक्षत् परः ॥ ८३ ॥ ( हिं लालचिरचिरा। मं कं तांबडा, ग्राघाडा। तें केंपि-गुत्तरथे। गौ लाल ग्रापाङ्।)

### शताह्वादिवर्गः।

[44]

अय बलानाम।-

बला समङ्गोदिकिका च भद्रा भद्रोदनी स्थात् खरकाष्ठिका च।
काल्याणिनी भद्रबला च मोटा वाटी बलाक्येति च क्द्रसंज्ञा ॥८४॥
बलाऽतितिक्ता मधुरा पित्तातीसारनाश्यनी।
बलवीर्थ्यप्रदा पुष्टि-कफरोगिवशोधनी॥ ८५॥
( चिं वीजवन्द। मं वं चिक्तणा। कं विशेशरग, विरयारा। तें
पाचितोगे, सुनुवपुलगम्स, करिवेपचेट्टु। गो विडेला।)

त्रथ महासमङ्गानाम।—

महासमङ्गोदिनका बलाह्नया
वचारुहा विद्विबलाऽच्चतग्ड्ला।
अजङ्गजिह्नाऽपि च श्रीतपाकिनी
श्रोता बला श्रीतवरा बलोत्तरा॥ ८६॥
खिरिहिटी च बल्या च ललक्जिह्ना विपञ्चधा।
महासमङ्गा मधुरा श्रक्ता चैव विदोषहा।
युक्त्या बुधै: प्रयोक्तव्या व्वरदाह्वनाश्रनी॥ ८०॥
(हिं कगाहिया, खिरिहिटीरा। वं थोरिवकणामेदु। मं
चिक्तग्रमेदु। कं खिरिहिटिवा, वेगेंगरगमेदु।)
श्रय महाबलानाम।—

महाबला ज्येष्ठबला कटकारा केपारहा केसरिका स्गादनी।
स्थादर्षपुष्पाऽपि च केपवर्षनी पुरासणी देवसहा च सारिणी॥८८॥
सहदेवी पीतपुष्पी देवार्ही गत्थवसरी।
स्थान स्गास्था चेति म्रेया सप्तदशाह्या॥ ८८॥

कट्रभंत्रा एकादशाभिधा बला स्थादिवाधी: ।

सहाबला तु हृद्रोग-वातार्धः शोफमाश्रमी। श्रुऋष्टिकारी बच्चा विषमञ्चरहारिणी॥ १००॥ (मं पेटारो। क' सहदेवी, बेबुहरुवे।)

त्रंघ अतिबंबानाम।-

बिलकाऽतिबला बल्या विकक्षता वाट्यपृष्पिका घर्टा।

शीता च शीतपुष्पा भूरिबला वृष्यगन्धिका दश्रधा॥ १०१॥

तिता कटुश्वातिबला वातश्वी क्रिसिनाश्रनी।

दाइत्रश्वाविषक्कृदिं-क्लेदोपश्रमनी परा॥ १०२॥

(गौ श्वेतवेड़ेला। चिं ककिश्वा। मं पिटारियौ,

कांसुलौ। कं सुद्धदुक्वै।)

अध भद्रोदनीनाम।-

भद्रोदनी नागवला खरगन्था चतुष्प्रला।

सन्नोदया सन्नामाखा सन्नापत्रा सन्नापला ॥ १०३ ॥

विश्वदेवा तथाऽरिष्टा खर्वा च्रस्ता गविध्रका।

देवदण्डा सन्नादण्डा घाटित्याच्वालु षोड्म ॥ १०४ ॥

सध्राम्ता नागवला कषायीण्या गुरु: स्मृता।

कण्डूतिकुष्ठवातम्नो व्रणपित्तविकारिजत् ॥ १०५ ॥

(गो गोरचचाकुलिया। चिं गुलम्रकरी, ककही। मं

त्रय महाराष्ट्रीनाम ।—

महाराष्ट्री तु सम्प्रोक्ता शारदी तोयपिप्पली। मच्छादनी मच्छगन्धा लाङ्गली शकुलादनी॥ १०६॥ श्राग्निज्वाला चित्रपत्नी प्राणदा जलपिप्पली।
त्यणभीता बहुभिखा स्थादित्येषा त्रयोदम् ॥ १००॥
महाराष्ट्री कटुस्तीच्या कषाया मुख्योधनी।
व्रणकीटादिदोषन्नी रसदोषनिवर्हणी॥ १०८॥
(गौ कांचड़ा, पानस्गा। मं पिप्पलकाश्री। क' होस्गुलु,
पनिसङ्गा।)

#### त्रय त्रयगत्थानाम।-

याखगन्या वाजिगन्या कम्बुकाष्ठा वराहिका।
वराहकणी तुरगो वनजा वाजिनी हयी॥ १०८॥
प्रष्टिदा बलदा पुष्या हयगन्या च पोवरा।
पलायपणी वातन्नो ग्यामला कामकृषिणी॥ ११०॥
कालप्रियकरी बल्या गन्यपत्री हयप्रिया।
वराहपत्री विज्ञेया चयोविंग्यतिनामका॥ १११॥
याखगन्या कटूष्णा स्यात्तिक्ता च मदगन्यिका।
बल्या वातहरा हन्ति कासम्बासचयत्रणान्॥ ११२॥
(हिं स्रस्गन्य, वाराहोगेठी। मं श्रासन्य, स्रासान्दु,
स्रहुर, स्रासन्यका।)

#### अय इपुषानाम।—

हपुषा विपुषा विस्ना विस्नगन्धा विगन्धिका।
श्रन्था चासी खल्पपला कच्छूशी ध्वांचनाश्रनी॥ ११३॥
श्लीहश्रह्मविषम्नी च कपमी चापराजिता।
पूर्वा तु पञ्चनाम्नी स्थादपरा सप्तधाऽभिधा॥ ११४॥

## [ ५८ ] राजनिवय्टुः।

हपुषा कटुतिक्तोष्णा गुरु: श्लेषवलासजित्। प्रदरोदरिवड्बन्ध-शूलगुल्मार्थसां हरा॥ ११५॥ (हिं होइवेर। मं सेरगोबा दोनो, यरडुहब्बे। कं होवेर।)

#### अध भ्रतावरीनाम।-

श्रतावरी श्रतपदी पीवरीन्दीवरी वरी।
भीक्दींच्या दीपिश्रव्रुद्दींपिकाऽमरकिष्टिका॥ ११६॥
सद्मपत्रा सुपत्रा च बहुमूला श्रताह्मया।
नारायणी खादुरसा श्रताह्मा लघुपणिका॥ ११०॥
श्रात्मश्रल्या जटामूला श्रतवीर्च्या महीदनी।
मधुरा श्रतमूला च किश्विका श्रतविका॥ ११८॥
विश्वाख्या वैश्ववी कार्णी वासुदेवी वरीयसी।
दुर्मरा तेजवज्ञी च स्याच्यस्त्रिंशदाङ्मया॥ ११८॥
(गौ श्रतमूली। हिं सफेदमुश्रली, कोटोश्रतावरो। मं सानी-कार्यस्त्रेक। क' किरियखास्डि। ते' चन्न, चन्नगड्डन्न।)

### श्रथ 'मश्राग्रतावरीनाम।-

महाश्रतावरी वीरा तुङ्गिनी बहुपतिका।
सहस्रवीर्थ्या सुरसा महापुरुषदिन्तिका॥ १२०॥
फर्ड्वकाएा महावीर्थ्या फणिजिह्वा महाश्रता।
श्रतवीर्थ्या सुवीर्थ्या च नामान्यस्थास्त्रयोदश॥ १२१॥
श्रतावर्थ्यौ हिमे वृष्ये मधुरे पित्तजित्यरे।
कफवातहरे तिक्ते महास्रेष्ठे रसायने॥ १२२॥
श्रतावरीद्वयं वृष्यं मधुरं पित्तजिद्धिमम्।

### श्रताह्वादिवर्गः।

[42]

महती कफवातन्नी तिक्ता खेष्ठा रसायने । कफिपत्तहरास्तिकास्तस्या एवाङ्गुरा: स्मृता: ॥ १२३ ॥ (हिं कङ्गहीमूल । मं दोन्हो कांटेनेक्गुगा । कं यरडु आस्डियगुगा । )

अय एलबालुकनाम।—

एलवालुकसालूकं बालुकं हरिबालुकम्।
एलवालुकं कपित्यं च दुवेणं प्रसरं टढ़म्॥ १२४॥
एलागन्धिकमेलाह्नं गुप्तगन्धि सुगन्धिकम्।
एलाफलं च विज्ञेयं दि:सप्ताह्वयमुच्यते॥ १२५॥
एलबालुकमत्युगं कषायं कफवातनुत्।
सूक्क्वीत्तेज्वरदाहां व नाम्रयेद्रोचनं परम्॥ १२६॥
(हिं एल्वा। तें कुतुरवुड़मचेटु। गो एलबालुक। मं कलक्रुडले।)

त्रियो तरणस्तेर: कुनीली नामतसतु:।
तिरण: शिश्रिरस्तिको व्रणप्तोऽक्णरङ्गद:॥ १२०॥
(मं तरणा। कं वेवित्तिग। गौ तरहागाछ।)

श्रय कलिकारीनाम।-

कितारी लाङ्गलिनी इलिनी गर्भपातिनी। दीप्तिर्विभव्याऽग्निमुखी इली नक्तेन्दुपृष्पिका॥ १२८॥\* विद्युज्ज्वालाऽग्निजिह्वा च व्रणहृत् पुष्पसीरभा। स्वर्णपुष्पा विद्विभिक्ता स्थादेषा षोड्गाह्वया॥ १२८॥

<sup>\*</sup> नत्तेन्दुपृष्पिकिति—नता दन्दुपृष्पिकिति च दयम ; तेन मिखित्वा षोषुग्रसंख्या सादित्यर्थः !

कलिकारी कट्रणा च कफवातनिक्वन्तनीं। गर्भान्त:प्रत्यनिष्कास-कारियी सारियी परा ॥ १३०॥ ं मं लाङ्गलिलाङ्गलिके। कं करिद्वारी, राडागारि। गो विषलाङ्गलिया।) त्रघ जयन्तीनाम।-

जयन्ती तु बलासीटा हरिता च जया तथा। विजया स्ट्रामूला च विक्रान्ता चापराजिता ॥ १३१ ॥ च्चेया जयन्ती गलगग्डहारी तिका कटूच्याऽनिलनामनी च। भूतापहा कराउविशोधनी च क्षणा तु सा तत्र रसायनी स्यात् ॥ १३२॥

(मं सोरेरिं। वं तोगरसे। गो जन्तोगाक, धन्नेगाक।) ग्रथ काकमाचीनाम।-

काकमाची ध्वाङ्ममाची वायसाह्या च वायसी। सर्वतिज्ञा बहुफला कट्फला च रसायनी ॥ १३३॥ गुक्कपाला काकमाता खादुपाका च सुन्दरी। वरा चन्द्राविणी \* चैव मत्याची कुष्ठनाशनी। तितिका बहुतिका च नामामष्टादय स्मृता: ॥ १३४ ॥ काकमाची कटस्तिता रसोश्या कफनाशनी। शूर्वार्शः शोफदोषन्नी कुष्ठकण्डुतिहारिणी ॥ १३५॥ ( हिं कवैत्रा, कावइ, कावी। मं कं कवया।

गो गुड़कां उलो।)

<sup>\*</sup> अत विद्रावणीति पाठस्तु सुगम एव। वस्तुतस्तु द्राविखी चैव'' द्रत्येवं पाठ एव लिपिकरप्रमादात् "द्राविखाः" पूर्वं चकारसः निवेशितत्वादौद्दशः पाठप्रमादः सन्धवत्येवेत्यर्थः।

### ऋष श्रुतश्रेगीनाम।—

श्रुतश्रेणी द्रवन्ती च न्यग्रोधी सृषिकाह्मया।
चित्रा सृष्ठभमारी च प्रत्यक्श्रेणी च श्रुखरी ॥ १३६॥
श्रुतश्रेणी च चच्चष्या कटुराखुविषापहा।
त्रणदोषहरा चैव नेत्रामयनिकन्तनी ॥ १३०॥
(म' भोम्पणी, उन्हिक्विगोवा। क' वह्नोहर्दे, दच्चवानु। तां
दन्द्रवानुक। तें एनुकचिविचेट्टु। गौ मूषाकाणी।)

अय मार्कवनाम।-

मार्कवो सङ्गराजय सङ्गाहः केगरन्त्रनः।

पित्रिप्रियो रङ्गक्य केग्नः कुन्तलवर्षनः॥ १३८॥

पीतोऽन्यः \* स्वर्णसङ्गरो हरिवासो हरिप्रियः।

देवप्रियो वन्दनीयः पवनय षड़ाह्नयः॥ १३८॥

नीलसु १ सङ्गराजोऽन्यो महानीलसु नीलकः।

महासङ्गो नीलपुष्पः ग्यामलय षड़ाह्नयः॥ १४०॥

सङ्गराजासु चन्नुष्पास्तिकोष्णाः केग्नरन्तनाः।

कम्भामिवषम्नाय तत्र नीलो रसायनः॥ १४१॥

(हिं मङ्गरा। मं गरुगमूर। वं माका। गौ भीमराज।

कः मङ्गरैया।)

<sup>\*</sup> त्रत पीतप्रव्ही विभ्रेषस्यवाचकः न तु पर्यायवाची।

<sup>†</sup> अत्र नीलग्रनः पर्यायवाची न तु सङ्कराजस्य विश्रेष्ठणमिति ज्ञेयम्।

#### त्रथ काकजङ्घानाम।—

काकजङ्घा ध्वांचजङ्घा काकाह्वा साऽघ वायमी।
पारावतपदी दासी नदीकान्ता सुलोमग्रा॥ १४२॥
काकजङ्घा तु तिक्तोश्या क्रिमिव्रणकफापद्घा।
बाधिर्याजीर्णजित् जीर्ण-विषमज्वरद्यारिणी॥ १४३॥
(गौ केल्याठें डा। मसीति पाश्वात्ये। मं जीरी। कं चौलेच।)

### त्रथ चुचुनाम।—

चुचु वजला चचु: कलभी वीरपितका।
चुचु र चुचु पत्र च सुभाक: चेत्रसभाव: ॥ १४४ ॥
चुचु सु मधुरा तीच्या कषाया मलगोषणी।
गुस्मोदरिवबन्धार्भी-ग्रचणीरीगचारिणी॥ १४५ ॥
(म' महाचुचु। क' हिरियचुचु। हिं चेवना। तें चिन्तचेटु।
गो चें चको।)

### त्रय वृष्ट्युनाम।—

वृहचुचुर्विषारि: स्थान्महाचुचु: सुचुचुना।
स्थूनचुचुर्दीर्घपत्री दिव्यगन्धा च सप्तधा॥ १४६॥
महाचुचु: कटूणा च कषाया मनरोधनी।
गुल्मशूलोदराशीऽर्त्ति-विषन्नी च रसायनी॥ १४०॥

## त्रय चुद्रचुचुनाम। —

चुद्रमुखुः सुचुबुः स्थाचुब्रः श्रनकचुबुका । त्वक्सारमेदिनी चुद्रा कटुका चिरपत्रिका ॥ १४८॥ खुद्रचुचु सधुरा कटूष्णा च कषायिका।
दीपनी श्र्लगुल्मार्थ:-शमनी च विबन्धकृत्॥ १४८॥
(मं लाहानुचुचु, नादचुचु। कं क्रोटिचेच।)

त्रय महाचुच्चवीजगुगाः।--

चुचुवीनं कटूष्णच गुलाशूलोदरात्तिंजित्। विषलग्दोषकग्डूति-खर्जूकुष्ठविषापहम् ॥ १५०॥ त्रिष्ठ सिन्दुवारनाम।—

सिन्दुवारः खेतपुष्यः सिन्दुकः सिन्दुवारकः। स्रसाधनको नेता सिडकश्चार्यसिडकः॥१५१॥ सिन्दुवारः कटुस्तिकः कामवातच्चयापहः। कुष्ठकण्डूतिश्रमनः शूलहृत्वाससिडिदः॥१५२॥ ( हिं श्रम्भानु। मं लिङ्गुर। ते वोविद्धि। तां निगीिष। गौ श्रादा निश्चन्दा।)

त्रय नौलिनिर्गुखीनाम:-

सुगन्धाऽन्या श्रीतसहा निर्मुग्छी नीलसिन्दुकः।
सिन्दूकसपिका भूत-केशीन्द्राणी च नीलिका॥ १५३॥
काटूणा नीलनिर्मुग्छी तिका रूचा च कासजित्।
स्रेषशोफसमीरार्त्ति-प्रदराधानहारिणी॥ १५४॥
(मं करियक्वोक्वि। कं भेजडो। ते नक्वववित्वे। वं कलग्रडुलसा।
दां कालिसुम्बालि। गौ नील निश्चिन्दा, जगत्मादन।)

अधः भेपालिनाम।---

श्रीफालिका तु सुवहा श्रुक्ताङ्गी श्रीतमञ्जरी प्रोक्ता। श्रपराजिता च विजया वातारिर्भूतकेशी च॥१५५॥

# [ ६४ ] राजनिवय्टुः।

श्रेफालि: कटुतिक्तोश्या रूचा वातच्यापहा।
स्यादङ्गसन्धवातन्नी गुदवातादिदोषनुत्॥ १५६॥
( हिं सिहर, सिश्रोलि। मं पाग्ढरीनिगृण्डि। कं बिलियलोके।
वं हरसिङ्ग। तां मन्जप। गौ श्रिडलि।
लहरीति पञ्जावे प्रसिद्धा।)

त्रय भेग्डानाम।-

भेग्डा भिग्डातिका भिग्डो भिग्डक: चेत्रसम्भव: । चतुष्पदश्चतुष्पुग्डु: सुग्राकश्चास्त्रपत्रक: ॥ १५७॥ करपणी वृत्तवीजो भवेदेकादगाह्वय: । भेग्डा त्वस्त्रसा सोन्या ग्राहिका रुचिकारिका ॥ १५८॥ (म'मेड़। क' बेंडे। तां मेडोरज्जसम्भव।)

त्रय पुत्रदानाम।

पुत्रदा गर्भदाती च प्रजादाऽपत्यदा च सा।

स्रष्टिप्रदा प्राणिमाता तापसद्गुमसिन्नमा॥ १५८॥

पुत्रदा मधुरा शीता नारीपुष्पादिदोषहा।

पित्तदाह्रश्रमहरा गर्भस्मृतिदायिका॥ १६०॥

(मं गर्भदा। क' वेदनकस।)

त्रय तकाहानाम।-

तक्राह्वा तक्रभचा तु तक्रपर्य्यायवाचका।
पञ्चाङ्गुली सिताभा स्यादेषा पञ्चाभिधा स्मृता।
तक्रा कटुः क्रिमिन्नी स्थाद व्रणनिर्मूलिनी च सा॥ १६१॥
(मं ताका। क' च्रिष्टणिके।)

### त्रघ खर्गुलोनाम।—

खर्पुली हेमपुष्पी स्थात् खर्पपुष्पध्वजा तथा। खर्पुली कटुका श्रीता कषाया च व्रणापहा॥ १६२॥ (वं सोतुली। कं सदकनक्षत्व। तां सनाय। हिं ग्रामल् टस्। मं गुड़मलवर। तें येयल्ल। पञ्जाः कानग्रार। गौ सोनालुगाछ।)

अध खखस(खाखस)नाम।-

खस्त्रसः स्त्यावीजः स्यात् सुवीजः स्त्यातख्नुतः । खस्त्रसो मधुरः पाने कान्तिवीय्यवसप्रदः ॥ १६३ ॥ ( खस्त्रस मालवे प्रसिद्धः । गौ खान्नसी, पोस्तदानार गास्र । )

त्रय शिम्(रर)डीनाम ।—
श्रिमेडी मितदा प्रोत्ता बच्या पङ्ग्लहारिणी ।
द्रवत्पत्नी च वातन्नी गुक्छपुष्पी च सप्तथा ॥ १६४ ॥
श्रिमेडी कटुरुष्णा च वातन्नत् पृष्ठशूलहा ।
युत्तया रसायने योग्या देहदाव्यंकरी च सा ॥ १६५ ॥
( मं भगुडितो । वं भगुडिते । हिं चङ्गोनो । )

त्रथ त्ररखञ्जसुन्धनाम।—

न्नेयोऽरख्य सुस्थः स्थात् की सुस्थ श्वान्निसस्थवः । की सुन्धः कटुकः पाके स्रेष्ण हृदीपनश्च सः ॥ १६६॥ (मं रानकासुन्धे। कं का जुकुसुन्धे। तां अडिव सुन्धे। गो वनकुसुम्।)

त्रघ त्राह्ल्यनाम।--

श्राहुक्यं हतुराक्यं च करं तरवटं तथा। शिक्वीफलं सुपुष्यं स्थादवें दन्तकाष्ठकम् ॥ १६७॥

बा--ध्

हिमपुष्यं तथा पात-पुष्यं काञ्चनपुष्यकम्।
नृपमङ्गल्यकं चैव शरत्युष्यं चिरेकधा ॥ १६८॥
श्राह्रल्यं तिक्तशीतं स्याच्चल्यं पित्तदोषनुत्।
मुख्यक्षुष्ठकण्डूति-जन्तुश्रूलव्रणापहम् ॥ १६८॥
(हिं मुझितवड़। मं तरदहु, श्रावेर। कं मूईतरवडु।
तां नेलांवरे।)

श्रय भूम्याचुल्यनाम।—

भूस्याइत्यं कुष्ठकेतुर्मार्कराहीयं महीषधम् । भूस्याइत्यं तिक्तरसं ज्वरकुष्ठामसिधानृत् ॥ १७०॥ (मं कासवदा । कं एलहुरि । हिं भूदतखड़ ।)

त्रय कासमर्दनाम।—

कासमदीऽरिमर्दय कासारिः कासमर्दकः। कालः कनक इत्युक्तो जारणो दीपकस्य सः॥ १७१॥ कासमर्दः सितक्तोणो मधुरः कफवातनुत्। स्रजीर्णकासिपत्तप्रः पाचनः कग्छशोधनः॥ १७२॥

( हिं कसौदी, कासिन्दा। मं कं कासिवन्दा। तें कसिविन्दचेट्ट। गौ कालकासन्दा। कासवदीफरचुल् कसादश्च दति देशविशेषे खातः।)

त्रय त्रादित्यपतनाम।—

श्रादित्यपत्नीऽर्कदलार्कपत्नः स्थात् स्त्यापत्नस्तपनच्छदश्च । कुष्ठारिन्की विटपः सुपत्रो रिविप्रियो रिस्सपतिश्च रुद्रः ॥१७३॥ श्रादित्यपत्रः कटुरुणवीर्थः कफापहो वातरुजापहश्च । सन्दीपनो जाठरगुलाहारी च्रेय: स चारोचननाशकस ॥१७४॥ (मं त्रादित्याचामेद्र। कं ग्रादित्यभक्तियभेद्र।)

अथ श्वेतास्त्रीनाम।-

खेताक्ती त्वस्विका प्रोत्ता पिष्टीखिं : पिखिंका च सा। खेताक्ती मधुरा द्वष्या पित्तन्नी बलदायिनी॥ १०५॥ (मं पौठौखिं। क' बिलियइलि। ते' कालीपिटौखिं। तां करियइलि।)

त्रथ नोलासीनाम।—
नीलास्ती नोलपिष्टीरण्डी ग्यामास्ती दीर्घणाखिका।
नीलास्ती मधुरा क्चा कप्पवातहरा परा॥ १७६॥
(हिं कालीपिठोली। मं म्रजगन्थ। कं वेलेयगिडु।
तां नक्षत्रलगुड़।)

अथ अजगन्धानाम।—

अजगन्धा वस्तगन्धा सुरपुष्पाऽविगन्धिका। उग्रगन्धा ब्रह्मगर्भा ब्राह्मी पूर्तिमयूरिका॥ १७०॥ अजगन्धा कटूष्णा स्थाद्यातगुल्मीदरापहा। क्षणेत्रणात्तिभूलन्नी पीता चेदञ्जने हिता॥ १७८॥ (नोलवर्णीति सर्वत्र प्रसिद्धा। तिलीगी, वर्वरीति लोका।)

त्रय त्रादित्यभक्तानाम।-

श्रादित्यभक्ता वरदाऽर्कभक्ता सुवर्चला स्थ्येलताऽर्ककान्ता।
मण्ड्रकपणी सुरसम्भवा च सीरि: सुतेजोऽर्कहिता रवीष्टा ॥१७८॥
मण्ड्रकी सत्यनाम्त्री स्थाहेवी मार्त्तग्डवस्नभा।
विक्रान्ता भास्त्रगेष्टा च भवेदष्टादशाह्नया॥१८०॥

# राजनिष्ययुः ।

ग्रादित्यभक्ता शिशिरा सितक्ता कटुस्तथोग्रा कफहारिणी च। त्वग्दोषकण्डू व्रण्कुष्ठभूत-ग्रहोग्रशीतन्वरनाशिनी च॥ १८१॥

(क' मादिता। तां मादित्यमिता। हिं हु बहु छ, हु र हु ज। मं मूर्थिपु खविता। गी मुक्टे, वनम्म ल्ते, हु डू हु है।)

अय विषमुधिनाम।-

विषमुष्टिः वेग्रमुष्टिः सुमुष्टिरगुमुष्टिकः ।
चुपडोडिसमायुक्तो मुष्टिः पञ्चाभिधः स्मृतः ॥ १८२ ॥
विषमुष्टिः कटुस्तिको दीपनः कफवातहृत् ।
कर्मायहरो रूचो रक्तपित्तार्त्तिदाहकृत् ॥ १८३ ॥
(डिं विषदोड़ी । मं दोडो । कं कडिसगे । गौ घोड़ानिम ।)

त्रय डोडोनाम।--

श्रन्या डोडी तु जीवन्ती शाकश्रेष्ठा सुखालुका। बहुपर्णी दीर्घपत्ना सुद्धपत्ना चं जीवनी ॥ १८४॥ डोडी तु कटुतिकोश्णा दीपनी कफवातजित्। कग्ठामयहरा रुचा रक्तपित्तार्त्तिदाहनुत्॥ १८५॥

(मं वेलिदोडी। वं वित्तवस्मिगे।)

त्रथ कालाझनीनाम।—
कालाञ्जनी चाञ्जनी च रेचनी चासिताञ्जनी।
नीलाञ्जनी च कृष्णाभा काली कृष्णाञ्जनी च सा॥ १८६॥
कालाञ्जनी कट्ष्णा स्यादस्त्रामिक्रिमिशोधनी।
स्रिपानावर्त्तश्रमनी जठरामयहारिणी॥ १८७॥

( कालाञ्जनी सर्वत्र प्रसिद्धा। गो कालकापांस।)

ग्रथ कार्पासीनाम। -

कार्पासे सारिणो चैव चव्या स्थूला पिचुस्तथा। बदरी बादरचैव गुणसूसुण्डिकेरिका। मरूज्ञवा समुद्रान्ता ज्ञेया एकादशाभिधा॥ १८८॥ कार्पासी मधुरा श्रीता स्तन्या पित्तकफापहा। तृष्णादाहयमभ्यान्ति-मूक्कीहृदुवलकारिणी॥ १८८॥

(मंरत्तकापुसी। वं इति। तें पत्ति।)

अध अरखकार्पासीनाम।-

वनजाऽरख्यकार्पासी भारहाजी वनोज्ञवा। भारहाजी हिमा रुचा व्रव्यास्त्रचतापहा॥ १८०॥

> (म' रायकापुरी। क' काडहत्ति।) अध कोविलाचनाम।— \*

कोकिलाचः शृगालो च शृङ्खला रकणस्तथा।
शृङ्गालघर्टी वज्रास्थि-शृङ्खला वज्रकर्टकः ॥ १८१ ॥
इत्तुरः चुरको वज्ञः शृङ्खलिका पिकेचणः।
पिच्छिला चेच्चगन्धा च ज्ञेया भुवनसिम्मता॥ १८२ ॥
कोकिलाचलु मध्रः भीतः पित्तातिसारनृत्।
वृष्यः कफहरो बल्धो क्चः सन्तर्पणः परः॥ १८३॥
(मं कोिलसा। कं कुलुगोलिके। चिं कोिलसाविखड़, केलया।
तद्दीजं तालमाखना। तें गोिलिमिडिचेट्टु, गोिल्वचेट्ट । उत्
कुद्दलिरखा, माख्रेण। गो कुलेखाड़ा, कुलेकांटा,
भूलमर्दन।)

<sup>•</sup> उद्देश "दिविधः कोक्तिलाचकः" दति ग्रस्यकारेयोक्तम्, अत्र विवर्गो पुनः एकविधसैव अलेखो दृश्यते दति सुधीभिद्रष्टव्यम्।

### राजनिष्युः।

[00]

त्रथ सातलानाम।-

सातला सप्तला सारी विदुत्ता विमलाऽमला।
बहुफेना चर्मकषा फेना दीप्ता विषाणिका।
खणैपुष्पी चित्रघना स्थालयोदश्रनामका॥ १८४॥
सातला कफपित्तन्नी लघुतित्तकषायिका।
विसर्पकुष्ठविस्फोट-व्रणशोफनिक्तन्तनी॥ १८५॥
(वं विह्नसोत्नी। कं हिरियचटकनख। तां पीतहुग्ध-

सेचु गुने द । गी मनसाभेद ।)

अध कामवृद्धिनाम।—

स्यात् कामवृद्धिः स्मरवृद्धिसंज्ञो मनोजवृद्धिर्मदनायुध्य । कन्द्रपंजीवय जितिन्द्रयाद्धः कामोपजीवोऽपि च जीवसंजः॥१८६ कामवृद्धेसु वीजं स्थान्मधुरं बलवर्ष्डनम् । कामवृद्धिकरं रुच्यं बद्धसेन्द्रियवृद्धिदम् ॥ १८७ ॥ (कामजा चिष्डितेन्द्रिया कर्णाटदेशे प्रसिद्धा ।)

त्रय चक्रमर्दनाम।-

स्याचक्रमर्दीऽण्डगजो गजास्यो मेषाच्चयसैडगजोऽण्डहस्तो। व्यावर्त्तकसक्रगजस चक्री प्रनाडप्रनाटविमर्दकास॥ १८८॥

दहुन्नस्तर्वट्य स्याचकाह्यः श्वननाश्रनः।

हद्वीजः प्रप्रचाटः खर्जून्नसोनविंश्रतिः ॥ १८८ ॥

चक्रमर्दः कटुस्तीत्रो मेदोवातकपापहः।

त्रणकण्डूतिकुष्ठार्त्तं-दहुपामादिदोषनुत् ॥ २०० ॥

(म'तरवटा। क' चगचे। हिं चकवड। गौ चाकुन्दा,

चाटकाटा, एड़ाचौ।)

अय भिन्भिरौटानाम।—

भिन्भिरीटा कर्य्यपत्ती पीतपुष्पाऽपि भिन्भिरा। इड़रोमात्र्यपत्ता वत्ता चैव षड़ाह्मया॥ २०१॥ भिन्भिरीटा कटुः श्रोता कषाया चातिसारिजत्। वृष्या सन्तर्पणी बच्चा महिषोचीरवर्षनी॥ २०२॥

(म'भिज्मिरिडः। क' लोहाहे। तां त्रएटरीट।)

द्रश्चं पृथुत्तुपकदम्बकनामकाण्ड-निर्वर्णनागुणनिरूपणपूर्वमेतम् । वर्गं वटुः स्फुटमधीत्य दधीत सद्यः सीवर्गवैद्यकविचारसुचातुरीं सः॥ २०३॥ \*

येन खेन तृणां चणिन महता वीर्येण स्यौपमा व्यत्यस्याङ्गिवकारमुद्धततया दूरं चिपन्यामयान् । खिस्मनान्त्रपि संस्तवादिवशतस्तेषां विकारोदय-व्यत्यासं दधतां नितान्तगहनो वगै: चुपाणामयम् ॥ २०४॥ १

<sup>\*</sup> दत्यिमित्यादि ।—दत्यं पृथुचुपादीनां निर्वर्धनाया गुणिनरूपण-पूर्वेकम् एतं वगं स्कुटमधीत्य स (प्रिचार्थी) वटुः (माणवकः) सीव-गिस्य सुवर्गसम्बन्धिनः वेद्यकग्रस्य श्र विचारिवषये सम्यक् चात्रीं को प्रखं सद्यस्तत्त्वणात् दधीत कुर्यादित्यन्वयमुखी व्याख्या।

<sup>†</sup> येनेत्यादि।—येन खेन महता वीर्येण मूर्योपमाखेन खिनः, ये चुपा इति ग्रेषः, चणेन चणाम् अङ्गविकारं देहरोगं व्यत्यस्य विनास्य छहततया वीर्यातिग्रयादिति भावः, ग्रामयान् चणां रोगान् दूरं चिपन्ति ताष्ट्रयन्ति । तथा खिसान् खिकीये नामि नामवियेऽपि, का कथा सेननादो द्रायपेर्यः, मंद्यवादिन्यतः परिचयादिन्यात् विकारो-

सन्तापं विदुषां प्रसद्य समिती स्मीतं प्रतापं द्विषां यिसान् विसायतेऽवनच्च निधनं दृष्टाऽधुना तेत्रसा । धुन्वन्त्यीषधयः स्वयं किल गदान् येनार्पिताः स्पर्धया तृथ्यस्तस्य क्रती स्थितो नरहरेर्वर्गः यताश्चादिकः ॥ २०५ ॥\*

द्ति यौनरहरिपण्डितविरचिते राजिनघरो
प्रताह्वादिवगैश्वतुर्थः।

दयस्य रोगोत्पत्तेः व्यत्यासं नामं द्वतां क्वर्वतां तेषां चुपाकां नितान्त-गहनः दुर्ज्ञेयत्वादतीव दुरूहः त्रयं वर्गः समाप्तो भवतीति भेषः।

\* सन्तापिमत्यादि।—विदुषां सन्तापं संन्तरं प्रसद्य श्रामिश्य नाश्यित्वेति तावत्, तथा समितौ सदिस स्कीतं विद्धितं दिषां श्रव्णां प्रतापं प्रभावं तेन इति यावत् प्रसद्य, श्रभ्रुना स्दानीं तेनसा यस प्रभाविणित्यर्थः, श्रवनं विदुषामिति श्रेषः, निधनं दिषामिति श्रेषः, दृष्टा यसिन् यत्समीपे इति सामीयाधिकरण्यम् ; विस्नयते विस्मयाप्यो भवति लोक इति श्रेषः। तथा येन मरहिरणा स्वयम् श्रामा सर्द्वया गर्वेण श्रपिता श्रोषचयः गदान् रोगान् धुन्वन्ति नाश्ययन्ति तस्य नरहरेः क्रतौ ग्रन्थे श्रयं तृष्यैः चतुर्थः श्रताह्यादिकः वर्गः स्थितः।

restricted audient fairful ton

# अय प्रपेटाहिवगै:।

पर्पटो जीवकश्चैवर्षभकः श्वावणी हिधा।

मेदाहयं ऋडिव्रडी धूम्यपता प्रसारणी॥१॥
चतुष्पाषाणभेदः स्थात् कन्या वर्ष्टिणिखा तथा।
चौरिणीहितयं चैव त्रायमाणा क्दन्तिका॥२॥
बाह्यी हिधा च वन्दाकः कुलत्या तण्डुजीयकः।
चिविन्नो नागग्रण्डी च कुटुख्वो स्थलपद्मिनी॥३॥
जब्बृश्च नागदन्ती च विष्णुक्तान्ता कुण्ड्यरः।
स्र्यामली च गोरची गोलोमी दुग्धफेनिका॥॥॥
चुद्राम्त्रिका च लज्जाह्वी इंसपादी च कायरा।
पुनर्नवात्रयं प्रोत्तं वसुको हिविधः स्पृतः॥५॥
सर्पिणी चालिर्मस्याची गुण्डालाऽविनपाटली।
स्थात् पाण्डुरफली खेता ब्रह्मदण्डी द्रविन्तिका॥ ६॥
द्रोणपुष्पीहयं चैव भण्डुगीरचदुग्धिका।
नवनाणसिताः चुद्र-चुपाः प्रोत्ता यथाक्रमात्॥ ०॥

नवबाणिमता दित।—अत पपेटमारम्य गोरचहुग्धिकां यावत्
 नववेदिमता संख्या भवति। तत एषां भेदान् ष्टत्वा, ऋषिष्ठस्रोरैक्यश्व
 ग्रहीत्वा पुनदेशसंख्या अधिकाः, तती मिलित्वा एकोनषष्टिसंख्या
 स्वादित्यधैः।

### अय पर्देटनाम।-

पर्पटस्वा रेगुस्तृष्णारिः खरको रजः ।

श्रीतः श्रीतप्रियः पांश्रः कल्पाङ्गी वर्मकग्रदकः ॥ ८ ॥

क्रम्यशाखः पर्पटकः स्रितिको रक्तपुष्पकः ।

पित्तारिः कटुपत्रस्र कवचोऽष्टादग्राभिधः ॥ ८ ॥

पर्पटः श्रीतलस्तिकः पित्तस्रेभन्वरापदः ।

रक्तदाहारुचिग्लानि-मदिवस्त्रमनाश्रनः ॥ १० ॥

(म'वं पित्तपापडा । कं पर्पाटक । हिं दवनपापड़ा । उत्

जड़पांपडा । गो चितपापडा ।)

### अध जीवकनाम।--

जीवको जीवनो जीव्यः शृङ्गाह्वः प्राणदः प्रियः । चिरजीवी च मधुरो मङ्गल्यः कूर्चभौर्षकः ॥ ११ ॥ इस्वाङ्गो वृद्धिदश्चोक्तो च्यायुष्मान् जीवदस्तथा । दोर्घायुर्वेलद्रश्चैव नामान्येतानि षोङ्ग्र ॥ १२ ॥ जीवको मधुरः भौतो रक्तपित्तानिलार्त्तिजित् । चयदाङ्ख्यान् इन्ति भुक्तश्चेषाविवर्द्धनः ॥ १३ ॥ (जीवक इति गोड़े प्रसिद्धः । ते विगिष्ठप्वेष्ट् । )

#### त्रय ऋषभनाम।---

ऋषभी गोपतिर्द्वीरो विषाणी धूर्दरो हणः।

क्रम्भान् पुङ्गवो वोढ़ा खङ्गो धुर्थ्यस्य भूपतिः॥ १४॥

कामी ऋचप्रियसोचा लाङ्गुली गौस बन्धुरः।

गोरची वनवासी च ज्ञेयो विंग्रतिनामकः॥ १५॥

# पर्पटादिवर्गः।

[ ७५ ]

म्हणभो सध्रः श्रोतः पित्तरक्तविरेतानुत्। श्रुक्रस्रोष्मकरो दाइ-चयन्वरहर्य सः॥१६॥ ( ऋषभक दित काश्मीरे गौड़े च प्रसिद्धः। )

यावणी स्थान्मण्डितिका भिन्नु: यवण्योर्षिका ! यवणां च प्रविज्ञता परिव्राजी तपोधना ॥ १० ॥ यावणी तु कषाया स्थात् कटूणा कफपित्तनृत् । यामातीसारकासन्नी विषक्किर्दिवनाणिनी ॥ १८ ॥ (मं क्वीटीमण्डो । कं कीयोवोडतर । भी सुण्डीरी । )

अय महायावणीनाम।-

महात्राविषकाऽन्या सा महामुखी च लोचनी। कदम्बपुष्पी विकचा क्रोड़च्ड़ा पलङ्कषा॥ १८.॥ नदीकटम्बो सुख्डाख्या महासुख्डितिका च सा।

क्ति ग्रन्थिनिका माता स्थिवरा लोभनो तथा। भूकदम्बोऽलम्बुषा स्यादिति सप्तदशाह्नया॥ २०॥

सहामुख्याषातिका च ईषद्गीत्या सर्वाक्तिरा। स्वरक्तद्रोचनी चैव सेहहृच रसायनी॥२१॥

(मंवडीमुग्डी। कं हिरिय बोलतर। गौ वड़्युलकुड़ि,

गोरचमुग्डी।) अय मेदानाम।—

मेदा वसा मिणिच्छिद्रा जीवनी ग्रत्थपर्णिका। नखच्छेद्या हिमा रङ्गा मध्यदेशे प्रजायते॥ २२॥ मेद:सारा स्नेहवती मेदिनी मधुरा वरा।

### राजनिषयुः।

[ 30]

स्निष्धा मेदोद्रवा साध्वी श्रत्यदा बहुरिस्तृका। जनविंशत्याह्वया सा सता पूर्षदिन्तिका॥ २३॥ मेदा तु सधुरा श्रोता पित्तदाहार्त्तिकासगुत्। राजयच्याञ्चरहरा वातदोषकरी च सा॥ २४॥ ( बहुनेदा इति गौड़े प्रसिद्धा। कं महामेदा। तें च्योतिषाती-चेट्ट, श्रद्धमुष्यचेट्ट्ट।)

श्रथ महामेदानाम।—

महामेदा वसुच्छिद्रा जीवनी पांग्ररागिणी।
देवेष्टा सुरमेदा च दिव्या देवमणिस्तथा॥२५॥
देवगन्धा महाच्छिद्रा ऋचार्हा रुद्रसिम्नता।
महामेदाऽभिधः कन्दो लताजातः सुपाण्डुरः।
मेदाऽपि ग्रुक्तकन्दः स्थान्मेदोधातुमिव स्ववेत्॥२६॥
महामेदा हिमा रुच्या कफग्रुक्तप्रदृष्टिक्तत्।
इन्ति दाहास्रपित्तानि चयं वातज्वरं च सा॥२०॥
(महामेदित गोड़े प्रसिद्धा। तें महामेदयनेचेटु।)

### अय ऋदिनाम।—

ऋिं सििं प्राणदा जीवदाती सिंदा योग्या चेतनीया रथाङ्गी।
सङ्ख्या स्थान्नीककान्ता यशस्या जीवश्रेष्ठा दादशाह्वा क्रमिण॥२८॥
श्रथ विद्वास।—

वृद्धिसुष्टिः पुष्टिदा वृद्धिदाती मङ्गल्या श्रीः सम्पदाशीर्जनेष्टा । लच्मीर्भूतिर्मुत् सुखं जीवभद्रा स्यादित्येषा लोकसंज्ञा क्रमेण॥२८॥ ऋदिर्वृद्धिश्च कन्दौ दो भवतः कोश्रयामले । खेतरीमान्वितः कन्दो लताजातः सरम्भृकः ॥ ३०॥ तूलग्रस्थिसमा ऋिषवीमावर्त्तफला च सा।
विदिश्च दिचणावर्त्त-फला ग्रोक्ता महिषिभ: ॥ ३१॥
ऋिषवृद्धिय मधुरा सुिक्तिग्धा तिक्तग्रीतला।
किचिमेधाकरी स्रेष-िक्रिमिकुष्टहरा परा॥ ३२॥
प्रयोगिष्वनयोरेकं यथालाभं प्रयोजयेत्।
यत्र दयानुसृष्टि: स्याद्वयमप्यत्र योजयेत्॥ ३३॥
(कोग्रयामने. ऋिष्वहोति च गोड़े प्रसिद्धें।)

श्रय धूमपताना न ।—

ध्न्त्रपत्रा तु धूम्त्राह्वा सुलभा तु खयभुवा।
ग्टभ्रपत्रा च ग्टभ्राणी क्रिमिन्नी स्त्रीमलापहा॥ ३४॥
धूम्त्रपत्रा रसे तिक्ता शोफन्नी क्रिमिनाशिनी।
उष्णा कासहरा चैव रुचा दीपनकारिणी॥ ३५॥
(मंगान्वाणि। कं कत्तगिरि। उत् धूयापतर। गौ तामाक।)

श्रय प्रशारणीनाम।—

प्रसारणी सुप्रसरा सारणी सरणी सरा।

चारुपणी राजबला भद्रपणी प्रतानिका॥ ३६॥

प्रवला राजपणी च बल्या भद्रवला तथा।

चन्द्रवली प्रभद्रा च क्रेया पश्चद्रशाह्रया॥ ३०॥

प्रसारणी गुरूणा च तिका वातिवनाशिनी।

श्रश्री:ख्ययषुहन्त्री च मलविष्टक्षहारिणी॥ ३८॥

(म' चान्द्वेलि। क' हैसरणे। हिंगान्धालि, गन्धालि,

गन्धप्रसारणी। तेंगोन्तेमगोरुचेटु, सविरेलचेटु।

गी गन्धभाद्रलिया, गैं। धाल।)

### त्रय पाषाग्राभेद्नाम।—

पाषाणभेदकोऽश्मन्नः शिलाभेदोऽश्मभेदकः । श्लेता चोपलभेदो च नगजिच्छिलिगर्भजा ॥ ३८॥ पाषाणभेदो मधुरस्तिको मेहिवनाश्रनः । त्टट्दाहमूत्रकच्छन्नः शीतलसाश्मरीहरः ॥ ४०॥

### त्रय वटपत्रीनाम।-

श्रन्या तु व्रयत्रो स्थादन्या चैरावती च सा।
गोधावतीरावती च स्थामा खट्टाङ्गनामिका ॥ ४१ ॥
वटपत्री हिमा गौल्या मेहकच्छ्रविनाश्चिनी।
बलदा व्रणहन्त्री च किच्चिहीपनकारिणी ॥ ४२ ॥
(मं वड्वतो। कं पाषाणभेदि। तां ग्रावेलगपाषाणमेदि।

हिं पाथरचुर। तें पिरिष्डिचेष्टु। गौ पाथरक्षचा, हिमसागर। पाथरचुखौति लोके।)

#### त्रय श्वेतिश्रलानाम।-

श्रन्था खेता शिलावल्का शिलाजा शैलवस्कला। वल्कला शैलगभीहा शिलालक् सप्तनामिका॥ ४३॥ शिलावल्कं हिमं खादु मेहकच्छ्रविनाशनम्। मूत्ररोधाश्मरीशूल-चयपित्तापहारकम्॥ ४४॥

अथ चुद्रपाषाणभेदनाम। —

चुद्रपाषाणभेदाऽन्या चतुष्यत्री च पार्वती । नागभूरम्भकेतुश्च गिरिभूः कन्दरोद्गवा ॥ ४५ ॥

# पर्पटादिवर्गः।

[30]

शैलोइवा च गिरिजा नगजा च दशाह्वया।

चुद्रपाषाणभेदा तु व्रणक्षच्छाश्मरीहरा॥ ४६॥

(मंकं चुद्रपाषाणभेदि।)

अथ ग्रह्कन्यानाम। -

ग्रह्मन्या कुमारी च कन्यका दीर्घपितका।
स्थलेक्हा स्रदुः कन्या बहुपत्राऽमराऽजरा॥ ४०॥
कण्टकप्रावृता वीरा स्रङ्गेष्टा विपुलस्त्रवा।
ब्रह्मन्नी तक्णी रामा कपिला चाम्बुधस्त्रवा।
सुकण्टका स्थलदलेखेकविंग्रितिनामका॥ ४८॥
ग्रह्मकन्या हिमा तिक्ता मदगन्धिः कफापहा।
पित्तकासविष्ण्वास-कुष्ठन्नी च रसायनी॥ ४८॥
(हिं विचकुमारी। मं कुवारि। कं नीयिसर। तां विक्ववार।
तें पिनगोरिण्टकचन्द, विरजाजितीगे। गौ ष्टतकुमारी।)

त्रय विच्चूड़ानाम।—

वर्ष्टिचूड़ा तु शिखिनी शिखालु: सुशिखा शिखा। शिखाबला नेनिशिखा मयूराद्यभिधा शिखा॥ ५०॥ वर्ष्टिच्ड़ा रसे खादुर्मृतकच्छ्रविनाशिनी। बालग्रहादिदोषन्नी वश्यनर्मीण शस्यते॥ ५१॥ (मं मयूरशिखा। कं होरेयम्स्व। ते मयूरशिख्यनेचुपविशेषसु।)

त्रय चीरियोनाम।-

चीरिणी काञ्चनचीरी कर्षणी कटुपर्णिका। तिज्ञदुग्धा हैमवती हिमदुग्धा हिमावती॥ ५२॥

## राजनिघरः।

हिमाद्रिजा पीतदुग्धा यविच्या हिमोद्भवा।
हैमी च हिमजा चेति चतुरेकगुणाह्नया॥ ५३॥
चीरिणी कटुतिक्ता च रेचनी शोफतापनुत्।
क्रिमिदोवकफ्षप्ती च पित्तज्वरहरा च सा॥ ५४॥
(म' पिसौराभेदः। क' चिक्कणिकेयभेदः। गो खिरुदा।)

### त्रथ खर्णचीरोनाम।—

स्वर्णचोरी स्वर्णदुग्धा स्वर्णाह्वा किकाणी तथा।
स्वर्णा हेमदुग्धी च हेमचीरो च काञ्चनी ॥ ५५॥
स्वर्णचीरी हिमा तिक्ता क्रिमिपित्तकपापहा।
मूत्रकच्छात्रमरीशोप-दाहज्वरहरा परा॥ ५६॥
म' पिसीरामेद्र। क' चिक्कणिकेयमेद्र। हिं भेरवन्द्र। वं पिंवला .
धोतरा। तां ब्रह्मदुख्विरद्र। गो श्रेयालकाटा, सोणाखिक्द्र।)

#### श्रथ तायमाणानाम।-

त्रायमाणा क्रतताणा त्रायन्ती नायमाणिका।
बलभद्रा सुकामा च वार्षिकी गिरिजाऽनुजा ॥ ५० ॥
मङ्गल्याह्ना देवबला पालनी भयनाणिनी।
अवनी रचणी त्राणा विज्ञेया षोड्णाह्वया ॥ ५८ ॥
त्रायन्ती गीतमधुरा गुल्मज्वरकफास्त्रन्त्।
अमत्रणाच्चयग्लानि-विषच्छदिविनाणिनी॥ ५८ ॥
(त्रायमाणा इति दिमवति प्रसिद्धा। गौ बलाहसुर, बलालता, बहुला, वनमादृलिया।)

# पर्पटादिवर्गः।

[ 52 ]

### अथ रदन्तीनाम।—

स्याद्धदन्ती स्ववत्तीया सन्तीवन्यस्तस्वता।
रोमान्तिका महामांसी चणपती सुधास्वता॥ ६०॥
रदन्ती कटुतिकोण्णा चयक्रिमिविनाणिनी।
रक्तपित्तकप्रस्वास-मेहहारी रसायनी॥ ६१॥
चणपनसमं पतं चुपन्नैव तथाऽन्तकम्।
प्रिणिर जलविन्दूनां स्ववन्तीति रुदन्तिका॥ ६२॥

(वं उत् रुदन्ती। मं त्रलुगिया।)

त्रय वास्तीनाम।-

ब्राह्मी सरस्वती सौस्या सुरश्रेष्ठा सुवर्चला।
कपोतवेगा वैधावी दिव्यतेजा महीषधी ॥ ६३ ॥
स्वायस्त्रवी सोमलता सुरेज्या ब्रह्मकष्वका।
मण्डूकमाता मत्याची मण्डूकी सुरसा तथा ॥ ६४ ॥
मध्या वीरा भारती च वरा च परमिष्ठिनी।
दिव्या च शारदी चेति चतुर्विंशतिनामका ॥ ६५ ॥
ब्राह्मी हिमा; कषाया च तिका वातास्त्रपित्तजित्।
बुधिं प्रज्ञां च मेधां च कुर्य्यादायुष्यवर्धनी ॥ ६६ ॥
(हिंवरभौ, श्रेतचमनी। तें श्रम्बुमीचेटु । मं ब्रह्ममाण्डूकी
कं सौं देखग। वं वाम। तां वीमी। गौ ब्रह्मीशाक,

त्रय लघुत्राह्मीनाम।— ब्राह्मी तु सुद्रपत्राऽन्या लघुत्राह्मी जलोङ्गवा।

सं--६

## राजनिध्युः।

[ = 2 ]

ब्राह्मी तित्तरसीर्णा च सरा वातामशोफिजित् ॥ ६७ ॥ (मं वास्वि, तिस् व्राह्मी। कं कावर्षका। तां वन्दिणिके।)

अध वन्दाकनाम।

वन्दाकः पादपरुष्ठा शिखरी तर्रोष्टिणी।
वज्ञादनी वज्ञरुष्ठा कामवज्ज्ञ शिखरी॥ ६८॥
केशरूपा तर्रुष्ठा तर्रुष्टा गन्धमेदिनी।
कासिनी तर्रुष्ट्रामा द्रुपदी षोड्शाह्वया॥ ६८॥
वन्दाकस्तिकशिशरः कफपित्तश्रमापष्टः।
वश्यादिसिंदिरो वृष्यः कषायस रसायनः॥ ७०॥
(हिंते वन्दा। वं वादाङ्ग्व। गौ मान्द्ड्ग, परगाक्का, वंदु।)

त्रय कुलत्थानाम।—

कुलत्या दृक्प्रसादा च च्चेयाऽरख्यकुलियका।
कुलाली लोचनिहता चचुष्या कुश्वकारिका॥ ७१॥
कुलियका कटुस्तिका स्यादर्भ:भूलनाभनी।
विवन्धाभानभमनी चच्चष्या त्रण्रोपणी॥ ७२॥
(हिं कुलत्यो। ते श्रोलवन् । गौ कुर्त्तिकलाय। मं राणकुलित्य।
कं काडहुलिग।)

क काडहालगा)

त्रय तर्ड्डायनाम।—

तण्डुनीयसु भण्डीरस्तण्डुनी तण्डुनीयकः।
ग्रियनो बहुवीर्थ्यय मेघनादो घनस्वनः॥ ७३॥
सुशाकः पथ्यशाकय स्मूर्जेथः स्विनताह्वयः।
वीरस्तण्डुननामा च पर्यायाय चतुर्देश॥ ७४॥

तण्डुलीयसु भिभिरो सधुरो विषनाभन: ।
क्चिक्कद्दीपन: पथ्य: पित्तदाह्रश्रमापह: ॥ ७५ ॥
(मं ताण्डुलिजा। कं किक्कुभाले। हिं मुख्यमक्सा, चवड़ाद।
दां काण्टेमाट। तां सुद्धुकिरद्। गौ गोयालनटे,
कांटानटे, चुदैनटे, चांपानटे।)

अय चिविद्वीनाम।--

चिविज्ञिका रत्तद्वा खरच्छ्दा
स्थात् चुद्रघोली मधुमालपित्रका।
चिविज्ञिका चैव कटुः कषायिका
ज्वरंऽतिसारे च हिता रसायनी॥ ७६॥
(मं कं चिविज्ञि। वां किस्ङ्गोलि।)
जय नागग्रस्डीनाम।—

हस्तिशुण्डी महाश्रण्डी श्रण्डी धूसरपतिका।
हस्तिशुण्डी कटूण्णा स्थात् सित्रपातञ्चरापहा॥ ७०॥
(गौ हातिशुँडे। मं नेखबाल। कं न बदावरे।)

कुटुब्बिनी पयस्या च चीरिणी जलकासुका।
वक्रग्रस्था दुराधर्षा क्रूरकर्मा भिरिण्टिका॥ ७८॥
ग्रीता प्रहरजाया च ग्रीतला च जलेरुहा।
विख्याता किल विद्विद्विरेषा द्वाद्यमामिनः॥ ७८॥
कुटुब्बिनी तु मधुरा ग्राहिणी कफपित्तनुत्।
व्यास्त्रदोषकण्डूति-नाग्रनी सा रसायनी॥ ८०॥
(मं पहरकुटुब्बी। कं मरिजेंवणिगेयभेद। तां मुक्लिगनकस।)

त्रय खलपद्मिनीनाम।-

ख्रान्धमूलाऽम्बृहा चारटी पद्मचारिणी।
सुगन्धमूलाऽम्बृहा लच्छी श्रेष्ठा सुपुष्करा॥ ८१॥
रस्या पद्मवती चाति-चरा ख्रूलकृष्ठा स्मृता।
न्रेया पुष्करिणी चैव पुष्कराद्या च पर्णिका। \*
पुष्करादियुता नाड़ी प्रोक्ता पञ्चदशाह्मया॥ ८२॥ क
स्थलादिपद्मिनी गौल्या तिक्ता श्रीता च वान्तिनृत्।
रक्तपित्तद्वरा नेह-सूतातीसारनाश्रनी॥ ८३॥
(मं गौ ख्रलपद्मनी। तें ख्रलपद्मननेपुष्यमु। हिं वेटतामर।

कं कलुदावरे।)

त्रय जम्बूनाम।—

जम्बूर्जाम्बवती वृत्ता वृत्तपुष्पा च जाम्बवी।
मदन्नी नागदमनी दुर्धर्षा दुःसन्ना नव॥ ८४॥
ज्ञेया जम्बूस्तिद्रोष्ट्रन्नी तीत्त्र्णोष्णा कटुतिक्तका।
उदराधानदीष्ट्री कोष्ट्रगोधनकारिणी॥ ८५॥
(नागदनेति गौड़े प्रसिद्धा। हिं नागचुनी, नागदवन। तें ईग्वरि-

चेंहु, दरखम। तां माचिपती। वं दवणा।
"तितापात" दति नेपाले प्रसिद्धा।)

"तितापात" दात नपाल प्रासेखा। स्रथ नागदन्तीनाम।—

नागदन्ती खेतवण्टा मध्पुष्पा विशोधनी। नागस्कोता विशालाची नागच्छवा विचचणा॥ ८६॥

<sup>\*</sup> पुष्तराखा पर्धिकेति पुष्करपर्धिका।

<sup>।</sup> पुष्करादिना युता नाड़ीति पुष्करनाड़ी।

सर्पपुष्पी श्रुक्षपुष्पी खादुका श्रीतदिन्तका।
सितपुष्पी सर्पदन्ती नागिनी बाणभूमिता॥ ८८॥ \*
नागदन्ती कटुस्तिक्षा रूचा वातकफापचा।
सिधाक्षिषदोषष्पी पाचनी श्रुभदायिनी।
गुलाश्रुलोदरव्याधि-कण्डदोषनिक्षन्तनी॥ ८८॥
(मं कं नागदन्ती।)

त्राध विष्णुकान्तानाम।—

विष्णुक्रान्ता हरिक्रान्ता नीलपुष्पाऽपराजिता।
नीलक्रान्ता सतीना चधुविक्रान्ता छर्दिका च सा।
विष्णुक्रान्ता कटुस्तिका कफवातासयापहा॥ ८८॥
(मं विष्णुकाद्या। कं विष्णुकाके। गौ नील प्रपराजिता।)

त्रय कुणझरनाम।—

कुण्डारः कुण्डा च कुण्डाऽरख्यवास्तुकः। कुण्डा मधुरो क्चो दीपनः पाचनी हितः॥ ८०॥ (मं कुण्डिकः कं गोर्जः। गौजनवित्याः।)

श्रथ भूम्यामजीनाम ।—
भूम्यामजी तमाजी च ताजी चैव तमाजिका ।
जञ्चटा दृढ़पादी च वितुन्ना च वितुन्निका ॥ ८१ ॥
भूधाती चार्रटा वृष्या विषन्नी बहुपतिका ।
बहुवीर्याऽहिभयदा विष्वपर्णी हिमाज्या ।
जटा वीरा च नान्ना सा भवेदेकोनविंग्रति:॥ ८२ ॥

<sup>•</sup> बाग्रभूनितिति।—बाग्यः पञ्चसंख्या, भूरेकसंख्या; "म्रङ्गस्य वामा गतिः" दति न्यायात् पञ्चदश्रसंख्येत्यर्थः ।

भूधात्री तु कषायाम्हा पित्तमेहिवनाश्रनी।
शिशिरा सूत्ररोगार्त्ति-श्रमनी दाइनाश्रनी॥ ८३॥
(मं भूयाम्बली। कं श्रावनिश्वि। हिं भद्र-श्राम्बड़ा।
तें वेबवृसिविकचेष्टु। गो भूँ इ श्रामला।)

त्रघ गोरचीनाम।-

गोरची सर्पदण्डी च दीर्घदण्डी सुदण्डिका।
चित्रना गन्धबद्दना गोपानी पञ्चपर्णिका॥८४॥
गोरची मधुरा तिक्ता शिश्रिरा दाइपित्तनुत्।
विस्फोटवान्यतीसार-ज्वरदोषविनाश्रनी॥८५॥
(गोरचीति मानवे प्रसिद्धा।)

अय गोलोमिकानाम।-

गोलोमिका तु गोधूमी गोजा क्रोष्ट्रकपुिक्कता।
गोसकावा प्रस्तितिणी विज्ञेयेति षड़ाह्वया ॥ ८६ ॥
गोलोमिका कटुस्तिका चिदोषणमनी हिमा।
मूलरोगास्त्रदोषन्नी ग्राहिणी दीपनी च सा॥ ८०॥
(हिं पायरो। कं इट्गिरे। गौ गन्यल।)

त्रय दुग्धफेनीनाम।--

दुग्धफेनी पय:फेनी फेनदुग्धा पयखिनी।
लूतारिर्वणकेतुत्र गोजापणीं च सप्तधा॥ ८८॥
दुग्धफेनी कटुस्तिक्ता शिशिरा विषनाशिनी।
व्रणापसारिणी रुचा युक्त्या चैव रसायनी॥ ८८॥
(मं इधफेनी। कं इालुगोलवि।)

त्रय चुट्रास्त्रिकानाम।—

चुद्रान्तिका तु चाङ्गेरी चुक्राह्वा चुक्रिका च सा।
लोणान्ताःचं चतुष्पणीं लोणा लोड़ाउन्तपितिका ॥ १०० ॥
श्रस्बष्ठाउन्तवती चैव श्रम्ता दन्तश्रठा सता।
श्रस्ताङ्गा चान्तपत्नी च न्नेया पञ्चदशाह्वया ॥ १०१ ॥
चुद्रान्ती च रसे सान्ता सोणा सा विक्ववर्षनी।
स्चित्तदृग्रहणीदोष-दुर्नामन्नी कफापहा॥ १०२ ॥
(सं श्राम्बती। कं पुनुम्बणिसे। गौ श्रामस्न।)

### त्रय लजाहीनाम।-

रक्तपादी श्रमीपता स्प्रकाईखिदरपितता।
सङ्गोचनी समङ्गा च नमस्तारी प्रसारिणी ॥ १०३ ॥
लजालुः सप्तपर्णी स्थात् खिदरी गण्डमालिका।
लजा च लिज्जका चैव स्प्रश्चेलजाऽस्तरोधनी ॥ १०४ ॥
रक्तमूला ताम्ममूला खगुप्ताऽन्जलिकारिका।
नामां विश्वितिरत्युक्ता लज्जायालु भिष्ठवरैः ॥ १०५ ॥
रक्तपादी कटुः श्वीता पित्तातीसारनाश्मनी।
श्वोफदाह्त्यमस्त्रास-व्रणकुष्ठकफास्त्रन्त् ॥ १०६ ॥
लज्जालुर्वेपरीत्थान्या श्रन्यन्तपुष्ठहरूला।
वैपरीत्था तु लज्जालुर्द्धभिधाने प्रयोजयेत् ॥ १०० ॥
लज्जालुर्वेपरीत्थान्ना कटुरुणा कफामनुत्।
रसो नियामकोऽत्यन्त-नानाविज्ञानकारकः॥ १०८ ॥
(मं लपरतो लज्जालुः। कं हिन्दकेमुट्टिदरेमुइडवइ।
तां लाजिरी। तें मुदिदारमुख्टव।)

### राजनिघर्ष्टः।

### त्रव हंसपादीनाम। —

रक्तपाद्यपरा प्रोक्ता विपदा हंसपादिका।

प्रतमण्डिलका ज्ञेया विश्वप्रत्यिख्तपादिका॥ १०८॥

विपादी कीटमारी च हेमपादी मधुस्रवा।

कर्णाटी ताम्मपत्नी च विक्रान्ता सुवहा तथा॥ ११०॥

ब्रह्मादनी पदाङ्गी च भीताङ्गी सुतपादुका।

सञ्चारिणी च पदिका प्रह्लादी कीलपादिका॥ १११॥

गोधापदी च हंसाङ्गिर्धार्त्तराष्ट्रपदी तथा।

हंसपादी च विज्ञेया नाम्ना चैषा भराचिधा॥ ११२॥ \*

हंसपादी कटुण्णा स्थात् विषभूतविनाभिनी।

भान्थपसारदोषन्नी विज्ञेया च रसायनी॥ ११३॥

(मं इंबपादी। कं नविल्जि। गौ गोयालियालता।)

#### त्रय कायरानाम।—

कायरा हयपर्यायैः कायरान्तैः प्रकीर्त्तिता। अञ्चकायरिका तिका वातम्नी दीपनी परा॥ ११४॥ (सं घोड़े कायरा सुदिरेगातक्रविस्थियगग्राजिक्षे।)

अय श्वेतपुनर्नवानाम।—

पुनर्नवा विशाखश्च कठिल्लः श्रिश्चाटिका। पृथ्वी च सितवर्षाभूदीं घेपत्रः कठिल्लकः॥ ११५॥ खेता पुनर्नवा सीश्या तिक्ता कफविषापहा।

<sup>\*</sup> ग्रराचिधित ।—ग्ररी वार्याः पञ्च, त्रचि नेतं हिं, तेनं पञ्च-विंग्रतिसंख्येत्यर्थः ।

## पपेटादिवर्गः।

[ 22 ]

कासहृद्रोगश्रूलास्त्र-पाग्डुशोफानिलात्तितृ ॥ ११६॥ (मं पाग्डराघेग्टूलि। कं विलियहवैद्वडिकल् । गौ श्चेतपृथ्या, गादापृथ्या।)

श्रय रक्तपुनर्नवानाम। —

पुनर्नवाऽन्या रत्ताख्या क्रूरा मण्डलपत्रिका ।
रत्तकाण्डा वर्षकेतुर्लीहिता रत्तपितका ॥ ११७ ॥
वैशाखी रत्तवर्षाभू: शोफन्नी रत्तपृष्पिका ।
विकखरा विषन्नी च प्रावृष्णिया च सारिणी ॥ ११८ ॥
वर्षाभव: शोणपत्र: शोण: सम्नीलितद्रुम: ।
पुनर्नवो नवो नव्य: स्याद्दाविंग्रतिसंज्ञया ॥ ११८ ॥ \*
रत्ता पुनर्नवा तित्ता सारिणी शोफनाशिनी ।
रत्तप्रदर्शेषन्नी पाण्डुपित्तप्रमिद्देनी ॥ १२० ॥
(भं रत्तविग्रह्ति । वं केम्पिनविद्यहित्तच्, करियगणिक्ति ।
हिं ग्रान्त । तें ग्रितिक्ममेदि । तां सुकरत्तेकिरे । वं पुनर्नरा ।)

अय नोलपुनर्नवानाम।—

नीला पुनर्नवा नीला ग्यामा नीलपुनर्नवा।
क्षणाख्या नीलवर्षाभूनीलिनी खाभिधान्विता॥ १२१॥
नीला पुनर्नवा तिक्ता कटूणा च रसायनी।
हृद्रोगपाण्डुखययु-खासवातकपापहा॥ १२२॥
(मं कालीवेग्डुलि। कं करियवेद्धडिकल, करियगणिलि।
तां होगणिल्।)

पुनर्नवं विद्याय रक्तादिकं नव्यान्तं सवे दाविंग्रतिसंख्यकं वीष्यम् ।

#### त्रय वसुकनाम।—

वसुकोऽय वसु: भैवो वसोऽय भिवमित्तका।
पाग्रपत: भिवमत: सरेष्ट: भिवभित्तर:।
सितो रक्तो दिधा प्रोक्तो च्रेय: स च नवासिध:॥ १२३॥
वसुको कटुतिकोष्णो पाके भोतो च दोपनो।
ग्रजीर्णवातगुल्मन्नो खेतस्वव रसायन:॥ १२४॥
(म' दोनि वसो, ग्रगदा। तें ग्रविसि। तां ग्रगित। क' यरहुगर्माजिते। गौ वक्षात । हिं वासना।)

अध सर्पिणीनाम।-

सर्पिणी भुजगी भोगी कुंग्डली पत्रगी फणी।

षड़िभधा सर्पिणी स्थादिषत्री कुचवर्धनी॥ १२५॥
(सर्पिणीत सर्वत्र प्रसिद्धा। चुपे सर्पाकारवत्। गौ सर्पकङ्काली।)

ग्रथ ग्रलिपितकानाम।-

वृश्चिका नखपणीं च पिच्छिलाऽप्यलिपितका।
वृश्चिका पिच्छलाऽन्ता स्थादन्त्रवृष्ठग्रादिदोषनुत्॥ १२६॥
(मं विश्ववा। कं इङ्ग्ति। तां माससाद्दोत्रगते।)

श्रय मत्याचीनाम।-

ब्राच्ची वयस्या मत्याची मीनाची सोमवत्तरी।

मत्याची प्रिणिरा रुचा वर्णदोषचयापहा॥ १२०॥

(गौ हिन्दीप्राक। हिं मक्षेच्छी, मक्षरिया। मं जलबाच्ची।)

श्रथ गुण्डालानाम ।— गुण्डाला तु जलोङ्गता गुच्छ्बुभ्ना जलायया । गुण्डाला कटुतिक्तीष्या शोफत्रण्विनाश्रनी ॥ १२८॥ (मं गुण्डाला, गोण्डाल। कं कडविनमेद।)

त्रघ भूपाटलीनाम।-

भूपाटली च कुश्री च भूताली रक्तपुष्पिका। भूपाटली कट्षा च पारदे सुप्रयोजिका॥ १२८॥ (मं भूयि पाडलि। क' नेलवादरि। गौ टोकापाना।)

श्रय पार्खुरफ्ली।—

पाटली पाग्ड्रफली धूसरा हत्तवीजका।
भूरिफली तथा पाग्ड्-फली स्थात् षड्विधाभिधा॥१३०॥
श्रिशिरा पाग्ड्रफली गौल्या कच्छात्तिंदीषहा।
बल्या पित्तहरा दृष्या सूत्राधातिनवारणी॥१३१॥

(पीटरपालमिति सर्वेत्र प्रसिंद्धम्। मं मयामख्डे। कं पाख्दपालरे।)

अय श्वेतानाम।—

श्वेता तु छुरिकापत्री पर्वमूलाऽप्यविप्रिया। श्वेताऽतिमधुरा शीता स्तन्यदा रुचिक्तत्परा॥ १३२॥ (मं केना। कं कने।)

त्रय ब्रह्मद्राहीनाम।-

ब्रह्मदर्ग्डाजलादर्ग्डी कर्ग्टपत्रफला च सा। ब्रह्मदर्ग्डी कटूर्ग्या स्थात् कफशोफानिलापहा॥ १३३॥ (ब्रह्मदर्ग्डीति सर्वेत्र प्रसिद्धा। मंब्रह्मदर्ग्ड।

गी छागलदाँ ड़ि, वामनदाँ डि।)

[27]

### राजनिघण्टः।

अध द्रवन्तीनाम। 🖰

द्रवन्ती शास्त्री चित्रा न्यग्रोधी शतमू लिका।
प्रत्यक्षेणी द्वषा चण्डा पत्रश्रेण्याखुकणिका॥ १३४॥
मूषकाह्वादिका कर्णी प्रतिपणीशिका च सा।
सहस्त्रमूली विक्रान्ता ज्ञेया स्थाज्ञतुरेकधा॥ १३५॥
द्रवन्ती मधुरा शीता रसबन्धकरी परा।
ज्वरन्नी क्रिमिष्ठा शूल-श्रमनी च रसायनी॥ १३६॥
(मं भोग्यनो। क' विद्वर्द्धा ते एलुकचिविचेद्धु। गौ सुशालोलता, वृंदु द्विग्रयापान, सुषाकाणी।)

त्रय द्रोगपुष्पीनाम।-

द्रोणपुष्पौ दीर्घपता कुम्भयोनिः कुतुम्बिका। चित्राच्चपः कुतुम्बा च सुपुष्पा चित्रपत्रिका॥ १३०॥ द्रोणपुष्पौ कटुः सोष्णा रुचा वातकफापहा। ग्रम्बमान्यहरा चैव पथ्या वातापहारिणौ॥ १३८॥ (मं कुम्बा। कं तुम्बे। हिं सुम्मा, सूमा। तें एस्रुगतुम्मि। गौ इसकसा, दस्क्षकस, चलवसेति केषित्।)

त्रथ महाद्रोणानाम।—
त्रन्या चैव महाद्रोणा कुरुम्बा देवपूर्वका। \*
दिव्यपुष्पी महाद्रोणी देवीकाण्डा षड़ाष्ट्रया॥ १३८॥
देवद्रोणी कटुस्तिका मध्या वातार्त्तिभूतनुत्।

<sup>\*</sup> देवपूर्वका इत्यत्न द्रोगौति भ्रेषः, अन्यया वच्यमाग-देवद्रोगौति प्रयोगस त्रखरमात् षट्संखापूरणामावाच दति।

कफमान्द्यापहा चैव युक्त्या पारदग्रीधने ॥ १८०॥ (सं देवसुन्वा। कं देवतुन्वे। गो वड्चलचित्या।) अध साधूनाम।—

भण्डः स्थात् स्थूलपुष्पा तु भण्डूको भिण्डुकस्तथा। भण्डः कटुकवायः स्थात् ज्वरभूतग्रहापहा॥ १४१॥

(म' भोखः। कं गोवगड़े ।)

श्रिष्ठ गोरचहुग्धीनाम ।—

गोरचहुग्धी गोरची तास्त्रहुग्धी रसायनी।

बहुपत्रा स्ताजीवी स्तरमञ्जीवनी सुनि: ॥ १४२ ॥ \*
गोरचहुग्धी मधुरा दृष्या सा ग्राहिणी हिमा।

सर्ववश्यकरो चैव रसे सिहिगुणप्रदा॥ १८३॥
(म' नागार्जुनदूषी। क' मरीजेविश्यमी।)
दूर्यं वितत्य विश्वदीक्रियमाणनानाः
चुद्रचुपाद्वयगुणप्रगुणापवर्गम्।
वर्गे विधाय मुखमण्डनमेनमुचैक्चाटनाय च क्जां प्रभुरस्तु वैद्य:॥ १८४॥ पं

• सुनिरिति चप्रसंख्येत्यर्थः।

<sup>†</sup> इत्यमिति।—इत्यम् अनेन प्रकारिया वितत्य विस्तार्थे विश्वहीक्रियमायाः स्पुटीक्रियमाया नानाविधा ये चुद्राः चुपाः, तेष्ठामाद्वयाः
नामानि तथा गुणाञ्च तेषां प्रगुणाः अनुकूतः अपवर्गः क्रियावसानसापत्वं
यत्र तम्। "अपवर्गस्यागमीचयोः। क्रियावसानसापत्वेऽपि" इति हैमचन्द्रः। यद्दा,—तादृशानां चुपायां गुणाः सामान्यगुणाः, प्रगुणा विश्वषगुणाः, तेष्ठाम् अपवर्गः निचेपः, प्रयोग इति यावत्, यत्र तादृश्वक्रित्यर्थः, एनं वृगं मुखमगढनं मुखाभरणं, क्राष्ट्यमिति यावत्;

चुधं रान्ति जनस्थोचैस्तसात् चुद्राः प्रकीर्त्तिताः।
तेषां चुपाणां वर्गीऽयमादाने धातुरुच्चते ॥ १८५ ॥ \*
धत्ते नित्यसमाधिसंस्तववश्चात् प्रीत्याचितेशापितां
स्वास्तीयामृतहस्ततां किल सदा यः सर्वसच्चीवनीम्।
वर्गस्तस्य क्वतौ वृसिंहक्वतिनो यः पर्पटादिमेहानेष प्राच्चिति नामकाण्डपरिषचूड़ामणौ पच्चमः ॥ १८६ ॥ गं
हित श्रीनरहिरपिष्डितविरिवति राजनिष्यदौ

ब्रोनरचरिपखितवरचित राजनिच्छा पर्पटादि चुद्रः चुपवर्शः पञ्चमः।

विधाय कत्वा स्थित इति परमूद्यम् ; अन्यथा एककर्तृकत्वामावात् स्थप्पत्ययो न स्थादिति बोध्यम्। वैद्यः मिष्ठक् उद्यैः अधिकं यथा तथा क्वां रोगाणाम् उद्याटनाय प्रश्नमनाय च प्रभुः समर्थोऽस्तु भवतु ; चुद्रचुपवर्गं सुखस्थं कत्वा तदनुसारेण चुपप्रयोगं विधाय च सर्वरोगं नाश्चयत्विति भावः॥ १८४॥

- जुद्रग्रन्दं व्युत्पादयित जुधं रान्तीत्यादि। यसात् जनस्य खोकसामान्यस्य उसे: अधिकं यथा तथा जुधं जुधां रान्ति आदृद्ते, जन-यन्तीति यावत् ; सुपश्चिति आदृन्तस्य राधातोः कः। तस्मात् जुधा-जननात् हेतोः जुद्राः प्रकीतिंता उक्ताः। तेषां जुद्राखां जुपाखाम् अयमेव वगे उक्त दिति भ्रेषः। रा आदाने, आदानार्धे अयं राधातु-क्यते कथ्यते ॥ १८५॥
- † वगैं समापयति, धत्ते द्रत्यादि ।—यः किल न्हिसंहक्षतीत्यधैः ; नित्यसमाधिसंख्ववद्यात् नित्यश्चिरन्तनः, श्रविच्छित्त द्रित यावत्, यः समाधिश्चित्तेकाग्राम् । "समाधिः स्थात् समर्थने । चित्तेकाग्रानियमयोः मोने" दति हैमः । तस्य संख्ववद्यात् परिचयवद्यात् प्रीत्या प्रेम्खाः सुदा वा "प्रीतियौगान्तरे प्रेम्खा सारपत्नीसुदोः स्वियाम्" दति

# अथ पिप्पल्यादिवर्गः।

4444444

चतुद्धा पिप्पली प्रोक्ता तन्मूलं नागरं तथा।
ग्रार्ट्रकं मरिचदन्दं धान्यकच्च यवानिका॥१॥
चव्यं च चित्रकदन्दं विड्डं च वचाद्यम्।
कुलच्चो जीरका: पच्च मिथका हिङ्गपतिका॥२॥
हिङ्गुद्धयं चाग्निजारी रास्ने एलाद्धयं भिवम्।
सीवर्चलं च काचाह्नं विड्च गड़नामकम्॥३॥
सामुद्रं द्रीणिकं चान्यदीषरं रोमकं तथा।
नवधा लवणं प्रोक्तमजमोदा च रेणुका॥४॥

भेदिनी। श्रिचित्रापिताम् श्रिष्तः पूजितः य ईग्नः महादेवः तेन श्रिपतां प्रदत्तां सर्वसञ्चीवनीं सर्विषां जोवनदायिनीं सर्विषयोग-निवारणे श्रव्यर्धश्राक्तिकामित्यर्थः; खालीयास्तहस्तां स् श्रोभनी श्रास्तीयो निजसन्वन्ति श्रस्तहस्तो तस्य भावसत्तां पत्ते पारयितः; नित्यश्रिवध्यानात् प्रोतेन श्रिवेन प्रदत्तां सञ्जीवनीं पीयूषपाणितां प्राप्य यः किल पीडितान् सञ्जीवयित, तस्य न्दिषं हक्षतिनः न्दिसं हपण्डितस्य नामकाण्डपरिषचूडामणी नामां काण्डानाच्च या परिषत् सभा, समूह दित यावतः तस्याधूडामणी श्रिरोरतक्षपे कृती प्रवस्ते य एष महान् विश्वालः पपटादिः पच्चमः वर्गः स प्राचित प्रयातिः श्रचू गितपूजनयोरिति धातः, समाप्तो भवतीत्यर्थः॥ १८६॥

# राजनिष्युः।

बोलं कर्चूरकः पाठा वचाम्बयास्ववेतसम्।
कटुकाऽतिविषा सुस्ता-द्यं यष्टोमधुदयम्॥५॥
भागी पुष्करमूलञ्च मृद्धयो दन्तिकाद्वयम्।
जीपालय तिवद्देधा त्वक् पत्रं नागकेगरम्॥६॥
तवचीरञ्च तालीस-पताख्यं वंगरोचना।
मिश्चष्ठा च चतुर्द्वा स्थादिरद्रे च दिधा मते॥७॥
लाचा चालकको लोष्नो धातक्यव्यिफलं तथा।
निर्वषाऽय विषदन्दं दिधा चाम्बद्धरिद्रका॥ ६॥
प्रव्यक्षिनमफेनच्च टङ्कणी साक्षरण्डकम्।
हिमावली हस्तिमदः स्वर्जिको लोणकं तथा॥ ८॥
वज्यको यवज्याय सर्वचारोऽय मायिका।
प्रीषधान्यभिधीयन्ते षड्ङ्गितसंख्यया॥ १०॥
प्राय पिणलोनाम।—

पिप्पली क्षकरा शौर्ष्डी चपला मागधी करणा।
कटुवीजा च.कीरङ्गो वैदेही तिक्षतरष्टुला॥११॥
श्यामा दन्तफला क्षणा कोला च मगधोद्भवा।
उपणा चोपकुल्या च स्मृत्याद्वा तीच्यातरण्डुला॥१२॥
पिप्पली ज्वरहा व्रथा सिग्धोर्थ्या कटुतिक्षका।
दोपनी मार्तम्बास-कासस्रोधच्यापहा॥१३॥
(हं पौपर। मं पिप्पली। कं हिप्पली। तें पिप्पलिचेटु।
वं वङ्गालिपिम्परि। तां पिपिलि। गौ पिपुलगाछ।)

त्रध गजीषणानाम।— गजीषणा चव्यफला चव्यजा गजिपपाली। स्रेयसी किट्रवैदेही दीर्घग्रत्यिस तैजसी।
वर्तुं ली स्थूलवैदेही ज्ञेया चेति दशाभिधा॥ १४॥
गजोषणा कटूणा च रूचा मलविशोषणी।
बलासवातहन्त्री च स्तन्यवर्णविवर्षिनी॥ १५॥

(सं गन्मिपपली। वं गन्सिपली।)

त्रय संच्लीनाम।-

सैंच्ली सर्पद्ग्डा च सर्पाङ्गी ब्रह्मभूमिणा।
पार्वती ग्रेंस्मा तामा लख्ववीजा तथोलाटा ॥ १६ ॥
ग्रद्रिजा सिंच्लस्था च लस्वदन्ता च जीवला।
जीवाली जीवनेत्रा च कुरवी घोड्ग्याच्च्या ॥ १० ॥
सैंच्ली कटुरुणा च जन्तुम्नी दीपनी परा।
कपम्बाससमीरार्त्ति-ग्रमनी कोष्ठग्रोधनी ॥ १८ ॥
(मं सिङ्ग्बीपिम्ग्ली। वं सेंच्लिप्म्ली।)

अध वन।दिपिपालीनाम।-

वनादिपिप्पत्यिभिधानयुक्तं सूच्यादिपिप्पत्यभिधानमेतत्। चुद्रादिपिप्पत्यिभधानयोग्यं वनाभिधापूर्वक्षणाभिधानम् ॥१८॥ वनपिप्पत्विद्या चोष्णा तीच्णा कच्या च दीपनी। ग्रामा भवेदगुणाळ्या तु शुष्का खल्पगुणा स्मृता॥ २०॥ (मं रानपिम्पत्वि। कं काहिपिष्पत्वि।)

अघ ग्रन्थिकनाम।-

यिकं पिप्पत्तीमूलं मूलं तु चिवकाधिरः। कोलमूलं कटुग्रस्यि कटुमूलं कटूषणम्॥ २१॥

ग-७

## राजनिघय्टुः।

सर्वग्रस्य च पत्नाच्यं विरूपं शोणसभावम् ।
सुग्रस्य ग्रस्यलं चैव पर्य्यायाः स्युञ्चतुर्दश् ॥ २२ ॥
करूणं पिप्पलीमूलं श्लेषाक्रिमिवनाशनम् ।
दीपनं वातरोगन्नं रोचनं पित्तकोपनम् ॥ २३ ॥
(सं पिम्पलीमूल । कं हिप्पलियवेर । तें पिप्पलीहम्म ।

गौ पिपुलसूल ।) अय शुक्तीनाम।—

शुग्ही सहीषधं विश्वं नागरं विश्वभेषजम् । विश्वीषधं कटुग्रत्यि कटुभद्रं कटूषणम् ॥ २४ ॥ \* सीपणें गृङ्गवेरच्च कफारिखार्द्रकं स्मृतम् । शोषणं नागराह्वच्च विज्ञेयं षोड्शाह्वयम् ॥ २५ ॥ शुग्ही कटूष्णा स्निग्धा च कफशोफानिलापहा । शूलबन्धोदराधान-म्बासस्रीपदहारिणी ॥ २६ ॥ (मं सूखि । कं शुक्छि । गौ शुँठ । शुक्छीति सर्वत ख्याता । ) श्रवादेकनाम ।—

श्रार्द्रेतं गुलामूलच मूलजं कन्दलं वरम्।
श्रुद्धवरं महीजच सैकतिष्टमनूपजम्॥२०॥
श्रपाक्षशाकं चार्द्राख्यं राहुक्कृतं सुशाककम्।
शाङ्गं स्थादार्द्रशाकच सक्काकमृतुभूह्वयम्॥२८॥ १
कटूषामार्द्रकं हृद्यं विपाके शीतलं लघु।

<sup>\*</sup> कटूम्यां—कटु तथा जनगमिति दयम्, त्रन्यथा षोड्ग्रसंख्या-पृत्रं भावः ।

<sup>†</sup> ऋतुभूह्मयम षोड्शसंख्यकानित्यर्थः !

# पिपाल्यादिवर्गः।

[ 22 ]

दीपनं रुचिदं शोफ-कफकर्रामयापहम्॥ २८॥ (मं त्राति। तें त्रहा कं त्रद्रका। हिं त्रदृरख्। गौ त्रादा।)

श्रथ मरिचनाम।-

मिरचं पिलतं ग्रामं कोलं वज्ञीजमृषणम्।

यवनेष्टं वृत्तप्तलं ग्राकाङ्गं धर्मपत्तनम्॥ ३०॥

कटुकञ्च ग्रिरोवृत्तं वीरं कप्तविरोधि च।

रूचं सर्वेहितं कृष्णं सप्तभूख्यं निरूपितम्॥ ३१॥

मिरचं कटु तिज्ञोष्णं लघु श्लेषविनाग्रनम्।

समीरक्तमिद्धद्रोग-हरञ्च क्चिकारकम्॥ ३२॥

(मं मिरच। कं मेणस्। हिं निरी, कालामिरिच। तें निरियालु।

तां मिलिग्। गौ गोलमिरच।)

अध श्वेतमरिचनाम।-

सितमरिचं तु सिताख्यं सितवज्ञीजं च बालकं बहुलम्।
धवलं चन्द्रकमेतन्मुनिनाम गुणाधिकं च वश्यकरम् ॥३३॥ \*
कटूष्यं खेतमरिचं विषष्नं भूतनाश्यनम्।
ग्रवृष्यं दृष्टिरोगम्नं युक्त्या चैव रसायनम्॥ ३४॥
(मं पाख्दरे मिरिये। कं विलियमेणस्। ते ते व्रक्षमिरियाल्।
गो सिजनार वीज।)

त्रय धान्यकनाम।—

धान्यकं धान्यजं धान्यं धानियं धनिकं तथा। कुसुम्बुक्शावलिका छत्रधान्यं वितुनकम् ॥ ३५॥

<sup>\*</sup> मुनिनाम सप्तसंख्यकिमत्यर्थः।

### [ 200]

## राजनिष्ठर्एः।

सुगन्धिः शाकयोग्यश्च स्ट्सपत्रो जनप्रियः।
धान्यवीजो वीजधान्यं विधकं षोड्शाह्वयम्॥ ३६॥
धान्यकं सधुरं शीतं कषायं पित्तनाश्चनम्।
ज्वरकासत्वषाक्कृदिं-कफहारि च दीपनम्॥ ३०॥
(मं, कं, कोषुम्बुरि। हिं धनिया। गौ धने।)

म्रय यवानीनाम।-

यवानी दीप्यकी दीप्यो यवसाह्नी यवायजः।
दीपनी चीग्रगन्धा च वातारिर्भूकदस्वकः ॥ ३८॥
यवजो दीपनीयश्व श्रूलहन्त्री यवानिका।
छग्रा च तीव्रगन्धा च ज्ञेया पञ्चदशाह्नया॥ ३८॥
यवानी कटुतिक्तीश्या वातार्शः श्रेश्मनाश्रनी।
श्रूलाश्मानिक्रिसिच्छर्दि-सर्दनी दीपनी परा॥ ४०॥
(मं छन्वा। कं छग्रु। तें श्रोमसी। हिं, वम्, अजवाइन।
तां श्रमन। गौ योश्मान।)

श्रय चव्यवनाम।-

चव्यकं चिवका चव्यं विश्वरो गत्धनाकुली।
वज्ञी च कोलवज्ञी च कोलं कुटलमस्तकम्।
तीन्धां करिणिका वज्ञी ककरो नित्रमूह्मया॥ ४१॥ \*
चव्यं स्यादुण्यकटुकं लघु रोचनदीपनम्।
जन्तूद्रेकापहं कास-स्वासभूलार्त्तिकन्तनम्॥ ४२॥
(मं, कं, चव्य। ते सेवासः। गौ चद्दगाछ।)

नेत्रभूं ह्वयेति तयोद्यसंख्येत्यर्थः।

### पिप्पत्यादिवर्गः।

[ 808]

#### अथ चित्रकनाम।—

चित्रकोऽग्निश्च ग्रार्टू लश्चित्रपाली कटु: ग्रिखी।
क्षणानुर्दे हनो व्याली ज्योतिष्क: पालकस्तथा॥ ४३॥
अनलो दारुणो विज्ञ: पावक: ग्रवलस्तथा।
पाठी होपो च चित्राङ्गो ज्ञेय: श्रूरश्च विंग्रति:॥ ४४॥
चित्रकोऽग्निसम: पाक्षे कटु: ग्रोफकफापह:।
वातोदरार्शोग्रहणी-क्रिसिकण्डू तिनाग्रन:॥ ४५॥
(मं चित्रकु। तें चित्रमूलसु। हिं चिता। उत् ध्रुवचिता।
गौ चितेगाछ।)

#### अध कालनाम।—

काली व्यालः कालमूलीऽतिदोप्यो मार्जारोऽग्निर्दाहकः पावकस्य । चित्राङ्गीऽयं रक्तचित्रो महाङ्गः स्यादुदाह्वस्रित्रकोऽन्यो गुणाच्यः ॥ ४६ ॥ स्यूलकायकरो रुचः कुष्ठन्नो रक्तचित्रकः । स्ये नियामको लोहे विधकस्य रसायनः ॥ ४७॥

(मंरक्तचित्र क्वां किम्पिनचित्रमूख। ते एर्रिचत्र। तां श्रिवणुः चित्रिर। गौरक्तचिता। उत्रक्ततिचता।)

#### त्रघ विड्ङ्गानाम।—

विड़ङ्गा क्रिमिहा चैता-तण्डुला तण्डुलीयका । वातारिस्तण्डुला प्रोत्ता जन्तुन्नी स्मगामिनी ॥ ४८ ॥ कैरली गह्नराऽमोघा कपाली चित्रत्रण्डुला ११

Jangamwadi Math, YAKANASI

Jangamwadi Math, CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Vater Acc. No. 2007

### [ १०२ ]

## राजनिघण्टुः।

वरा सुचित्रवीजा च जन्तु हन्ती च षोड़ श ॥ ४८ ॥ विड़ङ्गा कटुरुणा च लघुर्वातक फार्तिनृत्। श्रीन मान्यारु चिश्वान्ति-क्रिमिदोषविनाशनी ॥ ५०॥ (तें वायुविड़ङ्गपुवेट्। हिं वाविराङ्, वायविडं। वं वर्वेट्ट, श्रम्बट्, काके सनो। तां वायविछं। गौ विड़्ड्ग।)

#### अध वचानाम।—

वचीयगस्या गोलोमी जिटलोगा च लोमणा।
रचोन्नी विजया भट्टा मङ्गल्येति दणाह्यया॥ ५१॥
वचा तोन्त्या कटूल्या च कफामग्रन्थियोफनुत्।
वातन्त्ररातिसारन्नी वान्तिकसादभूतनुत्॥ ५२॥
(चिं वच, घोरवच। तें वड़ज, नह्यवस। मं वेखयहे। तां
वग्रम्तु। गौ वच। कं वजे।)

#### त्रय मेध्यानाम।—

मध्या खेतवचा लन्या षड्यन्या दीर्घपितिका।
तीच्यागन्धा हैमवती मङ्गल्या विजया च सा॥ ५३॥
खेतवचाऽतिगुणाच्या मितमधायु:सम्हिदा कंपनुत्।
वृष्या च वातमूतिक्रिमिदोषन्नी च दीपनी च वचा॥ ५४॥
(मं पार्खि विख्यहा। कं विश्वियवने। गौ प्राहा वच्।)

#### त्रय कुलञ्जनाम।-

कुलक्को गन्धमूलय तीन्स्समूल: कुलक्कन: । कुलक्क: कटुतिक्तोक्सो दीपनी मुखदोषनुत् ॥ ५५ ॥ (गौ कुड्विभेष, महामरी वच ।)

#### पिप्पत्यादिवर्भः

[ 803]

#### श्रय जौरकनाम।—

जीरको जरणो जीरो जीर्णो दोप्यस दोपक:।
श्रजाजिको विक्रग्रङ्घो सागधस नवास्त्रय:॥ ५६॥
जीरक: कट्रुष्णस वातहृद्दीपन: पर:।
गुल्माधानातिसारन्नो ग्रहणीिक्रिसिहृत्पर:॥ ५०॥
(हिं जौरा। तें जीवकर्र। गौ वड़ श्रादा जीरे।)

#### अध गौरजोरनाम।-

गौरादिजीरमस्वन्योऽजाजी स्थात् खेतजीरमः।
कणाह्वा कणजीर्णा च कणा दीप्यः सितादिकः।
ज्ञेया दीर्घकणा चैव सिताजाजी दशाह्वया॥ ५८॥
गौराजाजी हिमा रूचा कटुर्मधुरदीपनी।
क्रिमिन्नी विषद्दन्ती च चत्तुष्याधाननाशिनी॥ ५८॥
(मं पार्खरं जीरे। कं विलियजीरिंगे। गौ शादा जीरे।)

#### अध क्रणाजीरनाम।-

क्षणा तु जरणा काली बहुगन्धा च मेदिनी।

कटुमेदिनिका रुचा नीला नीलकणा स्मृता ॥ ६०॥

कास्मीरजीरका वर्षा काली स्थाद दन्तशोधनी।

कालमेषी सुगन्धा च विद्येया बाणभूह्वया॥ ६१॥ \*

जरणा कटुरुणा च कफशोफनिकन्तनी।

रुचा जीर्णज्वरम्नी च चचुष्या ग्रहणीहरा॥ ६२॥

(मं कालेंजीरें। कं करिजीरिंग। तें नहजीर। हिं मङ्गरद्व।

गौ कालजीरें।)

बाणभूह्या पचदशसंख्रेत्यधः।

### राजनिषयुः।

त्रय पृथ्वोकानाम।—

दीप्योपकुञ्चिका काली पृथ्वी स्थूलकणा पृथु: ।

मनोज्ञा जरणी जीर्णा तक्णी स्थूलजीरकः ।

सुषवी कारवी ज्ञेया पृथ्वीका च चतुर्दश् ॥ ६३ ॥

पृथ्वीका कटुतिक्तीश्णा वातगुल्मासदीषनुत् ।

स्रेषाधानहरा जीर्णा जन्तुन्नी दीपनी परा ॥ ६४ ॥

(मं कालेंजीनें। कं करिदोहजीरगं। गौ मोटाक्रणजीरे।)

अध वहत्यालीनाम।-

वहत्पाली चुद्रपत्नोऽरख्यजीरः कणा तथा। वनजीरः कटुः शीतो व्रणहा पञ्चनासकः ॥ ६५॥ (सं राणजीरें। कं काजौरगे।)

त्रय सामान्यसमस्तजीरकगुणाः।-

जीरकाः कटुकाः पाके क्रिसिम्ना विज्ञिदीपनाः । जीर्थे ज्वरहरा क्चा व्रणहाभाननामनाः ॥ ६६ ॥

अध नेधिकानाम। -

सिंघका मिथिनी मिथी दीपनी बहुपित्रका।
विधनी गन्धवीजा च ज्योतिर्गन्धफला तथा॥ ६०॥
वज्ञरी चिन्द्रका मिथा मिश्रपुष्पा च कैरवी।
कुञ्चिका बहुपर्णी च पीतवीजा मुनीन्द्रधा॥ ६८॥ \*
मिथिका कटुरुणा च रक्तिपत्तप्रकोपणी।

मुनौन्दुधा सप्तद्मसंख्येत्यर्धः। च्योतिष्पत्ता गन्धपत्ता चैति
 इयम्।

श्ररोचक हरा दीप्ति करा वात प्तदीपनी ॥ ६८॥ ( हिं, मं, मेथो। कं मेथय। तें मेखुलु। तां वेख्डयम्। गो मेति।) শ্रय हिङ्गपतीनाम।—

पृथ्वीका हिङ्गुपत्नी च कवरी दीर्घिका पृथु: । तन्वी च दारुपत्नी च विल्वी वाष्मी नवाह्मया ॥ ७० ॥ हिङ्गुपत्नी कटुस्तीच्या तिक्तोच्या कफवातनुत्। ग्रामिक्रिमिहरा रुचा पथ्या दोपनपाचनी ॥ ७१ ॥

( चिङ्गपत्र)ति सर्वत खाता । गौ वंशपत्रत्य । )

अथ हिङ्गुनाम। —

हिङ्गू यगन्धं भूतारिर्वाह्मीकं जन्तुनायनम्।

यूलगुल्मादिरचोष्ममुयवीय्यं च रामठम्॥ ७२॥ \*

यगूट्रगन्धं जरणं भेदनं स्पधूपनम्।

दीप्तं सहस्रविधीति च्रेयं पञ्चदयाभिधम्॥ ७३॥

इद्यं हिङ्गु कटूणां च क्रिमिवातकफापहम्।

विबन्धाधानधूलम्नं चच्चष्यं गुल्मनायनम्॥ ७४॥

(च्रिं, वम्, चिङ्गु। मं इङ्गु। कं त्रेसु। तें दङ्गुर। गौ चिं।)

यथ नाहोदिङ्गाम।—

नाड़ीहिङ्गुः पलाशास्त्रा जन्तुका रामठी च सा। वंश्रपत्नी च पिग्डाह्वा सुनीर्व्या हिङ्गुनाड़िका॥ ७५॥ नाड़ीहिङ्गुः कटूणा च कफवातार्त्तिशान्तिकत्।

<sup>\*</sup> शूलगुलानं रचीन्नमिति दयम्।

विष्ठाविबन्धदोषप्तमानाहामयहारि च ॥ ७६ ॥ (मं नाड़ोहिङ्ग्। कं वलहत्ति। हिं वलःपतिहिङ्ग्। गौ हिङ्गविभेष।)

#### त्रय अग्निजारनाम।-

श्रीमनजारोऽग्निनिर्धासोऽप्याग्निगर्भोऽग्निजः स्मृतः। बड्वाऽग्निमलो ज्ञेयो जरायुश्चाग्निसस्भवः॥ ७७॥ स्याद्गिनजारः कटुरुण्वीर्धसुण्डामयो वातकपापहश्च। पित्तप्रदः सोऽधिकसन्निपात-श्र्लार्त्तिशीतामयनाशकश्च॥ ७८॥

जाराभः ( अग्निजारभेदः )।-

जाराभी दहनसार्शी पिच्छितः सागरे भवः। जरायुस्तचतुर्वेषेः तेषु श्रेष्ठः सलोहितः॥ ७८॥ (ग्राग्नजार इति भाषा पश्चिमसमुद्रप्रसिद्धे खनामब्याते सागरसम्ह्तीषधविश्रेषे।)

त्रय रासानाम।-

रास्ना युक्तरसा रम्या श्रेयसी रसना रसा।
सुगन्धिमूला सुरसा रसाद्याऽतिरसा दश ॥ ८०॥
रास्ना तु निविधा प्रोक्ता मूलं पत्नं ढणं तथा।
ज्ञेये मूलदले श्रेष्ठे ढणरास्ना च मध्यमा॥ ८१॥
रास्ना गुरुष तिक्तीणा विषवातास्त्रकासजित्।
श्रोफकम्पोदरश्लेष-श्रमनी पाचनी च सा॥ ८२॥
(हिं रास्ना। तें किरिमाचका। तां अन्तरदानर। गो रास्ना।

रासा नेदारदेशे प्रसिद्धा।).

### पिप्पत्यादिवर्गः।

[ 600 ]

### त्रय स्थूलैलानाम।—

स्यू लैला वहरेला त्रिपुटा त्रिदिवोद्भवा च भद्रैला।
सुरिभत्वक् च महेला पृथ्वी कन्या कुमारिका चैन्द्री॥ ८३॥
कायस्या गोपुटा कान्ता प्टताची गर्भसम्भवा।
दन्द्राणी दिव्यगन्धा च विद्येयाऽष्टादशाष्ट्रया॥ ८४॥
(मं एलदोड़ि, एलची। तें पेद्गएलाकुल्, यवडुलक्कि, एल्क्चेट्ट्र।
तां एलम्। हिं दुलांची पूरवी। गो वड़ एलाच।)

#### त्रय सूत्रौलानाम।-

एला बहुलगन्धेन्द्री द्राविड़ी निष्कुटिस्तुटि: ।

कपोतवर्णी गौराङ्गी बाला बलवती हिमा ॥ ८५ ॥

चन्द्रिका चोपकुञ्ची च सूच्या सागरगामिनी ।

गर्भारिगैन्धफलिका कायस्थाऽष्टादशाह्वयां॥ ८६ ॥

एलाइयं शोतलतिक्तमुक्तं सुगन्धि पित्तार्त्तिकफापहारि ।

करोति हृद्रोगमलार्त्तिवस्ति-शूलन्नमच स्थविरा गुणाब्या ॥८०

(हं कोटीएलाचि । ते' विद्वयालकुलु, एइक्वय । गौ कोटएलाच । )

#### त्रय सैन्धवनाम !--

सैन्धवं स्थाच्छीति भिवं नारेयं सिन्धुनं भिवम्। भुद्धं भिवात्मनं पथ्यं मणिमत्यं नवाभिधम्॥ ८८॥ सैन्धवं लवणं वृष्यं चत्तुष्यं क्चिरीपनम्। त्रिरोषभमनं पूतं व्रणदोषविबन्धनित्॥ ८८॥ सैन्धवं दिविधं न्नेयं खेतं रक्तमिति क्रमात्।

# राजनिष्यपुः।

रसवीय्येविपानेषु गुणाब्यं नूतनं शिवम् ॥ ८०॥ ( सैन्वव इति प्रायेण सर्वत प्रसिद्धम् । वं सैन्वे बोण । गो सैन्वव बवण । )

श्रय सौवर्चलनाम।-

सौवर्चलन्तु रुचकं तिलकं द्वयगन्धकम्।
श्रचच क्षणालवणं रुच्यं कौद्रविकं तथा ॥ ८१ ॥
सौवर्चलं लघु चारं कटूषां गुल्मजन्तुजित्।
जर्द्ववातामश्र्लार्त्ति-विबन्धारोचकान् जयेत्॥ ८२ ॥

(मं नं सोवर्चल। हिं चौहारकोड़ा, चौहारलवण। गो सचललवण।)

त्रय काचलवणनाम।—

नीलं काचोद्भवं काचं तिलकं काचसम्भवम्।
काचसौवर्चलं क्षण-लवणं पाक्यजं स्मृतम्॥ ८३॥
काचोशं दृयगन्धञ्च तत्काललवणं तथा।
कुरुविन्दं काचमलं क्षत्रिमञ्च चतुर्देश॥ ८४॥
काचादिलवणं रुच्यमीषत्चारं च पित्तलम्।
दाइकं कप्पवातम्नं दीपनं गुल्मशूलहृत्॥ ८५॥
(काचलवण दति सर्वेत्र प्रसिद्धम्। गौ कालालवण, क्षणलवण।
सीरा दति केचित्। मं वाङ्गाङ्खार।)

त्रय विड्नाम।—

विड़ं द्राविड़कं खण्डं क्षतकं चारमासुरम्। सुपाक्यं खण्डलवणं धूत्तं क्षत्रिमकं द्र्य॥ ८६॥ विड़सुण्याच्च लवणं दीपनं वातनाश्रनम्। रचं चाजीर्पश्लम्नं गुल्ममेहिवनाश्रनम् ॥ ८० ॥

(मं, कं विड्लवण । हिं विड्, श्रासोचर । गौ विट्लवण ।)

श्रथ गाढ़ादि(गड़)लवणनाम ।—

गाढ़ादिलवणं शुक्षं पृथ्वीजं गड़देशजम् ।

गड़ोत्यं च महारक्षं साक्षरं सक्षरोज्ञवम् ॥ ८८ ॥

गड़ोत्यं तृष्णलवणमीषदक्तं मलापहम् ।

दीपनं कप्पवातम्नर्भामं कोष्ठशोधनम् ॥ ८८ ॥

(गाढलवणं सक्षरदेशे प्रसिद्धम् । गौ शाक्षरलवण ।)

त्रय सामुद्रकनाम। —

सामुद्रकं तु सामुद्रं समुद्रलवणं शिवम्। वंशिरं सागरोत्यञ्च शिशिरं लवणाब्धिजम् ॥ १००॥ सामुद्रं लघु हृद्यं च पलितास्त्रदिपत्तदम्। विदाहि कफवातम्नं दीपनं क्चिक्तत्परम्॥ १०१॥ (मं कं वड़ागरलवण। हिं पाङ्गा। गो पाङा, करकच।)

त्रय द्रोगीयनाम।-

द्रीणियं वार्डेयं द्रोणीजं वारिजं च वार्डिभवम्। द्रोणीलवणं द्रोणं त्रिकटुलवणं च वसुसंज्ञम्॥ १०२॥ \*. द्रोणियं लवणं पाके नात्युष्णमिवदाहि च। भेदनं स्निष्मीषच श्रूलम्नं चाल्पपित्तलम्॥ १०३॥ (सं दोणीचेम्मोट। कं दोणीय छए।)

<sup>\*</sup> वसुसंचम् ऋष्टसंख्यकमित्यर्थः।

# राजनिघण्टुः।

# [ 680]

#### अध औषरकनाम।

श्रीषरकं सावेगुणं सार्वरसं सर्वेलवणसूषरजम्। \*
साभारं ब्रुलवणं मेलकलवणं च मिश्रकं नवधा॥ १०४॥
श्रीषरं तु कटु चारं तिक्षं वातकफापहम्।
विदाहि पित्तलदु ग्राहि सूत्रसंशोषकारि च॥ १०५॥
(मं कटुया। कं बेरकेय। तां श्राहरुणु।। गौ खाड़ोनुन्।)

#### त्रध रोमकनाम।

रोमकमीद्भिरमं वसुकं वसु पांश्युलवणमूषरजम्। पांश्यवमीषरमेरिणमीवें सार्वसहं रुट्टैः ॥ १०६ ॥ १ रोमकं तीन्स्समत्युष्यं कट् तिक्तं च दोपनम्। दाहशोषकरं ग्राहि पित्तकोपकरं परम्॥ १०० ॥ (मं वापेसुखलेमाठ । कं वयलुगट्टेयल्सु । हिं श्राकमारि ।)

#### अध अजमोदानाम।-

श्रजमोदा खराह्वा च बस्तमोदा च मर्कटी।

मोदा गन्धदला इस्ति-कारवी गन्धपित्रका॥ १०८॥

मायूरी शिखिमोदा च मोदांच्या बिह्नदीपिका।

ब्रह्मकोशी विशाली च हृद्यगन्धोत्रगन्धिका।

मोदिनी फलमुख्या च वसुचन्द्राभिधा मंता॥ १०८॥ \$

<sup>\*</sup> जावरं मक्त्रेतं तस्मात् जायते इति जावरजं मक्त्रेत्रसम्भव-मित्यर्थः।

<sup>†</sup> क्ट्रैरिति एकादश्रसंख्यकमित्यर्थः।

<sup>‡</sup> वसुचन्द्राभिषेति ऋष्टादश्रमं छे त्यर्थः।

# पिप्पल्यादिवर्गः।

[ 999 ]

अजमोदा कट्रूणा रूचा कफवातहारिणी रुचिक्कत्। शूलाधानारोचकजठरामयनाश्रनी चैव ॥ ११० ॥ (मं, कं, अजमोदा। हिं अज्मद। ते' वामं। गौ रान्धनी।)

अध रेगुकानाम।-

रेणुका कपिला कान्ता नन्दिनी महिला हिजा।
राजपुत्री हिमा रेणु: पाण्डुपत्री हरेणुका॥१११॥
सुपर्णी शिशिरा शान्ता कौन्ती वृत्ता च धर्मिणी।
कपिलोमा हैमवती पाण्डुपत्नी च विंश्यति:॥११२॥
रेणुका तु कटः शीता खर्जूकण्डूतिहारिणी।
टण्णादाहिवष्रशी च सुखवैमल्यकारिणी॥११३॥
(मं, कं, रेणुका। गो रेणुक। हिं सम्मालूकावोज।
वंविणुकवोज, कौन्ती। तां येट्टो।)

अथ बीलनाम।-

बोलं रक्तापहं मुण्डं सुरसं पिण्डकं विषम्।

निर्लोहं वर्वरं पिण्डं सीरमं रक्तगन्धकम्॥ ११४॥

रसगन्धं महागन्धं विष्वञ्च ग्रुभगन्धकम्।
विष्वगन्धं गन्धरसं व्रणारिर्वसुभूह्मयम्॥ ११५॥ \*

बोलन्तु कटुतिक्तोण्णं कषायं रक्तदोषनृत्।

कफपित्तामयान् हन्ति प्रदरादिरुजापहम्॥ ११६॥

(मं, कं, हिं, दां, वोल। तें वालिम्बोपोलम्। तां वेद्वइप्योलम्।

वम् रक्तावोल। गो गन्धरम्, वोल, हिरावोल,

खुनुखागपी।)

वसुभृह्वयिनिति ऋषाद्यसंख्यकिनित्यर्थः।

# राजनिघएटुः।

अध कर्च्यनाम।-

कर्चूरी द्राविड: कार्यो दुर्लभी गन्धमूलक: । विधमुख्यो गन्धसारी जिटलश्वाष्टनामक: ॥ ११७ ॥ कर्चूर: कटुतिक्तोष्ण: कफकासिवनायन: । मुखवैयद्यजननो गलगण्डादिदोषतृत् ॥ ११८ ॥ (कं, मं, कवोरा । हिं कचूरा । तें श्रीकानीकवेटा । गौ एकाङ्गी । )

अथ पाठानाम।-

पाठाऽस्बष्ठाऽस्बिष्ठका स्थात् प्राचीना पापचेलिका।
पाठिका स्थापनी चैव श्रेयसी वृद्धिकार्णिका॥ ११८॥
एकाष्ठीला कुचैली च दीपनी वरतिक्रका।
तिक्तपुष्पा वृद्धित्तका दीपनी व्रिश्चिरा वकी।
मालवी च वरा देवी वृत्तपर्णी दिदृष्टिता॥ १२०॥ \*
पाठा तिक्ता गुरूष्णा च वातिपत्तज्वरापद्या।
भग्नसन्धानकत्पित्त-दाद्यातीसारश्चाहृत्॥ १२१॥
(चक्रपाठा दित देशविशेषे स्थाता। हि' निगुका। ते' पाठचेट्ट्।
उत् श्रकानृविन्धि। गौ श्राकनादि, श्राखान्दि।]

त्रय वचासनाम।—

हचान्त्रमन्त्रयाकं स्थाचुक्राग्तं तित्तिड़ीफलम्। शाकान्त्रमन्त्रपूरं च पूरान्तं रक्तपूरकम्॥ १२२॥

<sup>•</sup> दृक् नेतं, नेतं दिसंख्यकम्, "श्रङ्खस्य वामा गतिः" दति नियमात् दिदृष्टितिति दाविश्रतिसंख्येत्यर्थः।।

गृड़ाक्तवीजाक्तप्रलाक्तनं स्थादक्तादिवचाक्तप्रलं रसाक्तम्।

श्रोधक्तमत्थक्तमधाक्तवीजं प्रलं च चुक्रादि नगेन्दुसंख्यम् ॥१२३ ॥
वचाक्तमक्तं कट्कं कषायं सीष्णं कप्तार्शीष्त्रमुदीरयन्ति।
तष्णासमीरोदरहृद्गदि-गुत्सातीसारव्रणदोषनाधि॥ १२४॥
(चिं विषाक्तित्वा। गो चुका। "मतान्तरे चिं ग्रस्तो, दस्ती। मं
दस्तो, चिन्चा। कं लुनिसे। ते चिन्छ। उत् कंग्रां। तां
पुलि। वम् ठिन्ठज्। गो तं तुल्यः। "महादा"

"ग्रम्बलक्रूटा" द्वि च केचित्।)

त्रय त्रस्वितसनाम।—
त्रस्तिऽस्त्रवितसो वेधी रसास्तो वीरवितसः।
वेतसास्त्रश्वास्त्रसारः प्रतविधी च वेधकः॥ १२५॥
भीमय भेदनो भेदी राजास्त्रश्वास्त्रभेदनः।
त्रस्ताङ्ग्र्यो रक्तसारः प्रतास्त्रश्वास्त्रभेदनः॥ १२६॥
सहस्तविधी वीरास्त्रो गुल्मकेतुर्धराऽचिधा। ११॥
प्रस्तमासादिद्रावी स्थाहिधा चैवास्त्रवेतसः॥ १२०॥
त्रस्तवेतसमत्यस्तं कषायोष्णं च वातिजत्।
कपार्थः त्रसगुल्मम्रसरोचकहरं परम्॥ १२८॥
(त्रस्वेतस इति भोटदेशे गौड़े च प्रसिद्धम्। हिं त्रामखटास्।
'धैकल' इति देशान्तरे प्रसिद्ध इति चक्रदत्तः।)

<sup>\*</sup> नगेन्द्रसंख्यं नगाः पर्वताः त्रष्ठ, दन्दुश्चन्द्र एकः, तेन श्रष्टाद्शसंख्ये-त्यर्थः।

<sup>†</sup> धराऽचिष्ठेति—धरा एकसंख्या, त्रचि नेत्रं दिसंख्या, तेन एक-

# राजनिष्युः।

#### त्रघ कटुकानाम।—

कटुका जननी तिक्ता रोहिणी तिक्तरोहिणी।
चक्राङ्गी मत्य्यपित्ता च वक्रुका ग्रुकुकादनी॥ १२८॥
सादनी ग्रतपर्वा स्थात् चक्राङ्गी मत्य्यमेदिनी।
ग्रगोकरोहिणी कृष्णा कृष्णभेदा महीषधी॥ १३०॥
कटुग्ज्जनी काण्डक्हा कटुश्च कटुरोहिणी।
केदारकटुकाऽरिष्टाऽप्यामन्नी पञ्चविंग्रति:॥ १३१॥
कटुकाऽतिकटुस्तिक्ता शीतिपत्तास्त्रदोष्ठित्।
बक्तासारोचकम्बास-ज्वरहृद्रेचनी च सा॥ १३२॥
(केदारकटुकीति दाचिणात्ये प्रसिद्धा। हिं कुटकी। तें नक्षकोक्कर। गौ कट्की।)

#### त्रय त्रतिविषानाम।--

श्रितिवषा खेतकन्दा विश्वा शृङ्गी च भङ्गुरा। विरुपा श्यामकन्दा च विश्वरूपा महौषधी॥ १३३॥ वीरा प्रतिविषा चान्द्री विषा खेतवचा स्मृता। श्रुक्णोपविषा चैव ज्ञेया षोड्श्यसिमाता॥ १३४॥ कटूणाऽतिविषा तिक्ता कफपित्तज्वरापहा। श्रामातीसारकासन्नी विषक्किर्दिविनाशनी॥ १३५॥ चिविधाऽतिविषा ज्ञेया श्रुक्ता कृष्णा तथाऽक्णा। रसवीर्थ्यविपाकेषु निर्विशेषगुणा च सा॥ १३६॥

त्रय त्रितिवर्षाशीधनम्।— दोलायां गोमयक्काधि पचेदतिविषां ततः। स्थितापे भवेच्छुष्का योजयेत् तां भिषम्बरः॥ १३०॥ ( ऋतिविषेति सर्वेत्र प्रसिद्धाः। हिं ऋतिष्। तें ऋतिवसचैटुः। गौ ऋतिदच्यः)

त्रथ सुखानाम।—

मुस्ताभद्रावारिदास्रोदमेवा
जीमूतोऽब्दो नीरदोऽब्श्रं घनस ।
गाङ्गेयं स्याइद्रमुस्ता वराही
गुन्धा यिन्यभद्रकासी कसेकः ॥ १३८॥
स्रोडेष्टाः कुक्विन्दास्या सुगन्धिर्यस्यका हिमा ।
वन्धा राजकसेक्स कच्छोत्या पञ्चविंघातः ॥ १३८॥
भद्रमुस्ता कषाया च तिका श्रीता च पाचनी ।
पित्तज्वरकपन्नी च न्नेया सङ्गृहणी च सा ॥ १४०॥
(कं भद्रकाशी। गौ भाद्रजासुता।)

त्रघ नागरमुखानाम।-

श्रपरा नागरमुस्ता नागरोत्था नागरादिघनसंज्ञा।
चक्राङ्का नादेयी चूड़ाला पिण्डमुस्ता च ॥ १४१॥
श्रिशिरा च व्रषध्वाङ्की कच्छरुहा चारुकेसरोच्चटा।
सा पूर्णकोष्ठसंज्ञा कलापिनी सागरेन्द्रिमता॥ १४२॥ 
सिक्ता नागरमुस्ता कटुः कषाया च श्रीतला कफनुत्।

<sup>\*</sup> सागरेन्दुमितेति—सागराः पूर्वीत्तरभेदात् चत्वार एवात ग्राह्या, न तु सवगादिभेदेन सप्तः, इन्दुश्चन्द्र एकः, तेन चतुर्दश्चर्यक्षेत्यर्थः।

### [ \$8 € ]

100

# राजनिघर्षुः ।

पित्तज्वरातिसाराक् चित्रणादाह्नगामनी श्रमहृत्॥१४३॥ (नागरमुखा नागरदेशे प्रसिद्धा। हिं नागरभोधा। तें तुङ्गंडडल-विम्। तां सुटुह्दकाच। इांगरमीटा। गों नागरमुता।)

त्रध यहौमधुनाम ।—
यहौमधुर्मधुयहौ सधुवल्ली मधुस्त्रवा ।
सधुकं सधुका यही यह्याह्नं वसुसस्मितम् ॥ १८४ ॥
सधुरं यहिसधुकं किञ्चित्तित्तं च भीतलम् ।
चत्तुष्यं पित्तहृद्यं भीषतृष्णातृणापहम् ॥ १८५ ॥
(मं, कं, यहौमधु । हिं जैठौमधु, सुल्ह्टो । ते मिष्टमृलविभेषम् । गो यहिमधु ।

त्रथ क्लोत.नक नाम।-

श्रन्यक्तीतनमुत्तं क्षीतननं क्षीतनीयमं मधुनम्।

मधुनक्षी च मधूनी मधुरन्ता मधुरसाऽतिरसा ॥ १४६॥

श्रोषापद्या च सीम्या स्थन्ना जन्ना च सा दिधामूता।

सामान्येन मतेयमेकादश्यसंज्ञा बद्धज्ञधिया॥ १४०॥

क्षीतनं मधुरं रुचं बन्धं वृष्यं वृणापद्यम्।

श्रीतनं गुरु चज्ज्ञथमस्रिपत्तापद्यं परम्॥ १४८॥

(गो, मं, कं, विद्वयप्रमध्य।)

अध भाङ्गी (भागीं) नाम।—
भाङ्गी गर्दभिशाकश्च फच्ची चाङ्गारवद्वरी।
वर्षा ब्राह्मणयष्टिश्च वर्वरो सङ्गजा च सा॥ १४८॥
पद्मा यष्टिश्च भारङ्गी वातारि: कासजित्यरम्।
सुरूपा भ्रमरेष्टा च शक्रमाता च षोड्श् ॥ १५०॥

-

भार्क्षीत् कट्तिक्तोष्णा कासम्बासविनाशनी। शोफव्रणक्रिमिन्नीच दाइज्वरनिवारिणी॥१५१॥ (मं भारक्षी। कं किरुर्देसु। हिं वरक्षी, वर्भनेटी। तें स्ख्टमारिक्ष्र। नि॰ चूया। गी वासनहाटी।)

अथ पुष्तरमूखनाम। —

मूलं पुष्तरमूलं च पुष्तरं पद्मपत्रकम् ।

पद्मं पुष्तरजं वीजं पौष्तरं पुष्तराह्मयम् ॥ १५२ ॥

काश्मीरं ब्रह्मतीर्थं च खासारिमूलपुष्तरम् ।

क्रियं पञ्चदशाह्नं च पुष्तरा श्चे जटाशिफे ॥ १५३ ॥

पुष्तरं कटुतिक्तीर्थां कफवात ज्वरापहम् ।

खासारी चक्तकासम्नं शोफम्नं पाण्डुनाशनम् ॥ १५४ ॥

(पुष्तरमूल पुष्तरे प्रसिद्धम् । पातालपद्मिनीति काष्मीरदेश
प्रसिद्धे कन्दविभिषे । तें पुष्तरदेशंलो असिद्धमैन श्रोषधि
विभेषस् । हिं पौद्योकरमूलो । गो पुष्तरमूल । )

त्रध प्रङ्गीनाम।—

शृङ्गो कुलीरशृङ्गो स्थात् घाषा च वनसूर्षजा। चन्द्रा कर्कटशृङ्गो च सहाघोषा च शृङ्गिका॥ १५५॥ कालिका चेन्दुखण्डा च लताङ्गो च विषाणिका। चक्रा च ग्रिखरं चैव कर्कटाह्या त्रिपञ्चधा॥ १५६॥ \* तिक्ता कर्कटशृङ्गो तु गुरुष्णाऽनिलापहा।

लिपचिति — लिगुणितपचसं क्या, तेन पचदश्र खेंत्यधः।

#### [ 582]

### राजनिष्युः।

हिकातीसारकासन्नी खासिपत्तास्ननाशनी॥ १५०॥ (भं काकड़ासिङ्गी। कं, तें, कर्काटश्रङ्गी। हिं ककड़ाश्रङ्गी, क्करशिं। गी काँवड़ाश्रङ्गी।)

त्रय दन्तीनाम।-

दन्ती श्रीष्ठा श्लेनघर्टा निकुसी नागस्मीता दन्तिनी चोपचिता। भद्रा रुचा रोचनी चानुकूना नि:शब्या स्थाइक्रदन्ता विशब्या॥ १५८॥

मधुपुष्पैरण्डफला भद्राखिरण्डपित्रका।
उदुम्बरदला चैव तरुणी चाणुरेवती।
विशोधनी च कुस्री च द्वेया चाग्निकराह्वया॥१५८॥ क दन्ती कट्रण्णा शूलाम-लग्दोषशमनी च सा।
अर्थाव्रणास्मरीश्रल्य-शोधनी दीपनी परा॥१६०॥
(मंदान्ति। कंदन्ति। हिं इकुम्। तेंदन्तिचेटु, कोण्डसमहुम्।
वं जामालगीटा। गौ दन्तिगाक्का)

श्रंघ श्रपरदन्तीनाम।-

श्रन्या दन्ती केशक्हा विषभद्रा जयावहा।
श्रावत्तेकी वराष्ट्री च जयाह्वा भद्रदन्तिका॥ १६१॥
श्रन्या दन्ती कटूणा च रेचनी क्रिमिहा परा।
श्र्लकुष्ठामदोषष्ट्री लगामयविनाश्रनी॥ १६२॥
(मं इसरीदान्ती। कं एरडनेदन्ति।)

<sup>\*</sup> अग्निकराह्मयेति—अग्निस्तिः करः दिः तेन त्रयोविंग्रातिसंख्ये -त्यर्थः।

# पिप्पल्यादिवर्गः।

[298]

त्रय दन्तीवीजनाम।-

रेचको जयपालश्व सारकस्तित्तिरीफलम्। दन्तीवीजं मलद्रावि च्रेयं स्यादीजरेचनी ॥ १६३॥

क्षसीवीजं कुम्भिनीवीजसंज्ञं घर्णावीजं दन्तिनीवीजसृत्तम् । वीजान्तास्यं शोधनी चक्रदन्यो

वेदेन्द्वाख्यं तनिकुस्प्राय वोजम्॥ १६४॥ \*

जैपालः कट्रण्य क्रिमिहारी विरेचनः।

दीपन: कफवातम्नो जठरामयग्रीधन: ॥ १६५ ॥ (गौ जयपाल। मं जेपाल। जामालगोटा इति च

देशविशेषे खाता।)

अध जिल्लाम !-

उक्ता तिव्रन्मालिका मस्रा

ग्रामाऽर्षचन्द्रा विदला सुषेणी।

कालिन्दिका सैव तु कालमेषी

काली तिवेलाऽविनचन्द्रसंज्ञा॥१६६॥१

तिव्रक्तिका कट्रणा च क्रिमिश्लेषोदरार्त्तिजित्।

कुष्ठकण्डूत्रणान् इन्ति प्रशस्ता च विरेचने॥१६०॥
(मं तियड। कं तिगडे। गो कालतेचड़ी। हिं तर्वद, निश्रोत,

कक्पतर, पिथोरी। तें श्रालतेगड़। तां श्रिवदइ।

वम्॰ फुट्कुरी, निश्रोत्रोर।)

<sup>\*</sup> वेदेन्दाख्यमिति चतुर्दश्रशंख्येत्यर्थः।

<sup>†</sup> अवनिचन्द्रसंज्ञीत एकादशसंख्येत्यर्धः ।

#### [ 820 ]

#### राजनिवयरः

अध रक्तिवृत्ताम।—

रक्ताऽन्यापि च कालिन्दी त्रिपुटा ताम्यपृष्पिका।
कुलवर्णा मस्री चाप्यस्ता काकनाशिका॥ १६८॥
रक्ता त्रिष्टस्से तिका कटूणा रेचनी च सा।
ग्रहणीमलविष्टम्स-हारिणी हितकारिणी॥ १६८॥
(गौ लालतेन्द्रो। मं लोहिडौतियह। कं केम्पिनेयतिगहे।)

त्रघ त्वङ्नाम।-

त्वचं त्यवत्कलं सङ्कं वराङ्कं सुख्योधनम् ।

यक्तलं सैंहलं वन्यं सुरसं रामवत्तभम् ॥ १७० ॥

उत्तरं बहुगन्धञ्च विज्जुलञ्च वनप्रियम् ।

लाटपणें गन्धवत्कं वरं यीतं यहित्तती ॥ १७१ ॥ क्ष् त्वचन्तु कटुकं यीतं कफ्तासिवनायनम् ।

युक्तामण्यमनं चैव कर्ण्ड यहित्तरं लघु ॥ १७२ ॥

(मं, कं, तज। जी दाहिनि। हिं त्वक्।)

श्रय तमालपतनाम।—

पत्नं तमालपत्रञ्च पत्ननं छदनं दलम्।
पलाशमंश्चनं वासस्तापसं सुकुमारकम्॥ १७३॥
वस्तं तमालकं रामं गोपनं वसनं तथा।
तमालं सुरिभगन्धं च्चेयं सप्तदशाह्वयम्॥ १७४॥
पत्ननं लघु तिक्तोश्णं कफवातविषापह्म्।
वस्तिकग्छृतिदोषभ्नं सुखमस्तकशोधनम्॥-१७५॥।
(मं, कं पत्नका। हिं तेजपत्न। गौ तेजपात।)

ग्रहितौ एकोनविंग्रतिसंख्येत्वर्धः।

### पिप्पच्यादिवर्गः।

[१२१]

#### त्रय नागकेशरन(न।-

किञ्चलं कनकाहं च केग्ररं नागकेग्ररम् ।
चाम्पेयं नागिकञ्चलं नागीयं काञ्चनं तथा ॥ १७६ ॥
सुवर्णं हेमिकञ्चलं क्यं हेमं च पिञ्चरम् ।
फिएपुजागयोगादि-केग्ररं पञ्चस्रुह्मयम् ॥ १७० ॥
नागकेग्ररमल्पोष्णं लघु तित्तं कफापहम् ।
वित्वातामयमं च काग्रह्मोष्ठक्जापहम् ॥ १७८ ॥
(यं, कं, हं, गौ, नागकेग्रर। ते नागकेसरालु। तां नाङ्गल ।
वम् नागचम् । नागिश्वरचापा इति केचित्।)

अध तवचीरनाम (वंश्वरीचनाविश्रेष:)।-

तबचीरं पयःचीरं यवजं गवयोद्भवम् ।

श्रन्यद्गोधूसजं चान्यत् पिष्टिकातग्रह् कोद्भवम् ॥ १७८ ॥
श्रन्यच तालसभृतं तालचीरादिनासकम् ।
वनगोचीरजं श्रेष्ठसभावेऽन्यदुदीरितम् ॥ १८० ॥
तवचीरं तु सधुरं शिशिरं दाइपित्तन्त् ।
चयकासकप्रश्वास-नाश्रनं चास्त्रदोषन्त् ॥ १८१ ॥
(मं कं तवचीर । हिं तोषाचीर । प्रवाश्रगन्वेति प्रसिद्धम्।)

अध तालीसपतनाम।-

तालीसपत्रं तालीसं पत्नाख्यं च श्वकोदरम्। धात्नीपत्रं चार्कवेधं करिपत्रं घनच्छदम्॥ १८२॥ नीलं नीलास्वरं तालं तालीपत्रं तलाह्वयम्। तालीसपत्रकस्थेति नामान्याइस्त्रयोदश॥ १८३॥ तालीसपत्नं तिस्तीर्णं मधुरं कप्तवातन्त्।
कासिहकाच्यम्बास-क्हिंदीष्रविनामकृत्॥ १८४॥
(मं, कं, तालीषत्न, तालिप्यत्न, तालिप्रपत्न। तें, तां,
तालिप्रपत्नि। दां पनिमल। वं ताम्बठ।
गौ तालीप्रपत्न।)

अय वंशरीचनानाम .-

स्थाइंग्ररोचना वांग्री तुङ्गचोरी तुगा ग्रुभा।
लक्षारी वंग्रगा ग्रुक्ता वंग्रचीरी च वेण्वो ॥ १८५ ॥
लक्षारा कर्मरी खेता वंग्रकपूर-रोचने ।
तुङ्गा रोचनिका पिङ्गा नवेन्दुवंग्र्यकरा ॥ १८६ ॥
स्थाइंग्ररोचना रूचा कषाया मधुरा हिमा।
रक्तग्रहिकरी ताप-पित्तोद्रेकहरा ग्रुभा ॥ १८० ॥
तवचीर यवचीर चीर जातं गुणोत्तरम्।
वंग्रचीरीसमं प्रोक्तं तदभावेऽन्यवसुजम् ॥ १८८ ॥
गवयचीरजं चीरं सुसिग्धं ग्रीतलं लघु।
सुगन्धि द्रावकं ग्रुभ्यमन्यत् खल्यगुणं स्मृतम् ॥ १८८ ॥
मं, वं, वंग्ररोचना। तां तवचीरि। गौ वंग्रलोचन।)

ना। तातप्रवास। गायम्।वापन।) त्रयः मञ्जिष्ठानाम।—

मिन्निष्ठा हरिणी रक्ता गौरी योजनविष्ठका । समङ्गा विकसा पद्मा रोहिणी कालमिषिका ॥ १८०॥ भण्डी चित्रकता चित्रा चित्राङ्गी जननी च सा। मण्डकपणी विजया मन्त्रषा रक्तयष्टिका॥ १८१॥ चितिणी चैव रागाच्या भण्डीरी कालभाण्डिका।

त्रक्णा ज्वरहन्ती च छद्मा नागकुमारिका॥ १८२॥
भाण्डीरलिका चैव रागाङ्गी वस्त्रभूषणा।
तिंशाह्वया तथा प्रोक्ता मिक्कष्ठा च भिष्ठवरै:॥ १८३॥
मिक्कष्ठा मधुरा खादे कषायोण्णा गुक्स्तथा।
त्रणमेहज्वरस्रेष-विष्ठनेत्रामयापहा॥ १८४॥
चोलश्च योजनो कौन्ती सिंहिली च चतुर्विधा।
मिक्कष्ठा चैव सा प्रोक्ता विलोमे चोत्तमोत्तमा॥ १८५॥
(हि' मिक्कीठ। वम्॰ जिङ्किन। तें मिक्किरतौठो, तामवद्भी।
तां मिक्किटो। रनास इति पारस्यदेशे प्रसिद्धः। गौ मिक्कष्ठा।)

श्रय हरिद्रा नाम ।—
हरिद्रा हरिद्रज्जनी खर्णवर्णा
स्वर्णा श्रिवा वर्णिनी टीर्घरागा ।
हरिद्री च पीता वराङ्गी च गौरी
जनिष्ठा वरा वर्णदात्री पवित्रा ॥१८६॥
हरिता रजनीनान्त्री विषग्नी वरवर्णिनी ।
पिङ्गला वर्णदा चैव मङ्गल्या मङ्गला च सा॥ १८०॥
लच्मी भद्रा शिफा शोफा शोभना सभगान्न्या ।
श्र्यामा जयन्तिका हे च तिंश्रवामविलासिनी ॥ १८८॥
हरिद्रा कटुतिकोष्णा कफवातास्त्रज्ञष्ठनुत् ।
महकण्ड्रव्रणान् हन्ति देहवर्णविधायिनी ॥ १८८॥
(मं इलदि । कं श्ररसिन । तें पस्तु । हिं हदीं, हल्दी ।
हां, गुर्ज॰ हल्द । गौ हल्द ।)

#### [ 828]

### राजनिवग्टु:।

ग्रध दाहदरिद्रानाम।-

स्रन्या दारुहरिद्रा च दार्नी पीतद्रु पीतिका।
कालेयकं पीतदारु स्थिररागा च कामिनी ॥ २००॥
काटङ्करेरी पर्जन्या पीता दारुनिया स्मृता।
कालोयकं कामवती दारुपीता पचम्पचा।
स्थात् कर्करिकनी ज्ञेया प्रोक्ता सप्तद्याह्मया॥ २०१॥
तिक्ता दारुहरिद्रा तु करुष्णा व्रथमेहनुत्।
काष्ट्रविसपीलग्दोष-विषक्षणीचिद्रोषहा ॥ २०२॥
(गौ दारुहरिद्रा। वं मरनिरिधन। हिं दारुहणदि। दां जारके
हलदो। तें मिणपसुप्। तां मरमिश्चन।)

अथ लाचानाम।--

लाचा खदिरका रता रक्षमाता पलक्षणा।
जतु च क्रिमिजा चैव दुमव्याधिरलत्तकः॥ २०३॥
पलाशी सुद्रणी दीप्तिर्जन्तुका गन्धसादनी।
नीला द्रवरसा चैव पित्तारिर्मुनिभूह्वया॥ २०४॥ \*
लाचा तित्तकषाया स्थात् श्लेषपित्तार्त्तिदोषनुत्।
विषरत्तप्रशमनी विषमज्वरनाश्यनी॥ २०५॥
(मं लाख। कं श्ररगु। तें लत्तुक, लक। हिं लाहो।
गो लाहा, गाला।)

अय अलक्तकाम।— अलक्तको जन्तुरसो रागो निर्धर्क्षनस्तया।

<sup>\*</sup> सुनिभूह्वया सप्तद्रशसंख्येत्यद्यः।

# पिप्पत्यादिवर्गः ।

[ १२4]

जननी जन्तुकारी च सन्धर्मा चक्रमर्दिनी ॥ २०६॥ अलक्तकः सुतिक्तीष्णः कप्पवातामयापदः। कष्टरुक्ष्ममनी रुच्ची व्रष्टीषार्त्तिनाश्रनः॥ २००॥ (मं अलिता। कं अलतमे। तां महाउर। हिं लाही। गौ आलता, लाहा, जौ, गाला।)

त्रय लोधनाम।--

लोभ्रो रोभ्रो भिन्नतर्श्वन्नकः काण्डकीलकः। तिरोटो लोभ्रको वृच्चः ग्रन्बरो इस्तिरोभ्रकः॥ २०८॥ तिल्वकः काण्ड्डीनय ग्रावरो हेमपुष्पकः। भिन्नी ग्रावरकसैव ज्ञेयः पञ्चदग्राह्मयः॥ १०८॥

अध क्रसुकानाम । (लीभ्रविश्रेयः।)—

क्रमुकः पिंडकारोधो वल्करोधो वहहतः। जोर्णवृक्षो वहहत्को जोर्णपतोऽिच्तमेषजः॥ २१०॥ शावरः खेतरोध्रस मार्जनो बहलत्वचः। पष्टी लाचाप्रसादस वल्कलो बाण्यमूह्मयः॥ २११॥ # लोध्रदयं कषायं स्थात् शीतं वातकपास्त्रनुत्। चत्तुष्यं विषद्धत्तत्र विशिष्टो वल्करोध्रकः॥ २१२॥ (हं, मं, कं, गौ लोध। ते तेब्बलोहुगचेहु। गुर्ज लोदर)।

श्रथ धातकीनाम।-

धातकी विक्किपुष्पी च तास्त्रपुष्पी च धावनी। अग्निज्वाला सुभिचा च पार्वती बहुपुष्पिका॥ २१३॥

बार्णभूद्भय इति पञ्चदश्रसंख्येत्यर्थः ।

कुमुदा सीधुपुष्पी च कुन्तरा मद्यवासिनी।
गुक्क्सङ्घादिपुष्पान्ता ज्ञेया सा लोभ्रपुष्पिणी। \*
तोव्रन्ताला विज्ञिण्या मद्यपुष्पीन्द्रसिमता॥ २१४॥ १
धातकी कट्रुष्णा च मदक्षदिषनाग्रनी।
प्रवाहिकाऽतिसारन्नी विसर्पव्रण्नाग्रिनी २१५॥
(मं धायटी। हिं धावद, धात्रोला। तें त्रारेपुळ्जु, जार्गि।
चत्॰ जातिको। गौ धादफुल।)

त्रय समुद्रपतनाम।-

समुद्रनाम प्रथमं पश्चात् फलमुदाहरेत्।
समुद्रफलिमत्यादि नाम वाच्यं भिषम्बरै: ॥ २१६ ॥
फलं समुद्रस्य कट्रण्यकारि वातापहं भूतिनरोधकारि ।
तिदोषदावानलदोषहारि कफामयभ्यान्तिविरोधकारि ॥ २१७ ॥
(मं, कं, समुद्रफल। हिं कद्रथफल, समुन्दरकापत्। वम्॰
समुन्दरभोक। दां समुद्रकापत्। तें समुन्दरपाल ।)

निर्विषाऽपविषा चैव विविषा विषद्या परा।

विषद्वन्त्री विषाभावा द्यविषा विषवैरिणी ॥ २१८॥

निर्विषा तु कटु: श्रीता कफवातास्त्रदोषनुत्।

श्रमेकविषदोषन्नी व्रणसंरोपणी च सा॥ २१८॥

(मं, कं, निर्विषा। केदारदेशेऽस्या उत्पत्तिः। गौ निर्विषीघास।)

अध निर्विषानाम।-

<sup>\*</sup> गुक्कसङ्घादिपुष्पान्तिति—गुक्कपुष्पा, सङ्घपुष्पेति नामदयम्।

<sup>†</sup> दृद्रसिमता त्रष्टाद्रशसंख्या दृत्यर्थः ; दृद्रसः त्रष्टाद्रशसंख्या-भागिन्याः च्येष्ठतारायाः त्रिधिपत्वात् ।

# पिप्पल्यादिवर्गः।

[ १२७ ]

अध विषनाभ

विषमाच्चिमस्तं गरलं दारदं गरम्। कालकूटं कालकूटे हरिद्रं रक्तशङ्ककम् ॥ २२० ॥ \* नीलञ्च गरदं च्लेड़ी घोरं हालाहलं हरम्। मरं इलाइलं युङ्गी भूगरं चैकविंग्रति: ॥ २२१ ॥

श्रय वसनामविषनाम।-ग्रस्तं स्थात् वत्सनाभो विषसुग्रं महीषधम्। गरलं भरणं नागं स्तोककं प्राण्हारकम्। गरलं स्थावरादि स्थात् प्रोक्तं चैकादशाह्वयम् ॥ २२२ ॥ वत्सनाभोऽतिसधरः सोश्णो वातकफापसः। कर्युक् क्सन्निपातम्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ २२३ ॥ ( मं, कं, वलामविष । हिं मिटा। वस् वचनाग। तां वसनत्रो। गौ खावरकन्दविष, काठविष, मिठेविष।)

ग्रथ स्थावरविषनाम।-

स्थावरे विषजातीनां श्रेष्ठी नागोग्रशृङ्गकौ। नागो देहकर सेष्ठो लोहे चैवोग्रशृङ्गकः ॥ २२४॥ विषस्याष्टादशभिदाश्वतुर्वर्गाश्व यत् प्रथक् । तदत्र नोक्तमसाभिर्यन्यगीरवभीर्वाः ॥ २२५ ॥

त्रघ प्रटीनाम।-श्टी श्रुठी पलाश्य षड्यन्या सुत्रता वधुः।

सुगन्धमूला गन्धाली गृटिका च पलाशिका ॥ २२६॥

कालकृटे दति—कालच कूटचेति दयम्।

# राजनिघय्टुः।

सुभद्रा च त्यो दूर्वा गन्धा पृथुपलाशिका।
सीम्या हिमोद्भवा गन्ध-बध्नागिन्दुसिम्मता॥ २२०॥ \*
श्रटी सितक्ताऽस्तरसा लघूणा क्चिप्रदा च ज्लरशारिणी च।
कपास्त्रकण्डू त्रणदोषहन्त्री वक्तामयध्वंसकरी च सीक्ता॥२२८॥
(म' त्राम्बेहलदि। क' हुलि अर्रास्व। वम् कचोरा।
गो श्रठी। दयं को हुणे प्रसिद्धा।)

ऋध ग्रहोविश्रेषनाम।—

श्रन्या तु गन्धपत्ना स्थात् स्थूलास्या तिक्तकन्दका।
वनजा शिटकाः वन्या स्ववचीर्य्यकपितका ॥ २२८ ॥
गन्धपीता पलाशान्ता गन्धाच्या गन्धपितका।
दीर्घपत्ना गन्धनिशा श्राभूह्वा सुपाकिनी ॥ २३० ॥ १०
गन्धपत्ना कटुः स्वादुस्तीच्योश्या कप्पवातजित्।
कासच्छिदिं ज्वरान् इन्ति पित्तकोपं करोति च ॥ २३१ ॥
(पलाश्रनाश्च इति दाचियात्वे प्रसिद्धा। गौ श्रटोविश्रेष, गन्धश्रटी।
मालवे गन्धपलाश्चोति प्रसिद्धा।

श्रय ससुद्रफेननाम।—

ससुद्रफेनं फेनय वार्डिफेनं पयोधिजम्।

सुफेनमव्यिष्टिण्डीरं सामुद्रं सप्तनामकम्॥ २३२॥

ससुद्रफेनं शिशिरं कषायं नेत्ररोगनुत्।

कफक्कण्डामयप्त्रच्च क्चिक्कक्णेरोगहृत्॥ २३३॥

(मं ससुद्रफेन। कं कड्बनागवि। गुर्जै॰ ससुद्रफिण्। गौ ससुद्रेर फेना।)

<sup>\*</sup> नागेन्दुसिमता अष्टादश्रसं खिनेत्यर्थः।

<sup>†</sup> श्रास्त्रहा पचदशसंख्येत्यर्थः।

#### अध अफ्रेननाम।---

श्रिकं ख्रुख्तसरसो निफेनं चाहिफेनकम्। श्रिफेनं सिन्नपातम्नं वृष्यं बच्चं च मोहदम्॥ २३४॥, ( श्राफन इति मालवे प्रसिद्धम्। हिंशकिम्। मं श्रफूकड्र',

अपून।। ते' नलमग्डु। गो आफिन। आरवदेशे खव्तुल्शखास ।)

त्रघ त्रक्षेनभेदनामगुणाशः—
चतुर्विधमफिनं स्थात् जारणं मारणं तथा।
धारणं सारणं चैव क्रमाद्यच्ये तु लच्चणम् ॥ २३५ ॥
खेतश्व जारणं प्रोत्तं क्षण्यवर्णेश्व मारणम्।
धारणं पीतवर्णेन्त कर्वरं सारणं तथा॥ २३६॥

धारणं पीतवर्णन्तु कर्बुरं सारणं तथा ॥ २३६ ॥ जारणं जारयेदन्नं सारणं मृत्युदायकम् । धारणञ्च वयःस्तम्भं सारणं भलसारणम् ॥ २३७ ॥

#### त्रघ टङ्ग्यनाम।—

टङ्गणष्टङ्गणचारो रङ्गः चारो रसाधिकः। लोहद्रावी रसम्नय सुभगो रङ्गदय सः॥ २३८॥ वर्त्तुलः कनकचारो मिलनो धातुवसभः। त्रयोदशाह्वययायं कथितस्तु भिषग्वरैः॥ २३८॥ कथितष्टङ्गणचारः कटूणः कफनाश्रनः। स्थावरादिविषम्नय कासम्बासापहारकः॥ २४०॥

(मं, कं, टङ्क्याखार । गौ सोइ।गा ।)

रा-2

अध टङ्क्यभेदनाम।—

हितीयं टङ्गणं खेतं खेतकं खेतटङ्गणम्।
लोहग्रहिकरं सिन्धु-मालतीतीरसभावम्। \*
प्रिवञ्च द्रावकं प्रोत्तं प्रितचारं दश्राभिधम्॥ २४१॥
सुखेतं टङ्गणं स्निग्धं काटूणं कप्पवातनुत्।
श्रामच्यापह्रच्छास-विषकासमलापहम्॥ ४२॥
(मं पायदरा टङ्गण्। कं विलियटङ्ग्ण्। गो सोहागा,

श्रादा सोहागा।)

त्रघ साजुक्ग्डनाम।-

साकुरुग्डो यन्यिमलो विकटो वस्त्रभूषणः ।
कुरुग्डः कर्बुरफलः सकुरुग्डस सप्तथा ॥ २४३ ॥
साकुरुग्डः कषायस क्चिक्तदीपनः परः ।
स्रोधवातापहारी च वस्त्ररज्ञनको लघुः ॥ २४४ ॥
(सङ्कर्ग्ड इति साम्रा गुर्जरे प्रसिद्धः ।)

अध दिसावलोनाम।-

हिमावली च हृदाती कुष्ठम्नो गारकुष्ठकः।
ग्रङ्गारग्रत्थिको ग्रन्थी ग्रन्थिलो सुनिसंज्ञकः॥ २४५॥
हिमावली सरा तिक्ता भ्लीहगुल्मोदरापहा।
क्रिमिकुष्ठगुदात्युग-खर्जू-कग्र्ड्विहारिणी॥ २४६॥
(हिमावलीति भाषा सर्वत प्रसिद्धा।)

सिम्धुमालतोतीरसम्भवम्—सिन्धुतीरसम्भवं, मालतीतीरसम्भव चिति नामद्वयम् ।

#### त्रथ इस्तिमद्नाम।-

हस्तिमदो गजमदो गजदानं मदस्तया। कुम्मिमदो दन्तिमदो दानं दोपिमदोऽष्टघा॥ २४०॥ स्निग्धो हस्तिमदस्तितः केश्बोऽपस्मारनाश्यनः। विषद्वत् कुष्ठकण्डूति-व्रणदद्वविसर्पनुत्॥ २४८॥

( सं, कं, दां, इखिमदा।)

त्रय खर्जिचारनाम।—

सर्जिचारः सर्जिकय चारसर्जी सुखार्जिकः।
सुवर्चिकः सुवर्ची च सुखवर्चा सुनिद्धयः॥ २४८॥
स्वर्जिकः कटुक्ष्ण्य तीन्त्र्णो वातकफार्त्तिनुत्।
गुल्माभानिक्रमीन् हन्ति व्रणजाठरदोषनुत्॥ २५०॥
(हिं साजीखारु, कङ्गाखार। गो साचिचार, साजिमाटी।)

त्रय लवणारनाम।—

लवणारं लवणोत्यं लवणासुरजञ्च लवणभेदञ्च।
जलजं लवणचारं लवणं च चारलवणञ्च॥ २५१॥
लोणारचारमत्युणां तीच्यां पित्तप्रवृद्धिदम्।
चारं लवणमीषच वातगुल्मादिदोषनुत्॥ २५२॥
( मं, कं, लोणारखार। गो लोणारचार।)

्त्रय वजनाम।—
वजनं वजनचारं चारश्रेष्ठं विदारमम्।
सारं चन्दनसारच्च धूमीखं धूमजं गजाः॥ २५३॥ \*

<sup>\*</sup> गना दति त्रष्टसंख्येत्यर्थः।

# [ १३२ ]

# राजनिष्युः।

वज्जनं चारमत्युषां तीचां चारच रेचनम्।
गुल्मोदरातिविष्टमा-शूलप्रश्मनं सरम्॥ २५४॥

(वज्रचार इति मालवे प्रसिद्धम्।)

ऋय यवचारनाम।--

यवचारः स्नृतः पाक्यो यवजो यवस्चकः। यवश्रूको यवाह्वश्र यवापत्यं यवाग्रजः॥॥२५५॥ यवचारः कटूष्ण्य कफवातोदरात्तिंतुत्। श्रामश्रूलाभ्रगोक्षच्छ-विषदोषहरः सरः॥२५६॥

> (मं, कं, गो यवचार। हिं यवचार, साजी, सोरा। तें यवचारम्।)

> > त्रय सर्वचारनाम।--

सर्वचारो बहुचारः समूहचारकस्तथा।
स्तोमचारो महाचारो मलारिः चारमेलकः॥ २५०॥
सर्वचारो च्चतिचारश्चचुथो वस्तिग्रोधनः।
गुदावर्त्तक्रिसिन्नश्च मलवस्त्रविशोधनः॥ २५८॥

(मं, कं, सबुखाक्। गौ सावान। हिं साव्न्।) अर्थ कायामलनाम।—

मायाफलं मायिफलञ्च मायिका किट्राफलं मायि च पञ्चनामकम्। मायाफलं वातहरं कट्रण्यकम् शैथिल्यसङ्गोचककेशकार्ष्णेयदम्॥ २५८॥

(मं माजूपाल । कं मायापाल । गौ माजुपाल, मायापाल ।)

द्रस्यं नानाद्रव्यसभारनामग्रामव्याख्याततुषाख्यानपूर्वम् । वर्गे वीर्यध्वस्तरोगोपसर्गे बुद्धा वैद्यो विश्ववन्यत्वमीयात् ॥२६०॥# साफ्ष्याय क्रिलेत्य यानि जनुषः कान्तारदूरान्तरात् स्वौजःपात्रविचारणाय विपण्यभिध्यं समध्यासते । तेषामात्रयभूमिरेष भणितः पख्यौषधीनां बुधै-वंगी द्रव्यगुणाभिधाननिपुणैः पख्यादिवर्गाव्यना ॥ २६१ ॥१

\* द्रत्यमिति।—इ:यम् अनेन प्रकारिण ये नाना नानाविधा द्रत्यसम्भाराः द्रव्यसमूहाः तेषां ये नानग्रामा नामसमूहाः तेषां या व्याख्या विष्ठतिः ; तथा—तदृगुणाः तेषां ये गुणाः, तेषाम् आख्यानं कथनं पूर्वः प्रथमं आदिरिति यावत् यस्मिन् तद् यथा तथा, वौर्येति वौर्येण खसामर्थेन निजशक्त्येति यावत् ध्वसाः प्रश्नमिता रोगाः, तेषां उपसर्गाञ्च येन तं तादृशं वगं बुद्धा विज्ञाय, वैद्यो मिषक् विश्ववन्यत्वं विश्वेषां सर्वेषां वन्द्यत्वं सर्वेष्ण्च्यत्विमत्यर्थः, ईयात् प्राप्नोत्। एतेराश्चिष्ठि लिङ्।

† साफल्यायित। — यानि पर्ण्योषधानि जनुवः जन्मनः साफल्याय सफलतासम्पादनाय, किलेति प्रिक्षेत्रों, कान्तारदूरान्तरात् अतिप्रयद्रवर्त्तनः कान्तारप्रदेशात् एत्य आगम्य, खोजःपात्रविचारणाय खस्य श्रोजसः तेजसः यत् पात्रम् आधारः, तस्य विचारणाय विचारकरणाय विपण्यः पर्ण्यवौधिकाया मध्यं "विपण्यः पर्ण्यवौधिकायः इत्यमरः। समध्यासते अधितिष्ठन्ति विपण्येभध्ये तिश्नतौत्यर्थः। अत्र मध्यमिति "अधिश्रोङ्ख्यासां कर्म्यं" इति आधारे कर्मसंज्ञा। तेष्रां पर्ण्योषधीनां विक्रेयाणाम् श्रोषधद्व्याणां द्रव्यगुणानिधानिगुणैः द्रव्याणां ये गुणाः, तेष्राम् अभिधानं कथनं तत्र निपुणैः क्षप्रस्तैः द्रव्यगुणानामजैरित्यर्थः।

# राजनिघण्टुः।

1858

यः सौम्येन सदाश्येन कलयन् दिव्यागमानां जनेदुर्शां महिमानमाश्च नुदते स्वं जग्मुषां दुर्गतोः ।
वर्गः पिप्पलिकादिरेष दृहरेस्तस्ये श्च श्रस्याक्षनो
नामग्रामशिखामणी खलु क्रती षष्ठः प्रतिष्ठामगात् ॥२६२॥\*
दित ग्रीनरहरिपण्डितविर्वति राजनिष्ठाती पिप्पल्यादिः
पण्यवर्गापरनामा षष्ठो वर्गः।

बुधेः विज्ञेश्वितित्वत्तेः, पर्व्वादिवर्गात्मना पर्व्वादिवर्गस्वरूपेण, श्रायय-भूमिः श्राययस्थानस्वरूपः, एव वर्गो भिणतः वर्षितः।

\* यः सोम्येनत्यादि।—यः न्ह्हारः सौम्येन सुन्दरेण सदाप्रयेन सदन्तः करणेन जनैः साधारणजोकैः दुर्गादं दुर्ज्यम् अबोध्यमिति यावत्। दिव्यागमानां दिव्यानां प्राणदायित्वाद् दिव्यत्विमिति भावः। प्रागमानाम् आयुर्वेदानां स्वं निजं महिनानं प्रभावं कज्यन् चापयन् जम्मुषां जङ्गमानां प्राणिनामित्यर्थः। दुर्गतोः व्याधिजनिता व्यापदः, अ। श्रु दुतं नुदते नाप्रयति। तस्य न्ह्दरेः नरसिंहस्य प्रस्थासनः प्रयास्तवस्य द्रव्यस्य त्रोषधिस्ति प्रेषः। नामग्रामिश्रखामणौ नामसमूहानां चूड़ामिणस्वरूपे इह क्रतौ रचनायाम्, एषः त्रयं पिष्पिलकादिः पिष्पिलकामिष द्रव्यथः। षष्ठः वर्गः खलु निश्चतं प्रतिष्ठां समाप्तिं स्वातिं वा त्रगात् प्राप।

# यय मूलका। दिवर्गः।

मूलकं पञ्चधा प्रोक्तं चतुर्दा शिगुक्चते। वंशो दिवें हो साकन्दी हिर्द्रा वनजा तथा॥१॥ मृङ्गाटी स्नमरक्क्षी वन्यार्द्रकमयापरम्। रसोनो दिविध: प्रोत्तः पलाग्ड्य दिधा सतः ॥ २॥ विंशखेकोत्तरं सूलं गूर्णं दन्द्रमुचते। ग्राल्कसप्तकं चाय प्रोतायार खकन्दकाः ॥ ३॥ महिषी-हस्ति-वोलाय वाराही विष्णु धारिणी। दिधा च नाकुली माला विदारीद्वयशाल्मली ॥ ४॥ चग्डालस्तेलकन्द्य तिपणी पुष्करस्तथा। मुसली दिविधा चाय विधा गुच्छास्तयैव च॥ ५॥ एषु नागकराह्वा च पत्रशाकमधीचते। \* वास्तुनं चुक्रवं चिन्नो त्रिविधं शिग्रुपत्रकम् ॥ ६ ॥ पालकाराजणािकन्यौ चतुर्द्वीपोदको क्रमात्। कुणज्जर: कुसुम्भाख्य: प्रताह्वा प्रतर्ग्डुली ॥ ७॥ राजिकादयचाङ्गेरी घोलिका ब्रिविधा मता। जीवपाकस्तया गीर-सुवर्णाख्यः पुनर्नवा ॥ ८॥

<sup>\*</sup> नागकराह्या—नागाः ग्रष्ट, करी ही, तेन त्रष्ठाविंग्रतिसंख्यकं मूलग्राकं कन्दग्राकच्चेत्यर्थः।

#### [ १३६]

#### राजनिघय्टुः।

वसुकः: पि ज्ञिकादिय मि अकोऽङ्काराष्ट्रयः । \*
अतः परं च कुषाण्डो कुम्मतुम्बो त्वलावृक्षा ॥ ८ ॥
भूतुम्बिका कि जिङ्ग्य दिधा को भातको तथा ।
पटोलो मधुराद्या च स्रगाची दिधपुष्पिका ॥ १० ॥
शिम्बो च कारविद्यो च कर्कोटो खादुतुम्बिका ।
निष्पावीद्वयवार्त्ताको डङ्गरी खर्वुजा तथा ।
कर्कटी त्रपुर्मैर्वार्र्वालुको चीनकर्कटो ॥ ११ ॥
चिभिटा च भभाष्ट्रलो कुडुच्चो मुनीचणैः । प
वेदभेदाः क्रमान्मूल-कन्दपत्रपत्राक्षात्मकाः ॥ १२ ॥ धः
भाकवर्गेऽत्र कष्यन्ते मनोचरगुणाश्रयाः ।
पवं चतुर्विधं द्रव्यं बाण्खं चन्द्रसंयुतम् ॥ १३ ॥ §

श्रय मूलकनामः

मूलकं नीलकग्छन्न मूलाह्नं दीर्घमूलकम्। भूचारं कन्दमूलं स्थाडस्तिदन्तं सितं तथा॥ १४॥ ग्रह्ममूलं हरित्पणें क्चिरं दीर्घकन्दकम्। कुच्चरचारमूलन्न मूलस्यैते त्रयोदम्॥ १५॥

<sup>•</sup> म्रङ्कतराह्वयः,—म्रङः भूत्यं, करौ हो, तेन विंग्रतिसंख्यकं पत्र-ग्राकमित्यर्थः।

<sup>ं</sup> सुनीचयौ:,—सुनयः सप्त. ईच्चणे हे, तेन सप्तविंग्रतिसंख्यकं फालग्राकिमत्यर्थः।

<sup>‡</sup> वेदमेदाः चतुर्विधप्रकाराः।

बाग्यखं चन्द्रसंयुतं—पञ्चीत्तरग्रतसंख्यकं मूलादिचतुर्विधग्राक नित्यथः
 ।

मूलकं तीन्त्रामुणाञ्च कटूणां ग्राहि दीपनम्। दुर्नामगुल्महृद्रोग-वातम्नं रुचिदं गुरु ॥ १६ ॥ (हिं, दां, मूलो। मं, कं, तां, मूलङ्कि। तें मूलङ्किचेटु। गौ मूला।)

त्रय चाणास्यम् लकनाम।—

चाणास्यम् लकं चान्यच्छालेयं विष्णुगुप्तकम्।
स्थूलमूलं महाकन्दं कौटित्यं मक्सक्षवम्।
शालामकटकं मित्रं ज्ञेयं चैव नवाभिधम्॥ १०॥
चाणास्यमूलकं सोष्णं कटुकं क्चदीपनम्।
कफवातिक्रमीन् गुल्मं नाम्येद्याहकं गुक्॥ १८॥
(मं घोरमूला। कं दोडमूलिङ। गौ मूलाविभेष।)

ग्रथ राञ्चननाम।—
राञ्चनं गिखिमूलञ्च यवनिष्टञ्च वर्त्तुलम्।
राज्यमूलं गिखाकन्दं कन्दं डिग्डीरमोदकम्॥ १८॥
राञ्चनं करुकोष्णञ्च कप्पवातक्जापच्चम्।
क्यं च दीपनं इद्यं दुर्गन्धं गुल्मनाण्यनम्॥ २०॥
(मं सेठौमूल। कं चिडिकेयमूलिङ। हिंगाजर।
गो गालगम।)

त्रघ पिण्डमूलनाम।—
पिण्डमूलं गजाण्डच्च पिण्डकं पिण्डमूलकम्।
पिण्डमूलं कटूषां च गुल्मवातादिदोषनुत्॥२१॥
(गौ, मं, वाटुलामूला। कं वहमूलिङ्ग। गजरमूलक इति
सर्वेत्र प्रसिद्धम्।)

# [ १३८ ] राजनिवय्टुः।

अय वासमूलगुणाः।—

सोषां तीन्तां च तित्तं सध्रकट्रसं सूत्रदोषापहारि

श्वासार्थः कासगुल्म-चयनग्रजा-नाभिश्र्वासयन्नम् ।

कार्ट्यं बल्यं च रुच्यं मलविक्ततिहरं सूलकं बालकं स्थात्

उषां जीर्षे च श्रोष-प्रदमुदितिसदं दाहिपत्तास्त्रदायि ॥ २२ ॥

श्रीप च।—

आमं संग्राहि रूचं कफपवनहरं पक्तमेतलाटूषां भुत्तो: प्राग्भचितं चेत्सपदि वितनुते पित्तदाहास्त्रकोपम् । भुत्त्वा सार्धन्तु जग्धं हितकरवलक्षदेशवारेण तचेत् \* पक्षं हृद्रोगशूल-प्रशमनमुदितं शूलरुग्वारि मूलम् ॥ २३ ॥

(गौ कचिमूला।)

त्रय राखरनाम। (राखनमेदः )—

गर्जरं पिङ्गमूलच्च पीतकच्च सुसूलकम् । स्वादुमूलं सुपीतच्च नारङ्गं पीतमूलकम् ॥ २४ ॥ गर्जरं मधुरं कच्चं किच्चित्कटु कफापच्चम् । स्वाधानिक्रिमिश्लम्नं दाच्चित्तत्वषापच्चम् ॥ २५ ॥

(गो गाजरमूल। ते गर्जीर। यं, वं, वाटुलामूला। तां वट्टमूखिङ्ग।) [ इति मूलकानि ]।

\* वेप्रवारलच्यां यथा ;--

"निरस्थि पिशितं पिष्टं स्वितं गुड्छतान्वितम्। क्राच्यामरीचसंयुक्तं विश्ववार इति स्वृतः॥" इति। एतदुक्तेन द्रव्येण सद्द तत् मूलकं चेत् यदि पक्षं स्थात्। कार्य्येत्येवं

योजना।

अय प्रियुनास।—

शियुईरितशाकस शाकपतः सुपत्रकः ।
उपदंशः चमादंशो च्रेयः कोमलपत्रकः ।
बहुमूलो दंशमूलस्तीच्यामूलो दशाह्रयः ॥ २६ ॥
शियुस कटुितत्तोष्णस्तीच्यो वातकपापहः ।
सुखजाद्यहरो क्चो दीपनो त्रणदोषनृत्॥ २० ॥
(६ पोतसिगुना। मं श्रिसिनवणदृष्ट्विनन्ति। कं सुनगा।
हिं सोहिञ्जना। दां सुङ्गेकाकाष्ट्र। तां मोक्ष्रा।

ते सुतुगचेष्टु सुनगे। गो प्राजिना।)

अध नीलिश्रिगुनाम।

योभाञ्जनो नीलिशयुस्तीच्यागस्यो जनप्रियः।
मुखामोदः क्षण्यश्चियुश्चच्चे क्चिरञ्जनः॥ २८॥
योभाञ्जनस्तीच्याकटुः स्वादृष्यः पिच्छिलस्तया।
जन्तुवातार्त्तिभूलप्नश्चचुष्यो रोचनः परः॥ २८॥
(मं कालाविग्वा। कं करियन्गि। गौ नीलस्जिना,
सेमगा। हिं सञ्चन। तें सुनगा। तां मोरङ्ग।

वम् भ्रीगव, सेगत।)

श्रथ श्वेतिश्रगुनाम।—

खेतिशियु: सुतीच्या: स्थान्यखभङ्गः सिताह्वयः । सुमूलः खेतमरिचो रोचनो मधुशियुकः ॥ ३०॥ खेतिशियुः कट्स्तीच्याः शोफानिलनिक्तन्तनः । अङ्गव्यथाहरो रुचो दीपनो मुखजाद्यनुत् ॥ ३१॥ (मं पायद्धरा सेगुवा। कं विविधनुगि।) [ 686 ]

राजनिष्युः।

अध रक्तिश्रिगुनाम। -

रत्तको रत्तिश्रियः स्थान्मधुरो बहुलच्छ्दः। सुगन्धकेसरः सिंहो स्थारिश्व प्रकोत्तितः॥ ३२॥ रत्तश्रियसेहावीर्थ्यो सधुरश्व रसायनः। श्रोफाधानसमीरार्त्ति-पित्तश्चेषापसारकः॥ ३३॥ (संरत्तसेगुवा। कं किस्पिनेयनुग्गि। गो लालश्रिनना।)

त्रय वंशनाम।-

वंशो यवफलो वेणुः कर्मारस्तृणकेतुकः ।

सस्तरः शतपर्वा च कर्ण्यालुः कर्ण्यको तथा ॥ ३४ ॥

सहावलो दृढ्यन्यिदृढ्यत्रो धनुद्रुमः ।

धनुष्यो दृढ्काण्ड्य विज्ञेयो वाण्यभूमितः ॥ ३५ ॥ \*

वंशो लक्षो कषायौ च किञ्चित्तितौ च श्रीतलौ ।

सूत्रकच्छ्रप्रमेहार्शः-पित्तदाहास्त्रनाशनौ ॥ ३६ ॥

(गौ, हिं, वंश्य । मं वेलू । ते वेड्र, वेबेसुक, वेब्रुर्शन, वेत्तु ।

वस् माण्डगय । तां मन्गिल् । कं यरड्विह्र । )

अय रन्धुवंश्वनाम।

अन्यसु रन्ध्रवंशः स्थात् त्वसारः कीचकाह्नयः।
मस्त्ररो वादनीयश्च सुविराख्यः षड़ाह्नयः॥ ३०॥
विश्रेषो रन्ध्रवंशसु दीपनोऽजीर्पनाश्चनः।
रिचक्तत्पाचनो हृद्यो शूलम्नो गुल्मनाश्चनः॥ ३८॥
(गो फो फ्रा वं। श्र, तल्ता वं। ॥)

वागोति। — वागाः पत्र भूरेक अन्तितः, तेन पञ्चद्रप्रसंख्या अव-गन्तव्या।

# भूलकादिवर्गः।

[ 888 ]

अध वंशाग्रनाम (टंशाङ्ग:)।--

वंशायन्तु करीरो वंशाङ्कुरस यंवफलाङ्करः ।

तस्य यन्यिसु परः पवं तथा काग्र्डसन्धिस् ॥ ३८॥

करीरं कटुतिक्ताम्बं कषायं लघु शीतलम् ।

पित्तास्त्रदाहकच्छन्नं रुचिक्तत् पर्व निर्मुणम् ॥ ४०॥

(मं वास्ते। कं विदिरकहिल। गो वंशिर को ड।)

अध वेलो नाम !-

वितो वेतो योगिदण्डः सुदण्डो सृदुपर्वकः। वितः पञ्चविधः शैत्य-कषायो भूतिपत्तच्चत्॥ ४१॥ (मं वित । कं वित्त । गौ विज्ञ वाग्र । मतान्तरे "वितगाक्ष"।)

अय माकन्दीनाम।—

माकन्दी बहुम्ला च मादनी गन्धमूलिका।
एका विश्रदम्ली च ग्र्यामला च तथाऽपरा॥ ४२॥
माकन्दी कटुका तिक्ता मधुरा दीपनी परा।
क्चाऽत्यवातला पथ्या न वर्षासु हिताऽधिका॥ ४३॥
(हिं माट्रानी, माङ्गनी। मं मायिनि। कं मागिनी।)

#### त्रय ग्रोलीनाम।-

शोली वनहरिद्रा स्थात् वनारिष्टा च शोलिका। शोलिका कटुगौल्या च रुचा तिक्ता च दीपनी ॥४४॥ (मं साली। कं ग्रहिविषका। गौ वनहलुद। "ग्ररिसिनि"

इति कोङ्गणे प्रसिद्धा।)

# [ १82 ]

## राजनिष्ययुः।

#### अथ श्रङ्गाटकनाम।—

शृङ्गाटकः शृङ्गक्हो जलवन्नी जलाश्रया।
शृङ्गकन्दः शृङ्गमूलो विषाणी सप्तनामकः॥ ४५॥
शृङ्गाटकः श्रोणितपित्तहारी लघुः सरी वृष्यतमी विश्रेषात्।
तिदोष-ताप-श्रम-श्रोफहारी क्विप्रदो मेहनदार्व्यहेतुः॥४६॥
(मं सिङ्गाडे। हिं सिङ्गाड़ा। तें परिकेगड्ड। गौ पानिफ्छ।)

त्रय भृङ्गाह्वानाम।—

सङ्गाह्वा भ्रमरक्क् को भ्रमरा सङ्गमू लिका।
सङ्गक्क को कटूणा स्थात् तिका दीपनरोचनी ॥ ४०॥
( मं भमरमालो। कं उप्पुश्रके। "अड़ वी ओ ह्र"
इति को ङ्ग्णे प्रसिद्धा।)

श्रथ पेजनाम।

पेजर्वनार्द्रका प्रोक्ता वनजाऽरख्यजार्द्रका । पेजस्तु कटुकाऽक्ता च रुचिक्तइत्यदीपनी ॥ ४८॥ (सं पेज। कं केटाइ।)

अध रसीननाम।-

रसोनो लशुनोऽरिष्टो स्नेक्क् कन्दो महीषधम् । भूतप्रश्चोग्रगन्धश्च लशुनः शीतमदेकः ॥ ४८ ॥ रसोनोऽस्त्ररसोनः स्थात् गुरूषाः कफवातनुत् । ०

• अस्तरसेन जनः होनः ; अस्वविजितपञ्चरस्वान् इति भावः। तहक्तं,— "पश्चभिञ्च रसैर्युक्तो रसेनास्त्रेन विजितः। तस्माद्रसोन दत्युको द्रव्याणां ग्रुणवेदिभिः॥" इति।

# भूलकादिवर्गः।

[ \$8\$]

अरुचिक्रिसिहृद्रोग-शोफन्नस रसायन: ॥ ५०॥

अध श्वेतरसोनगुगाः।-

रसोन उषाः कटुपिच्छित्य स्निग्धो गुरुः स्नादुरसोऽतिबत्यः। व्राथय मेधास्तरवर्णचत्तुग्नास्थिसन्धर्भानकरः स्तीच्यः॥ ५१॥

(भंपायद्भा लक्षण्। कं विखियवेझु हि। तां वहुद्भाय्हुः तें तेहुबु हि। चिंख सून। गौरसुन।)

त्राय राज्ञननाम । (रसोनभेदः)।—
रसोनोऽन्यो सहाकन्दो राज्जनो दीर्घपत्रकः ।
प्रथुपतः स्थूलकन्दो यवनिष्टो बले हितः ॥ ५२ ॥
राज्जनस्य सधुरं कटु कन्दं नालसप्युपदिशन्ति कषायम् ।
पत्रसञ्चयसुशन्ति च तिक्षं सूरयो स्वर्णमस्थि वदन्ति ॥ ५३ ॥

त्रघ रहारसोनशुगाः।—

हृद्रोग-जीर्णञ्चर-कुचिश्रूल-विबन्धगुल्माक्चिक्कच्छ्योफान्। दुर्नाम-कुष्ठानिलसादजन्तु-कफासयान् चन्ति सहारसोनः ॥५४॥ (मं लोहिवावोल्लसग्र। कं क्रीम्पनवेब्रह्मि।)

श्रय पतारङ्गाम।

पलाण्डुस्तीन्त्राकन्दय उसी च सुखदूषणः । श्रूद्रप्रियः क्रिसिन्नय दीपनी सुखगन्धकः ॥ ५५ ॥ बहुपस्रो विखगन्धो रोचनी रुद्रसंज्ञकः । \* खेतकन्दय तत्रको हारिद्रोऽन्य इति दिधा ॥ ५६ ॥ पलाण्डुः कटुको बखाः कफपित्तहरो गुरुः ।

<sup>\*</sup> क्ष्रेति एकादश्रसंख्या बोच्च्या।

## [888]

## राजनिषयुः।

वृष्यस्य रोचनः स्निग्धो वान्तिदोषविनाग्रनः ॥ ५०॥ (गौ पें याज। इं पियाज। मं ग्रेतकान्दा। कं उद्वि। तें नौरुज्ञिचेट्ट्। तां वेञ्जयम। वं कान्द। दां वृद्धिगडडुलु।)

त्रथ राजपलाग्डुनाम ।---

श्रन्यो राजपलाण्डु: स्थात् यवनेष्टो तृपाह्नय:।
राजप्रियो महाकन्दो दीर्घपत्रय रोचक:॥ ५८॥
तृपेष्टो तृपकन्द्रय महाकन्दो तृपप्रिय:।
रत्तकन्द्रय राजेष्टो नामान्यत्र त्योदश् ॥ ५८॥
पलाण्डुन्पपूर्व: स्थात् शिशिर: पित्तनाश्रन:।
कफह्नदीपनयेव बहुनिद्राकरस्त्रया॥ ६०॥
(मं लोहिवौजिह्न, रक्तकान्दा। कं किम्पनडिह्न।
ते रायडिह्न। गौ लाल्पै याज।)

तथा चः।-

वच्यते नृपपलाग्डुलचणं चारतीच्यामधुरो रुचिप्रदः। कग्रुशोषशमनोऽतिदीपनः स्रेषापित्तशमनोऽतिहं हणः॥६१॥

ग्रघ कन्दाः।—

अध शूरगनाम।-

कण्डूतः शूरणः कन्दी सकन्दी स्थूलकन्दकः।
दुर्नामारिः सृष्टत्तस्य वातारिः कन्दशूरणः॥ ६२॥
त्रशीन्नस्तीत्रकन्दस्य कन्दार्चः कन्दवर्षनः।
वहुकन्दो रुचकन्दः शूरकन्दस्य घोड्शः॥ ६३॥

श्रूरणः कटुकरुचदीपनः पाचनः क्रिसिकफानिलापहः। श्र्वासकासवसनार्थसां हरः श्रूलगुल्पश्रमनोऽस्रदीषक्कत् ॥६॥ ( मं सुरग्र। वं सूरगा। गो श्रील्।)

त्रय सितशूरसनाम।—

सितश्र्रणस्तु वन्यो वनकन्दोऽरख्यश्र्रणो वनजः।
स खेतश्र्रणाख्यो वनकन्दः कण्डूलञ्च सप्ताख्यः॥ ६५॥
खेतश्र्रणको रुचः कटूष्यः क्रिसिनाश्रनः।
गुल्मश्र्लादिदोषष्टः स चारोचकहारकः॥ ६६॥

( भं पायद्धरा सूरणः । कं विलियसूरणः । गौ प्रादा त्रोल्, वन त्रोल् । )

अध मुखालुनाम।—

मुखालुर्भेग्डपारोच्चो दीर्घकन्दः सुकन्दकः। स्यूलकन्दो महाकन्दः स्वादुकन्दश्च सप्तधा ॥ ६०॥ मुखालुकः स्वानाश्चरः ग्रिशिरः पित्तनाश्चनः। रुचिक्वद्वातकचैव दाइशोषढ्यापहः॥ ६८॥

(गौ निष्टि अ। लु।)

प्रथ पिण्डानुनाम।—
पिण्डानुः स्थात् ग्रन्थिनः पिण्डकन्दः
कन्दग्रन्थो रोमग्रो रोमकन्दः।
रोमानुः स्थासोऽपि तास्वूनपत्रो
नानाकन्दः पिण्डकोऽयं दशाहः॥ ६८॥
पिण्डानुर्मधुरः शीलो सृतकन्द्रामयापहः।

रा---१०

## [ 984 ]

# राजनिषयुः।

दाहगोषप्रमेहन्नो तृष्यः सन्तर्पणो गुरुः ॥ ७० ॥ ( मं पेग्छालु । वं विहियहेग्डल । उत् घरात्रालु । हिं पेड़ालु । गौ हातिखोजा त्रालु, "चुविड़" दति केवित् । )

त्रय रत्तिपिखालुनाम। -

श्रन्यसु रत्तिपिग्हाल् रत्ताल् रत्तिपिग्हिकः ।
लोहितो रत्तकन्दश्च लोहितालुः षड़ाह्मयः ॥ ७१ ॥
रत्तिपिग्हालुकः श्रीतो सधुरान्तः श्रमापहः ।
पित्तदाहापहो वृष्यो बलपृष्टिकरो गुरुः ॥ ७१ ॥
(मं रत्तालु; कं किम्पिनहैग्डल । हिं रक्ताक्, क्वग्रहा, रत्तालु ।
तां यामस्तोद्वम् । गौ लाल पिग्हो श्रालु ।)

ग्रथ कासालुनाम।-

कासालुः कासकन्द्रश्च कन्दालुश्चालुकश्च सः।
ग्रालुविशालपत्रश्च पत्नालुश्चेति सप्तधा ॥ ७३ ॥
कासालुरुग्रकण्ड्ति-वातश्चेषासयापदः।
ग्रारोचकहरः खादुः पथ्यो दीपनकारकः॥ ७४ ॥
(मं काहालु। खम्बरे इति कोङ्ग्णे प्रसिद्धः। गौ खाम् श्रालु।)

त्रघ फोराड। लुनास।—

फोर्ग्डाबुर्लीहिताबुद्ध रक्तपत्नो सृदुच्छ्दः। फोर्ग्डाबु: स्रेषमवातम्नः कटूष्यो दीपनस्य सः॥ ७५॥ (मं फोर्ग्डाबु। कं वोद्यगेयमु। कोड्यये तन्नामे प्रसिद्धः।)

त्रथ पाणियालुनाम ।-

पाणियालुजेलालुः स्थात् अनुपालुरवालुकः।

पाणियालुस्तिदोषञ्चः सन्तर्पणकरः परः॥ ७६॥
( मं पाणियालु। कं नौक्रोणसु।)
अथ नीलालुनाम।—

नीलालुरसितालु: स्थात् कष्णालु: ध्यामलालुक: । नीलालुर्भधुर: भीत: पित्तदाह्यमापह:॥ ७०॥ (मं नीलालु। कं करियगणेसु।)

त्रथ महिषोकन्दनाम। -

शुक्रालुर्मिहिषीकन्दो लुलायकन्दश्च शक्तकन्दश्च । सर्पाख्यो वनवासी विषकन्दो नीलकन्दोऽन्यः ॥ ७८ ॥ कटूष्णो महिषीकन्दः कफवातामयापहः । सुखजाडाहरो क्चो महासिडिकरः सितः ॥ ७८ ॥ (यम्मेगड्डे इति अनूपे प्रसिद्धः । गौ श्रांक श्रालु ।)

त्रय इस्तिकन्दनाम।—

हस्तिकन्दो हस्तिपतः स्थूलकन्दोऽतिकन्दकः।
वहत्पत्नोऽतिपत्नश्च हस्तिकर्णः सुकर्णकः॥ ८०॥
विग्दोषारिः कुष्ठहन्ता गिरिवासी नगाश्रयः।
गजकन्दो नागकन्दो ज्ञेयो दिसप्तनामकः॥ ८१॥ \*
हस्तिकन्दः कटूणाः स्थात् कप्तवातामयापहः।
विग्दोषश्चमहा कुष्ठ-विष-वीसर्पनामकः॥ ८१॥
(मं इस्तिकन्दः। वं मह्निरक्षसियगड्डे। कोङ्गणे प्रसिदः।

गौ इं।सावड्मूला।)

हिगुणिताः सप्त इति चतुदैश्रसंख्या च्या।

# [ 289]

# राजनिषयः!!

अध कोलवन्दनाम।—

कोलकन्दः क्रिमिन्नश्च पञ्जलो वस्त्रपञ्जलः । पुटालुः सुपुटश्चेव पुटकन्दश्च सप्तधा ॥ ८३ ॥ कोलकन्दः कट्श्चोष्णः क्रिमिदोषविनाशनः । वान्तिविच्छदिशमनो विषदोषनिवारणः ॥ ८४ ॥ (तं कोलकन्द । कं कम्युटगेडु । "पुटालु" इति

काश्मीरे खातः।)

अथ वाराहीनाम।-

स्यादाराही शूकरी क्रोड़कन्या
ग्रिटिविष्वक्सेनकान्ता वराही।
कौमारी स्यादब्रह्मपुत्री तिनेता
कौड़ो कन्या ग्रिटिका माधवेष्टा॥ ८५॥

शूकरकन्दः क्रोड़ो वनवासी कुष्ठनाश्रनो वन्यः। श्रम्यतय सहावीर्य्यो सहीषधिः श्वरकन्द्य ॥ ८६॥

वराइकन्दो वीरस ब्राह्मकन्दः सुकन्दकः ।
बिद्धि व्याधिइन्ता च वसुनेत्रसिताह्मयाः ॥ ८० ॥ क्ष वाराही तिक्तकटुका विषिपत्तकपापहा ।
कुष्ठमेइक्रिसिहरा दृष्या वन्त्या रसायनी ॥ ८८ ॥

(मं वाराहीकन्द। कं हन्दिगेटि। तें बाह्मदिखिचेटु, पाचितीके, नेसताडिचेटु। वम्॰ डुकरकन्द। हिंगेठी। गी चुवडि

त्रालु । समलाख्रू सपर्वतेऽस्याः स्त्यत्तिः ।)

वसः त्रष्टसंख्या निलच दिसंख्या तेन त्रष्टाविप्रतिसंख्या दित
 बोध्यम्।

# मूलकादिवर्गः।

[ 585]

#### त्रय विषाुकन्दनाम।-

विष्णुकन्दो विष्णुगुप्तः सुपृष्टो बहुसम्पृटः । जलवासो बहुत्कन्दो दीर्घवन्तो हरिप्रियः ॥ ८८ ॥ विष्णुकन्दस्तु मधुरः ग्रिभिरः पित्तनाग्रनः । दाह्योफहरो क्चः सन्तर्पणकरः परः ॥ ८० ॥ (मं विष्णुकन्दः कोङ्ग्ये प्रसिदः ।)

#### त्रथ धारियोकन्दनाम।-

धारिणी धारणीया च वीरपत्री सुकन्दकः।
कान्दालुर्वनकान्द्रच कान्दाची दण्डकान्दकः॥ ८१॥
मध्रो धारिणोकान्दः काफपित्तामयापदः।
वक्तदोषप्रशमनः कुष्ठकाण्डूतिनाश्रनः॥ ८२॥
(मं धारणोकान्दः। कं नैलगड्डे। अनुपे प्रसिद्धः।)

अय नाक्षजीनाम।-

नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा रक्तपतिका। दुःखरो नागगन्धा चाप्यहिशुक् खरसा तथा। सर्पादनी व्यालगन्धा चेया चेति दशाह्वया॥ ८३॥

त्रय महासुगन्धानाम। (नाकुलीमेदः)।—

श्रन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुनी।
सर्पाची फणिहन्ती च नकुनान्धाऽहिशुक् च सा॥ ८४॥
विषमदैनिका चाहि-मर्दिनी विषमदिनी।
महाहिगन्धाऽहिनता जेया सा द्वादणाह्वया॥ ८५॥
नाकुनीयुगनं तित्तं कटूणं च त्रिदोषजित्।

## राजनिघयुः।

अनेकिविषविध्वंसि किञ्चिच्छेष्ठं हितीयकम् ॥ ८६ ॥ मं नाजुलौहय। कं विषसुङ्गरोहय। हिं चन्द्रा। तें सर्पे विचेट्र, पद्मचेट्रु। गौ नायि।)

अय म।लाकन्दनाम।-

ग्रथ मालाकन्दः स्थादालिकन्द्य पङ्क्तिकन्द्य ।

तिशिखदला ग्रन्थिदला कन्दलता कीर्त्तिता षोढ़ा ॥ ८० ॥ \*

मालाकन्दः सुतीन्त्यः स्थात् गण्डमालाविनाशकः ।

दीपनो गुलाहार्य वातस्रेषापकषेक्षत् ॥ ८८ ॥

(मं दाविश्यगड । कं करियगोलि ।)

अध विदारिकानाम।-

विदारिका खादुकन्दा सिता श्रुका शृगालिका।
विदारी वृष्यकन्दा च विड़ाली वृष्यविक्षका॥ ८.८ ॥
भूक्षणाण्डी खादुलता गजिष्टा वारिवक्षभा।
च्रेया कन्द्रफला चेति मनुसंख्याद्वया मता॥ १००॥ क
विदारी मधुरा शीता गुरु: सिन्धाऽस्विपत्तिजत्।
च्रेया च कफकत्पृष्टि-बल्या वीर्थ्यविवर्षनी॥ १०१॥
(मं भूयिकीं इति। कं निलक्षम्बल। तें मटुपलितग। उत्०भ्द्रकखार। वम्० भूमिकी इति। हिं विलादकन्द,
गेठी। गो भूँ दक्षमङ्गा।)

षोढ़ेत्यव्ययं प्रकाराधे भाच्प्रत्ययः, षर्मकारा दत्यधः।

<sup>†</sup> ममुसंख्या चतुर्देश एव बीदव्या।

## भ्मलकादिवर्गः।

[१५१]

अध चौरविदारीनाम।-

श्रन्था चौरिवदारो स्यादि जुगन्धे जुव बरी।
द जुव बो चौरकन्द: चौरव बो पयस्ति नी॥ १०२॥
चौर श्रक्ता चौर बता पयः कन्दा पयो बता।
पयो विदारिका चेति विज्ञेया दाद शाह्यया॥ १०३॥
ज्ञेया चौरिवदारी च सधुरा ज्ञा कषायका।
तिक्ता च पित्त शूब श्री सूत्र मेहा स्याप हा॥ १०४॥
चौरकन्दो दिधा प्रोक्तो विना बसु सना बकः।
विना बोरेक द्रा स्थादयः स्त स्थो सना बकः॥ १०५॥
(दां चौरक द्रा मं श्रेत सूँ दकीं द्रा। गौ प्रादा मूँ दक्ष मड़ा।)

त्रथ प्रात्मलीकन्दनाम।-

शाल्या की नन्दकश्वाय विजु को वनवासकः । वनवासी सन्त्रश्च सन्तर्हन्ता षड़ाह्वयः ॥ १०६ ॥ सधुरः शाल्याकी कन्दो सन्तर्भग्रहरोधि जित्। शिशिरः पित्तदाहार्ति-शोषसन्तापनाश्यनः ॥ १०० ॥

( र' ग्राम्बरीकन्दः । गौ श्रिमुखगाछेर मूख । )

त्रय चर्डालकन्दनाम।—

प्रोक्तसण्डालकन्दः स्यादेकपत्नो दिपत्नकः । तिपत्नोऽय चतुष्पतः पञ्चपत्रस्व भेदतः ॥ १०८॥ चण्डालकन्दो सधुरः कफपित्तास्त्रदोषजित् । विषभूतादिदोषन्नो विज्ञेयस रसायनः ॥ १०८॥ (मं चण्डालकन्द । कं मादगेगहे ।) [ १५२]

## राजनिष्यः।

#### श्रय तैलकन्दनाम।-

श्रथ तैलकन्द उत्तो द्रावककन्दिस्तलाङ्कितदल्ख।
करवीरकन्दसंत्रो न्नेयस्तिलचित्रपत्नको बार्षः ॥ ११०॥ \*
लोइद्रावो तैलकन्दः कटूणो वातापस्नारापद्वारी विषारिः।
शोफन्नः स्याह्नस्यकारी रसस्य द्रागेवासी देइसिडिं विधन्ते॥१११॥
(दां तैलकन्द। मं सूजिसुर्दिगगळ्डे।)

त्रय तिपर्गीनाम।

श्रश्वारिपत्रसङ्घाशः तिलविन्दुसमन्वितः । संस्निन्धाधस्थभूमिस्थः तिलकन्दोऽतिविस्तृतः ॥ ११२ ॥ विपर्णिका व्रहत्पत्नी किन्नग्रन्थिनिका च सा । कन्दालः कन्दबहलाऽप्यन्तवत्नी विषापहा ॥ ११३ ॥ विपर्णी मधुरा श्रीता खासकासविनाशनी । पित्तप्रकोपश्मनी विषत्रशहरा परा ॥ ११४ ॥ (कॉ तिलपर्णि। मूरेङ्गल इति अनूपे प्रसिद्धा। गौ तिलकन्द।)

त्रय पुष्करकत्दनामगुगाः।— ( एतत्पर्यायादयस्तु पिप्पच्यादिवर्गे (१५२) स्नोके द्रष्टव्याः।)

श्रथ मुसलोकन्दनाम।—

मुसनी तालमूनी च सुवहा तालमुनिका।
गोधापदी हमपुष्पी भूतानी दीर्घकन्दिका॥ ११५॥
मुसनी मधुरा शीता वृष्या पृष्टिबनप्रदा।
पिच्छिना कफदा पित्त-दाह्यमहरा परा॥ ११६॥

<sup>\*</sup> वार्यैः पञ्चसङ्गाभिरपलितः, पञ्चसंव्यक दत्यर्थः।

## मूलकादिवगै: ।

[१५३]

सुसली स्याहिधा प्रोता खेता चापरसंच्चता।

खेता स्वल्पगुणोपेता ग्रपरा च रसायनी ॥ ११७ ॥

( दां काष्स्रोरे च सुसलीकन्द । कं देलग । तें निलप्तलिगडडलु,

नेलतारि । गौ तलुर, तालसूली । )

अय गुक्काह्मकद्नाम।—

गुच्छाह्नकन्दस्तवकाह्नकन्दको गुजुच्छकन्दश्च विघिष्टकाभिधः। गुजुच्छकन्दो मधुरः सुशीतको वृष्यप्रदस्तपेषदाह्नग्रामः॥ ११८॥

( मं कुंलो द्वालु। कं मुकुलियागड्डे। तैलसार द्वित लोके.।

त्रथ नागाह्वानाम। ( बस्मणाकन्द )।— बस्मणा पुत्रकन्दा च पुत्रदा नागिनी तथा। नागाह्वा नागपती च तुलिनी मिक्किता च सा। त्रस्नविन्दुक्कदा चैव सुकन्दा दशधाह्नया॥११८॥ बस्मणा मधुरा श्रीता स्त्रीबन्ध्यत्विनाश्रनी। रसायनकरी बल्या तिदोषश्रमनी परा॥ १२०॥ (वम्॰ बस्मणाकन्द। कं पुरुषगड्डे। गौ बस्मणामूल)

. त्रथ करजोड़िनाम।—

हस्तपर्यायपूर्वेतु जोड़िनैंदावरैः स्मृतः। करजोड़िरिति ख्यातो रसबन्धादिवश्यकत्॥ १२१॥ ( हिं, मं हाताजोड़ि । )

### राजनिघर्टः।

अध प्लग्नाकाः। —

त्रघ वास्तुकप्राक्तनाम।—

वासुकं वासु वास्तूकं वसुकं हिलमोचिका।

शाकराजो राजशाकश्चक्रवर्त्तिश्च कोर्त्तितः ॥ १२२ ॥
वासुकं तु मधुरं सुशोतलं चारमोषदक्तं तिदोषजित्।
रोचनं ज्वरहरं महाश्रीसां नाशनञ्च मलमृतश्चिकत्॥ १२३ ॥
(मंचक्रवत्। कंचक्रवत्। हिंवोश्या। गो वेती शाक।)

अधं चुक्रनाम। -- '\*

चुकं तु चुक्रवास्तूकं लिक्षचं चान्ह्यवास्तुकम् । दलान्ह्यमन्द्रश्याकास्त्रमन्द्रादि हिलमोचिका॥॥१२४॥ चुकं स्थादम्ह्यप्रवन्तु लघूश्यं वातगुल्मनुत्। रुचिक्कद्दीपनं पथ्यं ईषित्पित्तकरं परम्॥१२५॥

(मं चुकार्वाङि लिं। वर्तं ग्राम्बवतो । ते चु सिचक्कोत । गौ चुका वेतो ।)

त्रय चिह्नीनाम।-

पलायलोहिता चिन्नी वासुका चिन्निका च सा।

मृदुपनी चारदला चारपनी तु वासुकी ॥ १२६॥

चिन्नी वासुकतुं ल्या च सचारा श्लेषांपत्तनुत्।

प्रमेहमूतकच्छन्नी पथ्या च रुचिकारिणी ॥ १२०॥

(मं चिन्नी। कं चिन्निका। हिं चिन्नारी।)

रलयोरमेदं मत्वा केवित् चुक्ककित्यपि पठिन्त।

प्रय श्वेतिचित्नी।—

खेतिचित्ती तु वास्तूकी सुपथ्या खेतिचित्तिका।
सित्चित्तुप्रपचित्ती च ज्वरप्ती चुद्रवास्तुकी ॥ १२८॥
खेतिचित्ती सुमधुरा चारा च प्रिशिरा च सा।
चिदोष्ठशमनी पथ्या ज्वरदोष्ठविनाशनी॥ १२८॥
(मं वागुवा। कं विज्ञिचित्तिकी। वम्॰ जघुचाकवत्।
गौ श्रादा वेतोशका।)

त्रध गुनकि चिह्नी नाम।—
त्रान्या गुनकि चिह्नी स्थालु चिह्नी खानि चिह्निका।
व्याचिह्नी कटुती च्या च कण्डू तिव्रण हारिणी॥ १३०॥
(मं सूणे चिह्नि। कं नायचिह्निका।)

श्रथ श्रियुपत्रगुषाः।—
श्रियुपत्रभवं श्राकं रुचं वातकफापह्रम्।
कटूषां दीपनं पथ्यं क्रिसिम्नं पाचनं परम्॥ १३१॥
मं सेगुपत्र। कं नुगाियपत्ने, हिंद्यपने। गौ सिनाशाक।)

श्रघ पालकाना।—
पालकां तु पलकायां सधुरा चुरपित्रका।
सुपता सिग्धपता च श्रामीणा ग्राम्यवस्त्रमा॥ १३२॥
पालकामीष्ठलाट्वां सधुरं पष्यशीतलम्।
रक्तपित्तहरं ग्राहि ज्ञेयं सन्तर्पणं परम्॥ १३३॥
(सं पालकाश्राकः। हिं पलकी। गौ पालङ्शाकः।)

श्रय राजशाकिनौनाम। — राजाभिधानपूर्वी तु नगाह्वा चापरेण वा। राजाद्रिः स्थाद्राजगिरिक्कांतत्र्या राजशाकिनो ॥ १३४ ॥ राजधाकिनिका रुचा पित्तक्षी शीतला च सा। सैवातिशीतला रुचा विज्ञेया स्थूलशाकिनी ॥ १३५ ॥ (मं राजगिरि। कं डोलगेदोनि। तें एरडु।)

श्रय उपोदकोनाम।—

उपोदको कलम्बो च पिच्छिला पिच्छिलच्छ्दा।
मोहिनो मदमाकश्च विमालाद्या ह्युपोदको ॥ १३६॥
उपोदको कषायोश्या कटुका मधुरा च सा।
निद्राऽऽलस्यकरो क्चा विष्टक्षक्षेमकारियो ॥ १३०॥
(म माडवो, करवेलि, राजगिरा, मवाला, खख्डपालक्य।
कं हेव्लस्ते। गौ वड़ पुँदमाक।)

त्रय चुद्रोपोदकोनाम।

उपोदक्यपरा चुद्रा स्चापता तु मग्डपो। रसवोर्थ्यविपाकेषु सदृशी पूर्वया खयम्॥ १३८॥ (मं साहिवेलि। कं करियवलिवसले। गो कोट पुंदा)

त्रय वनजोपोदकीनाम।

उप्रोदको तिता च वन्यजा वनजाह्नया। वनजोपोदको तिता कटूणा रोचनो च सा॥ १३८॥ (मं रानवेखि। कं कावसकी।)

अय मूलपोतौनाम। ( उपोदकोभेदः)।

मूलपोती चुद्रवत्ती पोतिका चुद्रपोतिका। चुपोपोदकनाम्ती च वित्तः शाकटपोतिका॥ १४०॥ म्लपोती तिदीषप्ती वृष्या बल्या लघुश्व सा। बलपुष्टिकरी रुच्या जठरानलदीपनी॥ १४१॥ ( मं मालविर्राल। कं तोख्टदवस्ति। )

त्रथ कुणझरगुणाः।— कुणच्चरस्त्रिदोषन्नो मधुरो रुच्यदीपकः। ईषत्कषायः संग्राची पित्तस्रेषकरो लघुः॥ १४२॥ (सं कुण्णिकः। कंगोरचियपत्तेय।गो वनवेत्या।)

त्रथ कीसुमाप्राकगुगाः।—

कौसुन्ध्रशानं सध्रं कट्रणं विराम् त्रदोषापहरं सदम् । दृष्टिप्रसादं कुरुते विशेषादुचिप्रदं दीप्तिकरं च वक्के: ॥ १४३॥ (मं कुसुन्धा कं कसुन्वेयपन्ने । गो कुसुनशाक ।)

त्रय ग्रतपुष्पादलगुषाः।— ग्रतपुष्पादलं सोष्णं सधुरं गुल्क्ष्यूलजित्। वातम्नं दीपनं पथ्यं पित्तच्चदुचिदायकम्॥ १४४॥ (कं सेडप। कं सव्यश्चिगे। गौ ग्रुल्पाग्राकः।)

श्रथ पत्रतण्डुलोगुणाः।—
तण्डुलोयकदलं हिममर्शः पित्तरक्तविषकामविनाधि।
ग्राहकं च मधुरं च विपाके दाहशोषशमनं क्चिदायि ॥१४५॥

(मं तयहुलीपता। कं किस्कूसारी।)

त्रघ राजिकापत्रग्राः।—
कठूणां राजिकापत्रं क्रिमिवातकफापहम्।
कण्ठामयहरं स्वादु विद्विपनकारकम्॥ १४६॥
(मं महरीपत्र। कं सासवैयतोष्णत्तु। गौ राइसर्षे भ्राकः।)

## राजनिष्यएः।

त्रय साषपपतगुराः।—

सार्षपं पत्रमत्युष्णं रक्तपित्तप्रकोपनुत्।
विदाहि कटुकं खादु शुक्रहृदुचिदायकम् ॥ १४०॥
(मं सिरसोपत्र। कं विलियसासवेय। तें ताव्यलु।
गौ सरिषाशाक।)

अय वाङ्गरीगुगाः।—

चाङ्गेरीश्राकमत्युश्यं कटु रोचनपाचनम्।
दोपनं कप्पवातार्थः - संग्रहृष्यतिसार्जित्॥ १४८॥
(सं श्राम्बवती। कं पृतुम्बृश्यिसे। हिं चौपतिया।
गौ श्रामक्तश्याक।)

त्रय घोलीनाम।-

घोला च घोलिका घोली कलन्दुः कवलालुकम्॥ १४८.॥

त्रय चेत्रज्ञे। जिकागुणाः।—

च्रेत्रजं लवणं रच्यमन्तं वातकपापहम् ॥ १५०॥ (मं रोतोचोघालि। कं केप्यगोलि।)

श्रथ श्रारामघीलिकागुगाः।--

श्रारामघोलिका चान्ता रूचा रुचाऽनिलापहा। पित्तश्लेषकरी चान्या सूद्धा जीर्थज्वरापहा॥ १५१॥ (मं मालावीघोलि, साङ्गीघोलि। कं तोखगोलि, किर्देगोलि।)

अध जीवशाकनाम।-

जीवन्तो रक्तनालय ताम्त्रपतः सनालकः। शाक्रवीरसु मधुरो जीवशाक्यय मेषकः॥ १५३॥

# भूलकादिवर्गः।

[ १५८ ]

जीवशाक: सुमधुरी बृंहणी वस्तिशोधन:। दीपन: पाचनी बच्ची वृष्य: पित्तापहारक:॥ १५३॥ ( रं जीवशाक। खोषरा दति लोके।)

त्रय गोरसुवर्णभाकनाम।—

गौरसुवर्षं खर्षं सुगन्धिकं भूमिजं च वारिजं च।

इस्तं च गन्धशाकं कट्ग्रङ्गाटच्च वर्षशाकाङ्कः ॥ १५४॥

गौरसुवर्षे शिशिरं कफपित्तज्वरापहम्।

पथ्यं दाहरुचिश्चान्ति-रक्तत्र्यमहरं परम्॥ १५५॥

(मंगीरसुर्वार्णशाकः। चिरुकूटदेशे प्रसिद्धः।) श्रथ पुनर्नवावसुकयोः श्राकगुर्गाः।—

वर्षाभूवसुकौ श्लेष-विद्यमान्द्यानिलापही।
पाके रूचतरी गुल्म-भ्लोहशूलापहारकी॥१५६॥
(मं घेएुल, वसी। कं वेब्लडिक लु। गो श्लेतपुख्याश्राक
श्रो वक्षकीर पाता।)

त्रय पञ्जादिपञ्चकनामगुंगः।—

पिन्न जीवनी पद्मा तर्जारी चुचुक: पृथक्।
वातामयहरं ग्राह्म दीपनं क्चिदायकम्॥ १५०॥
पन्नग्रादिपञ्चकं भेग्डा कुण्ञ्जस्त्रिपुटस्तथा।
द्रत्यादि वनपताणां ग्राकमेकत्र योजितम्॥ १५८॥
दीपनं पाचनं क्चं बलवर्णविधायकम्।
विदीषग्रमनं पथ्यं ग्राह्म वृष्यं सुखावहृम्॥ १५८॥
(मं ग्रामोरि। कं वेरकेयपहेय।)

[ १६0 ]

## राजनिघर्युः।

श्रय नियमप्राकनामगुणाः ।—
( श्रस पर्यायादयश्वाणाख्यमूलकप्रव्दे श्रस्मिनेव वर्गे
१७,१८ संख्यकश्लोके द्रष्टव्याः । )
श्रय फलप्राकाः ।—
श्रय कुषाण्हीनाम ।—

कर्कीटिका च कुषाग्छी कुमाग्छी तु वहरफला।
सुफला स्थात् कुम्भफला नागपुष्पफला मुनिः॥ १६०॥ \*
मूत्राघातहरं प्रमेहश्मनं क्षच्छाश्मरीच्छेदनं
विग्मूत्रक्लपनं ढषार्त्तिश्मनं जीर्णाङ्गपुष्टिप्रदम्।
वृष्यं स्वादुतरं त्वरोचकहरं बच्चं च पित्तापहं
कुषाग्छं प्रवरं वदन्ति भिषजो वस्नीफलानां पुनः॥ १६१॥
(मं कोहतेन। कं कग्डंडवलकायि। हिं कुंहडा। तें

गुमाड़ि। उत्• कखाड़। गौ कुमड़ा। )

त्रव कुम्भतुम्बोनामगुणाः। (त्रवावमेदः।)—
गोरचतुम्बो गोरची नवालाम्बुर्घटाभिधा।
कुभालाम्बुर्घटालाम्बुः कुम्भतुम्बो च सप्तधा॥ १६२॥
कुम्भतुम्बो सुमधुरा शिश्रिरा पित्तहारिणी।
गुरुः सन्तर्पणी रुच्या वीर्थ्यपुष्टिबलप्रदा॥ १६३॥
(मं गोरवतुम्बो। कं गोरखदुद्दिके। गो लाउ।)
त्रव चौरतुम्बोनामगुणाः। (त्रवावमेदः)।—
चौरतुम्बो दुग्धतुम्बो दीर्घवत्तप्तलाभिधा।
दुच्चाकुः चित्रयवरा दीर्घवीजा महाप्तला॥ १६४॥

<sup>\*</sup> सुनिः सप्तसंख्यकेत्यर्थः।

# मूखकादिवर्गः।

[ 8 € 8 ]

चीरिणी दुग्धवीजा च दन्तवीजा पयिस्तिनी।
सहावत्ती ह्यलाख्वुस समन्नी ग्रस्म्सिता॥ १६५॥ \*
तुख्वी समधुराः स्तिग्धा पित्तन्ती गर्भपोषकत्।
वृष्या वातप्रदा चैव बलपुष्टिविवर्षनी १६६॥

(मं दुग्धतुम्बी। कं हालुगुम्बलु। गौ मिठा लाउ।)

अध भृतुम्बीनामगुणाः।-

भूतुब्बी नागत्तुब्बी च शक्रचापसमुद्भवा। बल्बीकसम्भवा देवी दिव्यतुब्बी षड़ाह्मया॥१६०॥ भूतुब्बी कट्कोण्णा च सिवपातापहारिणी। दन्तार्गलं दन्तरोधं धनुर्वातादिदीषनुत्॥१६८॥

( हिं भूतुम्ब । मं नेलसारे । गो मेठी लाउ । )

গ্রহা কলিজুলামনুনা:। ( মধুনবিমীদ:।)—

मांसलफल: कलिङ्गश्चित्रफलश्चित्रविद्यति ।

मधुरफलो व्रत्तफलो ष्ट्याफलो मांसलो नवधा ॥ ६८ ॥
कलिङ्गो मधुर: ग्रीत: पित्तदाष्ट्रश्चमापहः ।
वृष्य: सन्तर्पेषो बस्यो वीर्थ्यपुष्टिविवर्षनः ॥ ७० ॥

(मं क्लिङ्ग। कं कौ ग्रहे। गौ तरमुज।)

त्रघ घाराक्षीप्रातकीनामगुणाः।-

कोशातको स्वादुफला सुपुष्पा कर्कीटको स्थादिप पीतपुष्पा । धाराफला दीर्घफला सुकोशा धामार्गवः स्थानवसंज्ञकोऽयम्॥१६१

<sup>\*</sup> ग्राम्मिता—पचदग्रसङ्घानेत्यर्थः।



## राजनिष्यः।

धाराकोशातको स्निग्धा मधुरा कफपित्तनुत्। ईषद्वातकरी पथ्या रुचिक्तद्वलवीर्य्यदा॥ १७२॥ (मं दोड़का। कं धारवीरे। तें तरोई। गौ सिजा।)

त्रय इिलकोश्रातकीनामगुणाः ।—
इिल्लिकोश्रातकी लन्या वृह्यलोश्रातकी तथा ।
महाकोश्रातकी वृत्ता याम्यकोश्रातकी शराः ॥ १७३ ॥ \*
इिल्लिकोश्रातकी स्निन्धा सधुराऽऽधानवातकत् ।
वृष्या क्रिमिकरी चैव वृण्यसंरोपणी च सा ॥ १७४ ॥
(मं पारिसदोड्का । कं श्ररहीरे । गो धुन्दु । )

त्रथ खाइपटोलीनाम। (पटोलिविशेषः)।—
त्रेया खादुपटोली च पटोली मण्डली च सा।
पटोली मधुरादि: स्यात् प्रोक्ता दीर्घपटोलिका।
स्निम्धपणीं खादुपूर्वै: पर्यायैश्व पटोलिका॥ १७५॥
- पटोली खादु: पित्तन्नी क्चिक्तत् ज्वरनामनी।
बलपुष्टिकरी पथ्या ज्ञेया दीपनपाचनी॥ १७६॥
(मं खाइपटोल। कं सिंइपडवल। हिं भिल्पोड़िला।)

अध पटोबस चतुरङ्गगुगाः।—
पटोलपतं पित्तन्नं नालं तस्य कफापहम्।
फलं तिदोषशमनं मूलं चास्य विरेचनम्॥ १९०॥
अध सगाचीनाम। (त्रमुसविश्रेषः)।—

स्गाची शतपुषा च स्गेर्वाहर्मगादनी। चित्रवन्नी बहुफला कपिलाची स्गेचणा ॥ १७८॥

<sup>\*</sup> प्ररादित पञ्चाभिधा दत्यर्धः।

# सूलकादिवर्गः।

[ 8年記]

चित्रा चित्रफला पथ्या विचित्रा सगिचिभिंटा।

मक्जा कुम्भसी देवी कट्फला लघुचिभिंटा।

सेन्दिनी च महादेवी बुधै: सा विंग्रतिर्मता: ॥ १७८ ॥
स्गाची कटुका तिक्ता पाकिऽस्ता वातनाग्रनी।

पित्तक्तत् पीनसहरा दीपनी क्चिक्तत्परा॥ १८०॥

(सं सिन्दिनी। कं बालुकमेक्के। गौ मधुफुटो।)

त्रय द्धिपुष्पीनामगुषाः।—

दिधपुष्पी खट्वाङ्गी खट्वा पर्योङ्गपादिका क्ष्मा।
खट्वापादी वंश्वा काकोली कोलपालिका नवधा॥ १८१॥
दिधपुष्पी कटुमधुरा शिश्वरा सन्तापपित्तदोषन्नी।
वातामयदोषकरी गुरुस्तथाऽरोचकन्नी च॥ १८२॥
( हिं कुहिरी। कं कूगरि, काकखोला। मं गोड़ीकृहिली।
गी विचिङ्गा, हो पा।)

अथ असिप्रिम्बीनामगुणाः।-

श्रिसिश्व खद्गशिको शिको, निस्तिंशशिक्विका।
स्पूर्लिशको महाशिको वहिक्किको सुशिक्विका॥ १८३॥
श्रिसिशको तु मधुरा कषाया श्रेषिपत्तिजित्।
व्रादीषापहन्त्री च शीतला क्चिदीपनी॥ १८४॥
(मं खर्डसम्बा, शोरश्रेतश्रावै। वं सेवे। गौ श्रेत शिम्।)

त्रथ कारवहीनामग्याः।—

करका कारविद्यी च चीरिपत्रः करिङ्गका। सूच्यविद्यी कर्गटफला पीतपुष्पाऽम्बुविज्ञका॥ १८५॥

## राजनिष्ठर्एः।

[ 8 6 8 ]

कारवित्ती सुतिक्ती स्था दीपनी कफवातिज्त्। अरोचकहरा चैव रक्तदीषहरी च सा॥ १८६॥ (मं लघुकारली। कं हागल। गौ कोट करला।)

अध वकीटकीनामग्याः।-

कर्कीटकी खादुफला मनोज्ञा च मनिखनी। बोधना बन्ध्यकर्कीटी देवी कर्ग्टफलाऽपि च ॥ १८०॥ कर्कीटकी कटूष्णा च तिक्ता विषविनाशनी। वातन्नो पित्तहृत् चैव दीपनी रुचिकारिणी॥ १८८॥ (मं काग्टोली, काकली। कं महुवागाल। गो कं क्रोल।)

त्रथ खादुतु(वि)स्विकानाम।—

श्रथ भवति मधुरिवस्वी मधुविस्वी खादुतु(वि)स्विका तुग्ही।
रक्तपत्ता रुचिरफला सोखाफला पीलुपर्णी च ॥ १८८॥
विस्वी तु मधुरा श्रीता पित्तम्बासकफापहा।
श्रस्टग्ज्वरहरा रस्या कासजिद् ग्टहविस्विका॥ १८०॥
(मं तोग्हुस्ती। कं सीहिरोडे। गौ कुन्हुक्ती।)

श्रव निष्पावीनाम।-

निष्पावी ग्रामजादि: स्थात् फिलनी नखपूर्विका।

मण्डपी फिलका शिम्बी ज्ञेया गुक्कुफला च सा।

विशालफिलका चैव निष्पाविश्विपिटा तथा॥ १८१॥

(मं रुडूवर्ण । कं तहवरे। हिं लोविया। गौ ववंटी।)

श्रव वृत्तनिष्पाविकानामः।—

श्रन्याऽङ्गुलीफला चैव नखनिष्याविका स्नृता।

वृत्तनिष्पाविका ग्राग्या नखपुच्छ फला ग्राः ॥ १८२ ॥ \*
निष्पावी द्वी प्रिच्छुभ्ती कषायी मध्री रसी।
कारु ग्रुडिकरी मध्यी दीपनी क्चिकारकी।
संग्राप्ति समवीर्यं स्यादीषच्छेष्ठं दितीयकम् ॥ १८३॥
(मं दोवर्णा चावीर्यंपाञ्च। कं एर डु ग्रवरिय गुण। गो छोट ग्रिम्।)

म्रघ वार्त्ताकीनाम।-

वार्ताकी काएह्रन्ताकी काए। स्वाहित काएए हिना स्वाहित का सम्वाहित का सम्वाहि

तां कुठिरेक्द । हिं भग्टा, वाङ्मया। गौ वेगुया।) त्राय हङ्गरिनाम। (त्रपुषविभेषः)।—

डङ्गरी डाङ्गरी चैव दीर्घेर्वास्य डङ्गरि: । डङ्गारी नागश्चराडी च गजदन्तफला सुनि: ॥ १८०॥ १ डङ्गरी ग्रीतला रुचा वातिपत्तास्त्रदोषजित् । ग्रीषद्वत्तर्पणी गौल्या जाडाहा सूत्ररोधनुत् ॥ १८८॥

<sup>\*</sup> श्राः पञ्चाह्नया इत्यथेः।

<sup>†</sup> मुनिः सप्ताच्चया दत्यर्थः।

## 😀 🧎 🧎 अध वालडाङ्गरिगुणाः।—

बालं डाङ्गरिकं फलं सुमधुरं शीतं च पित्तापहं तृष्णादाहिनवर्हणं च कचित्तत् सन्तर्पणं पुष्टिदम् । वीर्योनोषकरं बलप्रदमिदं आन्तिश्रमध्वंसनं पक्तं चेत्कुकृते तदेव मधुरं तृड्दाहरतं गुक् ॥ १८८ ॥

> ( मं डाङ्गर । कं डङ्गर । गो कं।क्(इ । ) अयः खर्नुजानाम । ( त्रपुसनिग्रेषः ) ।—

श्रय खर्बुजा मधुफला षड़े खा व्रत्तककेटी तिका।
तिक्तफला मधुपाका व्रत्तेविषय षण्मुखा नवधा ॥ २००॥
तिक्तं बाल्ये तदनु मधुरं किञ्चिदम्तं च पाके
निष्पकं चेत्तदस्तसमं तर्पणं पुष्टिदायि।
वृष्यं दाहश्रमविश्मनं मूत्रश्रद्धं विधत्ते
पित्तोन्मादापहरकफदं खर्बुजं वीर्थ्यकारि ॥ २०१॥
(मं षड्भुजका कड़ो। कं षड्भुजमोन्ते। गो खर्मुजा।)

## त्रय वर्कटो।—

श्रय कर्कटी कटुदला क्र्यायनिका च पीनसा मूत्रफला।
तपुसी च इस्तिपणी लोमश्रकण्टा च मूत्रला नवाभिधा॥२०२॥
कर्कटी मधुरा शीता लिक्तिका कफिपत्तिजित्।
रक्तदोषकरा पक्ता मूत्ररोधार्त्तिनाश्रनी॥ २०३॥

किञ्च।

मूत्रावरोधश्यमनं बहुमूत्रकारि क्ष्यायम् । क्ष्यायम् विनिहन्ति पित्तम् ।

वान्ति श्रमप्तवहुदाहिनवारि क्यं श्रेषापहं लघु च कर्किटिकाफलं स्थात्॥ २०४॥ (मं काकि। कं मूलसीन्ते। ते नक्कदोस। हिं कंकिड़ि। उत्पक्तिकंकिड़ी। गी कंकिड़।)

त्रघ लपुसीनाम्।—

तपुसी पीतपुष्पी कार्टालुस्तपुसकर्कटी ।।

बहुपाला कीश्रपाला सा तुन्दिलपाला सुनि: ॥ २०५ ॥ \*

स्थात् तपुसीपालं रुचं सधुरं शिशिरं गुरु ।

स्त्रमिपत्तिवदाहार्त्ति-वान्तिहृद्वहुमूत्रदम् ॥ २०६ ॥

(मं तौसीकर्कटो । कं तसेंथकायि । तें दोजकद्त्र । उत्॰ कार्ट
श्रारि, काकुड़ि । तां महिवहरि । हिं खोरे,

वालमखोरा । गौ श्रश्रा ।)

अय एवं स्नाम । -

एर्वाक्: वर्कटी प्रोक्ता व्यालपता च लोमणा।
स्थूला तोयपता चैव इस्तिदन्तपत्ता मृनि: ॥ २००॥ गं
एर्वाक्तं पित्तइरं सुश्रीतलं
मृतामयन्नं मधुरं क्चिप्रदम्।
सन्तापमूक्कीऽपहरं सुटिप्तदं
वातप्रकोपाय घनं तु सेवितम्॥ २०८॥
(मं मालाचेम्बालुक। कं एडसीन्ते। हिं फुट। गी फुटी।)

सुनिः सप्ताखा इत्यर्धः।

<sup>†</sup> मुनिः सप्तसंख्यका दत्यथैः ।

## राजनिष्ठण्टुः।

#### अथ बालुकोनामगुषाः।-

अय बालुकी बहुफला स्निम्धफला च्चिककंटी चेत्रकहा।

मधुरफला शारिदका चुद्रेर्वाक्य पीतपुष्पिका॥२०८॥

बालुकी मधुरा शीताऽऽधानहृच समापहा।

पित्तास्त्रशमनी क्चा कुक्ते कासपीनसी॥२१०॥

बालुकानि च सर्वाणि दुर्जराणि गुरूणि च।

मन्दानलं प्रकुर्वन्ति वातरक्षहराणि च॥२११॥

स्थादु बालुकी शरिद वर्षजदोषकर्वी

हेमन्तजा तु खलु पित्तहरा च क्चा।

चिप्रं करोति खलु पीनसमर्प्तपक्षा

पक्षा त्वतीव मधुरा कफकारिखी च॥२१२॥

(मं वालुकी। कं क्येयसीन्ते। गी मूं इक्तंकिड़ा)

त्रय चीनकर्कटोनाम।-

चीनकर्कटिका ज्ञेया वीजकर्कटिका तथा।
सदीर्घा राजिलफला बाणै: कुलककर्कटी ॥ २१३ ॥ क चीनकर्कटिका रुचा शिशिरा पित्तमाश्रनी। मधुरा त्विप्तदा हृद्या दाइश्रोषापद्वारिणी ॥ २१४ ॥ (मं पडबलासारिखेलालु। कं पडवडसोन्ते। गो चीना कंकिड़।

चित्रकूटदेशे प्रसिद्धा।)

अथ चिभिटानाम।-

स्यात् चिभिटा सुचित्रा चित्रफला चेत्रचिभिटा पाण्डुफला।

• वाणै: पञ्चभि. नामभिरूपलचिता द्रव्यर्धः।

# मूलकादिवर्गः।

[ 8 6 2 ]

पथ्या च रोचनफला चिभिटिका कर्कटिका ग्रहसंख्या ॥२१५॥\*
बाल्ये तिक्ता चिभिटा किश्विदस्ता
गौत्योपेता दीपनी सा च पाके।
ग्रुष्का रूचा श्लेभवातारुचिन्नी
जाडान्नी सा रोचनी दीपनी च ॥ २१६॥
(भं वेलसेन्या। कं ग्ररमेक्ने। हिं सुकुर। गौ गोसुका)

अय प्रप्रार्डुलीनाम।-

प्रशाण्डुली बहुफला तण्डुली चेत्रसभवा।

चुद्रान्ता लोमप्रफला घूम्बद्धत्तफला च सा ॥ २१०॥

प्रशाण्डुली तित्तकटुश्व कोमला

कटुन्तयुत्ता जरठा कफापहा।

पाके तु सान्ता मध्रा विदाहक्कत्

कफश्च ग्रुष्का रुचिक्कच दींपनी॥ २१८॥

(मं ग्राम्मान्दुलि। कं निनिके। गौ तिल्कांकुड़ा)

त्रय कुडुचीनाम।—

कुडुड्डी श्रीफिलका प्रतिपत्रफला च सा।

ग्रभ्वती कारवी चैव प्रोक्ता बहुफला तथा ॥ २१८ ॥

चुद्रकारिक प्रोक्ता ज्ञेया कन्दलता तथा।

चुद्रादिकारविक्ती च प्रोक्ता सा च नवाह्वया॥ २२०॥

कुडुड्डि कटुक्खा तिक्ता किंचकारिणी च दीपनदा।

रक्तानिलदोषकरी पथ्याऽपि च सा फले प्रोक्ता॥ २२१॥

<sup>\*</sup> ग्रहसंख्या नवाभिधा दत्यर्थः।

कारलीकन्दमशीमं मलरोधविशोधनम्। योनिनिर्गतदोषष्नं गर्भस्रावविषापहम् ॥ २२२ ॥ (मं अडुहुद्यो। यं कारसे। गौ कोट उच्छे।) द्ति मूल-कन्द-फल-पत्र-सुन्दर-क्रमनामतद्गुणनिरूपणोल्वणम्। अवलोक्य वर्गमिममामयोचिता-मगदप्रयुक्तिमवबुध्यतां बुधः॥ २२३॥ मन्दाग्निमरोचिकनं येऽपि शिलामाशयन्ति निजशक्त्या। तेषां गाकानामयमात्रयसूः गाकवर्गे द्ति कथितः॥ २२४॥ लबान्योऽन्यसहायवैद्यक्तुलाक्कृङ्काकलङ्कापनुत् दस्नैक्यावतरोऽयमित्यविरतं सन्तः प्रशंसन्ति यम्। तस्य श्रीतृहरी: क्षतावविसतो यो म्लकादिमैहान् वर्गीऽसावभिधानकोशपरिषच्चूड़ामणौ सप्तमः॥ २२५॥ द्ति ग्रीनरहरिपण्डितविर्चित राजनिष्यः मूलकादिनाम सप्तमो वर्गः।

# अय शालाल्यादिवगैः।

शालाली तस्य निर्यासी रोहितश्रैकवीरकः।
पारिभद्रोऽय खदिरस्त्रिधाऽरिः खादिरः स्मृतः॥१॥
शमीदयं च बर्बुर-दितयञ्चाऽरिमेदकः।
पक्षाग्लेङ्गदिका प्रोक्ता निष्यती च सुही दिधा॥२॥

कार्यारिका विधेरण्डो घोण्टा वन्नीकरञ्जकः ।
कारिका सदनस्त्रेधा विल्वान्तरस्तरिका ॥ ३ ॥
श्रोवन्नी कुञ्जिका चैव रामकाण्डस्त्रथाऽपरः ।
सयावनाली दिश्ररी मुञ्जकाशी दिधा कुश्रः ॥ ४ ॥
वल्वजा कुढणी चाथ नन्नी दूर्वा चतुर्विधा ।
कुन्द्रो भूढणो ज्ञेय उचल द्रज्जदर्भकः ॥ ५ ॥
गोमूती शिल्पी निश्रेणी गर्मीटी मज्जरास्तथा ।
गिरिभूवंशपत्री च मन्यानः पन्निवाह्नकः ॥ ६ ॥
पटुढणश्रको ज्ञेयः ति-पण्डान्धः ति-गुण्डकः ।
कसेरुश्रणिका प्रोक्ता गुण्डाला श्रूलिका तथा ।
परिपेलं हिज्जुलं च सेवालं च श्रराङ्गधा ॥ ७ ॥

श्रय शास्त्र जीना नगुगाः।—
शास्त्र जिनि स्थात् पिक्ति ते ते पुष्पकः।
सुक्षुटी तूलत्र स्थापि स्थात् पिक्ति ते ते पुष्पकः।
स्कारि त्रियपुष्पो बहुनीर्यो यमद्रमः।
दीर्घद्रमः स्थूलफली दीर्घायस्ति शिर्मिर्मितः॥८॥
शास्त्र जी पिक्ति लो तथो बस्यो मधुरशोतलः।
काषायश्च लघुः सिन्धः श्रमश्चेषितिवर्धनः॥ १०॥
तद्रसस्त दृषो ग्राही कषायः कफनाश्यनः।
पुष्पं तद्व निर्दिष्टं फलं तस्य तथाविधम्॥ ११॥
(सं श्राम्बरि। कं यवलवद्मर। तां पुला। छत्॰ वोन्रो।
हिं श्रम्बल, श्रेम्रर। गो श्रिमुलगाहः।)

<sup>\*</sup> तिथिनित्यनेन पचदम संख्या बोडव्या।

## राजनिष्ठग्टुः।

#### अध मोचरसनाम।

मोचरसो मोचलु मोचस्नावय मोचनिर्यासः।
पिच्छिलसारः सुरसः शाल्मलिवेष्टय मोचसारय ॥ १२ ॥
मोचरसलु क्रषायः कफवातहरो रसायनो योगात्।
बलपुष्टिवर्णवीर्य्यप्रज्ञाऽऽयुर्देष्टसिडिदो याही ॥ १३ ॥
(मं सावरिचाड़ोक्क । गौ शिमुलेर म्राटा, मोपरस।)

म्रथ रोहीतकनाम। ( प्रात्मलीविश्रेष:।)—

रोहीतको रोहितकश्व रोहितः कुशालालिदी। इमपुष्पसंज्ञकः । सदाप्रसूनः स च कूटशालालिविरोचनः शालालिको नवाह्वयः ॥१४

सप्ताहः खेतरोहितः सितपुष्यः सिताह्नयः।

शिताङः श्रुक्तरोहितो लच्मीवान् जनवह्नभः॥ १५॥
रोहितको कटुस्निग्धो कषायो च सुशीतलो।

क्रिमिदोषत्रणश्लीह-रक्तनितामयापही॥ १६॥

(मं रोनिरोहिडे। कं यरष्मलुमृत्तल्। तें सुलुमोहगचेटु।

गौ रोढा, रयना, कड़ार। रोहिणीति लोके।)

#### अध एक शेरनाम।--

एकवोरो महावीरः सक्तद्वीरः स्वीरकः । एकादिवीरपर्यायैवीर्येति षड़ाह्वयः ॥ १७ ॥ एकवीरो भवेचोणः कट्कस्तोदवातनुत् । रुप्रसीकटिपृष्ठादि-गूलपचाभिघातनुत् ॥ १८ ॥

(मं एकवीर। कं गर्डुबिके।)

#### अघ पारिमद्रनाम।—

श्रथ भवति पारिभद्रो मन्दारः पारिजातको निस्वतरः।
रत्नाकुसुमः क्रिमिन्नो बहुपुष्पो रत्नकेसरी वसवः॥ १८॥ \*
पारिभद्रः कट्रणः स्थात् कफवातिनक्तन्तनः।
श्ररीचकहरः पथ्यो दीपनसापि कीर्त्तितः॥ २०॥
(मं पाङ्गरा। कं हरिवाल। दां पञ्जीर। तें मोहगु, वारिदेवेहु।
तां सुराक। हिं फर्इद। गो पाल्देनादार।)

त्रय खदिरनाम।-

खदिरो बालपत्रश्च खाद्यः पत्नी चिती चमा।
सुग्रत्यो वक्रकाण्यश्च यज्ञाङ्गो दन्तधावनः॥ २१॥
गायत्नी जिह्मग्रत्यश्च काण्टी सारहुमस्तथा।
कुष्ठारिर्वेडुसारश्च मिध्यः सप्तद्याह्नयः॥ २२॥
खदिरस्तु रसे तिक्तः श्रीतः पित्तकफापहः।
पाचनः कुष्ठकासास्त-शोफकण्डूत्रणापहः॥ २३॥

(ते चंड्चेष्टु। उत्॰ खैर। गौ,खयरगाछ।)

अध श्वेतसारनाम।-

खदिरः खेतसारोऽन्यः कार्मुकः कुञ्जकण्टकः। सोमसारो नेमिट्यः सोमवल्कः पियद्गमः॥ २४॥ खेतस्तु खदिरस्तिकः कषायः कट्रण्यकः। कण्डूतिभूतकुष्ठमः कफवातव्रणापनः॥ २५॥ (मं पाग्रह्या खेरु। कं बिलियतर्ति। गौ भारा खयेर।)

<sup>\*</sup> वसवः,—प्रष्ठसङ्घाका द्रव्यर्थः।

### राजनिघय्टुः।

#### श्रय रक्तखदिरनाम।-

स रत्तो रत्तसारश्च सुसारस्ताम्बनग्टनः।
स प्रोत्तो बहुशस्यश्च याज्ञिनः कुष्ठतोदनः।
यूपद्रमोऽस्वखदिरोऽपरुश्च दशधा स्मृतः॥ २६॥
कटूष्णो रत्तखदिरः कषायो गुरुतित्तनः।
श्रामवातास्रवातन्नो व्रणभूतज्वरापहः॥ २०॥

( मं रक्तखदिर। कं केम्पिनखैर।)

अध विट्खदिरनाम।-

विट्खदिरः काम्भोजी कालस्त्रस्य गोरटो मर्जः।

पत्रतर्र्वद्वसारः संसारः खादिरो ग्रहैर्मेहासारः॥ २८॥ \*

विट्खदिरः कटुरुणस्तिको रक्तव्रणोस्टरोषहरः।

कण्ड्रितिवषविसर्प-ज्वरक्षष्ठोन्सादभूतन्नः॥ २८॥

(मं चुद्रखदिर। कं किरुखैर। गौ गुप्य वाव्ला।)

अध अरिनाम।-

श्रिरि: सन्दानिका दाला ज्ञेया खदिरपित्रका। श्रिरि: कषायकटुका तिक्ता रक्तार्त्तिपत्तनुत्॥ ३०॥

(मं ऋारि। वं सीगुरि।)

त्रथ खादिरसारनाम।-

खादिर: खदिरोज्जूतस्तलारो रङ्गदः सृत:। च्चिय: खदिरसारय तथा रङ्गः षड़ाच्चयः॥ ३१॥

\* ग्रहैनैविभिरित्यर्थः स्मृतः इति पूर्वेणान्वयः।

## शालास्यादिवर्गः।

[ १७५]

कटुकः खादिरः सारस्तिक्तोश्यः कप्मवातहृत्। व्रणकग्ठामयन्नश्च रुचिलहीपनः परः॥ ३२॥ (मं काष्य। गौ खयर।)

अध श्रमीनाम।-

श्रमी शान्ता तुङ्गा कचिरपुफला केशसथनी
शिवेशा नीर्लच्मीस्तपनतनुनष्टा श्रमकरी। \*
इतिर्गस्था मध्या दुरितश्रमनी शङ्कुफलिका
सुभद्रा सङ्क्ष्या सुरिभरथ शापापश्रमनी॥ ३३॥
भद्राऽय शङ्करी ज्ञेया केशहन्ती शिवाफला।
सुपत्रा सुखदा चैव पञ्चविंशाभिधा मता॥ ३४॥
श्रमी रूचा कषाया च रक्तिपत्तातिसारजित्।
तत्फलं तु शुक् स्वादु तिक्तीश्यं केशनाश्रनम्॥ ३५॥
(मं श्रमी। कं बनि। उत्० श्रमी। हिं किक्रर। गी श्रादगाछ।)

त्रध प्रान्तानाम । (प्रमीविश्रेषः )।— दितीया तु श्रमी श्रान्ता श्रुभा भद्राऽपराजिता । जया च विजया चैव पूर्वीक्तगुणसंयुता ॥ ३६॥ (मं खैरी। कं कावित्र।)

त्रघ वर्बुरनाम।-

बर्बुरो युगलाचय कण्टालुस्तीच्याकण्टकः।
गोगृङ्गः पंतिन्वीजय दीर्घकण्टः कपान्तकः।
दृद्वीजः खासभच्यो ज्ञेयसेति दणाह्नयः॥ ३०॥

<sup>\*</sup> पञ्चिष्मसंस्थारच्याय भिवा ईशा च इत्येवं पदिवक्तेदः कार्यः।

## राजनिष्युः।

बर्ब्रस्तु कंषायोषाः कफकासामयापहः। श्रामरत्तातिसारप्नः पित्तदाहार्त्तिनाश्रनः॥ ३८॥ (मं बाबुल। गौ वाव्लागास्र।)

अध जालवर्षुरनाम !-

जालवर्षुरकस्वन्यम्कताकः स्यूलकर्यः । स्त्रम्याखस्तन्कायो रन्युकर्यः षड़ाह्वयः ॥ ३८ ॥ जालवर्षुरको रूचो वातामयविनामकत् । पित्तकच कषायोष्णः कफदृहाहकारकः ॥ ४०॥ (मं पुलई । कं जालो । )

त्रध अरिमेदनाम।—

द्वितिदेऽिरिमेद्य गोधास्त्रन्थोऽिरिमेदकः । ग्रिहिमेदोऽिहमार्य पूर्तिमेदोऽिहमेदकः ॥ ४१ ॥ ग्रिरिमेदः कषायोश्यस्तिको भूतिवनाश्यकः । श्रोफातिसारकासन्नो विषवीसपनाश्यनः ॥ ४२ ॥ (मंगास्वियाह्विक। कं कर्यवैन्तु। हिंगन्वानुन्न।)

श्रय पकार्द्धनाम।—

पक्षाण्डः पञ्चकत् पञ्च-वर्षनः पञ्चरचकः ।

दृष्ट्यञ्जनिष्धी गस्तः कटुः जीर्णञ्चरापदः ॥ ४३ ॥
(मं पखीड़। ते गङ्गरयज्ञिष्व। तां पोरिश्ररावि । हिं पाकड़ि,
पखर, गजदन्तमहोरा। गो पाकुड़गाक्क, गान्धीमाट।)

त्रय दङ्गुदौनाम।—

द्रङ्गदी हिङ्गुपत्रस विषकग्छोऽनिलान्तकः। गौरस्कृतः सुपत्रस शूलारिस्तापसद्रमः॥ ४४॥

## शाल्यखादिवरी:।

[ 009 ]

तीन्द्याकण्डस्तैलफलः पूर्तिगन्धो विगन्धकः । च्रेयः क्रोष्टुफलस्वैव वङ्गोन्दुगियताह्वयः ॥ ४५ ॥ \* दङ्गदो मदगन्धः स्यात् कटूष्या फेनिला लघः । रसायनी हन्ति जन्तु-वातामयकफ्रव्रणान् ॥ ४६ ॥ (मं हिङ्ला। गो जियापुता, इङ्गोट।

अध निष्यतीनाम।-

निष्पत्रकः करोरश्च करीरग्रन्थिलस्तथा।
क्रकरो गूढ्पत्रश्च करकस्तीन्त्यक्रयद्यः॥ ४०॥
करीरमाधानकरं क्रषायं क्रद्रश्यमेतत् क्रफकारि सूरि।
खासानिलारोचकसर्वभूल-विच्छदिखर्जूव्रयदोषहारि॥ ४८॥

(मं नेपतो। कं निष्पतिगे।।)

अय सुद्दीदयनाम।-

सुही सुधा महावृत्तः चीरी निस्तिंगपित्तता।
गाखाकण्यस्य गुण्डाख्यः सेहुण्डो वज्रकण्यकः॥ ४८॥
बहुगाखो वज्रवृत्तो वातारिः चीरकाण्डकः।
मद्रो व्याप्रनखसैव नेतारिर्दण्डवृत्त्वकः।
समन्तदुग्धो गण्डोरो ज्ञेयः सुक्चेति विंगतिः॥ ५०॥
सुहो चोष्णा पित्तदाह-कुष्ठवातप्रमेहनुत्।
चौरं वातविष्ठाधान-गुल्मोदरहरं परम्॥ ५१॥
सुही चान्या त्रिधारा स्थात्तिस्रो धाराखु यत्र सा।

विद्वास्तिः इन्दुरेकः, तेन स्रयोदश्रसंख्या बोद्ययाः।
 रा—१२

# [ 209]

# राजनिष्युः ।

पूर्वीक्तगुणवत्येषा विशेषाष्ट्रसिसिदित ॥ ५२ ॥
(सं तिषारा । वम् ॰ निविडिङ्ग । तें चेसुड्चेहु । डिंड्योइर,
जाकुनिया । गो मनसागाक्र, न्याड़ासिजु,
तेकांटा सिजु । )

#### त्रय कम्यारीनाम।-

कत्यारी कथरी कत्या दुर्बर्घा तीन्ह्याकरहका।
तीन्ह्यागन्धा क्रागन्धा दुष्पृविशाऽष्टकाभिधा ॥ ५३॥
कत्यारी कटुतिक्तीश्या कफवातिकक्तनी।
शोफन्नी दीपनी कच्या रक्तग्रन्थिकजापहा॥ ५४॥
(मं कात्यारी। कं कान्तक। की फयीनिवड्ड़। गो फयामन्सा।)

## त्रय श्वेतरक्तैरखनामगुषाः।—

खेतैरण्डः सितैरण्डिश्वतो गन्धर्वेष्टस्तकः ।

प्रामण्डस्तरणः ग्रुक्तो वातारिदीर्घेदण्डकः ।

पश्चाङ्गुलो वर्षमानो रुवको द्वादणाद्वयः ॥ ५५ ॥

रक्तैरण्डोऽपरो व्याघ्रो प्रस्तिकणी रुवस्तया ।

उरुवको नागकणश्चञ्चरुत्तानपत्रकः ॥ ५६ ॥

करपणी याचनकः सिग्धो व्याघदलस्तया ।

तल्तरश्चित्रवीजश्च द्वस्तरण्डस्तिपञ्चधा ॥ ५० ॥

खेतैरण्डः सकट्करसस्तिक उण्णः कफार्त्तिध्वंसं धत्ते ज्वरप्टरमरुक्तासप्टारो रसार्षः ।

रहैरण्डः श्वययुपचनः वान्तिरक्तार्त्तिपाण्डु-

भ्वान्तिम्बासज्वरकफहरोऽरोचकन्नो लघुस्र ॥ ५८॥ (मंदोखि एरण्ड। कं एरडुत्राग्डलके। तें त्रामिदपुचेट्टु। हिं एरण्ड, रेढ़ो। गो भेरेन्द्रागाछ।)

अघ खूलैरखनाम।-

स्यू लैरण्डो महैरण्डो महापञ्चाङ्गु लादिक:। स्यू लैरण्डो गुणाच्य: स्याद्रसवीय्येविपत्तिषु॥ ५८॥ (मं घोरएरण्डु। गौ वड़ मेरेन्द्रागाछ।)

अध घोग्टानाम।—

घोष्टा बदरिका घोटी गोलिका प्रवृक्षण्टकः।
कानटी च तुरङ्गी च तुरगाह्वाऽष्टधा स्मृता ॥ ६० ॥
घोटिका कटकोष्णा च सधुरा वातनाप्रनी।
प्रणक्षण्ड्रतिकुष्ठास्मग्-दोषष्वययुद्धारिणी ॥ ६१ ॥
(सं घोण्टी। कं गोद्य। गी प्रयाकुनगह्य।)

श्रथ लताकरञ्जनाम।—

सताकरक्तो दुःस्पर्धी वीरास्यी वष्ट्रवीरकः । धनदाक्तः कर्यटफ्लः कुबेराक्त्य सप्तधा ॥ ६२ ॥ सताकरक्तपत्नं तु कटूणां कफवातनुत् । तदीजं दीपनं पष्यं भूलगुल्मव्ययापहम् ॥ ६३ ॥ (मं वम्॰ सागरगोटा । कं गहुगु । गौ सता करक्षा । )

श्रथ कारीनाम।-

कारी तु कारिका कार्या गिरिजा कटुपतिका। तत्रैका कण्टकारी स्थादन्या लाकर्षकारिका॥ ६४॥

# [ 620]

## राजनिष्यः!

कारी काषायमधुरा दिविधा पित्तनाश्चनी। दीपनी ग्राहिणी रूचा कराउशोधकरी गुरु: | ६५ | (मं करी। कं कारे।)

त्रथ मद्ननाम।-

मदनः प्रत्यतिङ्ग्यः पिण्डो धाराप्रत्या ।
तरटः करहाट्य राष्ट्रः पिण्डातकः स्मृतः ॥ ६६ ॥
कण्टालो विषमृष्टिय कर्दनो विषपुष्पकः ।
घण्टालो मादनो हर्षो घण्टाख्यो वस्तिरोधनः ।
ग्रियप्तलो गोलप्पलो मदनाह्नय विंग्रतिः ॥ ६० ॥
मदनः कटुतिङ्गोष्णः कप्पवातव्रणापहः ।
ग्रीप्तदोषापह्यव वसने च प्रशस्यते ॥ ६८ ॥
(मं भेणाइल । कं गेल, बोनगरे, रणय । हिं मदनप्रल, करहर ।
ते वसन्तकडिमिचेट्ट, मण्डिचेट्ट, सङ्गचेट्ट, उन्मेत्तचेट्ट ।
उत्० पातर । ता० मड़कक्रव । नेपा० मैदल ।
पञ्चा० मिण्डकोड्ट । गो मयनागाकः ।)

श्रय वाराइनाम। (मदनमेद:)।-

वाराहोऽन्यः क्षणवर्णी महापिग्छीतको महान्।
स्निम्धपिग्छीतकश्वान्थः स्थूलहचफलस्तथा ॥ ६८ ॥
श्रन्थी च मदनी श्रेष्ठी कटुतिक्तरसान्विती।
क्षदेनी कफद्धद्रोग-पक्तामाग्रयशोधनी॥ ७०॥
(मंधोरनेखाइण दोणि। कं दोडुबोनगर एर्छु।
गो काल मयनागाछ।)

## श्राल्यादिवर्गः।

[ १६१]

अध विखान्तरनाम। -- \*

विल्वान्तरसीरवृत्तः स्वधातुम्मसंत्रतः ।
दीर्घमूली वीरवृत्तः कच्छारिस षड़ाह्नयः ॥ ७१ ॥
विल्वान्तरः कटूण्यस कच्छन्नः सन्धिमूलनृत् ।
विज्ञिदीप्तिकरः पथ्यो वातामयविनामनः ॥ ७२ ॥
(मं वेलतरः। नं भी उउ। ते वेग्रुत्त्वेदः ।)

श्रय तरटीनाम।-

तरटी तारटी तीव्रा खर्बुरा रत्नवीजका।
तरटी तित्रमधुरा गुरुर्बेच्या कफापद्वा॥ ७३॥
(मं तरि । कं रेडग्डे। श्रीनापुराही खनामख्यातरत्नवीजकगण्डमवर्वे।)

अय ग्रीवहीनामं।-

श्रीवा श्रीववा च काएवा च श्रीतला।
उन्ता कट्फलाऽख्वा दुरारी हा च साऽष्ट्रधा॥ ७४ |
श्रीवा कटुकाऽन्ता च वातश्रीफकफापहा।
तत्फलं तैललेपन्नमत्यन्तं रुचिकत् परम्॥ ७५ ॥
(मं श्रीवा । कं सीगेयवा ।)

\* तस्य तिष्ठवित्रोषे, उग्रीराख्यवीरतरी । जाङ्कलदेशे नर्भदा-तटे चर्मयवतीनदीसमीपे चास्योत्पत्तिः । तह्यचयसुच्यते,—

"विब्बान्तरो जगित वीरतरः प्रसिद्धः श्वेतासितार्यविबोह्तिपीतपृष्यः। स्याज्यातितुत्यक्रसुमः श्रामसूद्धपत्रः स्यात् क्राय्टकी विजलदेशज एष वृत्तः॥" इति। [ १८२ ]

## राजनिघएः।

श्रथ निकुञ्जिकास्त्रानाम।—

भन्या निकु ज्ञिकाम्बाख्या कु ज्ञिका कु ज्ञवहरी। निकु ज्ञिका बुधेरता श्रीवहीसदृशी गुणैः॥ ७६॥ (मं निकु ज्ञिके। वं निरोयवही।)

( इति काएकव्रदाः।)

त्रथ रामकाण्डनाम।—
त्रपर्वदण्डो दीर्घय रामवाणो तृपप्रियः।
रामकाण्डो रामग्ररो रामस्येषुय सप्तथा॥ ७०॥
रामकाण्डजमूलं स्थादीषदुण्णं क्चिप्रदम्।
रसे चाम्त्रकषायय पित्तकत् कफवातहृत्॥ ७८॥
(मं रामग्रप्। कं सरगोल्। हिं रामग्रर, ग्ररपत।

मालवे प्रसिद्धः।)

श्रध यावनालनाम ।—
यावनालोऽथ नदीजो दृढ़त्वग्वारिसम्भवः ।
यावनालनिभश्चैव खरपतः षड़ाह्नयः ॥ ७८ ॥
यावनालगरमूलमोषन्मधुरक्चकम् ।
श्रीतं पित्तत्वषापन्नं पश्चनामबलप्रदम् ॥ ८० ॥
(मं जोग्होलो । कं गलगु । ते मक्का, जोबलु । वम् ॰ मकद, वुट, वजा । ता मक्कशोलम् । हिं सुट्टा, स्क्का ।
गौ जनार, जुयारा । )

त्रय द्रजुरनामं।— प्रारो बाण द्रषु: कार्ग्ड उत्कट: सायक: जुर:। द्रजुर: जुरिकापत्रो विशिखस द्रशामिध:॥ ८१॥

## शालालादिवर्गः ।

[ 825]

स्वोऽन्य: स्थूलगरो महागर: स्थूलसायकसुखाख्य:।

इन्नरक: न्तरपत्नो बहुमूलो दोर्घमूलको सुनिभि:॥ ८२॥

गरदयं स्थान्सधुरं सुतिक्तं कोश्यां कपभ्यान्तिमदापहारि।

बलच्च वीर्थ्यच्च करोति नित्यं निषेवितं वातकरच्च किच्चित्॥८३॥

( मं प्ररन। कं अम्बलिनगरी। तें रेह्नु, काकिवेटुरु, गुन्द्र। पञ्जा॰ कंड़। हिं कंड़ा। गी प्ररगास्त्र। मालवे प्रसिद्धः।)

#### त्रय सुझनाम ।—

मुक्तो मौक्तीत्वणाख्यः स्याद् ब्रह्मस्यस्तेजनाह्नयः।
वानीरजो मुक्तनकः गारी दर्भाह्नयम् सः॥ ८४॥
दूरमूलो दृदृत्वणो दृदृमूलो बहुप्रजः।
रक्तनः गतुभङ्गम्य स्याचतुर्दृग्यसंज्ञकः॥ ८५॥
सुक्तस्य मधुरः ग्रीतः कफपित्तजदोषजित्रः।
यहरचासु दीचासु पावनो भूतनाग्रनः॥ ८६॥
(मं, मं, मुझत्यः। ते सुझगिंड, श्रीनस्मुलिङ्ग। गौ मुज।
भागीरथोतोरे प्रसिदः।)

#### त्रय काश्रनाम।--

काशः काण्डेचुरिच्हारिः काकेचुर्वायसेचुकः । इच्छरसेचुकाण्डस गारदः सितपुष्पकः ॥ ८०॥ नादेयो दर्भपतस लेखनः काण्ड-काण्डकौ । कण्डालङ्कारकसैव ज्ञेयः पश्चदशाह्नयः ॥ ८८॥ कागस शिशिरो गौत्थो रुचिक्कत् पित्तदाइनुत् ।

<sup>\*</sup> सुनिभिः सप्तिभिनामिस्यलचित दृष्यर्धः।

तर्पणो बलक्कदुवृष्य श्रामग्रोषच्यापहः॥ ८८॥ (मं काउंस्। कं काजल्। तें रेल्। कीं कसाड़। हिं कास। गौ केंग्रे चास।)

अध अधिरीनाम। (काम्रमेदः)।—
अन्धीऽभिरी मिमिर्गय्डा अम्बाली नीरजः भरः।
मिमिर्मधुरभीतः स्थात् पित्तदाच्चयापचः॥ ८०॥
(मं लाद्वानकार्जसः। कं किरियकागछः।)

त्रथ सितदर्भनान। (क्रमनेदः)।—
सितदर्भी इस्वकुस्थी पूती यित्तयपत्रकः।
वन्नो ब्रह्मपवित्रश्व तीन्त्यो यत्तस्य सूषणः।
स्वीमुखः पुष्यत्वणो विद्धः पूतत्वणो हिषट्॥ ८१॥
दर्भसूलं हिमं रुचं मधुरं पित्तनामनम्।
रत्तान्वरत्वषाखास-कामलादोषभोषक्कत्॥ ८२॥
(मं पाखरी-कुम्रा। वं वित्वयबुदक्षित्।)

श्रय इव्हिम्नाम।-

कुशोऽन्यः शरपत्रम हरिद्गर्भः पृथुक्कृदः । शारो च रूचदर्भम दोर्घपतः पित्रतः ॥ ८३ ॥ दभौँ दौ च गुणे तुल्यौ तथाऽपि च सितोऽधिकः । यदि खेतकुशाभावस्वपरं योजयेत् भिषक् ॥ ८४ ॥ ( मं कुचदर्म् ; जहाकुश्चि । चिं दम् । गौ कुश्च । )

अय बलजानाम।—

बल्बजा दृढ़पत्नी च त्रणिचुस्तृणबल्बजा। सौन्नीपता दृढ़त्वणा पानीयाम्बा दृढ़चुरा॥ ८५॥ बल्बजा सधुरा श्रीता पित्तदाहृ हषापहा।
वातप्रकोपणी रुचा कर्ष्कशुडिकरी परा॥ ८६॥
(मं, वम्॰ मोलु। कं मोदे। गौ उलु।)
अध कुतृश्वाम।—

कुढणं कत्तृणं भूतिर्भूतिकं रोहिषं ढणम् । श्यामकं ध्यामकं पूर्तिर्भुद्गलं दवदम्धकम् ॥ ८० ॥ कुढणं दग्रनामाद्यं कटुतिक्तकफापहम् । ग्रस्त्रप्रस्थादिदोषष्टं बालग्रहविनाग्रनम् ॥ ८८ ॥

(मं लाचानुरोचिस्। कं किरुगझिषा। तें कामंचिगिंडड, तूटिकूर। चिं सोचिया। गौरामकर्पूर।)

अध दोई री हिषकनान । (कुत्यामेदः:) ।-

अन्यद्रोचिषकं दीर्घं दृढ़काण्डो दृढ़क्छदम्। द्राधिष्ठं दीर्घनालय तिक्तसारय कुल्तितम्॥ ८८॥ दीर्घरोचिषकं तिक्तं कटूण्यं कफवातजित्। भूतग्रहृतिषप्तय व्रणचतिरोपणम्॥॥ १००॥

(मं वाटुरोहिस्। वं हिरियगञ्जिणि । हिं रोहिस। गो गन्धत्या।)

त्रय नलनाम।-

नालो नड़ो नलश्वेव कुच्चिरन्थोऽय कीचकः। वंशान्तरश्च धमनः शून्य मध्यो विभीषणः॥ १०१॥ किट्रान्तो सटुपत्रश्च रन्थपत्रो सटुच्छ्दः। नालवंशः पोटगल इत्यस्याह्वास्त्रिपञ्चधा॥ १०२॥

## [ १८६ ]

## राजनिघण्टुः।

नतः श्रीतकषायस मधुरो रुचिकारकः।
रक्तपित्तप्रश्मनो दीपनो वीर्थवृद्धिदः॥ १०३॥
(मं देवनत्नु। कं देवनात्नु। ते किक्वेश्वर्गाद्धः। गौ नलखाग्द्रा।)

श्रय महानलनाम ! (नलभेदः।)।—

श्रन्थो महानलो वन्थो देवनलो नलोत्तमः। स्थूलनालः स्थ्रलदण्डः सुरनालः सुरहुमः॥ १०४॥ देवनालोऽतिमधुरो तृष्य द्वेषलाषायकः। नलः स्यादधिको वीर्य्ये शस्त्रते रसकर्भणि॥ १०५॥ (मं थोर्यदेवनलु। कं हिरियदेवनालु। हिं नकठ।)

त्रय नौलटूर्वानाम।-

स्यात्रीलदूर्वा हरिता च शास्त्रवी श्यामा च शान्ता श्रतपर्विकाऽस्रता। पूता श्रतग्रस्थिरनुश्यवित्तका श्रिवा श्रिवेष्टाऽपि च मङ्गला जया॥ १०६॥

सुभगा भूतहन्त्री च यतमूला महीषधी।
अस्ता विजया गौरी यान्ता स्थादेकविंयति: ॥ १००॥
नीलदूर्वा तु मधुरा तिक्ता शिशिररोचनी।
रक्तपित्तातिसारघी कफवातज्वरापहा॥ १०८॥
(मं नौलीहरियालो। कं हसंगर्कः। तें हरितहूर्वालु।)

त्रघ गोलोमीनाम। ( दूर्वामेदः )।-

स्याहोलोमी खेतदूर्वा सितास्था विख्या मुद्रा भद्रा भागवी दुर्मरा च।

## शाल्मत्यादिवर्गः।

[ 626 ]

गौरी विश्वेषानकान्ताऽप्यनन्ता

स्वेता दिव्या खेतकाण्डा प्रचण्डा ॥ १०८ ॥

सहस्रवीर्था च सहस्रकाण्डा

सहस्रपर्वा स्रवन्नभा च ।

ग्रुभा स्रपर्वा च सितच्छदा च

स्वच्छा च कच्छान्तक्हाऽब्यिहस्ता ॥ ११० ॥ ०

खेतदूर्वाऽतिशिशिरा मधुरा वान्तिपित्तिति । ग्रामातिसारकासन्नी रुचा दाहृ हषापहा ॥ १११ ॥ (मं पाग्ढरी हरियाली । कं विलियकक्के । ते शुक्कदूर्वालु । )

त्रय मालादूर्वानाम।-

मालादूर्वा वित्तदूर्वाऽलिदूर्वा मालायन्यिर्यन्यिला यन्यिदूर्वा । मूलयन्यिर्वेत्तरी यन्यिमूला रोहत्पर्वा पर्ववत्ती सिताख्या ॥११२॥

वित्तर्द्वा सुमधुरा तिक्ता च शिशिरा च सा।

पित्तदोषप्रश्मनी कफवान्तित्वषापहा ॥ ११३॥

(मं विविद्दियाचो। कं वित्तगर्का। वम्॰ वेचिद्रवी।

गौ मालद्रवी, गाँटियाद्रवी।)

त्रय गण्डानीनाम। ( दूर्वामेदः )।—
गण्डानी स्यादुगण्डदूर्वाऽतितीवा
मत्स्याची स्यादाक्णी मीननेत्रा।
स्यामग्रस्थः ग्रस्थिना ग्रस्थिपणी

स्चीपता श्यामकाण्डा जलस्या ॥ ११४॥

<sup>\*</sup> श्रब्धयः सागराः चत्वारः, इस्तो हो, तेन चतुर्विश्रव्याद्वया इत्यर्थः।

## राजनिघयः।

श्रक्ताची कलाया च चित्रा पञ्चदशाह्वया ॥ ११५ ॥
गण्डदूर्वा तु सधुरा वातिपत्तज्वरापद्या ।
शिश्रिरा दन्ददोषन्नी भ्रमत्रण्यात्रमापद्या ॥ ११६ ॥
(मंगादोद्दरियालो, गण्डरदूर्वा । कं मीनगत्ते । हिं गाण्डरिद्विपाच । गौ गेंटेदूर्वा । )

त्रय दूर्वासाधारणगुणाः।-

दूर्वाः कवाया मधुराश्च शीताः पित्तात्तृषाऽरोचकवान्ति इन्त्राः । सदाहमूर्च्छात्रहभूतशान्ति-श्लेषश्रमधंसनद्वितिदाश्चः॥ ११७॥

अय कुन्दुस्नाम।-

कुन्दुरुष्कन्दुरो रुग्ही दीर्घपत्रः खरच्छदः।
रसाभः चेत्रसभूतः सुद्धश्यो स्मवक्षभः ॥ ११८॥
गौत्यं कुन्दुरुमूलच्च श्रीतं पित्तातिसारनुत्।
प्रश्रस्तं शोधनानाच्च बलपुष्टिविवर्षनम्॥ ११८॥
( मं क्रन्दुरु । कं कियगे।)

अध भूत्यनाम।—

भृत्यो रोहिणो भृतिभूतिकोऽय कुटुम्बकः।
मालाव्यं सुमाली च क्रवोऽतिच्छ्वकस्तया॥ १२०॥
गुद्धवीजः सुगन्धस गुलालः पुंस्विवग्रहः।
बिधरसातिगन्धस गृङ्गरोहः रसेन्द्रकः॥ १२१॥ \*
भृत्यणं कटुतिकच वातसन्तापनाधनम्।
हन्ति भृतग्रहाविधान् विषदोषांस दाक्णान्॥ १२२॥

रसेन्दुकः रसाः षट्, इन्दुरेकः, तेन घोड्यसंख्यक इत्यर्थः ।

# शाल्यावादिवर्गः।

[ 8=5 ]

( मं सुगन्धिराहिस्। नं परिमलदगद्वाश्यि। ते विष्पगडिड। गौ गन्धत्या। ऋन्धुदेशे प्रसिद्धः!)

त्रय सुगन्धभूत्यानाम :-

सुगन्धभूत्रणयान्यः सुर्सः सुरभिस्तया।

गस्रत्यः सुगस्यस् सुखवासः षड्ाह्मयः ॥ १२३॥

गत्थ्त्यां सुगत्थि स्यादीषत्तिक्षं रसायनम्।

स्निग्धं सधरशीतञ्च कफपित्तत्रसापहम् ॥ १२४ ॥

( मं सुगन्धितृया। गो पुद्ना।)

म्रथ उखलनाम। -

उखलो भूरिपत्रस सुत्यस त्योत्तमः। उखलो बलदो रूचः पश्नां सर्वदा हितः॥ १२५॥ (म घोडसर। तं हैघोरसः। हिं उखलः।)

श्रय द्वुदर्भानाम।—

इच्चदर्भा सुदर्भा च पत्नानुस्तृषपतिका ॥ १२६ ॥ इच्चदर्भा सुमधुरा सिग्धा चेषलायका । कफपित्तहरा रुचा लघुः सन्तपंषी स्मृता ॥ १२७॥

> (मं ऋाम्वालु। कं कागिवत्तमेद। गो नटा।) ऋष गोमूलिकानाम।—

गोमूतिका रत्तत्वण चेत्रजा क्षण्यभूमिजा। गोमूतिका तु मधुरा द्वष्या गोदुग्धदायिनी ॥ १२८॥

> (मं ताम्बडु। कं गोढिवि। गौ गोरसुने।) अथ भिज्यिकानाम।—

शिखिका शिखिनी शीता चेत्रजा च सरुक्छदा।

## [ 020]

# राजनिष्धरः।

श्रिल्पिका मधुरा श्रीता तद्दीजं बलवृष्यदम् ॥ १२८ ॥ (मं लाइनसिम्प। कं किरियसिम्पिगे।)

त्रय निः येशिकानाम।—

नि:श्रेणिका श्रेणिका च नीरसा वनवसरी। नि:श्रेणिका नीरसीणा पश्नासबलप्रदा॥ १३०॥

( भं निरोषो : कोङ्बर्थे प्रसिद्धा । )

त्रय गर्मोटिकानाम।—

गर्मीटिका सुनीला च जरड़ी च जलायया ॥ १३१ ॥ जरड़ी मधुरा शीता सारणी दाहहारिणी। रक्तदोषहरा रुचा पश्नां दुम्धदायिनी॥ १३२॥

(मं जरिष् । कं इक्क वियद्व । तें गो झालवचारिष । गौ मा झ्याचास । )

त्रथ मज्जरनाम।--

मज्जरः पवनः प्रोतः सुद्धणः स्निग्धपत्रकः। स्टुयत्यस मधुरो धेनुदुग्धकरस सः॥ १३३॥

(मं पवना। कं रुते। गौ माजुरत्या।)

अध गिरिभूनाम।—

ढणाकां पर्वतढणं पत्राकाञ्च सगप्रियम्। बलपुष्टिकरं रुचं पश्चनां सर्वदा हितम्॥ १३४॥

(मं सर्छ। कं सेड।)

श्रव वंश्रपतीनाम।— वंश्रपत्री वंश्रदला जीरिका जीर्णपतिका। वंश्रपती सुमधुरा शिश्रिरा पित्तनाश्रनी।

# शास्त्रस्यादिवर्गः।

[ 828]

रत्तदोषहरा रुचा पश्नां दुग्धदायिनी ॥ १३५ ॥ ( मं वेग्रपति । वं विदिश्येति । ते यथा हुड्डा गौ वं ग्रपाता घास । ) अथ मस्यानकनाम ।—

सन्यानकासु हरितो दृढ़ सूलस्तृणाधिप:। स्मिग्धो धेनुप्रियो दोग्धा सधुरो बहुवीर्थ्यक:॥ १३६॥ (मं मारवेलु। कं मारविज्ञ।)

त्रय पश्चिवाद्यनाम ।—
पश्चिवाद्यो दीर्घेटणः सुपत्रस्तास्त्रवर्णेकः ।
श्रद्धः शाक्षपत्रादिः पश्चामबलप्रदः ॥ १३०॥
(मं पोकलि । कं दीते । तां पोकलगवत ।)

त्रय पटुत्रग्रनाम।—

लवणत्यं लोणत्यं त्याक्तं पटुत्यकमक्तकाण्डञ्च।
पटुत्रणकं चाराक्तं कषायस्तन्यमध्वत्रिकरम्॥ १३८॥ \*
( मं लोखा। कं हुणुवृह्य। गौ लोखावासः।)

त्रथ पर्यान्धन।म।-

पखान्धः कङ्गुणोपतः पखान्धा पणधा च सा॥ १३८॥

पखान्धा समवीर्था स्थात् तिज्ञा चारा च सारिणी।

तत्नालग्रस्त्रघातस्य त्रणसंरोपणी परा॥ १४०॥

दीर्घा मध्या तथा इस्ता पखान्धा तिविधा स्मृता।

पटुशुक्तभ्रव्हस्य पटुत्रणपय्यायवाचितया पटुत्रणभ्रव्दानन्तरं
 पटुशुक्तभ्रव्दपर्याय भ्रवभ्यवक्तव्येऽपि भ्रव तदक्षमनं न कमिप दीष-मावहतीति सुधीभिर्मृग्यम्।

## [ 80.2 ]

## राजनिषय्ट्ः।

रसवीर्थ्यविपाने च मध्यमा गुणदायिका ॥ १४१ ॥ (मं पणधे तीणो। कं इणजेमूर १)

त्रघ गुग्डनाम।—

गुण्डसु काण्डगुण्डः स्याद् दीर्घकाण्डस्तिकोणकः।
क्रत्रगुच्छोऽसिपत्रश्च नीलपत्रस्तिधारकः॥ १४२॥
वत्तराण्डोऽपरो वत्तो दीर्घनालो जलाश्रयः।
तत्र स्थूलो लघुश्चान्यस्तिधाऽयं दादमाभिधः॥ १४३॥
गुण्डासु मधुराः भौताः कफपित्तातिसारहाः।
दाहरत्तहरास्तेषां मध्ये स्थूलतरोऽधिकः॥ १४४॥
(मं वल्रदातीिण। कं मूक्गेक। गौ केश्चरवास। केल्टीति

लोने। त्रस्य कन्दः कसेरुरिति।)

त्रथ गुण्डकन्दनाम। -- \*

गुण्डकन्दः कसेकः स्थात् चुद्रमुस्ता कसेक्का।
भूकरेष्टः सुगन्धिय सुकन्दो गन्धकन्दकः॥ १८५॥
कसेक्कः कषायोऽल्प-मधुरोऽतिखरस्तथा।
रक्तपित्तप्रश्मनः शीतो दाह्यमापहः॥ १८६॥
(मं कसेक्वा। कं सेकिनगडे। तां तुङ्गाडु। तें दृष्टि,
कीति। गौ केस्र।)

<sup>\*</sup> क्सेरकं दिविषं चेयं, राजकस्रकं विश्वीद्कश्व। उत्तश्व भाविमियेग-''वासेरकदयं श्रीतं मधुरं तुवरं गुरु। पित्तशोगितदाहर्भं नयनामयनाश्चनम्॥" दति।

## शाल्यात्यादिवर्गः।

[ 875]

#### अध चिषाकानाम।--

विषका दुग्धदा गौत्था सुनीला चेत्रजा हिमा।
वृष्या बत्थाऽतिमधुरा वोजै: पश्चिता त्रणै: ॥ १४०॥

(मं चयाद्र। वं चयागियहुलु। गो चोगारम्मान।)

त्रय गुरहासिनीनाम।—

गुण्डासिनी तु गुण्डा गुण्डाला गुच्छमूलका चिपिटा।

त्रणपत्नी जलवासा प्रथुला सुविष्टरा च नवाह्ना॥ १४८॥

गुण्डासिनी कटु: खादे पित्तदाहश्रमापहा।

तिक्तीण्या खयथुन्नी च व्रणदोष्ठनिवर्हणी॥ १४८॥

(मं ग्रांपू।)

## त्रय शूलीनाम।—

श्ली तु श्र्लपत्नी स्यादशाखा धूम्बमूलिका।
जलाश्रया सदुलता पिच्छिला महिषीप्रिया॥ १५०॥
श्रूली तु पिच्छिला चोष्णा गुक्गींच्या बलप्रदा।
पित्तदाहहरा क्चा दुग्धवृद्धिप्रदायिका॥ १५१॥
(मं, वम॰ शूली। मं सोगले। गौ श्रोला।)

#### अध परिपेद्ध(ल)नाम।-

परिपेत्तं प्लवं धान्यं गोपुटं स्थात् कुटबटम् ।
सितपुष्पं दासपुरं गोनदं जीर्थेबुध्नकम् ॥ १५२ ॥
परिपेत्तं कटूषाच्च कफमारुतनाश्चनम् ।
व्रणदाहामश्र्लम्नं रक्तदोष्ठहरं परम् ॥ १५३ ॥
(मं जलमण्डवि । कं बलिग्ड्ड । गौ केश्रोटमुता ।)

रा-१३

## राजनिघयुः।

त्रय दिज(ज्)लनाम।—

हिज्जलोऽय नदीकान्तो जलजो दीर्घपत्रकः। नदोजो निजुलो रक्तः कार्मुकः कथितस् सः॥ १५४॥ हिज्जलः कटुरुणास्र पवित्रो भूतनायनः। वातामयहरो नाना-यहसञ्चारदोष्ठजित्॥ १५५॥

(मं पर्यंतु। वं तोरेगयागिते। उत्॰ किञ्जोती। वस्॰ समुन्द्र-फल, परेता। हिंदजर, समुन्दर फल। गौ हिजलगारू।)

अध भैवाल(सेवाल)भाम।-

यैवालं जलनीली स्थात् यैवलं जलजञ्च तत्। यैवालं योतलं स्निग्धं सन्तापत्रणनायनम्॥ १५६॥

(मं सेवाल। वं इांवसे। गौ ग्रेत्रोला))

द्रश्यं नानाकग्रः किविटि पिप्रस्ताव-व्याख्यातैरग्डा दिकात्य पिवस्ताराक्यम् । वर्गे विद्वान् वैद्यक विषयप्राबीग्य-ज्ञेयं पण्यारण्यकागुणमीयाद्वैद्यः ॥ १५०॥ दुर्वारां विक्रतिं खसेवनिवदां भिन्दन्ति ये भूयसा दुर्वाष्ट्राञ्च ष्टठेन कग्रः कितया सूद्ध्याञ्च ये केचन । तेषामेष महागमान्तरभुवामारण्यकानां किल क्रातङ्कभयार्त्तिनिहेतिकरो वर्गः सतां सम्मतः ॥ १५८॥ दिजानां वैयो राजा जयित रचयन्नोषिधगणं प्रतीतोऽयं नृणामस्तकरतां धारयित च ।

## प्रभद्रादिवगै:।

[ 824]

श्रमुष्यायं वर्गी तृहरिक्षतिनः काङ्गित क्षती स्थितिं शास्त्रच्यादिवेसुभिरभिधाशेखरमणी ॥ १५८.॥ दति श्रीनरहरिपण्डितविरिचते राजनिघण्टी शास्त्रच्यादिनामाष्टमो वर्गः।

# अथ प्रसद्राद्विवर्गः।

\*\*\*\*\*\*\*

प्रभद्रः पञ्चधा प्रोक्तः कास्मर्ध्यो लघुपूर्वकः ।

हिरान्नस्यः स्थोनाक-हितयं चाजशृङ्किका ॥ १ ॥

कास्मर्थास्मन्तकश्चाय कार्णकारहयं तथा ।

हश्चिकाली च कुटजस्तहीजञ्च प्रिरोषकः ॥ २ ॥

करञ्चः षड्विधोऽङ्कोलो नीलः सर्जास्वकर्णकौ ।

तालः श्रीतालहिन्ताल-माड़ास्त्लस्तमालकः ॥ ३ ॥

चतुर्विधः कदस्वोऽय वानीरः कुम्भिवेतसः ।

धवश्च धन्वनो सूर्जस्तिनिग्रश्च ततोऽर्जुनः ॥ ४ ॥

हरिद्धराधायाखोटाः प्राकोऽयो पिंग्रपात्रयम् ।

श्रमनत्रयं च वक्षः पुत्रजीवश्च पिरिष्डका ॥ ५ ॥

कारस्करोऽय कटस्यौ चवको देवसर्षपः ।

डह्विकङ्कतश्चेति खराब्धिगणिताः क्रमात् ॥ ६ ॥ #

श्रय प्रमद्रनाम ।—

श्रथ निगदित: प्रभट्र: पिचुमन्द: पारिभद्रको निम्ब:।

<sup>\*</sup> खराः सप्त, त्रब्ययः चत्वारः, तेन सप्तचलारिंग्रत्संङ्ग्यका द्रव्यथः।

## राजनिष्युः ।

काकफल: कीरेष्टो नेताऽरिष्टय सर्वतोभद्र: ॥ ७ ॥
धमनो विश्रीर्णपर्णी पवनिष्टः पीतसारकः श्रीतः ।
वरतिक्तोऽरिष्टफलो ज्येष्ठामालक्षय हिङ्गुनिर्यासः ॥ ८ ॥
छर्दनयाग्निधमनो ज्ञेया नाम्नान्तु विंश्रतिः ॥ ८ ॥
प्रभद्रकः प्रभवति श्रीतिक्रकः

प्रभद्भतः प्रभवति शातितक्षभः काप्रविश्वक्षित्रिभिष्णान्तये। बलासिमद्बद्घविष्ठिष्तदोषिजिद् विश्रेषतो हृदयविदाहशान्तिक्षत्॥ १०॥ (मं निम्बु, लिम्ब । कं वेड । ते येपचेट्ट् । तां वेपुम्मरम । हिं निम् । गौ निमगाइः।)

त्रय महानिम्बनाम।-

महानिस्बो मदोद्रेतः कार्मुकः विश्रमुष्टितः।
काकाण्डो रम्यकोऽचीरो महातिको हिमद्रुमः॥११॥
महानिस्बलु शिश्रिरः कषायः कटुतिक्ततः।
अस्तदाहबलासन्नो विषमञ्चरनाश्रनः॥१२॥
(कं महानिखा मं ड़ॉराचा, निख्वाचार्मां छा। ते गङ्गराविचेष्टः,
पेदवेपचेष्टः, त्रक्वेप, कण्डवेप। दां गौरीनिम। तां
मलाद्वेतु वा विष्पम्। हिं वकादन्। गौ
महानिम, घों छानिम्, वननिम्।)
अध केंड्र थंनाम। (निस्बभेदः)।—

कैड्योऽन्यो महानिम्बो रामणो रमणस्तथा। गिरिनिम्बो महारिष्टः ग्रुक्तशालः कफाह्नयः॥ १३॥ कैड्यै: कटुकस्तितः कषायः शीतलो लघुः। सन्तापशोषकुष्ठास्त्र-क्रसिभूतविषापदः॥ १४॥

( मं फिलितमहानिम्बु, गोरानिम्ब । कं कयाहै व्ये उ । गौ पाहाड़े निम । )

अय भूनिम्बनाम।-

भूनिस्बो नार्थितितः स्थात् करातो रामसेनकः।
करातित्तको हैमः कार्ण्डितितः क्रिरातकः॥ १५॥
भूनिस्बो वातलस्तितः क्रिपित्तज्वरापहः।
व्रणसंरोपणः पथ्यः कुष्ठकर्ण्ड्रितिशोफनुत्॥ १६॥
(संभूनिस्ब, विरादताः। वं नेलवेडचु। तें नेलवेसु। हिं

चिरायता। गौ चिरेता।)

त्रघ नेपालनिम्बनाम ।-

नेपालिनस्बो नैपालस्तृणिनस्बो ज्वरान्तकः।
नाड़ीतिक्तोऽर्द्वतिक्त्य निद्रारिः सिन्नपातहा॥ १७॥
नेपालिनस्बः भौतोश्यो योगवाही लघुस्तया।
तिक्तोऽतिकप्रिपत्तास्त-भोप्रतृष्णाज्वरापहः॥ १८॥

(मं नेपालनिम्बु। कं विरायिता, विराद्यते।)

त्रव लचुकाम्मर्थनाम।—
काण्डूल: काणागर्भस्य सोमवल्कप्रचेतसी।
मद्रावती महाकुभी कैड्य्यी रामसेनक:॥१८॥
कुमुदा चोग्रगन्भस्य मद्रा रज्जनकस्त्रया।
कुभी च लघुकाम्मर्थः स्रीपणी च त्रिपच्चधा॥ २०॥
कट्फल: कट्फणस्य कासम्बासन्वरापहः।

उग्रदाहहरो रूचो मुखरोगग्रमप्रदः ॥ २१ ॥ (मं कायपाल । कं किरिश्चित्रं । ते पापरवृद्म । हिं कायपार्। गौ कट्पाल, कायकाल ।)

त्रयं त्रश्निमस्यनाम ।---

श्रानिमत्योऽग्निमयनः तर्नारी वैजयन्तिना । विज्ञमत्योऽरणी केतुः श्रीपणीं कार्णका जया । नादेयी विजयाऽनन्ता नदी यावत् त्रयोदम् ॥ २२ ॥ तर्कारी कटुक्ष्णा च तिज्ञाऽनिज्ञकफापहा । भोफश्लेषाग्निमान्याभी-विज्वत्याधाननामनी ॥ २३ ॥ (मं नक्ष्व । तें विरिनेज्ञ्चेष्टु । जत्॰ श्राग्निवध । हिं श्ररणि, श्रमास्य, गणियारि । गी गणिरि, श्रागान्त ।)

श्रथ चुट्राग्निमस्यनाम। —

चुद्राग्निमत्यस्तपनो विजया गणिकारिका। चरिणर्लेष्ठमत्यच तेजोव्वचस्तनुत्वचा॥ २४॥ च्यग्निमत्यद्वयं चैव तुल्यं वीर्थ्यरसादिष्ठ। तत्प्रयोगानुसारिण योजयेत् स्वमनीषया॥ २५॥ (मं टाकलि। कं विज्ञ। गौ छोट गणिरि।)

त्रय सोनाकदयनाम।--

श्योनाकः शुक्तनासस्य कटुक्कोऽध कटकारः । मयूरजङ्कोऽरलुकः प्रियजीवः कुटन्नटः २६॥ श्योनाकः पृथुशिम्बोऽन्यो भक्तको दीर्घवन्तकः । पीतवचस टेराट्ट्रको सूतसारो सुनिद्रसः॥ २०॥ नि:सार: फलुहन्ताक: पूर्तिपत्नो वसन्तक: ।

सण्डूकपर्ण: पीताङ्गो जस्बूक: पीतपादक: ॥ २८ ॥
वातारि: पीतक: श्रोण: कुटनस विरेचन: ।
असरेष्टो बर्हिजङ्घो नेत्रनेत्रसितासिध: ॥ २८ ॥ \*
श्रोनाकयुगलं तिक्तं श्रोतलं च तिदोषजित् ।
पित्तक्षेषातिसारम्नं सित्रपातज्वरापष्टम् ॥ ३०॥
टेण्टुफलं कटूष्णच्च कफवातहरं लघु ।
दोपनं पाचनं हृद्धं क्चिक्तज्ञवणास्त्रकम् ॥ ३१ ॥
(मं टेण्टू। कं श्राणाश्रोडिलमर । चत्० फण्णप्या। पद्धा॰
सुलिन् । नेपा॰ कक्षकन्द । तां पन । हिं सोनापाठा,
श्रालुं । गो श्रोनागाछ । )
श्राण श्राणश्रीनाम।—

चन्नश्रुक्षो मेषशृङ्को विर्त्तिका सर्पदंष्ट्रिका । चन्नुष्या तिक्तदुग्धा च प्रत्रश्रेणी विषाणिका ॥ ३२ ॥ ग्रनशृङ्को कटुस्तिका कफार्थ:श्रूलशोफिनत् । चन्नुष्या खासहृद्रोग-विषकासातिकुष्ठनित् ॥ ३३ ॥ ग्रनशृङ्कोफलं तिक्तं कटुष्णं कफवातिन् । जठरानलकत् हृद्यं क्चिरं लवणान्त्रकम् ॥ ३४ ॥ (मं मेषसंग । कं स्रियमर । गो म्याड्राश्रिङे, ऋग्ववे टे, गाड्रलशिङो ।)

<sup>\*</sup> नेत्रनेत्रमिताभिषः,—नेति हे, नेत्राचि तीचि, हात्रिंग्रत्संचका-नीत्यर्थः।

प्रय काम्मरीनाम।—
स्थात् काम्मर्थः काम्मरी क्षणवृन्ता
हीरा भद्रा सवंतोभद्रिका च।
श्रीपणीं स्थात् सिन्धुपणीं सुभद्रा
कम्भारी सा कट्फला भद्रपणीं ॥ ३५ ॥
कुमुदा च गोपभद्रा विदारिणी चीरिणी महाभद्रा।
मधुपणीं स्थभद्रा कृष्णा खेता च रोहिणी ग्टष्टः ॥ ३६ ॥
स्थूललचा मधुमती सुफला मेदिनी महाकुमुदा।
सुटढ़ल्लचा च कथिता विज्ञेयोनविद्यतिर्नाम्मा॥ ३० ॥
काम्मरी कटुका तिक्षा गुरूष्णा कफ्योफनुत्।
विदोषविषदाहार्त्ति-ज्वरत्व्रणास्त्रदोषजित्॥ ३८ ॥
(मं, कं, सीवमनौ। तें गम्भारि। गो गाम्भारीगाक्क।)

श्रय श्रमन्तनानाम।—

त्रमन्तकसेन्दुकस कुहालसाम्ह्रपत्नकः । स्रच्यात्वक् पौत्रपत्नस स्मृतो यमलपत्नकः ॥ ३८॥ स्रम्मान्तकेन्दुशपरो शिलान्तसाम्बुदः स्मृतः । पाषाणान्तक इत्युक्तो विक्वचन्द्रमितास्त्रयः ॥ ४०॥ \*

अध्यन्तनः स्थान्मधुरः नवायः सुग्रीतनः पित्तहरः प्रमेहजित्। विदाहृद्धणाविष्यमञ्चरापहो विषार्त्तिविक्कृदिंहरस्य भूतजित्॥ ४१॥ (मं श्राबुद्धाः। नं श्रम्भरः।)

<sup>\*</sup> विज्ञचन्द्रमिताज्ञयः लयोद्मसंख्यक द्रव्यर्थः।

## प्रभद्रादिवर्गः।

[ 208]

#### त्रघ किथिकारनाम। -

श्रथ भवित कर्णिकारो राजतरः प्रयहस्य क्वतमालः ।
सुफलस्य परिव्याधो व्याधिरिपुः पङ्क्तिवीजको वसुसंज्ञः ॥४२॥\*
कर्णिकारो रसे तिक्तः कटूणः कप्रश्चल्वत् ।
उदरक्षिमिन्द्रभो व्यगुल्मिनवारणः ॥ ४३॥
(भं लघुवाह्या। कं, तें किक्मके। गो कीट सोगालुगाकः।)

श्रय श्रारम्धधनाम।-

यारम्बधीऽन्यो सत्यानो रोचनयतुरङ्गुलः ।

यार्वतो दीर्घफलो व्याधिघातो नृपद्गुमः ॥ ४४ ॥

हेमपुष्पो राजतरः कण्डू मय ज्वरान्तकः ।

यक्जः स्वर्णपुष्पय स्वर्णदुः कुष्ठस्दनः ॥ ४५ ॥

कर्णाभरणकः प्रोक्तो महाराजदुमः स्मृतः ।

कर्णिकारो महादिः स्यात् प्रोक्तयैकोनविंग्यतिः ॥ ४६ ॥

यारम्बधीऽतिमधुरः ग्रोतः गूलापहारकः ।

ज्वरकण्डू कुष्ठमेष्ट-कफविष्टभाग्यनः ॥ ४० ॥

(मं विद्वत्वाह्याचिमाद् । क' हेगाके। तें रेब्वचेट्टु । उत्॰

सुनारि । हिं त्रामलटास्, धनवहेद्वा, ग्रोयहाली ।

गौ वद् सो दालः लिंद्याग्रोयाल, राखाल
नद्दो, वानरनद्दो । )

यथ विश्वतालीनाम ।—

वृश्चिकाली विषाणी च विषन्नी नेत्ररोगहा।

<sup>\*</sup> वसुर्यज्ञः अष्टाह्नयः।

## [ २०२ ]

## राजनिघण्टुः।

उष्ट्रिकाप्यिलिपणीं च दिल्लावर्तको तथा ॥ ४८ ॥
कालकाप्यागमावर्त्ता देवलाङ्गुलिका तथा ।
कारमा भूरिदुग्धा च कर्कथा चामरा च सा ॥ ४८ ॥
खर्णपुष्पा युग्मफला तथा चोरिविषाणिका ।
प्रोत्ता मासुरपुष्पा च वसुचन्द्रसमाह्नथा ॥ ५० ॥ \*
वस्विकाली कटुस्तिका सोष्णा इदक्षश्रिष्ठित् ।
रक्तिपत्तहरा बच्चा विवन्धारोचकापहा ॥ ५१ ॥
(मं विश्वकालो । कं दिल्लालु । तें दुल्वोंडो । तां कच्चरि ।
वम्० भेट्भिङो । हिं वद्द्या । गो विकाति ।)

त्रघ कुटजनाम।—

दुन्द्रयवा तु स्रक्राह्वा स्रक्रवीजानि वत्सकः। तथा वत्सकवीजानि भद्रजा कुटजाफलम् ॥ ५५॥

वस्त्रसमाह्नया त्रष्टादशाभिधा।

न्नेया भद्रयवा चैव वीजान्ता कुटजाभिधा। तथा कलिङ्गवीजानि पर्यायैर्दश्यधाभिधा॥ ५६॥ इन्द्रयवा कटुस्तिन्ना श्रीता कप्पवातरत्तपित्तहरा। दाहातिसारशमनी नानाच्चरदोषशूलमूलन्नी॥ ५०॥ (मं इन्द्रजव, कुखाचेन्बीं। कं कोडिसिगेयवीज। धत्॰ हिं, गौ, इन्द्रयव।)

अध शिरोषनाम।—

श्विरोषः श्रीतपुष्पश्च सण्डिको स्टुपुष्पकः ।
श्विष्ठो विहिपुष्पश्च विष्ठहन्ता सुपुष्पकः ॥ ५८॥
छहानकः श्विकत्वज्ञेयो लोमश्रपुष्पकः ।
कपीतनः कलिङ्गश्च श्यामलः शिङ्खनीफलः ।
सधुप्रष्पस्तथा वृत्त-पुष्पः सप्तदशाह्वयः ॥ ५८॥
शिरीषः कटुकः श्रीतो विषवातहरः परः ।
पासास्रक्षष्ठकण्डूति-त्वग्दोषस्य विनाश्मनः ॥ ६०॥
(मं चिरस् । तें दिरसन । हिं शिरिषः, खररीन्, कलिस ।
गौ शिरीषगाछ ।)

त्रथ करञ्जनाम।—

करको नत्तमालस पूर्तिकसिरिवल्वकः ।
पूर्तिपणी वृद्धफलो रोचनस प्रकीर्थ्यकः ॥ ६१ ॥
करक्षः कटुरुण्य चत्तुष्यो वातनामनः ।
तस्य स्नेहोऽतिस्निग्धस वातमः स्थिरदीप्तिदः ॥ ६२ ॥
(मं करम्र। तें कानुगचेष्टु। हिं करोदा, करंजुवा।
गौ डहरकरम्र।)

#### अध एतकरञ्जनाम।—

श्रन्यो प्टतकरन्नः स्थात् प्रकीर्यो प्टतपर्धकः । स्निम्धपत्रस्तपस्ती च विषारिश्व विरोचनः ॥ ६३॥ प्टतकरन्नः कटूणो वातद्वद् व्रणनामनः । सर्वत्वग्दोषममनो विषस्पर्भविनामनः ॥ ६४॥ (मं करन्नमेह । कं तपियमग्तु । गौ वियाकरम्वा । )

#### त्रय महाकाश्चनाम।---

त्रेयो महाकरक्षोऽन्यः षड्यत्यो हस्तिचारिणो।
उदकीर्या विषय्नी च काकन्नो मदहस्तिनी।
यङ्गारविन्नी यार्ङ्गेष्टा मधुसत्ताऽवमायिनी॥ ६५॥
हस्तिरोहणक्षयेव त्रेयो हस्तिकरक्षकः।
सुमनाः काकभाण्डी च मदमत्तय षोड्य॥ ६६॥
महाकरक्षसीच्योष्यः कटुको विषनायनः।
कण्ड्विचर्चिकाकुष्ठ-त्वग्दोषव्रणनायनः॥ ६०॥
(मं विड्वकग्ञा। कं हिरियहुल्गिल्। गौ डहरकर्ष्णाभेद।)

### अय पुतिकरञ्जनाम।—

प्रकीर्यो रजनीपुष्यः सुमनाः पूर्तिकर्णिकः ।
पूर्तिकरच्चः कैड्यः किलमालय सप्तधा ॥ ६८ ॥
(मं पूर्तीकरञ्च। कं:वास्व। ते चुलिगिलु। तां पेचाककय।
वम्॰ सागरगीटा। इन्हें क्यटकरेजा। गो नाटा करञ्चा।)

अथ गुक्कवरञ्जनाम।—

त्रन्यो गुक्कृकरचाः सिम्बद्देशो गुक्कृपुक्कृको नन्दी।

# प्रभद्रादिवर्ः:।

[ २०५ ]

गुक्की च माहनन्दी सानन्दी दन्तधावनी वसवः ॥ ६८॥ \*
करज्जः कटुतिक्तीष्णी विषवातार्त्तिक्वन्तनः ।
कंग्डूविचर्चिकाकुष्ठ-स्पर्भत्वग्दीषनामनः ॥ ७०॥
(मं करज्जमेद्र। कं चुलिगिलभेदन्र।)

त्रय रीठाकरञ्जनाम।—

रीठाकरस्त्रकस्त्रन्यो गुच्छलो गुच्छपुष्पकः।
रीठा गुच्छपलोऽरिष्टो सङ्गल्यः कुक्सवीजकः।
प्रकीर्थः सोसवल्कस्य फिनिलो क्र्रसंज्ञकः॥ ७१॥ क रीठाकरस्त्रस्तिकोष्णः कटुः स्निग्धस्य वातजित्। कप्पन्नः कुष्ठकण्डूति-विषविस्फोटनाप्पनः॥ ७२॥ (म', सं, रीठा। कं श्रारठाल। ते रीठाकरस्रमनेचेष्टु, कुकुड्कयल्। वम्॰ रिधा। तां पोनानकोष्ट्रः। गौ वड़ रीठा।)

त्रय ग्रङ्गोलनाम।-

श्रक्षोतः कोठरो रेची गूढ़पत्रो निकोचकः । गुप्तस्तेष्ठः पीतमारो मदनो गूढ़मिक्कता ॥ ७३ ॥ पीतस्ताम्मफलो ज्ञेयो दीर्घकालो गुणाब्यकः । कोलः कोलस्वकर्षेश्व गन्धपुष्पश्व रोचनः । विज्ञानतैलगर्भश्व स्मृतिसंख्याभिधा स्मृतः ॥ ७४ ॥ ३

- \* वसवः ऋष्टामिषाः दत्यर्थः।
- † स्ट्रसंचनः एकाद्रभाहः।
- ‡ स्मृतिसंखाभिधा त्रष्टाद्याह्यः।

## राजनिषयुः।

श्रद्भोतः तटुतः स्निग्धो विषन्तादिदोषनुत्।

तपानिलहरः स्त-श्रद्भितत् रेचनीयकः॥ ७५॥

(मं श्रद्भोतः। कं श्रङ्गते। हिं देरा। गौ धलाश्रांकोड़ गाछ।)

श्रय नोत्रवचनाम।—

नीससु नीसहचो वातारि: शोफनाशनो नखनामा।
नखहच्च नखासुनेखप्रियो दिग्गजेन्द्रमितसंज्ञ:॥७६॥ \*
नीसहचसु कटुक: कषायोश्यो सघुस्तथा।
वातामयप्रशमनो नानाश्वयधुनाशन:॥७७॥
(कौ, मास॰, मं, गौ नोसहच।)

त्रय सर्जनाम।—

सर्जः सर्जरसः शालः कालकूटो रजोइवः।
विद्यास्त्रीरपणी रालः काम्ब्रीऽजकर्णकः॥ ७८॥
वस्त्रकणः कषायी च ललनो गन्धव्रचकः।
वंश्रय शालनिर्यासो दिव्यसारः सुरेष्टकः।
शूरोऽग्निवस्त्रसयैव यचधूपः सुसिडकः॥ ७८॥
सर्जस्तु कटुतिक्तोण्णो हिमः स्त्रिग्धोऽतिसारजित्।
पित्तास्त्रदोषकुष्ठम्नः कण्डूविस्कोटवातजित्॥ ८०॥
(मं साजडा। कं सज्जरहमर। तें सर्ज्ञरससु। पञ्चाः रालग्रह्नं।
हिं किंडि।। गौ धूना।)

<sup>\*</sup> दिगाजेन्द्रेत्यनेन ग्रष्टभंख्या बोड्या। ऐरावतादिनामनिर्देशेन ग्रमरसिंद्यादेनापि तेषामष्टौ संख्याः परिगियाताः ; यथा,—

"ऐरावतः पुग्छरोको वामनः कुमुदीऽञ्चनः।

पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतौकश्च दिगाजाः॥" दति।

## प्रभद्रादिवर्गः।

[200]

#### त्रय त्रयुक्तर्शनाम !--

जरणद्रुमोऽखकणस्ताच्धेप्रसवश्च ग्रस्यसंवरणः।
धन्यश्च दीर्घपणीः कुश्चिकतरः कीश्चिकश्चापि ॥ ८१ ॥
श्रखकणीः कटुस्तिकः स्निग्धः पित्तास्त्रनाश्चनः।
ज्वरविस्फोटकण्डूष्टः शिरोदोषात्तिक्वन्तनः॥ ८२ ॥
(मं श्रीवाद्वर्जरसः। कं दमरनभेदः। गौ जताशालः।)

#### अध तालदुमनाम ।-

तालसालहुमः पत्नी दीर्घस्त्रन्थो ध्वजहुमः ।

ढणराजो मधुरसो मदाक्यो दीर्घपादपः ॥ प्रदे ॥

चिरायुस्तर्राजस गजभच्यो दृढ्क्छदः ।

दीर्घपत्नो गुक्क्पत्नोऽप्यासवदुस षोड्म ॥ प्रथ ॥

तालस मधुरः मीत-पित्तदाहस्रमापहः ।

सरस कफपित्तन्नो मदल्लद्दाहमोषनुत् ॥ प्रथ ॥

(खरताल दति सन्पुदेशे प्रसिद्धः । गुर्जे॰ तड़ । तां पनस।

हिं, हतु॰, ताड़ । गो ताल । )

#### अय श्रीतालनाम।-

श्रीतालो मधुतालश्च लच्मीतालो मटुच्छदः।
विश्वालपत्नो लेखार्द्वी मसीलेख्यदलस्तथा।
श्रिरालपत्रकश्चेव याम्योङ्ग्तो नवाङ्मयः॥ ८६॥
श्रीतालो मधुरोऽत्यन्तमीषच्चेव कषायकः।
पित्तजित्कफकारी च वातमीषत्रकोपयेत्॥ ८०॥
(श्रीताल इति मलियालदेशे प्रसिद्धः।)

## [ 205]

## राजनिष्युः।

#### अथ दिन्तालनाम।—

हिन्ताल: स्पूर्णतालय वल्कपत्री वहह्ल: ।
गर्भसावी लताताली भीषणी बहुकण्टक: ॥ ८८ ॥
स्थिरपत्री दिधालेख्य: शिरापत्रः स्थिराङ्गिप: ।
ग्रम्लसारी वहत्ताल: स्थाचतुर्दशधाऽभिध: ॥ ८८ ॥
हिन्ताली मध्राम्लय कफलत् पित्तदाहनुत् ।
ग्रमत्रणापहारी च शिशिरी वातदोषनुत् ॥ ८० ॥

( हिन्तालु इति दिवियो प्रसिद्धः । गौ हाताल्गाक । )

त्रय माड्नाम।—

माड़ो माड़दुमी दीघीं ध्वजवृत्ती वितानकः । सद्यदुमी मोहकारी मददुर्ऋ जुरङ्गधा ॥ ८१ ॥ \* माड़खु शिशिरो क्चः कषायः पित्तदाहकत्। तृष्णापही मक्कारी श्रमहृत् श्लेषकारकः ॥ ८२ ॥ (मं माड । कं वैनो । की जिकेतुग्छ । वम ॰ मेलीमाड । )

श्रय तूलनाम।--

तूलं तूरं ब्रह्मकाष्ठं ब्राह्मिणेष्टं च यूपकम् । ब्रह्मदारु सुपुष्यं च सुरूपं नीलवन्तकम् । क्रमुकं विप्रकाष्ठं च सृदुसारं हिभूमितम् ॥ ८३ ॥ १

<sup>🌣</sup> श्रद्धधा इति नवसंख्या जेया।

<sup>†</sup> हिभूमितमिति।—हिः, भूः पृथ्वी एक इत्यर्भः ; ततः एकस्य वामगत्या द्वादमसंख्या।

तूलं तु सधुरान्तं स्यात् वातिपत्तहरं सरम् ।
दाहप्रश्रमनं वृष्यं कषायं कप्मनाश्रनम् ॥ ८४ ॥
( सं पारिसापिम्पल्, बङ्गरिल । ते कम्बलिचे हु । तां मधुकटुदचेड्गि । हिं तूत्री, साहुड़ । गौ तुँत्, पलाश्रपिपुल ।
स्रावलुष दित कश्चित् । )

श्रय तमालनाम।-

तमाली नीलताल: स्यात्कालस्त्रम्यस्तमालक: ।
नीलध्वजय तापिञ्छ: कालताली महाबल: ॥ ८५ ॥
तमाली मधुरी बच्ची वृष्यय शिश्रिरी गुरु: ।
कफपित्तढषादाह-स्रमभ्यान्तिकर: पर: ॥ ८६ ॥
(मं तमालु। कं कदालह। गी तमालगाछ।)

त्रय कदम्बनाम।—

कदस्बो वृत्तपुष्पश्च सुरिमर्लेलनाप्रियः। कादस्बर्धः सिन्धुपृष्पो मदान्त्रः कर्णपूरकः॥ ८० ॥ कदस्बस्तित्तकटुकः कषायो वातनाप्रनः। ग्रीतलः कफिपत्तार्त्ति-नाप्रनः ग्रुक्रवर्षनः॥ ८८॥ (मं कलम्बु। कं कहेव्। तें कड़िमिचेटु। गो कदमगाछ।)

अय घाराकद्ग्बनाम।-

धाराकद्ग्बः प्राव्यः पुलकी सङ्गवन्नभः। मेघागमप्रियो नीपः प्राव्यष्यः कदस्बकः॥ ८८॥

(मं भाराकतम्बु। कं भारेयकङ्ख। तें मोगुलुकड़िमि। इं इस्टु। गो केलिकरम्।)

रा-१8

## राजनिष्ठरष्टुः।

### त्रय धूलोकदम्बनाम।—

ध्नोकदम्बः क्रमुकप्रस्नः परागपुष्पो बलभद्रसंज्ञकः। वसन्तपुष्पो मकरन्दवासो सङ्गप्रियो रंगुकदस्वकोऽष्टी ॥१००॥

(मं भू लिकदम्ब । कं भू लिगड छ । )

श्रय भूमीकदम्बनाम।—

भूमीकदस्बो भूनिस्बो भूमिजो सङ्गवन्नभः। लघुपुष्पो वृत्तपुष्पो विषन्नो व्रणहारकः॥ १०१॥

( मं भूमिकदम्ब । कं नेलगड् । )

त्रथ विकद्म्बगुगाः।—

त्रिकदम्बाः कटुर्वर्ष्णा विषयोपाहरा हिमाः। कषायाः पित्तलास्तिक्ता वीर्य्यविद्यकराः पराः॥ १०२॥

अध वानीरनाम।-

वानीरी वृत्तपुष्पश्च शाखाली जलवेतसः। व्याधिघातः परिव्याधी नादेयी जलसक्षवः॥ १०३॥ वानीरस्तिक्तशिशिरो रचीन्नी व्रणशीधनः। पित्तास्त्रकप्रदीषन्नः संग्राही च कषायकः॥ १०४॥

(मंवञ्चालु। कं वैसेयसरगु। गौ जलवेत।)

त्रथ कुम्भीनाम।-

कुभी रोमालुविटपी रोमशः पर्पटहुमः। कुभी कट्ः कषायोखो ग्राही वातकफापहः॥ १०५॥

( कुम्भी वृत्तः दति कोङ्ग्ये प्रसिदः । )

# प्रभद्रादिवर्गः ।

[ 3 ? ? ]

#### ऋथ वेतसनाम।-

वितसी निचुली च्रेयो वज्जुली दीर्घपत्रकः ।
कलनो सञ्चरीनमः सुषेणी गन्धपुष्पकः ॥ १०६ ॥
वितसः कटुकः खादुः शीतो भूतिवनाश्रनः ।
पित्तप्रकीपणी रुच्ची विज्ञेयो दीपनः परः ।
रक्तपित्तोद्ववं रोगं कुष्ठदोषं च नाश्ययेत् ॥ १०० ॥
(मं बेडिस् । कं वेतस्, बेस्यभेदवु । तें जीतयुरकुली । गो वेतगास्र ।)

#### ग्रद्य धवनाम।-

धवो दृदतक्गींरः कषायो सधुरत्वचः ।

ग्रुक्षद्वचः पाग्डुतक्षेवलः पाग्डुरो नव ॥ १०८॥

धवः कषायः कटुकः कफन्नोऽनिलनामनः ।

पित्तप्रकोपणो कच्चो विज्ञेयो दीपनः परः ॥ १०८॥

(मं धानोडा । वं सिरिवक । तें नारिक्षचेट्ट । गौ धन्नोगाकः ।)

#### ग्रथ धन्वननाम।-

धन्वनी रज्ञकुसमी धनुष्ठची महाबन: ।
राज्य प्रिक्कृतको रूच: खादुफलय स: ॥ ११०॥
धन्वन: कट्कोष्ण्य कषाय: कफनाश्रन: ।
दाहशोषकरो याही कर्ग्हामयश्मप्रद: ॥ १११॥
(मं धामण्। कं उट्टे। हिं धामिनी। गी धामा गाळः।

### अध भूर्जनाम।-

भूजी वल्बादुमी भुजी: सुचर्मा भूजीपत्रकः। चित्रत्विग्वन्दुपत्रस रचापत्रो विचित्रकः।

# [ 282]

# राजनिघरः।

भूतन्नो मृदुपत्रश्च भैलेन्द्रस्थो हिभूमितः ॥ ११२ ॥ \*
भूर्जः कटुकषायोणो भूतरचाकरः परः ।
तिदोषभमनः पथ्यो दुष्टकौटिल्यनाभनः ॥ ११३ ॥
(वम॰ भूर्जपत्रवचः । भाकपादः, फटक इति हिमाचले प्रसिद्धः ।

गौ भूजिपत्र।)

अध तिनिश्रनाम।—

तिनिशः स्थन्दनश्रकी श्रताङ्गः श्रकटो रथः।
रिथको भस्मगर्भश्र मेषी जलधरो दश्र॥ ११४॥
तिनिश्रस्तु कषायोश्यः कप्तरक्तातिसारिजत्।
ग्राहको दाहजननो वातासयहरः परः॥ ११५॥
(मं, कं, श्रान्पे च सन्दन इति प्रसिद्धः। हिं तिरिक्छ।

गौ जारलगान्छ, सादन गान्छ।)

त्रय त्रर्जुननाम।-

युर्जुनः शस्वरः पार्थिश्वत्रयोधी धनद्भयः। वैरान्तकः किरीटी च गाण्डीवी शिवमस्रकः ॥ ११६॥ सव्यसाची नदीसर्जः कर्णारिः कुरुवीरकः। कौन्तेय दन्द्रस्तुश्च वीरद्रः कृष्णसारिष्टः। पृथाजः फाल्जुनो धन्नी क्रमुश्चकिविंशतिः॥ ११७॥ यर्जुनस्तु कषायोष्यः कफ्नो व्रणनाश्चनः। पित्तत्र्यसद्वात्तिंन्नो सार्तासयकोपनः॥ ११८॥ (मं त्रर्जुनसाद्रज्ञा। कं सारदोल। ते महिचेट्टु। दिं कन्न, कौद्द। तां तोरेमत्ति। गौ स्रर्जुन।)

दिभूमितः द्वादशाद्वय द्व्यथः।

#### अध इरिद्रुनाम।-

हिरद्वः पीतदारुः स्थात् पीतकाष्ठश्च पीतकः। कदस्वकः सुपुष्पश्च सुराह्वः पीतकद्वमः॥ ११८॥ हिरद्वः शीतसस्तिको सङ्गस्यः पित्तवान्तिजित्। श्रङ्गकान्तिकरो बस्यो नानात्वग्दोषनाश्यनः॥ १२०॥ (सं इसदिवा। सं विस्तित्। गौ दास्हिरद्वा।)

त्रय दग्वानाम ।—

दग्धा दग्धरु प्रोक्ता दिग्धका च खलेरु । रोमणा कर्कणदला अस्मरो हा सुदग्धिका ॥ १२१ ॥ दग्धा कटुकषायो श्या कप्तवाति निक्तन्तनी । पित्तप्रको पणी चैव जठरान सदीपनी ॥ १२२ ॥

( कुरुही दति कोङ्गये प्रसिदा।)

अय शाखोटनाम।—

याखोटः स्याङ्गतवचो गवाची यूकावासी भूजीपत्रश्च पीतः। कौष्मिक्योऽजचीरनामश्च स्तास्तिकोणोऽयं पित्तकदातहारी॥१२३

(मं साहोड। कं श्राषोडमरत्। ते भरिश्विकेचेटु, वरन्की। वम्॰ साहोड़ा। हिं सहोड़ा, स्ताः, सिश्रोड़। गौ ध्याश्रोडा गारू।)

त्रय भावनाम।—

शाकः ऋकचपत्रः स्थात् खरपत्रोऽतिपत्रकः । महीसद्यः श्रेष्ठकाष्ठः स्थिरसारो ग्टइद्गमः ॥ १२४ ॥ शाकसु सारकः प्रोत्तः पित्तदाष्ट्रश्रमापदः ।

## राजनिष्धयुः।

कफन्नं मधुरं क्चं कषायं शाकवल्कलस् ॥ १२५॥ (मं सोये। कं नैगु। तें ठेकुचेटु,। तां ठेक। वम्॰ खरपत्र। खत्॰ सिङ्क्ष। हिं श्रगुण। गौ श्रीगुण।)

#### अध शिंशपानाम।-

शिंगपा तु महाध्यामा क्षण्यसारा च धूक्तिका।
तीन्प्यसारा च धीरा च कपिला कष्णशिंगपा॥ १२६॥
ध्यामादिशिंगपा तिक्ता कटूष्णा कफवातनुत्।
नष्टाजीर्थहरा दीप्या ग्रोफातीसारहारिणी॥ १२०॥
(मं कालासिंसपा। कं करीय दबीहु। तें शिशुकररा तां

जानुक्कुकटुद, पंग्रकेट्र। हिं ग्रीसव, ग्रीसद्। गी श्रिशुगाछ।)

अध येतिशिंग्रपानाम।--

शिंग्रपाऽन्या खेतपत्ना सिताह्वादिश्व शिंग्रपा। खेतादिशिंग्रपा तिका शिग्रिरा पित्तदाहनुत्॥ १२८॥ (मं पायद्वरा सिंसपा। कं विविय दवोडु। गौ श्रादा श्रिश्चगाछ।)

श्र्य कपिलाशिंग्रपानाम।—

किपला शिंश्रपा चान्या पीता किपलिशिंश्रपा।
सारिणी किपलाची च भस्मगर्भा कुशिंश्रपा॥ १२८॥
किपला शिंश्रपा तिका शीतवीर्या समापहा।
वातिपत्तच्चरन्नी च क्टिइिक्काविनाश्रिनी॥ १३०॥
(मं पिवला सिंसपा। कं हींवद दबीहु।)

# प्रभद्रादिवर्गः।

[ 384]

त्रय शिंग्रपातितयसामान्यगुणाः ।— शिंग्रपातितयं वर्ण्यं हिमशोफिवसर्पेजित् । पित्तदाहप्रशमनं बल्यं रुचिकरं परम् ॥ १३१ ॥

अय असननाम। (सर्जेकविभेषः)। —

त्रुसनस्तु सहासर्जः सौरिर्वन्धूकपुष्पकः ।

प्रियको वीजवृत्त्वय नीलकः प्रियमालकः ॥ १३२ ॥

ग्रसनः कटुक्ष्ण्य तिक्तो वातार्त्तिदोषनुत् ।

सारको गलदोषन्नो रक्तसण्डलनामनः ॥ १३३ ॥

(मं विडलुविया । कं वाक्ष्य । तें हिरियहोतैयमरन् । हिं

ग्रसना । गो पियामाल ।:)

त्रघ नीखवीजनाम।—

दितीयो नीखवीज: स्थानीलपन: सुनीलक: ।

नीलहुमो नीलसारो नीलनिर्यासको रसे: ॥ १३४ ॥ \*

वीजह्नची कटू घीती कषायी कुष्ठनामनी ।

सारकी कण्ड्दहुष्ती श्रेष्ठस्त्वासितस्तयो: ॥ १३५ ॥

(मं लोद्दिवांवीया । कं केपिनहोने । गो:नीलासनगास्त ।)

#### त्रध वर्षणनाम।

वर्णः खेतपुष्पश्च तिक्तशाकः कुमारकः । खेतदुमः साधुव्रचः तमालो मारुतापहः ॥ १३६ ॥ वर्णः कटुरुणाश्च रक्तदोषहरः परः । शीर्षवातहरः स्निग्धो दीप्यो विद्रधिवातिजत् ॥ १३०॥

रसै: षड्मिर्नामिक्यलित द्ययं:।

(मं वस्य । सं मदवस्ति । तें उस्मिष्टि, जाजिचेट्ट, उतिमिरिचेटु । वम्॰ वायवर्या । तां भरतिङ्गम् । हिं विति । गो वस्यगास्र । )

ग्रव पुत्रजीवनाम ।—
पुत्रजीव: पवित्रश्च गर्भद: सुत्रजीवक: ।
कुटजीवोऽपत्यजीव: सिद्धिदोऽपत्यजीवक: ॥ १३८ ॥
पुत्रजीवो हिमो वृष्य: स्रेष्मदो गर्भजीवद: ।
च सुष्य: पित्तग्ममनो दाहृत्वणानिवारण: ॥ १३८ ॥
(पृत्रजीव दृति कोल्हापुरे प्रसिद्ध: । मं, वम्, जीवनपुत्रर । तें
कव्रज्वि । हिं जियापुटज, पितौं जिया ।
गौ जियापुता ।)

श्रथ महापिग्छीतक्नाम।—

महापिग्छीतक्: प्रोक्त: खेतपिग्छीतक्षय स:।

करहाट: चुरश्चैव श्रस्तकोश्रतक्: सर:॥ १४०॥

पिग्छीतक्: कषायोष्णि स्त्रिदोषश्मनोऽपि च।

चर्मरोगापहश्चैव विशेषाद्रक्तदोषजित्॥ १४१॥

(मं पेग्छिरा। कं श्रोन्द्रयमाडुवमरन्। हिं पेड़िरा।)

श्रथ कारस्तरनाम।—

कारस्करस्तु किम्पाको विषितिन्दुविषहुमः।
गरहुमो रम्यफलः कुपाकः कालकूटकः॥ १४२॥
कारस्करः कटूष्ण्य तितः कुष्ठविनामनः।
वातामयास्त्रकण्डूति-कफामार्भाव्रणापहः॥ १४३॥
(मं कानिरा। कं काञ्चिवार, मकरते हुआ, माकड़ाकेन्द।
गौ कुं विसा।)

# प्रभद्रादिवर्गः।

[ २१७ ]

#### अथ कटभीनामः।-

कटभी नाभिका शौर्ण्डी पाटली किर्णिष्ठी तथा। मधुरेणु: चुद्रशासा कैर्ड्य: श्यामला नव ॥ १४४ ॥ (मं कालोकिर्ण्डी। कं करियक्तिलगे।)

श्रय श्रितादिकटभी नाम।—
श्रितादिकटभी खेता किणिही गिरिकणिका।
श्रिरीषपत्रा कालिन्दी श्रतपादी विषष्मिका।
सहाखेता सहाशौरंडी सहादिकटभी तथा॥ १४५॥
(संपार्खरी किण्रही। कं विलियविद्वाल।)

त्रय कटभी दयगुणाः।—

कटभी भवेत्कटूष्णा गुल्मविषाधानमूलदोषन्नी। वातकपाजीर्णक्जाममनी खेता च तत्र गुण्युक्ता॥ १४६॥ (मं दोन्डोक्तिणडीगुण। कं एरडुकिणिगेवेडाडा।)

अध चवकनाम।-

चवकः चुरकस्तीच्यः क्रूरो भूताङ्गः चवः।
राजोद्देजनसंज्ञय भूतद्रावी ग्रहाह्वयः॥ १४०॥ \*
भूताङ्गग्रस्तीव्रगन्धः कषायोष्यः कटुस्तया।
भूतग्रहादिदोषष्नः कफवातिनतन्तनः॥ १४८॥
(भूताङ्गगः इति देशविशेषे खातः। वम्॰ नाकशिङ्गनी,
हरन्दोड़ी। हिं नाकिक्न्नी। गौ है चेता, ह ं चुटी।
छिक्किनीति खोके।)

ग्रहाह्नयः नवाह्नयः। राजीहेजनधंत्रः राजसंत्रः उहेजनसंत्रयः
 इति हे नामनीत्यर्थः।

## राजनिषयुः।

त्रय देवसर्वपनाम।— देवसर्वपक्षयाची बदरी रक्तमूलक:।

स्वसंषपनश्चाचा बदरा रत्तम्लकः।
सुरसर्षपनश्चेन्द्रस्तथा स्ट्यादनः स्मृतः।
सर्षपो निर्जरादिः स्थात् कुरराङ्किनैवाभिधः॥१४८॥ \*
देवसर्षपनामा तु कटूणः कफनायनः।
जन्तदोषहरो क्चो वक्तामयविशोधनः॥१५०॥

( भं देवशिरस। कं देवसिरसमेद।)

अथ लकुचनाम।-

लकुचो लिकुच: शाल: कषायी दृढ़वल्कल:।
डहु: कार्श्यय शूर्य स्थूलस्कन्धो नवाह्नय:॥१५१॥
लकुच: स्वरसे तिक्त: कषायोश्यो लघुस्तया।
कफदोषहरो दाहो मलसंग्रहदायक:॥१५२॥
(मं श्राञ्चरा। हिं वड़हर। गो डेन्नोगाळ, मान्दारगाळ।)
श्रय विकङ्गतनाम।—

विकङ्कतो व्याघ्रपादो यन्यिनः खादुकारः । कार्द्धपादो बहुफलो गोपवोग्टा सुवहुमः ॥ १५३॥ स्टुफलो दन्तकाष्ठो यज्ञीयो ब्रह्मपादपः । पिग्छरोष्टिणकः पूतः किङ्किणो च व्रिपञ्चधा॥ १५४॥ विकङ्कतोऽन्त्रमधुरः पाकेऽतिमधुरो लघुः । दीपनः कामलास्त्रघः पाचनः पित्तनाग्रनः ॥ १५५॥

<sup>\*</sup> निर्जरः त्रादियंस तथाभूतः, सर्पपस विशेषसप्दमितत्, तेन निर्जरसर्पपः दत्यर्थः।

## प्रभद्रादिवगै: ।

[ 385]

(मं गुलघोग्छो। कं इलमाणिका। तें कानवेगुचेहु। उत्॰ वदचकुि । पञ्जा॰ कुकोया। दां कग्छाद। हिं वञ्ज। गौ वोँच्, वँद्विगाक्छ।)

द्रस्यं वन्यमहीक् हा द्वयगुणाभिख्यानमुख्यानया भद्या भद्गुरिताभिधान्तरमहाभोगित्रया भाखरम् । वैद्यो वै द्यतु वर्गमेनमिखलं विद्याय वैद्यानिकः: प्रज्ञालोकविज्ञृश्वणेन सहसा खेरं गदानां गणम् ॥१५६॥\* ये व्यक्ति तृणां गदान् गुक्तरानाक्षम्य वीर्य्यासिना ये ख्यित्वापि वने गुणेन सक्जां खेनावनं तन्वते । तिषामिष महानसीममहिमा वन्याक्षनां वासभू-वृद्याणां भणितो भिषग्भिरसमो यो व्यवगीख्यया ॥१५०॥ १

इत्यमिति। - वैद्यः द्रत्यं वन्यमही तृष्टाणां ऋष्ट्रियगुणयोनीम-गुणयोरिमिख्यानमुख्या ऋनया मङ्गा मङ्ग्रितामिधान्तरमहामीगिष्यया माख्यरम् ऋखिलम् एनं वगें विज्ञाय वैज्ञानिकः सन् प्रज्ञालोकविन्नमणेन सहसा भटिति खैरं खच्छन्दं यथा तथा गदानां गणं ये वतु दूरोकरोतु।

† य द्रति।—ये व्रचाः वीर्व्यासिना त्राक्रम्य सर्जां पौड़ितानां न्रखां गुरुतरान् गदान् व्रश्वन्ति किन्दन्ति। ये वने गद्दने स्थित्वापि स्वेन गुणेन त्रवनं वनातिरिक्तं स्थानं (त्रवनीमिति वा पाठः, त्रवनीं भूमण्डलं) तन्वते व्याप्रवन्ति। त्रसीममिद्दमा व्रचवर्गास्थ्या (त्रव्र उप-लच्चणे त्रतीया) व्रचवर्गनाम्नोपलचितः तेषां वन्यासनां व्रचाणां यः एव वासभूः भिष्ठिन्भः चिकित्सकः त्रसमः निरुपमः सर्वोत्कर्षेण स्थितः द्रत्यर्थः भिष्यतः विश्वतः द संस्थितः द्रति परेणान्वयः।

#### [ 220]

### राजनिष्ययुः।

यः काश्मीरकुलोञ्चलाम्बुजवनोहंसोऽपि संसेव्यते नित्योक्षासितनोलकग्छमनसः प्रोत्याद्यमग्नश्रिया । तस्यायं नवमः कृतौ नरहरेदेगेः प्रभद्रादिको भद्रात्मन्यभिधानशेखरशिखाचूड्रामणौ संस्थितः ॥१५८॥ \* द्रति ग्रीनरहरिपण्डितविरिवते राजनिष्यो प्रभद्रादिवर्गी नवमः समाप्तः ।

# अय करवीराद्विगी:।

चतुर्धा करवीरोऽय धत्तूरितयं तया।
कोविदारोऽब्धिरर्कः स्थान्नमेरः विंग्रकस्तया॥१॥१
प्रनागस्तिलकोऽगस्यः पाटल्यौ च दिधा स्मृते।
ग्रग्रोकश्चम्मको धन्वौ केतकौ दिविधा तथा॥२॥
सिन्दूरौ च तथा जातौ सुद्गः प्रतपित्रका।
मिन्नका च चतुर्धा स्थादासन्तौ नवमिन्नका॥३॥

<sup>\*</sup> यदित। — काम्मोरकुलो ज्वलाम्बुजननी इंसोऽपि काम्मोरदेश जातोऽपि यः प्रौत्याद्यभग्निश्या प्रोत्यादिनिः त्रानन्दादिभिः त्रभग्ना परिपूर्णा या श्रोक्तया संस्वेत्यते, नित्योद्वासितनी लक्कण्यनसः तस्य नरहरेः मद्रात्मिन क्रतो श्रमिधानशेखरिश खाचूड्राम्ग्रो संस्थितः प्रभद्रा-दिकः श्रयं नवमः नर्गः संस्थितः समाप्तः द्रत्यर्थः।

<sup>†</sup> अर्कः अब्धः चतुर्ता इत्यर्थः। ययपि अव्धः सप्तसं व्यां बोधः यति तथापि उत्तरादिमेदतः अत चतुःसंव्या एव ग्राह्या।

श्रितमुक्तो हिधा यूथी कुलको मुचकुन्दकः।

कर्षणी साधवी चाथ गिष्कारी च कुन्दकः॥ ४॥

वक्रकेविकबन्धूकास्त्रिसन्धिश्च जपा तथा।

प्रोक्ता श्रमरसारी च तर्ष्युक्तानकस्त्रथा॥ ५॥

किङ्किरातोऽथ बालाख्यो भिष्टिका चोष्ट्रकाण्डिका।

तगरं दमनदन्दं तुलसी मर्क्वो हिधा॥ ६॥

श्रजेकश्च चतुर्गङ्गा-पत्री पाची च बालकः।

बर्वरो सिञ्चकापत्रः प्रोक्ताचारामधीतला॥ ०॥

श्रथ कमलपुर्द्धरीकाह्नयकोकनदानि पद्मिनी चैव।

पद्माचं च मृणालं तत्कन्दः केसरश्च तथा॥ ८॥

उत्पलकुसुदकुवलयमुत्पिलनीचाङ्मवसुमित्या।

उत्तंसनाम्नवर्गे द्रव्याख्यत्रोपदिश्चन्ते॥ ८॥

श्रथ करवीरनाम।—

करवीरो महावीरो हयमारोऽखमारकः। हयप्तः प्रतिहासस्य प्रतकुन्दोऽखरोधकः॥१०॥ हयारिवीरकः कुन्दः प्रकुन्दः खेतपुष्पकः। श्रम्थान्तकस्तयाऽखन्नो नखराह्वोऽखनायकः॥११॥ स्थलादिकुमुदः प्रोत्तो दिव्यपुष्पो हरप्रियः। # गौरीपुष्पः सिह्नपुष्पो दिकराह्वः प्रकीर्त्तितः॥१२॥१ करवीरः कटुस्तीन्त्याः कुष्ठकण्डूतिनायनः।

स्थल द्रात पदमादी यस स चासी कुसुदश्चेति एवं विग्रहे स्थल-कुसुद द्रित वोद्वयः।

<sup>†</sup> दिवराह्नः दाविंशतिसंज्ञक द्रवर्धः।

# राजनिष्टः।

व्रणात्तिविषविस्फोट-ग्रमनोऽम्बमितप्रदः ॥ १३ ॥ ( मं क्योंक, कङ्केर । कं वाक्या लिङ्गे । तें गनेक । हिं क्यों ली । गी करवी गास्त्र । )

त्रय रत्तकरवीरवाम।-

रक्तकरवीरकोऽन्धो रक्तप्रसवी गण्यकुसुमय । चण्डीकुसुम: क्र्रो भूतद्रावी रिविप्रियो सुनिभि: ॥ १४ ॥ ॥ रक्तस्तु करवीर: स्थालटुस्तीच्णो विश्रोधक: । लग्दोषव्रणकण्ड्रित-कुष्ठचारी विषापह: ॥ १५ ॥ (मं रक्तकरवीर। कं केङ्गणिलिगे। हिं लालकनेल । गौ लालकरवीगाछ।)

त्रव पीतक्षणकरवीरनामसृगाः।— पीतकरवीरकोऽन्यः पीतप्रसवः सुगन्धिकुसुमञ्च। कृष्णसुंकुष्णकुसुमञ्चतुर्विधोऽयं गुणे तुल्यः॥ १६॥

श्रध चत्तूरनाम । ( उपविषम् ) ।— †
धत्तूर: कितवो धूर्त्त उन्मत्तः कनकाह्नयः ।
श्रठो मातुलकः श्र्यामो मदनः श्रिवशेखरः ॥ १७ ॥
खर्जूष्मः काहलापुष्पः खलः कर्य्यप्रलस्त्या ।
मोहनः कलभोन्मत्तः श्रैवः सप्तदशाह्नयः ॥ १८ ॥
धत्तूरः कटुरुष्ण्य कान्तिकारी व्रणात्तिनृत् ।

- मुनिभिः सप्तिर्मामिक्पलित दत्यर्थः ।
- † धत्त्रश्रोधनम्,— "धत्त्रवीजं गोमूत्रे चतुर्व्यामोषितं पुनः। काण्डितं निस्तुषं क्रत्वा योगेषु विनियोजयेत्॥" इति।

# करवीरादिवर्गः।

[ 22 ]

लग्दोषखर्जूकर्ष्डूति ज्वरहारी भ्रमप्रदः॥ १८॥

( मं धत्त्र । कं मद्कुश्यिके । ते उन्नेत्तचेष्टु, नहुउन्नेत्त । तां कारुडमते । हिं धातुरा । गो धुतुरागाछ । )

अध क्षणाधक्रामा ।---

क्षण्यधत्त्रकः सिद्धः कनकः सचिवः ग्रिवः।
क्षण्यपुष्पो विषारातिः क्रूरधूर्त्तेष्व कोर्त्तितः॥ २०॥
( मं कालाधत्त्र। कं करियमदक्कणिके। गौ कनकधुतुरा,
कालधुतुरा।)

त्रय राजधत्तूरनाम।—

राजधत्तृरकश्वान्यो राजधृत्ती महाग्रठ:।

निस्त्रीणपुष्पको स्नान्तो राजस्वर्णः षड़ाह्नयः॥२१॥
सितनीलक्षण्यलोहितपीतप्रसवाश्व सन्ति धत्तूराः।
सामान्यगुणोपेतास्तेषु गुणाब्यलु क्षण्यकुसुमः स्थात्॥२२॥

श्रय कीविदारनाम।—

कोविदारः काञ्चनारः कुद्दानः कनकारकः।
कान्तपुष्पञ्च करकः कान्तारो यमनक्कृदः ॥ २३॥
पीतपुष्पः सुवर्णारो गिरिजः काञ्चनारकः।
युग्मपत्रो महापुष्पः स्थाचतुर्दश्रधाभिधः॥ २४॥
कोविदारः कषायः स्थाद्धंग्राही व्रणरोपणः।
दीपनः कप्रवातन्नो मूत्रकक्कृनिवर्हणः॥ २५॥
(भं काञ्चन्। कं कीचान्ने। तां कचनार। तें देवकाञ्चन।
हिं कचनारभेद। गौ रक्तकाञ्चनभेद।)

### [ 338 ]

## राजनिष्ठग्टुः।

अय अर्कनाम। ( उपविषम् )।--

श्रकी: चीरदल: पुच्छी प्रताप: चीरकाण्डक: ।
विचीरो भास्तर: चीरी खर्जूष्म: श्विष्यका: ॥ २६ ॥
भन्नन: चीरपर्णी स्थात् सिवता च विकीरण: ।
स्र्याह्म सदापुष्पो रिवरास्कीटकस्तथा।
तूलफल: श्रकफलो विंश्रतिश्व समाह्मय: ॥ २० ॥
श्रकीसु कटुरुण्यश्व वातिजद्दीपनीयक: ।
श्रोफव्रण्डर: कण्डू-कुष्ठिक्रिमिविनाशन: ॥ २८ ॥
(मं रूई। वं श्रक्के। तें जिझेटुचेटु । द्विं मन्दार, श्राकन् ।
गो श्राकन्दगाछ।)

अय शुक्षार्कनाम।—

श्रुकार्कस्तपनः खेतः प्रतापश्च सितार्कतः । सुपुष्पः शङ्करादिः स्थादस्थर्को वृत्तमिकता ॥ २८॥ खेतार्कः कटुतिक्तोष्णो मलशोधनकारकः । सूत्रक्कस्त्रास्त्रशोफार्त्ति-व्रणदोषविनाश्चनः ॥ ३०॥ (मं पायदशोकई। वं विलियश्रके। गो श्वेत श्राकन्द।)

श्रथ राजार्कनाम।—

राजार्की वसकोऽलर्की मन्दारो गणक्ष्यकः।
काष्ठीलय सदापुष्यो च्चेयोऽत्र सप्तसियतः॥ ३१॥
राजार्कः कटुतिक्तोष्यः कफमेदोविषापहः।
वातकुष्ठत्रणान् इन्ति शोफकण्डू विसर्पनुत्॥ ३२॥
(सं मन्दारः। कं मन्दारम्रकें।)

# करवीरादिवर्गः।

[ २२५ ]

त्रय श्वेतमन्दारनाम।--

खेतमन्दारकस्वन्यः पृथ्वी कुरवकः स्नृतः। दीर्घपुष्पः सितालकी दीर्घात्यर्कः रसाह्नयः॥ ३३॥ खेतमन्दारकोऽत्युष्पस्तिको मलविश्रोधनः। स्रृतक्षच्छत्रणान् इन्ति क्रिमीनत्यन्तदारुणान्॥ ३४॥ (वम्॰ श्वेतमन्दारु। कं.विश्वियमन्दारुए।)

अध नमेस्नाम।---

नमेरु: सुरपुत्राग: सुरेष्ट: सुरपर्णिका । सुरतुङ्ग्य पञ्चाह्न: पुत्रागगुणसंयुत: ॥ ३५ ॥ ( सं सुरपुत्राग । कं सुरवत्रे । गो ऋवियानाफुल । )

श्रय पलाश्रनाम।—

पलागः किंग्रुकः पणी वातपोथोऽथ याज्ञिकः ।
तिपणी वक्रपुष्पश्च पूतद्वर्षेद्मावृत्तकः ।
ब्रह्मोपनेता काष्ठद्वः पर्यायैकादम् स्मृताः ॥ ३६ ॥
पलामलु कषायोषाः क्रिमिदोषविनामनः ।
तद्दीजं पामकण्डूति-दद्वत्वग्दोषनामकत् ॥ ३० ॥
तस्य पुष्पश्च सोषाञ्च कण्ड्कुष्ठात्तिनामनम् ।
रक्तः पीतः सितो नीलः कुसुमैस्तु विभन्यते ॥ ३८ ॥
किंग्रुकैर्गुषसाम्येऽपि सितो विज्ञानदः स्मृतः ॥ ३८ ॥
(मं पलस । कं सुत्तलु । तें नोटुग । उत्० पराम्न । वम्०
खाकरो । तां परमन् । द्विं धारा, ढाक । गौ पलाम्मुला ।)

श्रय पुत्रागनाम।-

पुनागः पुरुषसुङ्गः पुनामा पाटलः पुमान्। रा—१५

# राजनिष्ठरः।

रक्तपुष्पो रक्तरेश्वरक्षोऽयं नवाह्नयः ॥ ४० ॥
पुत्रागो मधुरः श्रोतः सुगन्धः पित्तनाशक्तत् ।
भूतिवद्रावणश्चैव देवतानां प्रसादनः ॥ ४१ ॥
(भं पुत्राग । कं सुरहोत्तेयभेद । ते सुरपोत्तचेष्टु । उत्० पुर्या ।
वम्० जदि । तां पित्रय । हिं सुखतानचम्पत ।
गौ राजचम्पत ।)

अय तिलकनाम।-

तिलको विशेषकः स्यासुखमण्डनकञ्च पुण्डूकः पुण्डूः।
स्थिरपुष्यः किन्नरुष्ठो दग्धरुष्ठो रेचकञ्च स्रतजीवी॥ ४२॥
तरुणीकटाचकामी वासन्तः सुन्दरोऽभीष्टः।
भालविभूषणसंज्ञो विज्ञेयः पञ्चदशनामा॥ ४३॥
तिलको मधुरः स्निग्धो वातिपत्तकफापहः।
बलपुष्टिकरो हृद्यो लघुर्मेदोविवर्षनः॥ ४४॥

(गौ महयाफुल।)

श्रघ तिलकत्वरगुषाः।—

तिलकत्वक् कषायोश्या पुंस्तन्नी दन्तदोषनुत्। क्रिमिशोफव्रणान् इन्ति रक्तदोषविनाशनी ॥ ४५॥

त्रथ त्रगस्यनाम।---

त्रगस्यः ग्रीघ्रप्रयः स्थात् त्रगस्तिस्तु मुनिद्रमः।
व्रणारिदीर्घफलको वक्रप्रयः सुरिप्रयः॥ ४६॥
सितपीतनीललोहितकुसुमविग्रेषाच्चतुर्विधोऽगस्तिः।
मधुरित्रिशिरस्तिदोषश्रमकासविनाग्रनश्च भूतघः॥ ४७॥

# करवीरादिवर्ः।

[ 220]

श्रगस्थं शिशिरं गौलां तिदीष इं स्थाप हम्। बलासकासवैवर्ष्य-सूत घ्रस्र बलाप हम्॥ ४८॥ (मंत्रगस्ता, हदगा। तें लह्नयविसे चेष्टु। हिंहितया, बहत् वौलसरौ। तांहितिया। कंत्रगसेय मरत्। गौवक फुला।)

अघ पाटलीनाम।-

पाटली तास्तपुष्पी च कुश्विका रत्तपुष्पिका।
वसन्तटूती चामोघा खाली च विटवह्नभा।
स्थिरगन्धाऽस्बुवासी च कालव्वन्तीन्दुभूह्वया॥ ४८॥ \*
पाटली तु रसे तिक्ता कटूष्णा कफवातिजत्।
श्रोफाधानविमिष्वास-श्रमनी सिन्नपातनुत्॥ ५०॥
(मं पाडली। कं डादरि। तें कलगोस, कलिगोटुचेटु। उत्॰
पाटुड़ि। तां पद्रि। हिं पटु, पाड़री। गो पासला।)

त्रथ सितपाटिलनाम।—
सितपाटिलका चान्याः सितकुम्भी फलेक्हा।
सिता मोघा कुवैराची सिताह्वा काष्ठपाटला।
पाटली धवला प्रोक्ता जेया वसुमिताह्वया॥ ५१॥ किस्तपाटिलका तिक्ता गुरूष्णा वातदोषिजित्।
विमिष्टिकाकफन्नी च स्रमग्रोषापहारिका॥ ५२॥
(मं श्वेतपाड़िला। कं विलियहादिर। गौ श्वेतपाक्ल।)

श्रय त्रशोकनाम।—

श्रमोकः मोकनामः स्यादिमोको वञ्जलहुमः।

- इन्दुभूह्वया एकादश्रसंज्ञिका द्रत्यर्थः।
- † वसुमिताह्वया ऋषपर्य्याया दत्यधः।

## [२२८]

# राजनिष्युः।

मधुपुष्पोऽपश्चोकश्च कद्धे लि: केलिकस्तथा ॥ ५३ ॥
रक्तपत्तवकश्चितो विचित्तः कर्णपूरकः ।
सुभगः स्मराधिवासो दोषहारी प्रपत्तवः ॥ ५४ ॥
रागी तक्हें मपुष्पो रामावामाङ्गिघातकः ।
पिण्डीपुष्पो नटश्चेव पत्तवद्वृद्धिविंश्यतिः ॥ ५५ ॥
श्रमोकः शिश्चिरो हृद्यः पित्तदाहश्रमापहः ।
गुल्मशूलोदराधान-नाश्चनः क्रिसिकारकः ॥ ५६ ॥
(मं, कं, गौ, अशोक । हिं अशोगौ।)

अध चम्पकनाम।--

चम्पतः खर्णपुष्पश्च चाम्पेयः श्रीतलक्कृदः।
सुभगो सङ्गमोही च श्रीतलो भ्रमरातिथिः॥ ५०॥
सुरिमिदीपपुष्पश्च स्थिरगन्धोऽतिगन्धतः।
स्थिरपुष्पो हेमपुष्पः पीतपुष्पस्तथाऽपरः।
हेमाहः सुकुमारसु वनदीपोऽष्टभूह्मयः॥ ५८॥
चम्पतः कटुकस्तितः शिशिरो दाहनाश्यनः।
कुष्ठकण्डूत्रणहरो गुणाब्यो राजचम्पतः॥ ६०॥
(हं, मं, चम्पा। कं चम्पगे। गौ चंपाफुल।)

त्रय चुद्रचम्पकनाम।—

चुद्रादिचम्पकस्वन्यः स ज्ञेयो नागचम्पकः। फणिचम्पकनागाञ्चसम्पको वनजः शराः॥ ६१॥

त्रष्टभूह्वयः त्रष्टादशाख्यः।

# करवीरादिवर्गः।

[ २२८ ]

वनचम्पनः नट्र्ष्णो वातकप्रध्वंसनी वर्षः। चच्चष्यो व्रण्रोपी विज्ञस्तश्चं नरोति योगगुणात्॥ ६२॥ (मं नागिणि। नं नागवम्पग्। गौ नागेश्वरचापा।)

श्रय बजुलनाम।-

बकुलसु सीधुगन्धः स्त्रीमुखमधुदोह्नस्य मधुपुष्यः।
सुरिभर्भमरानन्दः स्थिरकुसुमः केसरय शारदिकः॥ ६३॥
करकः सीधुसंज्ञसु विशारदो गूढ्पुष्पको धन्वी।
मदनो मद्यामोदिखरपुष्पश्चेति सप्तदश्यं ज्ञः॥ ६४॥
बकुलः शीतलो हृद्यो विषदीषविनाशनः।
मधुर्य कषायय मदाच्यो हर्यदायकः॥ ६५॥
बकुलकुसुमं च रुचं चीराच्यं सुरिभ शीतलं सधुरम्।
स्निग्धकषायं कथितं मलसंग्रहकारकं चैव॥ ६६॥
(तं पोगड़्वेटु। उत्० वजड़कड़ि। वम्० वज्जलो। दां घोलसरो।
तां मोगर्दम्। हिं मौलसरो। गौ वक्चलफुन।)

अय श्वेतकेतकीनाम।-

केतकी तोन्सापुष्या च विफला धूलिपुष्यिका।

मध्या कर्ण्टदला चैव शिविद्दष्टा न्यपिया॥ ६०॥

क्रकचा दीर्घपत्रा च स्थिरगन्धा तु पांश्रला।

गन्धपुष्येन्द्रकलिका दलपुष्या तिपञ्चधा॥ ६८॥

त्रथ खर्णकेतकोनाम।— खर्णादि केतको लन्धा श्रेया सा हेमकेतको। कनकप्रसवा प्रयो हैसो छिन्नक्हा तथा। विष्टक्हा खर्णपुष्यो कामखद्भदना च सा॥ ६८॥

## राजनिघण्टुः।

केतकी कुसुमं वर्ण्यं केग्रदी गैन्ध्यनाग्रनम् । हिमामं मदनी साद-वर्षनं सी स्थाकारि च ॥ ७० ॥ तस्या: स्तनीऽतिभिग्रियः कटुः पित्तकफांपहः । स्सायनकरो बस्यो देहदार्ध्यं करः परः ॥ ७१ ॥

( मं कीतको । कं कीदगे । तें मोगखिचे हु । हिं कीवड़ा । गौ कीया फुल । )

## अथ सिन्द्रौनाम।-

सिन्दूरी वीरपुष्पश्च त्यपुष्पी करच्छदः।
सिन्दूरपुष्पी शोणादि-पुष्पी षड़ाह्मयः स्मृतः॥ ७२॥
सिन्दूरी कटुका तिक्ता कषाया स्नेषवातिजत्।
श्रिरोऽर्त्तिश्रमनी भूत-नाशा चण्डीप्रिया भवेत्॥ ७३॥
(मं शेन्द्रो। कं सिन्दूरो। हिं सेन्द्रिया।)

#### अय जातीनान ।-

जातो सुरिभगन्था स्थात् सुमना तु सुरिपया।
चेतको सुकुमारा तु सन्ध्यापुष्पी मनोहरा॥ ७४॥
राजपुत्री मनोज्ञा च मालतो तैलभाविनो।
जनेष्टा हृद्यगन्धा च नामान्यस्थाञ्चतुर्देश॥ ७५॥
मालतो शीतितज्ञा स्थात् कफन्नो मुखपाकनुत्।
सुद्धनं नेत्ररोगन्नं व्रणविस्फोटकुष्ठनुत्॥ ७६॥

(मं जाई। वं जाजि। हिं चम्बेखी, खर्यंजाती। गी चामेखी, माखती।)

# करवीरादिवर्गः।

[ २३१ ]

ग्रथ मुद्ररनाम।—

सुद्गरी गन्धसारस्तु सप्तप्तय कर्दमी।

वत्तपुष्पोऽतिगन्धय गन्धराजो विटप्रियः।

गैयप्रियो जनेष्टय स्रगेष्टो सद्सिस्मतः॥ ७०॥

सुद्गरो मधुरः भीतः सुरभिः सौख्यदायकः।

सनोज्ञो मधुपानन्द-कारी पित्तप्रकोपहृत्॥ ७८॥

(गौ काठमहिकाः ; गन्धराज द्वित मतान्तरम्।)

त्रय प्रतपतिकानाम।—

श्रतपत्नी तु सुमना सुशीता शिववसभा । सीम्यगन्धा श्रतदला सुद्धत्ता श्रतपत्निका ॥ ७८ ॥ श्रतपत्नी हिमा तिज्ञा काषाया सुष्ठनाश्रनीं। सुखस्फोटहरा क्चा सुरिभः पित्तदाहनुत्॥ ८०॥ (मं सेवतो। कं सेम्बतिगे। तें चेमण्डिचेटु। हिं सेवती, गोलाव। गौ सेउती; श्रेत वा पाटलवर्ष गोलाप

इति के चित्।)

त्रय महिकानाम।-

सिक्का भद्रविह्वी तु गौरी च वनचिन्द्रिका।
श्रीतभीकः प्रिया सौग्या नारोष्टा गिरिजा सिता।
सिक्की च दमयन्ती च चिन्द्रिका मोदिनी मनुः ॥ ८१॥
सिक्किता कटुतिक्ता स्थाचचुष्याः सुख्याकनुत्।
कुष्ठिवस्फोटकग्ड्रित-विषव्रणहरा परा॥ ८२॥
(सं विद्यमोगरा। सं बिद्यमित्तिगे। ते महेचेटुः गो मिक्काफुछ।)

## राजनिषय्टुः

#### अय विद्विकानाम।-

विज्ञका मोदिनी चान्या वटपता कुमारिका।
सुगन्धाच्या वृत्तपुष्पा सुक्ताभा वृत्तमिज्ञका॥ ८३॥
निव्ररोगापहन्त्री स्थात् कट्रणा वृत्तमिज्ञका।
व्रणन्नी गन्धबद्दला दारयत्यास्यजान् गदान्॥ ८४॥
(मं वाटोगरें। कं इन्दुभिमिज्ञिगे। वम्॰ वटमोगरा। गो वेलफ्रल।)

#### अध वार्षिकानाम।--

वार्षिका त्रिपुटा त्रास्ता सुरूपा सुलभा प्रिया।
श्रीवत्ती ष्रट्पदानन्दा मुक्तबन्धा नवाभिधा ॥ ८५ ॥
वार्षिका श्रिश्चरा द्वया सुगन्धिः पित्तनाशनी ।
कापवातविषस्प्रोट-क्रिमिदोषामनाशनी ॥ ८६ ॥
सा दीर्घवर्त्तुं सुप्य-विश्वेषादनेकनिर्देशा।
(तें साटदीमीगराचामेद्व।)

## त्रय कस्तूरीमहिकानाम।—

स्रगमदवासा लन्या कस्तुरीमिक्कका च्चेया ॥ ८७ ॥ प्रातिकेक्करेका सायोद्भिदुराऽपि सिक्कका काऽपि । वनमिक्कका नु सा स्थादास्फोता किन्तु समगुणोपेता ॥ ८८ ॥

#### श्रथ वासन्तीनाम।-

वासन्ती प्रहसन्ती वसन्तजा माधवी महाजाति:। श्रीतसहा मधुबहला वसन्तदूती च वसुनान्ती॥ ८८॥ वासन्ती शिशिरा हृद्या सुरिभ: श्रमहारिणी। धिसासासोदिनो सन्द-सदनोन्साददायिनो ॥ ८०॥ मं विरवन्ति । कं विरवन्तिगे । हिं वसन्तीनेवारि ।)

त्रघ नवसिक्षका।—
नवसिकाऽितसोदा ग्रेषो ग्रीषोद्गवा च सा।
सप्तला सुकुमारा च सुरभी स्चिमिक्षका।
सुगन्धा प्रिखरिणी स्थानेवाली चेन्दुभूह्वया॥ ८.१॥
नवसिकाऽितग्रेत्या सुरभि: सर्वरोगहृत्॥ ८२॥
(मं रोमाली। कं विरवन्तिभेदा। वम्॰ मीगरा। गौ वासन्ती।
"नयाली" "सेउती" "नेवारी" दित च लोके।)

त्रध त्रतिसुक्तनाम। (नवमहिकामेदः)।—
सैवातिसुक्तकाख्या पुण्डुकनाम्त्री च काचिदुक्ताऽन्या।
सदनी श्रमरानन्दा कामकान्ता च पञ्चाख्या॥ ८३॥
त्रातमुक्तः कषायः ख्याच्छिश्चिरः श्रमनाश्चनः।
पित्तदाष्ठचरोन्माद-हिक्काच्छिदिनिवारणः॥ ८४॥
(सं, तें, रायविरवन्ते। गौ रायवेख; माधनीलता इति केचित्।)

ऋष यूथिकानाम .—

यूथिका गणिकाऽम्बष्ठा मागधी बालपुष्पिका। मोदनी बहुगन्धा च स्टङ्गानन्दा गजाह्वया॥ ८५॥ # (मं पाएटरी जूई। कं विलियमोहे। हिं यूही। गौ युँद।)

त्रय सुवर्धयूधिकानामगुणाः ।— त्रन्या यूथी सुवर्णाह्ना सुगन्धा हेमयूथिका । युवतीष्टा व्यक्तगन्धा शिखण्डी नागपुष्पिका ॥ ८६ ॥

<sup>•</sup> गजाद्वया त्रष्टपर्यायका दत्यधः।

### राजनिघएः।

हिरणी पीतयूथी च पीतिका कनकप्रभा।

मनीहरा च गन्धाच्या प्रोज्ञा त्रयोदशाह्वया॥ ८०॥

यूथिकायुगलं खादु शिशिरं शर्करार्त्तिनुत्।

पित्तदाहृद्धषाहारि नानालग्दोषनाशनम्॥ ८८॥

(मं सोने जुई। कं यरड्नोडे। गौ खर्णयुँद।)

श्रघ साधारणयू विकानामगुणाः ।—
सितपोतनीलमेचकनान्त्रः कु सुमेन यू यिकाः कियताः ।
तिक्ताहिमपित्तकपामयञ्चरम्नाे व्रणादिदोषहराः ॥ ८८ ॥
सर्वासां यू यिकानां तु रसवौर्यादिसाम्यता ।
सुक्ष्णं तु सुगन्धान्त्रं स्वर्णयूष्या विभीषतः ॥ १०० ॥

त्रय कुछनामगुगाः।—

कुननो भद्रतक्षो वृत्तपुष्पोऽतिकेसर:।
महासह: काएकाच्य: खर्नौऽलिकुलसङ्कुल:॥१०१॥
कुनन: सुरभि: शोतो रक्तपित्तकणपृष्ठ:।

पुष्पंतु श्रीतलं वर्ष्यं दाइम्नं वातिपत्तिजित् ॥ १०२ ॥ (मं कार्ष्ये भेवतो । कुछः दति कोङ्क्यें प्रसिद्धः । हिं, गौ, कूजा ।)

त्रथ सुचकुन्दनामगुणाः।—

मुचकुन्दो बहुपतः सुदलो हरिवल्लभः सुपुष्पञ्च।

अर्घाही लच्मणको रत्तप्रसवस वसुनामा ॥ १०३ ॥
मुचकुन्दः कट्रितितः कफकासिवनामनस क्याउदोषहरः ।
व्यन्दोषमोफममनो व्रणपामाविनामनसेव ॥ १०४ ॥
(मुचकुन्दः इतिःकोङ्गणे प्रसिद्धः । ते लोलग्र । तां टब्डो । उत्॰
वदलो । हिं वेचकन्द । गौ मुचकुन्दफ्रल, कनकर्षापाफुल । )

अय कर्योनामगुगाः।—

कर्णो ग्रीषापुष्पी स्याद्रत्तपुष्पी च वार्णो। राजप्रिया राजपुष्पी सूच्मा च ब्रह्मचारिणी॥ १०५॥ कर्णी कटुतित्तोष्णा कप्रमारुतनाभिनी। ग्राक्षानविषविच्छर्दि-जढ़र्डुम्बासचारिणी॥ १०६॥

(करवीक्यो दति कोङ्ग्ये प्रसिद्धा।)

त्रय काधवीनामगुगाः।-

साधवी चन्द्रवल्ली च सुगन्धा भ्रमरोत्सवा।
स्टङ्गप्रिया सद्रवता सूसिमण्डपसूषणी ॥ १००।
साधवी कट्का तिका कषाया सदगन्धिका।
पित्तकासत्रणान् चन्ति दाइग्रोषविनाशिनी ॥ १०८॥
(मं नाधवो। कं इन्द्रगीचे। तां गुरुविन्द। तें माधवतोगे।
द्रां पुळ्वल गुरिविन्द। गौ माधवोलतार फुल।)

त्रघ गणिकारीनामगुणाः।-

गणिकारी काञ्चनिका काञ्चनपुष्पी वसन्तदूती च।
गस्वजुसुमाऽतिमोदा वासन्ती सदमादिनी चैव॥ १०८॥
गणिकारी सुरिक्षतरा विदोषणमनी च दाइण्णोषहरा।
कामक्रीड़ाऽऽड़म्बरणस्वरहरचापलप्रसरा॥ ११०॥
(मंगगिरी। गणिकारी इति कोङ्ग्णे प्रसिद्धा। गौ वासन्तीफुल।)

त्रय कुन्दनामगुगाः।-

कुन्दस्तु मकरन्दश्च महामोदो मनोहरः। मुक्तापुष्यः सदापुष्पस्तारपुष्पोऽदृहासकः।

### राजनिषयुः।

दमनो वनहास समोज्ञो रुट्रसम्मतः ॥ १११॥ कुन्दोऽतिमधुरः श्रोतः कषायः कैश्यभावनः । कफिपत्तहर धैव सरो दीपनपाचनः ॥ ११२॥ (मं कुन्दे। कंसुरगि। तें मोह्न। गौ कुँद्फुल।)

त्रथ वकनामगुषाः।—

वकः पाग्रपतः ग्रैवः शिविष्डिश्च सुव्रतः । वसुकश्च शिवाङ्गश्च शिवेष्टः क्रमपूरकः । शिवमक्की शिवाङ्कादः शास्त्रवो रिवसिम्मतः ॥ ११३॥ \* वकोऽतिशिशिरस्तिको सधुरो सधुगन्धकः । पित्तदाइकपञ्चास-त्रमहारी च दीपनः ॥ ११४॥

(मं बागौति। कं वगेटा हु। वम् ० वुका।)

त्रघ केविकानामगुगाः।—

किविका किवा से क्षारिर्नृपवस्था।
स्टब्स्मारी सहागन्धा राजकन्याऽलिसोहिनी॥११५॥
किविका सधुरा श्रीता दाहिपत्तयमापहा।
वातस्रेषरजां हन्त्री पित्तक्हिदिविनाशिनी॥११६॥

( केरव इति कोङ्ग्ये प्रसिद्धा । )

श्रथ वन्धूकनामगुगाः।— वन्धूको बन्धुजीवः स्थादोष्ठपुष्पोऽर्कवन्नभः। मध्यन्दिनो रक्तपुष्पो रागपुष्पो हरिप्रियः॥ ११७॥

रविसिमातः हाद्याख्यकः ।

श्रसितसितपीतलोहितपुष्पविश्रेषाञ्चतुर्विधो बन्धूकः । ज्वरहारी विविधग्रहिपशाचश्रमनः प्रसादनः सवितुः स्थात्॥११८ ( मं बान्दुजा । कं बन्दुवे । हिं दोपरिया, गेजुलिया । गो बाँधुलिफ़ल, बाँधुनो, दोपाटी । )

त्रय तिसन्धिनामगुषाः।—

तिसन्धिः सान्ध्यकुसुमा सन्धिवज्ञी सदाफला।
तिसन्ध्यकुसुमा कान्ता सुकुमारा चं सन्धिजा॥ ११८॥
तिसन्धिस्तिविधा ज्ञेया रत्ता चान्धा सिताऽसिता।
कफ्तकासहरा क्चा त्वग्दोष्रममनी परा॥ १२०॥
(मं तिसन्धि। कं तिसङ्गि। गौ क्षणकलि, सन्धामणि।)

त्रघ जपानामगुखाः।—

जपाख्या ग्रोड्रकाख्या च रक्तपुष्पी जवा च सा।
ग्रकंप्रिया रक्तपुष्पी प्रातिका हरिवल्लभा॥ १२१॥
जपा तु कटुक्ष्णा स्थादिन्द्रलुप्तकनामकत्।
विच्छदिजन्तुजननी स्थाराधनसाधनी॥ १२२॥
(मं जासविन्द। कं दासनल। हिं वोड्इल। गौ

जवाफ़ुल । )

त्रघ समरारिनामगुणाः।-

भ्रमरारिर्भृङ्गमारी सङ्गारिर्भांसपुष्पिका। कुष्ठारिर्भ्यमरी चैव च्रेया यष्टिलता सुनि:॥ १२३॥ \* तिक्ता भ्रमरमारी स्थाद्वातन्नेषज्वरापद्वा।

<sup>\*</sup> मुनिः सप्तपर्याया दत्यधः।

### [२३८]

## राजनिघण्टुः।

श्रोफकण्डूति इष्ट्री तणदोषास्थिदोषतुत्॥ १२४॥ (स्वनरनारौ इति मालवे प्रसिद्धा।)

अय तक्योनामगुगाः।—

तक्षी सहा कुमारी गन्धाच्या चाक्केसरा खङ्गेष्टा।
रामतक्षी तु सुदला बहुपत्रा खङ्गवल्लभा च दशाह्वा॥ १२५॥
तक्षी शिश्ररा स्निन्धा पित्तदाहज्वरापहा।
मधुरा सुखपाकन्नी तृष्णाविक्क्वदिवारिणी॥ १२६॥
(मं तरखी। वं चेखडे। गौ सं उतौ।)

श्रय राजतक्यीनामगुषाः।—

महती तु राजतरुणी महासहा वर्ष्णपुष्पकीऽस्तानः ।

श्रमिलातकः सुपुष्पः सुवर्णपुष्पश्च सप्ताहः । १२०॥

विद्येया राजतरुणी कषाया कफकारिणी ।

चत्तुष्या हर्षदा हृद्या सुरिभः सुरविक्षमा॥ १२८॥

(मं राजतरुणो । कं हिरियचेम्बर्ड । गौ वह सैँ जती।)

अध रक्तास्ताननामगुषा: |---

श्रथ रक्ताम्बानः स्थाद्रक्तसहास्थः स चापिरम्बानः ।
रक्तामलान्तकोऽपि च रक्तप्रसवसं कुरवकसैव ॥ १२८ ॥
रामालिङ्गनकामो रागप्रसवो मधूल्यवः प्रसवः ।
सुमगो भ्रमरानन्दः स्थादित्थयं पचचन्द्रमितः ॥ १३० ॥ \*
उष्णः कटुः कुरवको वातामयशोफनाशनो च्वरनृत् ।

<sup>\*</sup> पचचन्द्रमितः द्वाद्रमसंज्ञकः।

श्राधानश्रूलकासम्बासात्तिप्रश्मनो वर्ष्धः ॥ १३१ ॥ ( मं वनभाख । कं वणदगिष्डु । हिं खाल्कटसरैया । गौ रक्तभाटी । )

त्रय किङ्किरातनामगुषाः।—

पीतः स किङ्किरातः पीताम्हानः कुरण्टकः कनकः।
पीतकुरवः सुपीतः स पीतकुसुसश्च सप्तसंच्चकः स्थात्॥ १३२॥
किङ्किरातः कषायोष्णस्तिकश्च कप्पवातिजत्।
दोपनः शोपकण्डूति-रक्तत्वग्दोषनाश्यनः॥ १३३॥
(मं पौबलागोरटा। कं होवणदगोरिट। ते कींड्गौगु। हिं
कटसरैया। गौ पौतकाटि, कीटाकाटी।)

श्रय नीलपुष्पानामगुषाः।—

नीलपुष्पा तु सा दासी नीलाग्ज्ञानस्तु छादनः।
बाला चार्त्तगला चैव नीलपुष्पा च षड्विधा॥ १३४॥
श्रार्त्तगला कटुस्तिज्ञा कफसाक्तश्चलत्।
कण्डू कुष्ठव्रणान् चिन्त शोफल्वग्दोषनाश्चनी॥ १३५॥
(मं कालाकोराण्टा। कं करियगोरटे। गौ नीलमाँटी।)

अध भिष्टिकानामगुर्थाः।—

कर्यकरको भिक्यो सा वन्यसच्चरी तु सा पीता। श्रीणी कुरवकनान्त्री कर्य्यकिनी श्रीणभिक्तिका चैव ॥१३६॥ साइन्या तु नीलभिक्यो नीलकुरक्य नीलकुसुमा च। बाणी बाणा दासी कर्य्यार्त्रगला च सप्तसंज्ञा स्यात्॥ १३०॥ भिक्तिकाः कटुकास्तिका दन्तामयशान्तिदास श्रूबन्नाः।

# [ 280]

# राजनिषयुः ।

वातकप्रशोपकासलग्दोषिवनाश्रकारिखः ॥ १३८॥ (मं तिन्हिकोराखे। वं सुक्सुइगोरिटेगहु। गौ कुलुकाँटो।)

ष्य उद्देवाखीनामगुगाः।—
उद्देवाखी रत्तपुष्पी च्रेया करभकाण्डिका।
रत्ता लोहितपुष्पी च वर्णपुष्पी षड़ाह्वया॥ १३८॥
उद्देवाग्डी तु तिक्तीष्णा क्चा हृद्रोगहारिणी।
तदीजं सधुरं ग्रीतं वृष्यं सन्तर्पणं स्मृतम्॥ १४०॥
(सं उटांटी। कं कावना। तें उटकटारा। गो उटकांटा।)

श्रथ तगरनामगुगाः।—
तगरं कुटिलं वक्तं विनम्नं कुञ्चितं नतम्।
श्रठञ्च नहुषाख्यञ्च दद्गुहस्तञ्च वर्हणम्॥ १४१॥
पिण्होतगरकं चैव पार्थिवं राजहर्षणम्।
कालानुसारकं चत्रं दोनं जिद्धं मुनीन्दुधा॥ १४२॥ \*
तगरं श्रोतलं तित्तं दृष्टिदोषविनाश्यनम्।
विषात्तिश्यमनं पथ्यं भूतोन्धादभयापहम्॥ १४३॥
(पिण्डोतगर इति कोङ्ग्णे प्रसिद्धम्। तें नन्दिवर्ष्ठनचेद्दु, गन्धितगरपादेकाः; श्रिजलोक्षोप्।)

[ इति पुष्पाणि । ]

श्रथ दमननामगुणाः।— श्रथ दमनकासु दमनो दान्तो गन्धोत्वाटो मुनिर्जटितः। दण्डो च पाण्ड्रागो ब्रह्मजटा पुण्ड्रीकश्र॥ १४४॥

<sup>\*</sup> सुनौन्द्रधा सप्तद्रश्रविधा।

तापसपतः पत्नी पिनत्नको देनशेखरसैन।
कुलपत्नस निनेतस्तपस्तिपत्नस सप्तधात्नीकः ॥ १४५॥ \*
दमनः श्रीतलतिक्तः कषायकठुकस कुष्ठदोषहरः।
हन्दितिदोषश्मनो निषिनस्कोटनिकारहरणः स्थात्॥ १४६॥
(मं, हिं, दन्या। पञ्जा० दोखा। गौ दोना।)
श्रध वन्यदमननामगुषाः।—

श्रन्यस वन्यदमनो वनादिनामा च दमनपर्याय: । १ विश्व सिक्स सनकारी बलदायी चामदोषहारी च ॥ १४७॥

(मं राखदवसा। कं कादवना।) अय तुस्तीनामग्याः।—

तुलसी सुभगा तीव्रा पावनी विष्णुवल्लभा।
सुरेन्या सुरसा च्रेया कायस्या सुरदुन्दुभी ॥ १४८ ॥
सुरिभवंडुपत्री च मञ्जरी सा इरिप्रिया।
च्रिपेतराचसी स्थामा गौरी तिद्रशमञ्जरी।
भूतन्नी पूतपत्री च च्रेया चैकोनविंग्रति: ॥ १४८ ॥
तुलसी कट्तिक्तोष्णा सुरिभ: स्रेष्मवातिज्ञत्।
जन्तुभूतिक्रिमिहरा रुचिल्लद्वात्रशन्तिल्लत् ॥ १५० ॥
(मं तुलसोचेमाड़। तें क्रुष्ण, गग्गेश्चेट्ट, इयुलसी, तुलसोचेट्टु।
तां तुलग्री। दां तुलसी। वम्० तुलस। चिं वरख्डा,

तुलसी। गौ तुलसी।)

<sup>\*</sup> सप्तभावीकः सप्त, भावी पृथिवी, एकः सप्तद्भाख्य दत्यर्थः।

<sup>†</sup> वनादिनामा दमनपर्याय दत्यसायमेव पिष्डितार्थी यत् हमनपर्याये ये ये प्रब्दाः उत्ताः तेषां पूर्वतः वन इति प्रब्दं संयोज्य वन्यदमनपर्यायः बोद्धव्यः।

## [ 282]

# राजनिष्युः।

त्रय तुलसीसाधारयानामगुखाः ।—
क्राच्या तु क्राच्यतुलसी खेता लच्छीः सिताह्यया ।
कासवातिक्रसिविध-भूतापहारिणी पूता ॥ १५१ ॥
(मं दोन्हीतुलसी । कं एरडतुलसी । गी कालतुलसी, ग्रादातुलसी । )

अय नस्वनामगुवाः।-

मक्वः खरपत्नस्तु गन्धपत्नः फिणिक्मकः ।
बहुवीर्थः ग्रीतलकः सराह्मस्र समीरणः ॥ १५२ ॥
जस्बीरः प्रस्वकुसुमो न्नेयो मक्वकस्तया ।
श्वाजन्मस्रिमपत्नो मरीचस्र नयोद्ग्र ॥ १५३ ॥
हिधा मक्वकः प्रोत्तो खेतसैव सितेतरः ।
खेतो भेषजकार्य्यं स्थादपरः ग्रिवपूजने ॥ १५४ ॥
मक्वः कटुतित्तोष्णः क्रमिकुष्ठविनाग्रनः ।
विड्बन्धाभानग्रूलम्नो मान्यत्वग्दोषनाग्रनः ॥ १५५ ॥
हिसं मक्वा । गौ मक्याफ्रकेर गाकः, सगन्धत्वसीविश्रेष ।)
श्रम्य श्र्रजंकनाम ।—

श्रजिक: चुद्रतुलसी चुद्रपणी सुखार्जिक: । उग्रगन्धश्र जस्बीर: कुठिरश्र कठिष्क्षर: ॥ १५६॥ (मं श्राज्वला । कं कगीर्रेले । तें तह्वग्रजीरचेट्टुं । तां गर्गेर । हिं वावरी । गी वाबुदतुलसी । )

त्रय सिताजेकनाम।-

सितार्जनस्तु वैकुग्हो वटपत्रः कुठिरकः। जम्बीरो गन्धबद्धलः सुमुखः कटुपत्रकः॥ १५०॥ (मं पाग्ढरा म्राजवला। हिं म्रेताज्बला। गौ कोटम्रेततुलसी।)

# करवीरादिवर्गः।

[ 383]

त्रय कृषाः जैवनाम ।--

किष्णार्जिकः कालमालो मालूकः किष्णमालुकः। स्थात् किष्णमिक्किना प्रोक्ता गरम्नो वनवर्षरः॥ १५८॥ (मं कालाश्राजवला। कं करियकगोरले। गो कालवनवावुद्दतलसी।)

अय विविधार्जकागुगाः।—

तयोऽर्जना कट्रणाः खुः लफवातासयापहाः। नित्रासयहरा रुचाः सुखप्रसवनारकाः॥ १५८॥

श्रथ वनवर्वरिकानामगुणाः।--

वनवर्वरिकाऽन्या तु सुगन्धिः सुप्रसन्नकः।
दोषोत्क्रोशो विषष्मश्च सुसुखः स्ट्यप्रव्रकः।
निद्रालुः शोफहारी च सुवक्रश्च दशाह्वयः॥ १६०॥
वनवर्वरिका चोष्णा सुगन्धा कटुका च सा।
पिशाचवान्तिभृतन्नी घ्राणसन्तर्पणी परा॥ १६१॥
(मं आजबलाभेड़। कं सुगन्धियज्ञरा। गो वनवावुदत्त्वसी।)

क्ष गङ्गापत्रीनामगुगाः।-

गङ्गापत्री तु पत्री स्थात् सुगन्धा गन्धपतिका।
गङ्गापची कट्रणा च वातजिद्वणरोपणी॥ १६२॥
(मं गङ्गावती। कं बहुगान्धारी। गो पचापाता।)

त्रष्ट पाचीनामगुखाः।-

पाची मरकतपत्री इरितलता इरितपत्रिका पत्नी। सुरभिर्मेक्षारिष्टा गारुव्यतपत्रिका चैव॥ १६३॥

# [ 288]

# राजनिष्यः!!

पाची कट्रितकोश्या सकषाया वातदोषहन्त्री च।
ग्रहभूतिकारकारी लग्दोषप्रशमनी व्रणेषु हिता॥१६४॥
(मं पाचि। कं पचे।)

त्रघ वालकनामगुषाः।—

बालकं वारिपर्यायेककं क्रीवेरकं तथा।
केश्रं वजमुदीच्यच्च पिङ्गच्च ललनाप्रियम्।
बालच्च कुन्तलोग्रोरं कचामोदं ग्रग्रोन्दुधा॥ १६५॥ \*
बालकं ग्रीतलं तिक्तं पित्तवान्तित्वषापहम्।
ज्वरकुष्ठातिसारम्नं केश्रं खित्रत्रणापनुत्॥ १६६॥
(मं करम्बालु। कं मुख्डिवाल। हिं मुगम्बवाला। गौ गम्बवाला।)

श्रघ वर्वरनामगुणाः ।— वर्वरः सुमुखश्चैव गरघः क्षष्णवर्वरः । सुकन्दनो गन्धपत्रः पूतगन्धः सुरार्ह्वतः ॥ १६७ ॥ वर्वरः कटुकोष्णश्च सुगन्धिर्वान्तिनाधनः । विमर्पविषविध्वंसी त्वग्दोषधमनस्तथा ॥ १६८ ॥

( हिं कालीवावरी। गी कालवावुद।)
अध सुरपर्धनामग्याः।—

सुरपर्णं देवपर्णं वीरपर्णं सुगन्धिकम् ।
मिश्चपत्रं सूद्धापत्रं देवाहें गन्धपत्रकम् ॥ १६८ ॥
कट्रणां सुरपर्णञ्च क्रिमिम्बासबलासिजत् ।
दीपनं कफवातम्नं वर्ष्यं बालिहतं तथा ॥ १७०॥
(मं सुरप्रिं। कं मिश्चपत्रे। गौ पुनागमेद ।)

प्रश्नीन्दुधा एकाद्यसंज्ञाविशिष्टा द्रव्यधः।

अय आरामग्रीतलानामगुणाः।-

श्वारामग्रीतला नन्दा ग्रीतला सा सुनन्दिनी।
रामा चैव महानन्दा गन्धान्धारामग्रीतला ॥ १७१ ॥
श्वारामग्रीतला तिक्ता ग्रीतला पित्तहारिणी।
दाहग्रीषप्रशमनी विस्फोटव्रणरोपणी॥ १७२॥
(मं, कं, रामग्राला।)

[ इति पत्नाचि।]

अथ वमलनामगुगाः। —

पायोजं कमलं नमञ्च निलन्ति जास्बुजन्मास्बुजं
श्रीपद्मास्बुक् हालपद्मजलजान्यक्षोक् हं सारसम्।
पद्भेजं सरसीक् हं च कुटपं पायोक् हं पुष्करं
वार्जं तामरसङ्कु प्रीययक्षजे कञ्चारिवन्दे तथा॥ १७३॥
श्रापत्रं विसकुसुमं सहस्वपत्रं महोत्पलं वारिक् हम्।
सरसिजसिल जपद्भेक् हराजीवानि वेदविक्रिमितानि॥१७४॥ \*
कमलं श्र तलं खादु रक्तिपत्तश्रमार्त्तिनृत्।
सुगन्धि स्वान्तिसन्ताप-शान्तिदं तर्पणं परम्॥ १७५॥
(मं कमल। तें तामर। गी पद्म।)

अध पुण्डरीकनामगुणाः।—

पुग्डरीनं खेतपत्रं सितानं खेतवारिजम्। इरिनेतं शरत्पद्मं शारदं श्रमुवल्लभम्॥ १७६॥ पुग्डरीनं हिसं तिहं सधुरं पित्तनाशनम्।

<sup>\*</sup> वेदविक्किमितानि चतु खिंग्रत्मं क्वानीत्यर्थः।

## [ 384 ]

## राजनिषयुः।

दाहास्त्र समदोषम् पिपासादोषनाश्चनम् ॥ १७७ ॥ (मं पार्व्हरे कमल । कं विलियतावरे । ते तहनामर । गौ श्वेतपद्म ।)

अय कोकनदनामग्याः।-

कोकनदसक्षकमलं रक्ताम्भोजं च शोणपद्मं च।
रक्तोत्पलमरिवन्दं रिविप्रियं रक्तवारिजं वसवः ॥ १७८॥ \*
कोकनदं कटुतिकं मधुरं शिशिरं च रक्तदोषहरम्।
पित्तकप्रवातश्मनं सन्तर्पणकारणं वृष्यम्॥ १७८॥
(मं रक्तकमल। कं केदावरे। गो रक्तपद्म।)

अय नीलकमलनामगुखाः।-

उत्पन्नं नीनक्षमनं नीनां नीनपङ्कजम्। नीनपद्मं च बाणाः नीनादिकमनाभिष्ठम्॥ १८०॥ नीनां शोतनं स्वादु सुगन्धि पित्तनाशकत्। रूचं रसायने श्रेष्ठं केश्यश्च देहदार्ब्यदम्॥ १८१॥ (मं नीनक्षमनः। कं करियताम्बरे। गौ नीनपद्म।)

श्रव विविधकम्बनामगुषाः।—
ईष्ठत्खेतं पद्मं निबनं च तदुक्तमीषदारक्तम्।
उत्पन्नमीषत्रीनं व्रिविधिमितीदं भवेत् कमन्तम्॥ १८२॥
उत्पन्नादिरयं दाष्ट-रक्तपित्तप्रसादनः।
पिपासादाष्ट्रहृशेग-क्कृदिमूक्क्षीहरी गणः॥ १८३॥

श्रय पद्मिनीनामगुकाः।—
पद्मिनी निलनी प्रोक्ता ऋटपिन्यक्रिनी तथा।
दस्यं तत्पद्मपर्य्याय-नाम्त्री ज्ञेया प्रयोगतः॥ १८४॥

\* वसवः ऋष्टसंख्यकानि।

पद्मिनी सधुरा तिक्ता कषाया शिशिरा परा।
पित्तकसिशोषवान्ति-श्वान्तिसन्तापशान्तिकत्॥ १८५॥
(संपद्मिनी। कंतास्वरेयभेद। गी पद्मकता।)

त्रय पदावीजनामग्याः।--

पद्मवीजन्तु पद्माचं गानोद्धां कन्दनी च सा।
भेड़ा क्रीञ्चादनी क्रीञ्चा ग्यामा स्थात्पद्मकर्कटी ॥ १८६॥
पद्मवीजं कटु खादु पित्तच्छिदिं हरं परम्।
दाहास्त्रदोषग्रमनं पाचनं क्चिकारकम्॥ १८७॥

(सं, तं, पद्माच। हिंक सलगाष्ट्रा। गौ द्वावीज।) त्रय स्थालनामगुषा: |—

स्यालं पद्मनालञ्च स्याली च स्यालिनी।
विसञ्च पद्मतन्तुः विसिनी निलनीक् स्म्॥ १८८॥
स्यालं शिशिरं तित्तं कषायं पित्तदा इजित्।
सूत्रक्तच्छिविकारम्नं रक्तवान्ति हरं परम्॥ १८८॥
(मं कमलतन्तु। वं कमलदन्तुः। तें तामर् उण्ड, तामरतींगे।
गी पद्म डांटा।)

त्रय प्राल्कनामगुणाः।—

पद्मकन्दस्तु प्रालूकं पद्ममूलं कटाह्मयम्।
प्रालीनं च जलाल्कं स्थादित्येवं षड़ाह्मयम् १८०॥
प्रालूकं कटु विष्टिमा रूचं क्चं कफापहम्।
कषायं कासिपत्तन्नं त्रणादाह्मनिवारणम्॥ १८१॥
(हिं कमलकन्द। गौ पद्मेर गेंडो।)

[ २४८ ]

#### राजनिघय्टः।

#### त्रय किञ्चलनामगुगाः।—

किन्न एकं मकरन्दन्न केसरं पद्मकेसरम्।
किन्नं पीतं परागं च तुङ्गं चाम्पेयकं नव॥ १८२॥
किन्नल्कं मधुरं रूचं कटु चाऽऽस्यव्रणापहम्।
पित्तन्नं शिशिरं रूचं तृष्णादाहिनवारणम्॥ १८३॥
(मं, कं, गी, पद्मकेसरा।)

[द्रित कमलानि।]

त्रय उत्पत्तसाधारणनामगुणाः।-

अन्षां चोत्पलं चैव रात्रिप्रषां जलाह्नयम्। हिमानं शोतजलजं निशापुत्तच्च सप्तधा ॥ १८४ ॥ छत्पलं शिशिरं खादु पित्तरतार्त्तिदोषनुत्। दाह्यसविमान्ति-क्रिमिज्वरहरं परम् ॥ १८५ ॥

(मं उत्पत्त। वं मेदिलु। हिं कीनि। गौ हैलाफुल; नालफुल, गुँदिफुता।)

त्रय धवलोत्पलनामगुणाः।—

धवलोत्पलन्तु कुसुदं कह्वारं कैरवं च शीतलकम्। श्राशिकान्तिमिन्दुकमलं चन्द्राञ्जं चन्द्रिकाऽम्बुजं च नव ॥१८६॥ कुसुदं शीतलं खादु पाके तिक्तं कफापहम्। रक्तदोषहरं दाह-श्रमपित्तप्रशान्तिकत्॥ १८०॥ (मं पाग्ढरे उत्पत्त। कं विलियने ईदिलु। हिं कोइ। गौ श्रादानालिक्षल ; श्रेतश्रं हि।) त्रथ नोलोत्पलनामगुणाः ।—
नोलोत्पलसुत्पलमं कुवलयिमन्दीवरच कन्दोत्थम् ।
सौगन्धिकं सुगन्धं कुड्मलकं चासितोत्पलं नवधा ॥ १८८॥
नोलोत्पलमितस्बादु श्रीतं सुरिम सौख्यकत् ।
पाके तु तिक्तमत्यन्तं रक्तपित्तापचारकम् ॥ १८८॥
(मं नोलोत्पलकं। कं निईदिलु। तें नह्नकुलुव। चिं नोलोपर।
गौ नोलग्रंदि, नोलोत्पल।)
त्रथ चत्पिलनीन।मगुणाः।—

उत्पि न कैरिविणी कुमुद्दती कुमुदिनी च चन्द्रेष्टा। कुवलियनीन्दीविरणी नीलोत्पिलिनी च विज्ञेया॥ २००॥ उत्पिलिनी हिमितिका रक्तामयहारिणी च पित्तन्नी। तापकपकासिटणात्रमविमिश्मनी च विज्ञेया॥ २०१॥ (मं उत्पिलिनौ। हिं कोजि कोटी। गौ गुँदिलता।) [दित उत्पलानि।]

श्रय पुष्पद्रवनामगुगाः।—

पुष्पद्रवः पुष्पसारः पुष्पस्तेदस पुष्पजः ।
पुष्पनिर्ध्यासकसैन पुष्पाम्बुजः षड़ाह्वयः ॥ २०२ ॥
पुष्पद्रवः सुरभिग्रीतकषायगीस्थो
दाइस्रमातिनमिमोइसुखामयनः ।
त्वस्पार्तिपित्तकपदोषहरः सरस्र
सम्तपेणसिरमरोचकहारकस्र ॥ २०३ ॥
(भं पन्नोर । गौ फुलेर रस । गोलापजल द्रत्थादि ।
मधु इति केचित । )

#### राजनिवयः।

त्रय जात्यादीनामामोदां स्थतिकालः।-

जाती भाति खदुर्मनोज्ञसधुरामोदा मुह्नतेद्वयं दैगुखेन च मिल्लका मदकरी गन्धाधिका यृथिका । एकाहं नवमालिका मदकरं चाक्कां चयं चम्पकं तीव्रामोदमथाष्ट्रवासरिमतामोदान्विता केतकी ॥२०४॥ दखं नानाप्रथितसुमनःपत्रपद्माभिधान-संख्यानोक्तिप्रगुणिततया तहुणाख्याप्रवीणम् । वाचोयुक्तिस्थिरपरिमलं वर्गमेनं पठित्वा नित्यासोदैमुखसरिसजं वासयत्वाश्च वैद्यः ॥२०५॥ \*

<sup>\*</sup> द्रत्यमिति।—वेशः भिषक् वैश्वश्विक्तिस्तः" द्रत्यमरः।
एनं मया जक्तमिति भावः वर्गं पिठित्वा समभ्यस्य नित्यं ये ज्ञामोदाः
तैः ज्ञविक्तित्वत्या प्रवर्त्तमानसुगन्धिमः सुखं सरसिजनिव द्रति जपिततसमासः तत् ज्ञाग्र प्रोत्नं यथा स्यात्तथा वासयत् गन्धयुक्तं करोत्।
वर्गं कौद्दश्वित्यत ज्ञान्दः —द्रत्यम् ज्ञनेन प्रकारेण नाना विविधानि
प्रधितानि क्षातिमापनानि यानि सुमनःपत्रपद्मानि तेषां अभिधानसंस्थानीक्तिःथां संज्ञानिवासकथनाःभ्यां या प्रगुण्यितता जल्कर्षता तथा
जपज्ञितम्। तेषां सुमनःप्रभृतीनां गुणाब्यया गुणकथनेन च प्रवीणं
निपुणतरं, गुणवर्णनपारिपाट्यभिप वर्गेऽस्मिन् वर्त्तते द्रति भावः। वाची
वाक्यस्य युक्तिरेव स्थिरः ज्ञविनश्वरः परिमन्तः यत्र तथाभूतं नािष किञ्चित् जप्रामाणिकसुक्तमिति भावः। यदा,—पद्मग्रब्देनाऽत्व चरमसंस्था ग्राह्मा, तेन सुमनःपत्रयोः पुणवर्गपत्वर्गयोः पद्मामिः ज्ञनेकािमः
अभिधानसंस्थानोिकिभिः या प्रगुणितता जल्कर्णता तथा जपन्नितिनिति।

स्त्रैय्ये शैलिशिलोपमान्यिप श्रनेरासाद्य तद्वावनां भेद्यतं यिमनां मनांस्यिप ययुः पुष्पाश्चगस्याश्चगैः । तेषां भूषयतां सुरादिकिश्चरः पत्रप्रस्नात्मनां वर्गोऽयं वसितर्मता सुमनसासुत्तंसवर्गाख्यया ॥ २०६ ॥\* लोकान् स्पर्शनयोगतः प्रसमराख्यामोदयन्यञ्चसा प्रोत्पुत्नानि च यद्यशांसि विश्वदान्युत्तंसयन्ते दिशः । तस्यायं दश्मः क्षतौ स्थितिमगाद्वर्गो नृसिंहिशितुः स्रीन्दोः करवीरकादिरभिधासन्धारचूड़ामणी ॥२००॥१ दित श्रीनरहरिष्ण्यतिवर्गित राजनिष्य्षे करवीरादिवर्गो दश्मः समाप्तः।

सुमनः प्रब्देनैव पद्मशाप्ती पुनः पद्मपदग्रह्णात् अधिकपद्ताव्युदासार्धं साधीयः खलुः ददं भिषीत्तं व्याख्यानम् ॥ २०५ ॥

- \* स्थ्रेये द्ति।—अत्र येः द्ति पदमधाद्वार्यम्। येः पुष्पाशुगस्य प्रस्नुनग्रस्य अ।शुगैः वाणैः स्थ्रेये स्थिरतायां ग्रेविश्विणोपमान्यिप अद्रि-प्रस्तसद्द्वानि अपि यमिनां मनांसि चित्तानि तद्वावनां तेषां पुष्पाणां मावनां चिन्तां ग्रेनेः अस्मम् आसाय प्राय (किं बिह्नित ध्वनिः) भेदालं चपल्वत्वं ययुः समुत्करूक्ते स्म द्रव्यर्थः। सुरादिकश्चिरः देवोत्तमाङ्कं भूषयतां तेषां पत्रप्रस्नास्मनां सुमनसां वस्तिः निवासः अयं वर्गः उत्तंस-वर्गाख्या मोलिमण्डनिति नामा मता बुवैरिति ग्रेषः॥ २०६॥
- † जीकानिति।—प्रस्मराणि सर्वतो निक्कुरितानि प्रोत्फुझानि विकसितानि विग्रदानि विमलानि यस न्हिंचस यग्नांसि सप्रैनयोगतः स्पर्भनमात्रेण जीकान् मानुषान् अञ्चसा भटिति "द्राक् भटित्यञ्चसा समाः" दत्यमरः। श्रामोदयन्ति प्रीणयन्ति दति भावः। दिग्रश्च उत्तंस-

# त्रय त्रामाहिवर्गः।

यामाः पञ्चित्रधाः प्रोत्ता जम्बू यैव चतुर्विधा।
पनसः कदली चाब्धः नारिकेलहयं तथा॥१॥
खर्जूरो पञ्चधा चैव चारो भन्नातरायणो।
दाङ्मिं तिन्दुको चाथो अचोटः पोलुको हिधा॥२॥
पारेवते मधूकं तु हिधा भव्याक्के क्रमात्।
द्राचा विधाऽथ कर्मारः पर्वः पिप्पलो वटः॥३॥
वटी चाष्विध्यका प्रचस्तथा चोदुम्बरस्तिधा।
तत्त्वचा बदरञ्चाब्धि बोजपूरं विधा मतम्॥४॥
यामलको हिधा चैव चिञ्चा चिञ्चारसस्तथा।
यामलको हिधा चैव चिञ्चा विञ्चारसस्तथा।
यामलको हिधा चैव चिञ्चा विञ्चारसस्तथा।
वापिश्यसुम्बर्याय रहाचो विल्वभन्नको।
कतकः कर्कटयैव हिधा स्रेषातकस्तथा॥६॥
मुष्ककः करमदं विधा त्रिपातकस्तथा।

यन्ते भूषिताः कुर्वन्ति तस्य म्रीन्दोः पिण्डितग्रेष्ठस्य न्द्रसिंदः एव ईश्विताः सर्वप्रभुः तस्य ग्रभिषानां ये सन्भाराः समूद्याः तेषां चूड्रामणो प्रधाने दित भावः, कृतौ त्रयं करवीरकादिः वर्गः परिच्छेदः स्थितिं समाप्तिम् अगात् गतः॥ २०७॥

## श्रास्त्रादिवर्गः।

[ २५३ ]

सप्तधा नागवत्ती स्याचूर्णं चैवाष्टधा स्मृतम् । उत्ता आस्त्रादिके वर्गे भून्यचन्द्रेन्द्रसङ्घया ॥ ८॥

त्रथ साधारणाम्रनामगुणाः।—

श्रास्तः कामग्रस्यूतो रसालः कामवत्तभः ।
कामाजः सहकारय कीरेष्टो माधवद्गमः ॥ ८ ॥
स्रङ्गाभीष्टः सीध्ररसे मध्ली कोकिलोत्सवः ।
वसन्तदूतोऽस्त्रफलो मदाच्यो मन्त्रयालयः ॥ १० ॥
मध्वावासः सुमदनः पिकरागो न्तृपप्रियः ।
प्रियास्बुः कोकिलावासः स प्रोक्तस्त्रिकराह्नयः ॥ ११ ॥ \*
श्रास्तः कषायास्त्ररसः सुगन्धः कर्ग्दामयन्नोऽग्निकर्य बालः ।
पित्तप्रकोपानिलरक्तदोषप्रदः पटुत्वादिक्चिप्रद्य ॥ १२ ॥
(मं वालास्वा । कं एलियमाविनकाथि । गौ श्राम ।)

श्रयास्य पकापकतो विभिन्नावस्थतयाः विश्वेषगुगाः ।—

बालं पित्तानिलकप्तकरं तच बडास्थि ताटक् क पक्षं दोषित्रतयश्मनं स्वादु पुष्टिं गुरुञ्च । दत्ते धातुप्रचयमधिकं तर्पणं कान्तिकारि स्थातं त्रणात्रमश्मकती चूतजातं प्रसं स्थात्॥ १३॥ (मं श्रास्वापत्त । कं माविनप्रस्त । ते माविडि।)

तिकराह्वयः तयोविंग्रतिनामकः।

<sup>†</sup> बडं सञ्चातम् ऋस्थि वीजं (ऋाँटीति साषा) यत्न तथाभूतम्।

## [ 248 ]

## राजनिष्युः ।

त्रय कीप्रायनामगुषाः।—

कोशास्त्रश्च घनस्त्रस्थो वनास्त्रो जन्तुपादपः । \*
चुद्रास्त्रश्चेति रत्तास्त्रो लाचावृचः सुरत्तकः ॥ १४ ॥
कोशास्त्रसम्ब्रसनिलापहरं कफार्त्तिपित्तप्रदं गुरु विदाहविशोफकारि ।
पक्षं भवेन्सधुरसीषदपारसन्त्रं
पट्टादियुत्तरुचिदीपनपुष्टिबल्यम् ॥ १५ ॥ पं
( सं करो श्रास्ता । कं जूरिमाचु । हिं कोश्रस्त । गौ केश्रोड़ा । )

श्रय राजाम्रनाम।-

राजास्त्रोऽन्यो राजफल: स्मरास्त्र: कोकिलोत्सव: ।

सधुर: कोकिलानन्द: कामेष्टो नृपवत्तम: ॥ १६ ॥

(भंराजास्त्रा। कंराजमञ्जू। ते राचमामि डिचेटु।

गौ मालदय ज्ञाम।)

त्रध महाराजासनाम !--

श्रन्यो महाराजचूतो महाराजास्त्रकस्तथा।
स्थूलास्त्रो मन्मथावासः कङ्को नीलकपित्थकः॥१७॥
कामायुधः कामफलो राजपुत्रो न्यपात्मजः।
महाराजफलः कामो महाचूतस्त्रयोदश॥१८॥
(मं महाराजान्या। कं महाराजमान्न।)

<sup>\*</sup> धन्वन्तरौथे निघरटो जतुरुमेतिपदं कोश्राम्रपर्य्यायवाचित्वेन उदटिखः। तस्मात् श्रवापि जन्तुपादपर्याने जतुपादपेति पाठः नामामाणिकः।

<sup>†</sup> ण्डादि खवणादि।

## श्राम्बादिवर्गः ।

[ 244]

अथ वहरसालाखनाम।—

तस्यापि श्रेष्ठतोऽन्यास्त्रो रसाली वहपूर्वकः। ज्ञेयश्रक्तलतास्त्रश्च सध्वास्त्रः सितजास्त्रकः। वनिज्यो सन्तयानन्दो सदनिच्छाफलो सुनिः॥ १८॥ \* ( मं वहरसालु महाराज अस्ता। सं चक्ततला आस्ता।)

त्रय राजासगुराः !--

राजास्ताः कोसलाः सर्वं कठ्क्ताः पित्तदाहदाः । सपताः खादुमाधुर्याः पुष्टिवीर्थवलप्रदाः ॥ २० ॥ राजास्त्रेषु तिषु प्रोत्तं साय्यमेव रसाधिकम् । गुणाधिकं तु विद्येयं पर्यायादुत्तरोत्तरम् ॥ २१ ॥ बालं राजपालं कपास्त्रपवनम्बासार्त्तिपित्तप्रदं मध्यं वाद्यमेव दोषबहुलं सूयः कषायास्त्रकम् । पक्षश्चेत्सधुरं तिदोषशसनं तृष्णाविदाह्यम् ॥ २२ ॥ म्बासारोचकमोचकं गुरु हिमं वृष्णाविद्याह्ययम् ॥ २२ ॥

(मं तोन्हीराजास्बेगुरा। वं एक्राजमाविनगुरा।)

त्रथ त्रामत्वचादीनां गुगाः।-

श्राम्बलचा नाषाया च मूलं सौगन्धि तादृशम्। †
रचं संग्राहि शिशिरं पुष्यं तु रुचिदीपनम्॥ २३॥
( इति श्रामप्रकरणम्।)

- \* मुनिः सप्तसंख्यकः।
- † तादृशं तत्तुल्यं कथायमित्यर्थः।

## [ २५६]

## राजनिष्युः।

त्रय जम्ब्नामगुगाः।-

जम्बू सुरिभपता नीलपता ग्यामला महास्त्रस्या।
राजाही राजपता ग्रुकप्रिया मेघमोदिनी नवाह्या॥ २४॥

जस्बृ: कषायमधुरा श्रमिपत्तदाह-कर्ग्हार्त्तिशोषश्रमनी क्रिमिदोषहन्त्री। श्रासातिसारकफकासिवनाशनी च विष्टिमिनी भवति रोचनपाचनी च॥ २५॥ (मं जाम्बुकः। कं निरत्तुसा। तें नेरडुचेट्ट्। हिं जामून्। गौ जाम।)

त्रथ महाजखूनामगुणाः ।—

महाजखू राजजखू: खर्णमाता महाफला ।

शुकिषया को किलेष्टा महानोला वृहत्फला ॥ २६ ॥

महाजखूरुणा समधुरकषाया श्रमहरा

निरस्यत्यास्यस्यं भटिति जिड्मानं स्वरकरी ।

विधत्ते विष्टभं श्रमयित च शोषं वितन्ति

श्रमातीसारार्त्तिश्वसितकफकासप्रश्रमनम् ॥ २० ॥

(मं महाराजजाखा । कं दोहनिरलु । गौ विष्ठजाम ।)

त्रय काकजम्बूनामगुणाः।—
काकजम्बूः काकपाला नादेयी काकवस्रमा।
स्रङ्गेष्टा काकनीला च ध्वाङ्कजम्बूधेनप्रिया॥ २८॥
काकजम्बूः कषायाम्सा पाके तु मध्रा गुरुः।
दाह्यमातिशरम्भी वीर्थ्यपुष्टिबलप्रदा॥ २८॥
(मं नदौतौरलाम्बू। कं तोरेनिरिल्ल। गौ चुदैलाम।)

त्रय भूमिजम्बू नामगुणाः।—

अन्या च भूमिजब्बूईखफला सङ्गवसभा इस्ता। भूजब्बूर्भमरेष्टा पिकभचा काष्ठजब्बू ॥ ३०॥ भूमिजब्बू: कषाया च मधुरा स्रेषपित्तनुत्। हृद्या संग्राहिह्नलाग्ठ।दोषन्नी वीर्थ्यपृष्टिदा॥ ३१॥ (मं चुद्रजब्बु। कं किक्निरिखु। गौ भूँदजाम।)

त्रय पनसनामगुराः।-

पनससु महासर्जः फिलिनः फलहचकः।
स्थूलः कर्यटफलसैव स्थान्यूलफलदः स्मृतः।
अप्रयफलदः पूत-फलो हाङ्गमितस्तथा॥ ३२॥ 
पनसं मध्रं सुपिच्छिलं गुरु हृद्यं बलवीर्थवहिदम्।
अभदाहिविश्रोषनाश्मनं क्विक्तदुग्राहि च दुर्जरं परम्॥ ३३॥
(मं फणसुपिकलागुण। कं इलिनहणः। वम्॰ फनसः,
उत्तराष्ट्रादा। तां पिद्धा। उत्॰ पणस। हिं
कर्हल। गौ कंग्टाल।)

त्रघ पनसवीजगुखाः।--

ईप्रत्लषायं मधुरं तद्दीजं वातलं गुरु । तत्पालस्य विकारम्नं रुचं त्वग्दोषनायनम् ॥ ३४ ॥ (मं प्रत्यस वीजगुर्या । कं इलसिन वीजगुर्या ।) त्रयास्य पक्षापकतो विभिन्नावस्यतया विभिन्नगुर्याः ।— बालं तु नीरसं इद्यं मध्यपकं तु दीपनम् ।

रा-१७

<sup>\*</sup> श्रक्षमितं नवाभिधमित्यर्थः।

### राजनिघरः।

रुचिदं लवणायुक्तं पनसस्य फलं स्मृतम्॥ ३५॥ (मं हिरिवाफणसु। कं हैसियहलसु।)

त्रथ कदलीनामगुगाः:-

कदनी सुफला रक्षा सुकुमारा सक्तत्फला।
मोचा गुच्छफला इस्ति-विषाणी गुच्छदन्तिका॥ ३६॥
काष्ठीरसा च नि:सारा राजिष्टा बालकप्रिया।
करस्तका भानुफला वनलच्छीश्र षोड्ण॥ ३७॥

बालं फलं मधुरमत्पतया कषायं पित्तापहं शिशिरक्चमथापि नालम्। पुष्यं तदप्यनुगुणं क्रिमिहारि कन्दं पर्णेच्च शूलशमकं कदलीभवं स्थात्॥ ३८॥

#### ऋपि च।-

रस्थापक्षपत्नं कषायमधुरं बल्यञ्च श्रीतं तथा पित्तं चास्त्रविमर्दनं गुरुतरं पथ्यं न मन्दानले। सदाः श्रुक्तविद्यद्विदं क्षमहरं तृष्णापहं कान्तिदं दीप्ताग्नी सुखदं कफामयकरं सन्तर्पणं दुर्जरम्॥ ३८॥ (मं केख। कं कदली। तें अरिटचेट्टु, वुरुगचेट्टु, दीख्डतीगे। हिं केरा, सवेज, केला। गौ कलाः॥)

त्रघ काष्ठकदलीनामगुगाः।—

काष्ठकदली सुकाष्ठा वनकदली काष्ठिका शिलारमा। दारुकदली फलाच्या वनमोचा चाम्मकदली च ॥ ४०॥ स्थात्नाष्ठकदली क्चा रक्तपित्तहरा हिमा।

गुक्रमन्दान्निजननी दुर्जरा सधुरा परा ॥ ४१ ॥

(मं नाष्ठकेलें। कं मरवाले। गौ काठकला।)

ज्रथ गिरिकदलीनामगुगाः।—

गिरिकदली गिरिरस्था पर्वतमोचाऽप्यरखकदली च। बहुवीजा वनरस्था गिरिजा गजवसभाऽभिहिता ॥ ४२ ॥ गिरिकदली मधुरहिमा बलवीर्थेविद्यहिदायिनी क्चा। ढट्पित्तदाहशोषप्रशमनकर्ती च दुर्जरा च गुक्: ॥ ४३ ॥ (मंराखकेलि। कं कावाली। गौ दयाकला, पाहाड़ेकला।)

अय सुवर्णकदलीनामगुगाः।—

श्रन्था सुवर्णकदली सुवर्णस्था च कनकरक्षा च।

पीता सुवर्णमोचा चम्पकरमा सुरिक्षका सुभगा॥ ४४॥

इसफला खर्णफला कनकस्तमा च पीतरमा च।

गौरा च गौररमा काच्चनकदली सुरिप्रया षड्भू: ॥४५॥ \*

सुवर्णमोचा मधुरा हिमा च खल्पायने दीपनकारिणी च।

तथ्यापहा दाहिवमोचनो च कफावहा व्रथकरी गुरुश्च॥४६॥

( सीनेकिलि इति कोङ्ग्ये प्रसिद्धा । उत्॰ पाठीया ।

गौ चाँपाकला।)

त्रय नारिकेलनामगुगाः।— †

नारिकेलो रसफलः सुतुङ्गः कूर्चभेखरः। इट्नोलो नीलतर्रमङ्गल्योचतरुस्तथा॥ ४०॥

- \* षड्भूः षोड्रापर्याया दत्यर्धः।
- † रत्तयोरमेदं मत्वा केचित् नारिकेरिमत्यपि पठन्ति।

खणराज: स्तन्धतर्क्राचिणात्यो दुराक्चः ।

लाङ्गली त्राम्बक्षप्रलस्त्रया दृद्रप्पलस्थिति: ॥ ४८ ॥

नारिकेलो गुरु: स्निम्धः श्रीतः पित्तिवनाश्मनः ।

श्रद्धपत्तस्तृषाशोष-श्मनो दुर्जरः परः ॥ ४८ ॥

नारिकेलसलिलं लघु बल्यं श्रीतलं च मधुरं गुरु पाके

पित्तपीनसद्धषात्र्यमदाद्वशान्ति शोषश्मनं सुखदायि ।

पत्तमेनदिप किञ्चिदिहोत्तं पित्तकारि क्चिदं मधुरं च

दीपनं बलकरं गुरु दृष्यं वीर्थ्यवर्धनिमदं तु वदन्ति ॥ ५० ॥

(मं नारियलरस् । कं नारियलरसः । तें नारिकदम । छत्॰

निद्ध्या । वम्॰ नारली । तां टेना, टेङ्गा ।

हिं नारिएल्। गौ नारिकेल ।)

श्रय नातिनेत्तत्त्वत्तरगुणाः।—
खुनरं नारिनेत्तस्य स्निग्धं गुरु च दुर्जरम्।
दाह्यविष्टमादं रुचं बलवीर्थ्यविवर्षनम्॥ ५१॥
(मं नारियलखोनरें।)

त्रय मधुनारिकेलनामगुगाः।—

मधुनारिकेलकोऽन्यो माध्वीकफलश्च मधुफलोऽसितजफलः।
माचिकफलो मदुफलो बहुकूची इस्वफलश्च वसुगणिताहः॥५२॥
मधुरं मधुनारिकेलमुक्तं शिशिरं दाहृद्धषार्त्तिपित्तहारि।
बलपुष्टिकरं च कान्तिमग्रां कुरुते वीर्थ्यविवर्धनं च रूच्यम्॥५३॥
किन्न।—

माध्वीकं नारिकेलं फलमतिमधुरं दुर्जरं जन्तुकारि स्निग्धं वातातिसारश्रमश्रमनमथ ध्वंसनं विज्ञिदीसे:। श्रामश्लेषप्रकोपं जनयति क्षक्ते चाक्कान्तिं बलञ्च स्थियीं देहस्य धत्ते घनसदनकजावर्द्धनं पित्तनाग्रम् ॥ ५४ ॥ ( मं, नं, महोनारियज । एरनारिकेर दति कोङ्क्ये प्रसिद्धः। वम्॰ महानारज। गौ वामननारिकेज।)

त्रय खर्ज्रौनामगुणाः।—

खर्जूरी तु खरस्तन्था दुष्पृधर्षी दुराक्हा।
निःश्रेणी च नवाया च यननेष्टा हरिप्रिया॥ ५५॥
खर्जूरी तु नवाया च पक्ता गीत्थनवायका।
पित्तन्नी नफदा चैन क्रिभिक्तहथ्यनृंहणी॥ ५६॥
(मं सिन्धी। नं ईश्वित्। गौ खेन्रर।)

त्रय मधुखर्जूरौनामगुणाः।—

मधुखर्जूरी लन्या मधुनर्किटिका च नोलनर्किटिका।
कार्य्यकिनी मधुफलिका माध्वी मधुरा च मधुरखर्जूरी ॥५०॥
मधुखर्जूरी मधुरा वृष्या सन्तापित्तशान्तिकरी।
शिशिरा च जन्तुकरी बहुवीर्थ्यविवर्द्धनं तन्ति॥ ५८॥
(मं मिष्टसिन्धी। नं सींह दिख्ल। गौ मिष्टिखेलुर ।)

त्रय भूखर्ज्रीनामगुणाः।—

भृखर्जूरी भुता वसुधाखर्जूरिका च भूमिखर्जूरी। भृखर्जूरी मधुरा ग्रिगिरा च विदाहिपत्तहरा॥ ५८॥ (मं खपुसिन्धी। कं किरि इंखिलु। गौ कोटखेजुर।)

श्रथ पिख्डखर्ज्रीनाम।—

दीप्या च पिग्डखर्जूरी खलपिग्डा मधुस्रवा।

### [ २६२ ]

#### राजनिघण्टुः।

फलपुष्पा खादुपिग्डा इयभच्या खराभिधा ॥ ६० ॥ \*

त्रय राजखर्ज्रीनामगुणाः।-

तयाऽन्या राजखर्जूरी राजिपण्डा न्यप्रिया।
मुनिखर्जूरिका वन्या राजिष्टा रिप्रसम्मिता ॥ ६१ ॥ १
पिण्डखर्जूरिकायुग्मं गौच्यं खादे हिमं गुरु।
पित्तदाहार्त्तिश्वासम्नं अमहदीर्थन्निदम् ॥ ६२॥

( मं एरडपिगडखर्ज्री। गौ पिगडिखेजुर। )

श्रन्यच ।—

दाइन्नी मधुराऽस्निपत्तशमनी तृष्णात्तिदोषापद्या श्रीता खासकफश्रमीदयहरा सन्तर्पणी पुष्टिदा। वक्नेर्मान्यकरी गुरुर्विषहरा हृद्या च दत्ते बलं स्निम्धा वीर्थ्यविवर्द्वनी च कथिता पिग्डाख्यखर्जूरिका ॥६३॥

त्रघ चारनामगुगाः।--

चारः खद्रः खरस्तन्थो ललनश्चारकस्तथा।
बहुवल्कः प्रियालश्च नवद्रस्तापसप्रियः।
स्नेहवीजश्चोपवटो भच्चवीजः करिन्दुधा ॥ ६४ ॥ १३
चारस्य च फलं पक्षं वृष्यं गौल्यास्त्रकं गुरु।
तद्दीजं मधुरं वृष्यं पित्तदाहार्त्तिनाश्चनम् ॥ ६५ ॥
(मं चारस्वी। कं चारवीज। गौ चार दाना; पियालवीज।)

- खराभिधा सप्तनामका:।
- † रिपुसिमाता षट्पर्याया दृत्यर्थः।
- ‡ करेन्सुधा दादशाभिधा दत्यर्थः।

## श्राम्बादिवर्गः।

.[२६३]

अध महातकनामगुणाः।— ब भक्तातकोऽग्निदेहनस्तपनोऽक्ष्करोऽनलः। क्रिमिन्नस्तैलवीजस्य वातारिः स्फोटवीजकः॥ ६६॥

पृथ्यकोजो धनुर्वीजो भन्नातो वोजपादपः। विज्ञवैरतस्येति विज्ञेयः षोड्शाह्वयः॥ ६०॥

भन्नातकः कटुस्तिकः कषायोणः क्रिमीच्चयेत्। कफवातोदरानाह-सेहदुर्नामनाण्यनः॥ ६८॥

अपरः।-

भज्ञातस्य फलं काषायमधुरं कोष्णं कफार्त्तिश्वमश्वासानाइविबन्धशूलजठराधानिक्रिमिध्वंसनम् ।
तन्मज्ञा च विशोषदाइशमनी पित्तापद्या तर्पणी
वातारोचकद्वारिदीप्तिजननी पित्तापद्या त्वस्वसा ॥ ६८ ॥
(मं विव । द्विं भिल्लावा । तें जिड्निटु, जिड्निविटुलु । वम्॰
विव्म । तां श्रनकोट्टद । दां भिल्लवन् । पारस्य भिल्लाहर ।
उत्॰ भिल्लय । कं गोडम्बो, नेरबौन ।

गो भेला।)

श्रथ रायगोनामगुणाः । (राजादनः)।—
राजादनो राजपालः चीरवची नृपद्गमः ।
निम्बवीजो मधुपालः कपीष्टो माधवीद्गवः॥ ७०॥

\* भद्वातक्षशोधनम् ;—
'भद्वातकानि पक्षानि समानीय चिपेज्जले ।
मज्जन्ति यानि तत्रैव शुडार्थं तानि योजयेत् ।
दूष्टकाचूर्यनिकरेषेषंग्राजिविषं भवेत्॥' इति ।

चीरी गुच्छ्पलः प्रोत्तः श्रुकेष्टो राजवत्तमः ।
श्रीपलोऽय दृद्कत्यः चीरश्रुक्तस्त्रिपच्चधा ॥ ७१ ॥
राजादनी तु मधुरा पित्तच्चतुरुतपंगी ।
ष्टच्या स्थीत्यकरी दृद्धा सुस्तिग्धा मेहनाशकत् ॥ ७२ ॥
(मं रायगी । कं रेवगे । तें मारिते । खिरनी दृति गुर्जरे
प्रसिद्धः । तां पत्त । वम् ॰ क्यों । हिं चौरी ।
गौ चौरखेजुर ।)

त्रय दाष्ट्रिमनामगुर्याः।—

दाड़िमो दाड़िमोसारः कुटिमः फलवाड़वः।

करको रक्तवीजय सफलो दन्तवीजकः॥ ७३॥

मध्वीजः कुचफलो रोचनः श्रुकवक्तमः।

मणिवीजस्तया वल्क-फलो वृत्तफलय सः।

सुनीलो नीलपत्रय ज्ञेयः सप्तद्याद्वयः॥ ७४॥

दाड़िमं मधुरमस्त्रकषायं कासवातकफिपत्तविनाित्र।

ग्राहि दीपनकरच लघूण्यं ग्रीतलं त्रमहरं क्चिदािय॥ ७५॥

दाड़िमं दिविधमीरितमार्थेरस्त्रमेकमपरं मधुरच।

तत्र वातकफहारि किलास्तं तापहारि मधुरं लघु पथ्यम्॥७६॥

(मं दाड़िन। कं दाड़िन्न। तें डानिम्मचेटु। तां मादलहचेहेडिड।

गुर्जं॰ डालम्। उत्॰ दालिन्न। हिं ग्रानार।

गौ डालिम।)

श्रय तिन्दुकनामगुगाः।—

तिन्दुको नीलसारस कालस्कन्धोऽतिमुक्तकः। स्मूर्जको रामणसैव स्मूर्जनः स्वन्दनाह्वयः॥ ७७॥ तिन्दुकस्तु काषायः स्थात् संग्राही वातक्तत्परः । पक्तस्तु सधुरः स्निग्धो दुर्जरः स्नेष्मलो गुरुः ॥ ७८ ॥ (सं टेम्बुरु । कं दुम्बुरु । तें तैमिक् । तां तुम्बिक । वम्॰ तिम्बोरी । हिं तेंद्र । गो गाव । )

श्रय काकतिन्दुकनामगुषाः।—

तिन्दुकोऽन्यः काकपीतुः काकाण्डः काकतिन्दुकः।
काकरमूर्जय वाकिन्दुः काकाह्यः काकवीजकः॥ ७८॥
काकतिन्दुः कषायोऽन्त्रो गुरुर्वातिविकारकत्।
पक्कलु सधुरः किञ्चित् कफक्षत्पित्तवान्तिहृत्॥ ८०॥
(सं काण्टरेम्बुरः। कं किरिइम्बुरः। तें तुमि, तुम्कि। तां तुम्ब।
गौ माक्षागाव, माक्षा तैँ द, केंदः; ग्रावलुग्रः।
हिं केन्द्र, तैन्द्रः।)

त्रघ त्रचीटनामगुगाः।—]

श्रचोटः पार्वतीयस फलस्ने हो गुड़ाग्यः। कीरेष्टः कन्दरालस मधुमज्जा वहच्छदः॥ ८१॥ श्रचोटो मधुरो बच्चो स्निग्धोश्यो वातपित्तजित्। रत्तदोषप्रगमनः श्रीतलः कफकोपनः॥ ८२॥

( त्राखोट इति हिमवृति प्रसिद्धः । कोङ्गग्रदेशे त्रखोड़ इति खातः । हिं खरोटनासपाती । प्राक्रतः त्रकोड़ । गौ प्राख्रोट । )

त्रय पौलुनामगुषाः।--

पीतुः श्रीतः सहस्रांशी धानी गुड़फलस्तथा। विरेचनफलः शाखी ध्यामः करभवत्तभः॥ ८३॥

## राजनिष्युः

अङ्काद्धः कटुकः पीतुः कषायो सधुराक्षकः । \*
सरः खादुस गुल्मार्थः-श्रमनो दीपनः परः ॥ ८४ ॥
(मं बघुपीतु । कं मिरियें, श्रङ्गनि । तें गीतुगुचैदृ, पिन्नवरगीएड ।
तां कोकु । वम् वक्हन् । हिं सत्ता गी, कीं, पीतु । )

श्रय वहत्यौ लुनामगुषाः ।—
श्रन्यसैन वहत्यौ लुर्मे हापी लुर्मे हाफालः ।
राजपी लुर्मे हावचो मधुपी लुः षड़ाह्नयः ॥ ८५ ॥
मधुरस्तु महापी लुर्नृष्यो विषविनाश्यनः ।
पित्तप्रश्यमनो कच श्रामन्नो दीपनीयकः ॥ ८६ ॥
(मं विष्तिपी लु। वं दो खुपी लु। गुर्जरे खनामा प्रसिद्धः।)

अध पारेवतनामगुगाः।—

पारेवतन्तु रैवतमारेवतकञ्च किञ्च रैवतकम्।

मधुफलमस्रतफलाख्यं पारेवतकञ्च सप्ताह्मम्॥ ८०॥

पारेवतन्तु मधुरं क्रिमिवातहारि

वृष्यं द्वषाञ्चरविदाहहरञ्च हृद्यम्।

मूक्किम्मस्रमविशोषविनाशकारि

स्निष्यञ्च क्चमुदितं बहुवीर्थ्यदायि॥ ८८॥

(मं साधारण उत्तरौ। कं उत्तरिगे। कामक्ष्पे रैवात इति

प्रसिद्धम्। उत्॰ प्याङ्गा। गौ पेयारा।)

श्रय महापारिवतनामगुणाः।—
महापारिवतं चान्यत् स्वर्णपारिवतं तथा।

<sup>\*</sup> त्रङ्खाह्वेति नवसंख्या चेया।

## श्राम्बादिवर्गः।

[ २६७ ]

साम्जाणिजं खारिकां च रक्तरैवतकञ्च तत्। व्रहत्पारेवतं प्रोक्तं हीपजं हीपखर्जूरी ॥ ८८ ॥ महापारेवतं गौत्यं बलक्कत्पुष्टिवर्डनम्। वृष्यं मूर्च्छाज्वरम्नञ्च पूर्वीकादिधकं गुणै:॥ ८०॥

(मं विड्ल उत्तरि। कं दोड़ उत्तरिंगे।)

अध मध्वनामगुगाः।—

मधूनो सधुव्रचः स्थात् सधुष्ठीलो सधुस्रवः। गुड्पुष्पो लोध्रपुष्पो वानप्रस्थय साधवः॥ ८१॥ सधुनं सधुरं शीतं पित्तदाहयमापहम्। वातलं जन्तुदोषघ्नं वीथ्यपुष्टिविवर्षनम्॥ ८२॥

(कं मङ्क्ष्यः । तां कट इङ्गुपि । तें पिना । वम् ० मोहा । हिंमहुया । गो मछल । )

त्रय जलमधू बनामगुगाः।—

अन्यो जलमधूको मङ्गल्यो दीर्घपत्रको मधुपुष्पः। चौद्रप्रियः पतङ्गः कीरेष्टो गैरिकाच्य ॥ ८३॥ ज्ञेयो जलमधूकानु मधुरो व्रणनाश्यनः। वृष्यो वान्तिहरः श्रीतो बलकारी रमायनः॥ ८४॥ (मं जलमधूकः, जलमह्ने। कंतीरे इप्ये। गो जलमीया।)

त्रय मध्वपुष्पपत्रगुगाः।—

मधूकपुष्यं मधुरच वृष्यं हृद्यं हिमं पित्तविदाहहारि।
फलच वातामयपित्तनाश्चि ज्ञेयं मधूकदयमेवमेतत्॥ ८५॥
(मं दोज्ञोमहु। कं यरहु द्यो। गौ भौयाफ़ल, भौयाफल।)

### राजनिघएः।

अध भव्यनामगुणाः।—

भव्यं भवं भविष्यच्च भावनं वक्तग्रीधनम्।
तथा पिच्छलवीजच्च तच्च लोमफलं मतम् ॥ ८६ ॥
भव्यमन्तं कटूष्णच्च बालं वातकफापहम्।
पक्तन्तु मधुरान्तच्च रुचिक्तलासग्रूलहृत्॥ ८०॥
(नीवे इति कोङ्ग्ये प्रसिद्धम्। गौ चाल्ता।)

त्रय त्राह्यनामगुषाः।—

श्राहकं वीरसेनञ्च वीरं वीराहकं तथा।
तत्र विद्याचतुर्जातीः पत्रपुष्पादिभेदतः॥ ८८॥
श्राहकाणि च सर्वाणि मधुराणि हिमानि च।
श्राशंप्रमेहगुल्मास्न-दोषविध्वंसनानि च॥ ८८॥
(श्राहक इति हिमवति प्रसिद्धम्। गौ श्रालुवोखारा।)

त्रघ द्राचानामगुषाः।-

द्राचा चारुपाला काष्णा प्रियाला तापसप्रिया।
गुच्छपाला रक्षाला च ज्ञेयाऽस्रतफाला च सा॥ १००॥
द्राचाऽतिमध्राऽस्ता च श्रीता पित्तार्त्तिदाइजित्।
सूत्रदोषहरा रुचा तथा सन्तर्पणी परा॥ १०१॥
(संद्राचा। कंद्राचे। तें द्राचपोख्ड, द्राचचेट्ट। तां कोड़िमख्डिरिष्यमाम्। हिं दाख, श्राङ्कर। गौ किस्मिम्, श्राङ्कर।)

श्रथ गोखनीनामगुगाः।-

श्रन्या कपिलद्राचा महीका गोस्तनी च कपिलफला। श्रम्यतरसा दीर्घफला सधुवन्नी सधुफला सधूली च ॥ १०२ ॥ हरिता च हारहरा सुफला सही हिमोत्तरापियका।
हैमवती शतवीर्थ्या काश्मीरो गजराजमहिगणिता॥ १०३॥ \*
गोस्तनी मधुरा श्रीता हृद्या च मदहर्षणी।
दाहसूर्क्काज्वरखास-ढषाहृज्ञासनाशिनी॥ १०४॥
(मं गोस्तनोट्राचा। कं वेड्गणट्राचे। गौ मनेका।)

श्रय काकलोट्टाचानामगुणाः। श्रन्या सा काकलोट्टाचा जस्तुका च फलोत्तमा।
लाञ्चद्राचा च निर्वीजा सुद्वत्ता किवारिणी।
श्रिणिरा खासहृज्ञास-नाशिनी जनवज्ञभा॥ १०५॥
(मं लघुट्टाचा। कं चिक्रट्राचे।)

अधास पकापकतो विभिन्नावस्थतया विश्रेषगुगाः।—

द्र। चाबालफलं कट्रण्यविश्यदं पित्तास्त्रदोषप्रदं मध्यं चाक्तरसं रसान्तरगते रुचातिविक्तप्रदम् । पक्षं चेक्सधुरं तथाऽक्तसिहतं त्रण्यास्त्रपित्तापष्टं पक्षं शुष्कतमं श्रमार्त्तिश्रमनं सन्तर्पणं पुष्टिदम् ॥ १०६॥

त्रपरच।—

श्रीता पित्तास्त्रदोषं दमयति मधुरा स्निग्धपाकाऽतिक्चा चत्तुष्या खासकासत्रमविमायमनी श्रोफढणाज्वरन्नी। दाहाधानश्चमादीनपनयति परा तर्पणी पक्षश्रका द्राचा सुचीणवीर्य्यानपि मदनकलाकेलिदचान्विधत्ते॥१००॥

<sup>\*</sup> ऐरावतादिनामभेदात् त्रव गजराजग्रन्देन त्रष्टी संख्या ग्राह्याः, महीग्रन्देन च एकः, ततश्च त्रष्टादश्चसंख्या ज्ञेया।

#### [200]

## राजनिषयुः।

श्रय कर्मारनामगुषाः।—

कर्मार: कर्मरक: पीतफल: कर्मरस मुहरक: । मुहरफलस धाराफलकस्तु कर्मारकसैव ॥ १०८ ॥ कर्मारकोऽम्ह उणास वातहृत्यित्तकारक: । पक्कसु मधुराम्ह: स्थात् बलपुष्टिक्चिप्रद: ॥ १०८ ॥ (कर्मार द्वित कोङ्क्ये प्रसिद्ध: । मं कर्मराचे भाड़ । गौ कामराङ्का ।)

त्रय परूषनामगुगाः i—

परूषमं तोलपणें गिरिपोलु परावरम् ।
नीलमण्डलमल्पास्थि परुषञ्च परुस्तथा ॥ ११० ॥
परूषमम्बं कटुकं कापार्त्तिजिहातापहं तरफलमेव पित्तदम् ।
सोश्यञ्च पक्षं मधुरं रुचिप्रदं पित्तापहं शोफ्रहरञ्च पीतम् ॥१११॥
(मं पर्पका । कं बेट्हा । तां दोगलि । तें पुटिकी । हिं फलूहै,
शुक्री, फरूषा । गौ फल्सा ।)

त्रय पिप्पलनामगुणाः।—

श्रमदो बोधिवचय याज्ञिको गजभचकः ॥ ११२ ॥
श्रमदो बोधिवचय याज्ञिको गजभचकः ॥ ११२ ॥
श्रीमान् चौरद्रुमो विप्रो मङ्गच्यः श्यामनय सः ।
पिप्पनो गुद्धपुष्पय सेव्यः सत्यः श्रचिद्रुमः ।
चौत्यद्रुमो धर्मवचो ज्ञेयो विंग्रतिसंज्ञकः ॥ ११३ ॥
पिप्पनः सुमधुरसु कषायः श्रीतन्य कप्पित्तविनाशी ।
रक्तदाहशमनः स हि सद्यो योनिदोषहरणः किन्न पक्षः ॥११४॥

#### ग्रन्यच। -

श्राष्ट्रस्य फलानि पक्षान्यतीवहृद्यानि च श्रीतलानि । कुर्वन्ति पित्तास्त्रविषार्त्तिदाहं विच्छदिशोषाक् चिदोषनाश्रम् ॥१,१५५ (मं पिम्पलु । कं अर्राल । ते राविचेष्टु, कुलुजुव्विचेष्टु । हिं पिपर । गो अश्वत्य । )

त्रय वटनामगुगाः।—

स्थादय वटो जटाली न्यग्रोधो रोहिणीऽवरोही च।
विटपी रत्तफलस स्तन्धक्ही सण्डली सहाच्छायः॥ ११६॥
मृष्ट्री यचावासी यचतकः पादरोहिणो नीलः।
चौरी शिफाक्हः स्थाहहुपादः स तु वनस्यतिनेवसः॥ ११०॥ \*
वटः कषायो सधुरः शिशिरः कफपित्तजित्।
ज्वरदाहृद्यष्ठासोह-व्रणशोफापहारकः॥ ११८॥
(संवट। कं श्राल: तें सरिचेटु, सारि, पेड़ि सरि। छत्॰ वोक।
तां श्रल। हिं वर, वर्गट। गो वट।)

त्रय वटोनामगुगाः।—

नदीवटो यज्ञवत्तः सिडार्थी वटको वटी।
अमरा सिङ्ग्नी चैव चीरकाष्ठा च कीर्त्तिता ॥ ११८॥
वटो कषायमधुरा शिशिरा पित्तहारिणी।
दाहृद्धणात्रमम्बास-विच्छिदिशमनी परा॥ १२०॥
(मं दुंजावडु। कं गालि आल। गी नदीवट।)
अय अश्वस्थिकानामगुणाः।—

त्रखसी लघुपती स्थात्पविता इस्वपितका।

नवभूः एकोनविंग्रत्थाख्यः ।

पिप्पिलका वनस्था च चुद्रा चाम्बस्यसिन्नभा ॥ १२१ ॥ अम्बस्यिका तु मधुरा कषाया चास्त्रपित्तिजित्। विषदाहप्रश्मनी गुर्विग्या हितकारिणी ॥ १२२ ॥ (मं अम्बस्यो। कं हैग्यरित। हिंपिप्ली। गो गया अम्बस्य।)

त्रध प्रचहयनामगुणाः।—

प्रचः कपीतनः चीरी सुपार्खोऽय कमण्डलुः।

गृङ्गी वरोष्ट्रशाखी च गर्दभाण्डः कपीतकः।

हृद्रगरोष्टः प्रवकः प्रवङ्गस्य महाबलः॥ १२३॥

प्रच्येवापरो इस्तः सुग्रीतः ग्रीतवीर्य्यकः।

पुण्ड्रो महाऽवरोष्ट्रस्य इस्तपर्णस्तु पिम्परिः।

भिदुरो मङ्गलच्छायो ज्ञेयो दाविंग्रधाभिधः॥ १२४॥

प्रचः कटकषायस्य ग्रिग्रिरो रत्तदोष्ठित्।

मूच्छाभ्यमप्रलापन्नो इस्तप्रचो विग्रेषतः॥ १२५॥

(मं पिंप्परि। कं बस्रिर। तें गङ्गरयज्ञिष्व। तां पोरिश्रावि।

हिं पाक्डि, पखर, गजदन्तसद्दीरा। गौ पाकुड़।)

त्रय उद्ग्बरनामगुगाः।—
उदुम्बरः चौरव्रचो हेमदुग्धः सदाफलः।
कालस्त्रन्थो यज्ञयोग्यो यज्ञीयः सुप्रतिष्ठितः॥ १२६॥
श्रीतवल्को जन्तुफलः पुष्पश्रून्यः पविव्रकः।
सौम्यः श्रीतफलस्रेति मनुसंज्ञः समीरितः॥ १२०॥ #
उदुम्बरं कषायं स्थात्पक्षन्तु मधुरं हिमम्।
क्रिमिक्तिपत्तरक्तमं मूक्कीदाइत्यापहम्॥ १२८॥

मन्नां चतुरंश्रत्वाद्व मनुसंज्ञः चतुर्दश्रसंज्ञो ज्ञेयः।

#### आदिवर्गः।

[ १७३ ]

त्रपि च।-

श्रीदुख्बरं फलसतीव हिसं सुपकं पित्तापहं च सधुरं श्रमशोफहारि। श्रामं कषायमतिदीपनरीचनं च मांसस्य वृद्धिकरमस्त्रविकारकारि॥ १२८॥ (मं उम्बर। कं श्रति। तें गूलर। गुर्जै०, हिं, गुलार। उत्० उहुम्बर। गो यज्ञ दुसुर।)

त्रथ नयुदुम्बरिकानामगुणाः।—

नद्युदुख्बरिका चान्या लघुपत्रफला तथा।
प्रोक्ता लघुच्नेसदुग्धा लघुपूर्वेसदाफला ॥ १३० ॥
लघुाद्युख्बराह्वा स्थाह्वाणाह्वा च प्रकोत्तिता। 
स्रित्वीर्थ्यविपाकेषु किञ्चिनूप्रना च पूर्वेतः ॥ १३१ ॥
(मं नदीतीर लहम्बर। कं नारे अत्ति। गो बलाडुसुर।)

त्रय काकोदुम्बरिकानामगुर्णाः।—

क्षणोदुम्बरिका चान्या खरपत्नी च राजिका।
उदुम्बरी च कठिना कुष्ठम्नी फखुवाटिका॥ १३२॥
मजाची फखुनी चैव मलपू्यिचमेषजा।
काकोदुम्बरिका चैव ध्वाङ्गनान्नी त्रयोद्य॥ १३३॥
काकोदुम्बरिका घीता पक्षा गौच्याऽम्बिका कटुः।
व्यन्दोषपित्तरक्षमी तद्दक्षं चातिसारजित्॥ १३४॥

<sup>\*</sup> वाखाह्य पञ्चसंज्ञका।

#### [ 308]

## राजनिष्युः।

(मं काला उद्स्वर, काला उन्हा। वं कात्रिता तें ब्रह्ममिड़ि-चेट्टु। हिं तटमिला, कटुम्मरी, गोडडुम्बरा। गो काठड्सुर।)

त्रघ उदुम्बरत्वचागुणाः।—

उदुम्बरत्वचा शीता कषाया व्रणनाशिनी । गुर्विणी गर्भसंरचे हिता स्तन्यप्रदायिनी ॥ १३५॥

अय बद्रनामगुराः।-

बदरो बदरी कोली कर्कन्धः कोलफिनिली।
सीवीरको गुड़फलो बालेष्टः फलग्रीग्रिरः॥ १३६॥
टढ़वीजो वृत्तफलः कर्यको वक्रकर्यकः।
सुवीजः सुफलः खन्छः सुरसः स्नृतिसिमातः॥ १३०॥ \*
बदरं मधुरं कषायमस्तं परिपक्तं मधुराम्त्रमुण्यमितत्।
कफ्कत्पचनातिसाररक्तत्रममग्रोषात्तिविनाग्रनं च रूचम्॥१३८॥
(मं साधारयवीर। कं येरत्। गौ कुल।)

त्रथ बदरपत्रत्वग्वीजगुगाः।--

बदरस्य पत्नलेपो ज्वरदाच्चिनाश्चनः । त्वचा विस्फोटशमनी वीजं नेतामयापच्चम् ॥ १३८॥

त्रथ.राजबद्रनामगुर्याः।-

राजबदरो तृपेष्टो तृपबदरो राजवत्तभश्चेव।
पृथुकोलस्तनुवीजो मधुरफलो राजकोलश्च॥१४०॥
राजबदर: सुमधुर: शिशिरो दाहार्त्तिपत्तवातहर:।

<sup>\*</sup> स्मृतिसिमातः त्रष्टाद्शाहः।

ष्ठष्यस्य वीर्य्यवृद्धिं कुरुति शोषस्यसं हरते ॥ १४१ ॥ (मंराजबोर। कंराययरतह। हिं वैरी, वेर, वयेर। तें रेगु-चैटु, रेंघ। उत्ःकृड़ि। वम्॰ वोर। तां रेयन्ति। गो नार्केली कुल।)

अध भूवद्रनामगुगाः।—

भूबदरी चितिबदरी वज्ञीबदरी च बदरिवज्ञी च।
बद्दुफलिका लघ्नबदरी बदरफली स्च्यबदरी च॥ १४२॥
भूबदरी मधुराऽक्ता कफवातिकारहारिणी पथ्या।
दीपनपाचनकची किचित्पित्तास्त्रकारिणी क्चा॥ १४३॥
(भूबोरि दित कोल्हापुरप्रान्ते प्रसिद्धा। हिं काड़बेर।
गी मेटीक्रल।)

त्रय लघुबद्रनामगुगाः।—

स्रुत्मफलो लघुबदरो बहुकर्ण्यः स्त्मपत्रको दुःष्यर्थः । मधुरः ग्रख्बराहारः ग्रिखिप्रियसैव निर्दिष्टः ॥ १४४ ॥ \* लघुबदरं मधुरान्तं पक्षं कफवातनाग्रनं रूचम् । स्निग्धं तु जन्तुकारकमीषत्पित्तार्त्तिदाहग्रोषप्नम् ॥ १४५ ॥ (मं चुद्रवोरि । कं किरुयर्तर । गौ डेमाक्क । )

त्रथ वीजपूरनामगुगाः।—

वीजपूरो वीजपूर्णः पूर्णवीजः सुकेसरः। वीजकः केसराम्बस मातुलुङ्गः सुपूरकः॥ १४६॥ रुचको वीजफलको जन्तुन्नो दन्तुरत्वचः।

भवराहार द्रव्यपि कचित् पाठः।

## राजनिषयुः।

पूरको रोचनफलो हिटेवसुनिसिस्ततः॥ १४७॥ \* वीजपूरफलमन्त्रकटूणां खासकासप्रमनं पचनं च। कार्यक्रोधनपरं लघु हृद्यं दीपनं च क्चिक्कजरणं च॥ १४८॥

तथाच।-

बालं पित्तमक्लफास्त्रकरणं मध्यं च तादृग्विधं पक्षं वर्णकरं च इद्यमय तत्पुश्णाति पुष्टिं बलम् । भूलाजीर्णविबन्धमाक्तकफखासार्त्तिमन्दाग्निजित् कासारोचकभोफशान्तिद्सिदं स्थान्मातुलुङ्गं सदा॥१४८॥

श्रन्यच ।---

लिक्तिका दुर्जरा स्थात् क्षियिकप्रप्यनिध्वेति सिग्धमुणां सध्यं शूलार्त्तिपित्तप्रश्मनमिखलारोचकन्नं च गौल्यम्। वातार्त्तिन्नं कटूणां जठरगदहरं केसरं दीप्यमन्तं वोजं तिक्तं कप्तार्थः खययुश्यमकरं वोजपूरस्य पथ्यम्॥ १५०॥ (मं माइलिङ्गः। कं माघला। ते मादीप्रलप्तिद्युः। जत् कल्लावा। विं विजीरा। गौ टावालेवा।)

श्रय वनवीजपूरनामगुगाः।—

वनवीजप्रकोऽन्यो वनजो वनप्रकश्च वनवीज:।
श्रत्यन्ता गन्धाच्या वनोङ्गवा देवदूती च ॥ १५१॥
पीता च देवदासी देवेष्टा मातुलुङ्गिका चैव।
पवनी महाफला च स्यादियमिति वेदसूमिमिता॥ १५२॥ १

- \* हिः हिराहत्ता देवसुनयः सप्तर्षयः तेन चतुर्दश्य द्त्यर्थः।
- † वेदभूमिमिता चतुर्दशाख्या।

ग्रम्तः कटूणो वनवीजपूरो रुचिप्रदो वातविनायनश्व। स्थादस्तदोषक्षमिनायज्ञारी क्रफापचः म्बासनिष्ट्रनश्च॥१५३॥ (मं वनमाचु चिङ्ग। कं कामाधवन ।)

त्रय मधुरवीजपूरनामगुणाः।-

सधुरवीजपूरो सधुपणी सधुरकर्कटी सधुवत्ती।
सधुकर्कटी सधुरफला सहाफला वर्षसाना च ॥ १५४ ॥
सधुकर्कटी सधुरा पिपिरा दाहनामनी।
तिदीषमनी क्चा व्रथा च गुक्दुर्जरा ॥ १५५ ॥
(सं सधुकाकड़ी। कं सखरेमाध्वल। हिं सउफटी।)

श्रय श्रामलकोनामगुगाः।—

श्रामलकी वय: स्था च श्रीफला धाविका तथा।
श्रम् वा च शिवा श्रान्ता श्रीताऽस्तफला तथा॥ १५६॥
जातीफला च धावेयी जेया धात्रीफला तथा।
वष्या वृत्तफला चैव रोचनी श्ररभूह्वया॥ १५०॥ अ
श्रामलकं कषायान्तं सधुरं शिशिरं लघु।
दाहिपत्तवसीमेह-श्रोफन्नं च रसायनम्॥ १५८॥

अपि च।-

कटु सध्रकषायं कि चिद्रक्तं कपमः क्विकरमतिश्रीतं हन्ति पित्तास्त्रतापम् । श्रमवसनविबन्धाधानविष्टस्त्रदोष-प्रशमनसम्रतासं चामलक्याः फलं स्थात् ॥ १५८॥

• ग्रास्ट्रया पचदंशनामका।

## राजनिघण्टुः।

(मं आंवला। कं निह्नि। उत्॰ अंडा। हिं आयोरा। गौ आम्ला।)

अथ काष्ठधातीनामगुषाः।—

अन्य चामलकं प्रोत्तं काष्ठधातीफलं तथा। जुद्रामलकमंप्रोत्तं जुद्रजातीफलञ्च तत्॥१६०॥ काष्ठधातीफलं खादे कषायं कटुकं तथा। गीतं पित्तास्त्रदोषमं पूर्वीतमधिकं गुणै:॥१६१॥ (मं काण्डा श्रांवजा। कं किस्नित्ति। गी काठ् श्राम्ला।)

त्रय चिञ्चानामगुवाः।—

चिचा तु चुक्रिका चुक्रा साम्तिका शाकचुक्रिका।
श्रम्ती सुतिन्तिड़ी चाम्ता चुक्रीका च नवाभिधा॥ १६२॥
चिच्चाऽत्यम्ता भवेदामा पक्ता तु मधुराम्तिका।
वातन्नी पित्तदाहास्त्र-कफदीषप्रकीपणी॥ १६३॥
श्रम्तिकायाः फलं व्याममत्यम्तं लघु पित्तकत्।
पक्तन्तु मधुराम्तं स्याद्वेदि विष्टश्यवातिजत्॥ १६४॥
(मं चिच्चा। चिं दम्ली, श्रमली। कं चुणिसे। ते किंग्ट। चत्॰
कंग्रां। तां पुलि। वम्॰ टिन्टज्। गौ ते तुला।)

त्रय पकचिचाफलरसगुगाः।—

पक्तिचित्राफलरसी मधुरास्ती रुचिप्रदः। श्रोफपाक्तकरी लेपादुव्रणदीष्रविनाशनः॥ १६५॥ (मं चित्रवरबडु। कं हुणिसेइग्रा। ते वरवट।)

अध विश्वापत्रत्वग्गुगाः।— चिञ्चापतञ्च ग्रोफन्नं रत्तदोषव्यथापहम्। तस्याः शुष्कात्वचाचारं श्रूलसन्दाग्निनाश्रनम् ॥ १६६ ॥ अथ विश्वापत्ररसनामगुषाः।— \*

श्रक्तसारसु शाकाक्तं चुक्राक्तं चाक्तचुक्रिका।
चिश्वाक्तमक्तचूड्य चिश्वारसोऽपि सप्तधा॥ १६०॥
श्रक्तसारस्वतीवाक्तो वातप्तः कफदाइक्तत्।
सास्येन शर्करामित्रो दाइपित्तकफार्तिनृत्॥१६८॥ १
(सं चिश्वापत्र। सं दृश्वसिनयते। गो तं तुलपातार रस।)

अध आसातकनामगुणाः।—

श्वास्त्रातकः पीतनकः किपचूतोऽस्त्रवाटकः । मृङ्गी किपरसान्त्रयः तनुचीरः किपप्रियः ॥ १६८.॥ श्वास्त्रातकं किषायास्त्रसामहत् कर्यत्रहर्षेणम् । पक्षन्तु सधुरास्त्रान्त्रं स्निग्धं पित्तकफापहम् ॥ १७०॥

<sup>\*</sup> नन्वसिन् श्रामादिवने नेवलं व्रचादिन।मानेवावस्ववक्तव्यत्वः मङ्गीक्तयते; क्यमत् विद्यापतरसस्य ग्रह्णम् ? किञ्च तदृग्रहणे विद्यापत्रस्य ग्रहणं कार्य्यम् ? क्यं, न हि विद्यापत्रः पत्रस्य विद्यापत्रस्य प्रदर्णं कार्य्यम् ? क्यं, न हि विद्यापत्रः पत्रानां कश्चित् विभिन्नपर्यायः । तेषां नामक्यनं तु विद्यापर्यायस्य पदनेकमादितो ग्रहौत्वा श्रन्ते च पत्रं फलं वा प्रयुच्च कर्त्तव्यम् । विद्याप्रस्य च परम् श्रन्थेऽपि सप्त पर्यायवाचका श्रन्दाः सन्ति । तेनात्र समोन्नेखो न दोषावदः । इति । श्रत्न विद्यासोना एव । पाठयोरनयोः साधीयस्त्वनिरूपणे वयसुदासोना एव ।

<sup>†</sup> साम्येन समभागतया दृत्यर्थः। यावत्यरिमितः ऋस्वसारः तावती एव प्रक्रीरा देया।

### राजनिघय्टुः।

( मं ऋाम्बाडि, दरसालग्रांवा । कं ऋाम्बाडियकायि । हिं ऋाम्बाड़ा । गी ऋाम्डा । ) ऋष नारङ्गामगुषाः ।—

नारङ्गः स्थान्नागरङ्गः सुरङ्गस्वगन्धश्वरावतो वक्कवासः ।
योगीरङ्गो नागरो योगरङ्गः गन्धाच्योऽयं गन्धपत्नो रवीष्टः ॥१७१॥
नारङ्गं सधुरं चाम्तं गुरूणश्चिव रोचनम् ।
वातामिक्रिमिश्र्लम्नं त्रमहृद्दलक्ष्यदम् ॥ १७२ ॥
(मं नारङ्ग । ते'गंजनिमा, नारंजिचेष्टु । तां किचिलिचेष्टु ।
चत्॰ नारिङ्गो । हिं नाराङ्गो, सन्तरा । गौ कमलालेवु । )
श्रिष्ठ निम्ब्रकनामगुणाः ।—

निम्बूनः स्यादम्लजम्बीरकाख्यो विज्ञदींप्यो विज्ञवीजोऽम्लसारः। दन्ताघातः शोधनो जन्तुमारी निम्बूस स्याद्रीचनो रुद्रसंज्ञः

# 11 666 11

निम्बू पतं प्रियतमम्बरसं कटूणं गुल्मामवात इरमग्निविविद्यिकारि । च जुल्मेतदय कासक फार्त्तिक रह-विच्छ दिं हारि परिपक्तमतीव क्चम् ॥ १७४ ॥ । मं निम्बे। कं निम्बू। गौ पाति जैवु। ) अध जम्बीरनामगुणाः।—

जम्बीरो दन्तमठो जम्भो जम्भीरजम्मली चैव। रोचनको मुखमोघी जाद्यारिर्जन्तुजिन्नवधा ॥ १७५॥ जम्बीरस्य फलं रसेऽन्तमधुरं वातापहं पित्तकत्

<sup>\*</sup> रुद्रसंज्ञः एकाद्रशाह्नः।

पथंधैपाचनरोचनं बल करं वक्नेविंद्यिष्ठप्रदम्।
पक्षचेन्मधुरं काफार्त्तिग्रमनं पित्तास्त्रदोषापनुत्
वर्ण्यं वीर्थ्यविवर्ष्वनच्च रुचिक्तरपृष्टिप्रदं तर्पण्म्॥ १७६॥
(कं ईंड। कं कचिले। तें निम्मचेट्ट् । चिं जम्बीरी, निम्बू।
गौ गोँ ड्रा छेवु, जामीर छेवु।)

श्रय मधुजम्बोरनामगुगाः।—
श्रन्यो मधुजम्बोरो मधुजन्थो मधुजन्थो मधुजन्थो मधुजन्थो मधुजन्थो सधुजन्थो सधुजन्था सधुजन्था सधुजन्थो सधुजन्थो च षट्संज्ञः॥ १७०॥
मधुरो मधुजन्बोरः श्रिश्चरः कफिपत्तनुत्।
शोषप्तस्तर्पणो वृष्यः श्रमप्तः पुष्टिकारकः॥ १७८॥
(मं साखरनिम्बु। कं कित्तिले। गौ मिठा जामीर, सर्वति लेवु।)

श्रय किपत्यनामगुणाः।—

मालूरसु किपत्यो मङ्गल्यो नीलमिक्तिका च दिधि।

ग्राहिफलिश्वरपाकी ग्रन्थिफलः कुचफलो दिधिफलश्व॥१७८॥
गन्धफलश्व किपोष्टो वृत्तफलः करभवक्तमश्चैव।
दन्तग्रठः कठिनफलः करग्डफलकश्च सप्तद्यसंज्ञः॥१८०॥

किपित्यो मधुराक्तश्च कषायस्तिक्तग्रीतलः।

वृष्यः पित्तानिलं हन्ति संग्राही व्रणनाणनः ॥ १८१॥ ग्रामं कपित्यमन्त्रीष्णं कफन्नं ग्राहि वातलम्। दोषव्यहरं पकं मधुरान्तरसं गुरु॥ १८२॥

श्रघास्य पकापकतो विभिन्न।वस्यतया विशेषगुणाः।— श्रामं कार्युक्जं कपित्यमधिकं जिल्लाजङ्खावहं वहोषत्रयवर्षनं विषहरं संग्राहकं रोचकम्।

## [२८२] राजनिवर्ष्टुः।

पक्षं ग्वासविमिश्रमक्षमहरं हिकाऽपनोदचमं सर्वं ग्राहि रुचिप्रदं च कथितं सेव्यं ततः सर्वेदा ॥ १८३॥

( मं कंविठ । कं वेललु । तें वेलगचेटु । हिं को इण्। गी कत्वेल । )

अथ तुम्बर्नामगुगाः। (तुम्बरः)।—

तुम्बरः सौरभः सौरो वनजः सानुजो हिजः।
तीन्यावल्लस्तीन्यापलस्तीन्यापत्रो महामुनिः।
स्मुटफलः सगन्धिष्य स प्रोक्तो हादशाह्वयः॥ १८४॥
तुम्बर्मधुरस्तिकः कटूषाः कफवातनुत्।
प्र्लगुल्योदराभान-लमिन्नो विद्वदीपनः॥ १८५॥
(मं तेन्दु। कं तुम्बुरः। हिं तुम्हः। गौ ताम्बुल्पलः।)

त्रय स्ट्राचनामगुगाः।—

रहाचय शिवाचय शर्वाची भूतनाशनः।
पावनी नीलकर्छाची हराचय शिवप्रियः॥ १८६॥
रहाचमन्त्रमुणाञ्च वातम्नं कफनाशनम्।
शिरोऽर्त्तिशमनं रुचं भूतग्रहविनाशनम्॥ १८०॥
( मं, कं, गौ, रहाच।)

त्रय विव्वनामगुगाः। —

वित्वः शत्यो हृद्यगन्धः शताटुः शाण्डित्यः स्थाच्हीफनः कर्कटाहः। श्रैनूषः स्थाच्हीवपतः शिवेष्टः पत्रसेष्ठो गन्धपत्रस्तिपतः॥ १८८॥ बच्चीफलो गन्धफलो दुराक्हस्तिशाकपत्रस्त्रिश्चिः शिवदुमः।
सदाफलः सत्फलदः सुभूतिकः
समीरसारः शिखिनेत्रसंज्ञितः॥ १८८॥ \*
विल्वलु मधुरो हृद्यः कषायः पित्तजित् गुकः।
कफज्बरातिसारन्नो क्विक्षहीपनः परः॥ १८०॥
विल्वमूलं तिदोषन्नं मधुरं लघुवातनुत्।
फलं तु कोमलं स्निग्धं गुक् संग्राहि दीपनम्॥ १८१॥
तदेव पक्षं विज्ञेयं मधुरं सरसं गुक्।
कटुतिक्तकषायोष्णं संग्राहि च तिदोषजित्॥ १८२॥
(सं बेल। कं वेद्ववन। ते मारडु। तां विल्व। वम् विल्व।
हिं, गो. वेल।)

त्रथ सहकीनामगुणाः। (प्रह्नको)।—
सज्जक्तः सज्जको सज्जी सुगन्धा सुरिभस्तवा।
सुरिभर्गजभच्छा च सुवहा गजवज्ञभा॥ १८३॥
गन्धमूला सुखामीदा सुत्रीका जलविक्रमा।
हृद्या कुण्ट्रिका चैव प्रोक्ता त्रास्त्रफला च सा।
किन्नकृष्टा गन्धफला चेया चाष्टाद्याह्नया॥ १८४॥
सज्जको िक्तमधुरा कषाया ग्राहिणो परा।
कुष्टास्त्रकफवातार्थी-व्रण्दोषार्त्तिनामिनो॥ १८५॥
(मं सङ्गित। कं तिद्कु। वम् प्राज्ञद्र।)

प्रिखा विद्यति स्थ द्वित अस्य वै दन् प्रत्ययः ; ततः प्रिखी अग्निः,
 त्रतः च द्वे, तेन तथोविं प्रतिसंख्या ग्राह्या।

त्रय कतकनामगुगाः।—

कतकोऽस्बुप्रसादय कतस्तिक्तफलस्तया।
क्चसु छेदनीयय ज्ञेयो गुड़फलः स्मृतः।
प्रोक्तः कतफलस्तिक-मरीचय नवाह्नयः॥ १८६॥
कतकः कटुतिक्तोष्णयचुष्यः क्षमिदोषनुत्।
क्चिक्तच्छूलदोषन्नो वीजमस्बुप्रसादनम्॥ १८७॥
(मं चौलु। कं चिह्निकायि। गौ निर्मलिफल।)

अध वर्वटनामगुगाः।-

कर्कट: कार्कट: कर्क: चुद्रधाती च स स्मृत: । चुद्रामलकसंज्ञस प्रोत्तः कर्कफलस षट्॥ १८८॥ कार्कटन्तु फलं रूचं कषायं दीपनं परम् । कफपित्तहरं ग्राहि चचुश्चं लघु श्रीतलम्॥ १८८॥ (मं काक्षें। कं वालिंगे। गौ कं क्रोल्।)

त्रयः श्रेषातकनामगुगाः।—

स्रोषातको बहुवारः पिच्छलो हिजकुत्सितः।

श्रेतुः शीतफलः शीतः श्राकटः कर्वुदारकः।

भूतहुमी गन्धपुष्यः ख्यात एकादशाह्नयः॥ २००॥

स्रोषातकः कटुहिमी मधुरः कषायः

खादुस्र पाचनकरः क्रिसिश्च्लहारी।

श्रामास्रदोषमलरोधबहुव्रणात्तिं-

विस्फोटमान्तिकरणः कफकारकश्च ॥ २०१ ॥ (मं शेलवण्टि । कं चेलु । वम्० भोइर । उत्० ग्रन्ड । पारस्य गुग्पिलन् । तां विड़ि । हिं बहुआर, लसीरा । गी चास्ता । )

## श्रास्त्रादिवर्गः।

·[ २८५ ]

श्रय भूकर्तुदारकनानगुणाः । (श्रेषातकभेदः) ।—
भूकर्तुदारकश्वान्यः चुद्रश्लेषातकस्त्रया ।
भूशिवुर्वेषुश्रीवुश्च पिच्छलो लघुपूर्वकः ।
लघुश्रीतः स्चाफलो लघुभूतद्गुमश्च सः ॥ २०२ ॥
भूकर्तुदारो मधुरः क्रिमिदोषविनाशनः ।
वातप्रकोपणः किञ्चित् सशीतः खर्णमारकः ॥ २०३ ॥
(मंगोन्दिणः । हि छोटा लगोडाः।)

त्रय सुष्तवनामगुराः।—

सुष्कको सोचको सुष्को सोचको सुच्चकस्तया।
गौलिको सेहनर्यव चारव्यय पाटलि: ॥ २०४॥
विषापहो जटालय वनवासी सुतीच्याकः।
खेत: क्षण्य स देधा स्थाचयोदश्रसंज्ञकः। २०५॥
सुष्ककः कटुकोऽन्तय रोचनः पाचनः परः।
ध्रीहगुल्सोदरार्त्तिन्नो दिधा तुल्यगुणान्वितः॥ २०६॥
(सं सोखे। कं सोखदलाद। तें सोक्षप्चेष्ट्र, सुक्कतुग्रुचेष्ट्र।
हिं सोषा। गौ घग्रापादल।)

अघ करमर्दनामगुखाः।—

करमर्दः सुषेणस्य कराम्तः करमद्देकः ।
स्रिवन्नः पाणिमद्देस क्षण्णपाक्षपालो सुनिः ॥ २००॥ \*
करमर्दः सिततान्त्रो बालो दीपनदाह्यः ।
पक्षस्त्रिदोषश्मनोऽक्चिन्नो विष्रनाश्चनः ॥ २०८॥
(मं करवन्दे । कं करिजिंगे । हिं करौँ दा । गौ करम्चा ।)

<sup>•</sup> सुनिः सप्तसंचनः।

## राजनिषयुः।

त्रजः प्रलो बहु प्रलस्त्रियोत्तः श्राल्मली प्रलः ।

प्रलस्ती च्यादिसं युत्तः प्रलान्तस्तवकादिकः ।

स्तेयी प्रलो गन्धप्रलः कर्ग्यह्रचः प्रकीर्त्तितः ॥ २०८ ॥

तेजः प्रलः कटुस्ती च्याः सुगन्धिदी पनः परः ।

वातस्त्रेषाऽक् चिन्नस्र बालरचाकरः परः ॥ २१० ॥

(मं का द्रप्त । क्षं गावटे । गो तेजवल । )

प्रथ विकार का नामग्रेणाः ।—

विकार को मटुप्रलो ग्रन्थिलः खादुकार का २११ ॥

गांकार का का नाभो व्याप्रपादो चनद्रमः ॥ २११ ॥

गांकार चनप्रलो मेचस्तिनतो द्रवस्र सुदिरप्रलः ।

गांहिष्यो हास्यप्रलः स्तिनतप्रलः पञ्चद्रम् द्राः ॥ २१२ ॥

विकार्यकः कषायः स्थात् कट्र रूचो रुचिप्रदः। दीपनः कफहारी च वस्त्ररङ्गविधायकः॥ २१३॥

(मं हासी। कं मोलगु।)

त्रिष्य हरीतकोनामगुगाः।— \*
हरीतको हैमवती जयाऽभया

श्चिताऽत्यया चेतनिका च रोहिणी। प्रया प्रपथ्याऽपि च पूतनाऽस्रता

जीवप्रिया जीवनिका भिषम्बरा ॥ २१४ ॥

\* "चरस भवने जाता इरिता च खभावतः। इरते सर्वेरोगांच तेन प्रोक्ता इरीतकी॥"

द्ति निक्तिः।

जीवन्ती प्राणदा जीव्या कायस्या श्रेयसी च सा।
देवी दिव्या च विजया विज्ञितमिताभिधा ॥ २१५ ॥ \*
इरीतको पश्चरसा च रेचनी कोष्ठामयन्नी लवणन वर्जिता।
रसायनी नेवरुजापहारिणो लगामयन्नी किल योगवाहिनी ॥२१६॥

#### श्रन्यच ।—

वीजास्थितिता मधुरा तदन्तस्त्वग्भागतः सा कटुरुणावीर्या। स्रांसांश्रतश्चास्त्रकषाययुक्ता हरीतकी पञ्चरसा स्मृतियम्॥ २१७॥

त्रय हरीतकीभेदाः।-

हरीतक्यस्तीत्पन्ना सप्तभेदेव्दीरिता।
तस्या नामानि वर्णां वच्छाम्यय ययाक्रमम् ॥ २१८॥
विजया रोहिणी चैव पूतना चास्ताऽभया।
जीवन्ती चेतको चेति नामा सप्तविधा मता॥ २१८॥
श्रवावुनाभिर्विजया सुद्रत्ता रोहिणी मता।
स्वत्यत्वक् पूतना ज्ञेया स्थूलमांसाऽस्तता स्भृता॥ २२०॥
पञ्चास्ता चामया ज्ञेया जीवन्ती स्वर्णवर्णभाक्।
व्यस्तान्त चेतकी विद्यादित्यासां रूपलचणम्॥ २२१॥
विभिन्नहरीतकीनां प्रत्येकग्रो जन्मस्थानि, तत्प्रभावाश।—
विन्थाद्रौ विजया हिमाचलभवा स्थाचेतकी पूतना
सिन्धी स्थाद्य रोहिणी तु विजया जाता प्रतिष्ठानके।
चम्पायामस्ताऽभया च जिनता देग्रे स्राष्ट्राह्वये
जीवन्तीति हरीतकी निगदिता सप्तप्रभेदा वृष्टैः॥ २२२॥

विक्रिनेलिमिताभिषा लयोविंपातिनामका ।

सर्वप्रयोगे विजया च रोहिणी चतेषु लेपेषु तु पूतनोदिता। विरेचने स्थादमता गुणाधिका जीवन्तिका स्थादिह जीर्णरोगजित्॥ २२३॥ स्याचेतको सर्वरुजापहारिका नेत्रामयन्नीमभयां वदन्ति। इसं यथायोगिमयं प्रयोजिता न्नेया गुणाच्या न कदाचिदन्यथा॥ २२४॥ चेतकी च धृता इस्ते यावत्तिष्ठति देहिन:। तावहिरिचते वेगात्तत्रभावात्र संशयः ॥ २२५॥ सप्तानामपि जातीनां प्रधानं विजया स्मृता। सुखप्रयोगसुलभा सर्वव्याधिषु शस्यते ॥ २२६ ॥ चिप्ताऽपु निमज्जित या सा ज्ञेया गुणवती भिषम्बर्यै:। यस्या यस्या भूयो निमज्जनं सा गुणाच्या स्यात् ॥ २२०॥ हरते प्रसमं व्याधीन भूयस्तरति यहपुः। हरीतकी तु सा प्रोक्ता तत कीर्दीप्तिवाचक:॥ २२८॥ हरीतकी त त्रणायां हनस्तमे गलयहै। शोषे नवज्वरे जीर्णे गुर्विखां नैव शस्यते ॥ २२८ ॥ (मं इरडा। कं अधिले। तें करकचेट्ट् । उत्॰ इरिड़ा, करेड़ा। दां वाल्रा। तां करके। इं इरड़ा। गौ इत्ती।) श्रय विभीतकनासंग्राः।-

विभीतकस्तैलफलो भूतावासः कलिद्रुमः। संवर्त्तकस्तु वासन्तः कल्लिष्टचो वहेड्कः॥ २३०॥

### श्रास्त्रादिवगै:।

हार्थः कर्षफलः कल्किर्धर्मन्नोऽचोऽनिलन्नकः । बहुवीर्थ्यस्य कासन्नः स प्रोत्तः षोड्ग्याह्नयः ॥ २३१ ॥ विभीतकः कटुस्तितः कषायोश्यः कफापहः । चच्चुष्यः पिलतन्नसः विपाके सधुरो लघुः ॥ २३२ ॥ (सं वेहाड़ा। कं तोड़े। तें तार्खेचेटु । तां तिन तिर्द्धः, तीत्रिर्द्धः । हिं वहेड़े, तिनास, भैरा। गौ वहेड़ा।)

श्रय पूगत्वनामगुणाः ।—
पूगस्तु पूगत्वचय असुको दोषंपादपः ।
वस्कत्वर्दृद्वल्लिखिकण्य मुनिर्मतः ॥ २३३ ॥ \*
पूगत्वच्य निर्यासो हिसः सन्मोहनो गुरुः ।
विपाको सोष्णकचारः सान्नो वातन्नपित्तलः ॥ २३४ ॥
(मं पोफलाचावषु, पोफल । कं श्रद्धवयमरन् । उत्॰ गुया ।
गौ सुपारी ।)

त्रघ पूगफलनाम।—
पूगन्तु चिक्कणो चिक्का चिक्कणं ऋच्छानं नथा।
उद्देगं क्रमुकफलं चेयं पूगफलं वसु॥ २३५॥ क

श्रध सेरीगुगाः।—
सेरी च मधुरा रुचा कषायास्ता कटुस्तथा।
पथ्या च कफवातन्नी सारिका मुखदोषनुत्॥ २३६॥
('मं खेरी।)

- \* सुनिः सप्तसङ्ख्याकः।
- † वसु त्रष्टामिधम् ।

11-85

## [ 220]

## राजनिवयुट्:।

श्रय तेव्वनगुगाः। (तैव्वग )।—

तैल्वनं मधुरं क्चं कर्त्रग्रहिकरं लघु। तिदोषशमनं दीप्यं रसालं पाचनं समम्॥ २३७॥ (संनेच्चवत्।)

त्रय गौत्यगुणाः।—

गौद्धं गुहागरं अन्त्यां कषायं कट् पाचनम्। \* विष्टमाजठराधान-हरणं ट्रावकं लघु ॥ २३८॥ (मं चिक्कणीसुपारो । गौ चिकिसुपारि । ) 🛴

त्रघ घोष्टागुणाः।— 💛 🎋

घोण्टा कटकषायोश्या कठिना क्चिकारिणी। मलविष्टभाष्मनी पित्तहृदीपनी च सा॥ २३८॥ (मं घोएटपोफल। वं घोएट ऋडके।)

त्रय पूर्गोफलगुराः।-

पूगीफलं चेउलसंज्ञकं यत्तलोङ्गणेषु प्रथितं सुगन्धि। श्लेषापहं दीपनपाचनञ्च बलप्रदं पुष्टिकरं रसाट्यम् ॥ २४० ॥

( मं चेडल । कं चेडले । )

- अध वित्रालगुराः।-

यलोङ्कण विज्ञगुलाभिधानकं ग्रामोज्ञवं पूगफलं विदोषनुत्। श्रामापहं रोचनर्च्यपाचनं विष्टकातुन्दामयहारि दीपनम् ॥२४१॥ (मं वह्नगुलपीफलें। कं वह्नगुलद्दके।)

गुद्दागरदेशसम्भूतिमत्यर्थः। ऋनित्थो रूपिनदं गुहागरमिति साधनीयम । THE PARTY OF THE

अय चन्द्रापुरोङ्गवपूगगुणाः।—

चन्द्रापुरोद्भवं पूर्गं कफन्नं सलग्रोधनम् । कटु खादु कषायं च क्चं दीपनपाचनम् ॥ २४२ ॥ ( मं चन्दापुरपोफल । वः चन्दापुरदहके । )

अय आन्ध्रदेशोद्भवपूगगुगाः।—

श्रान्ध्रदेशोद्भवं पूर्गं कषायं सधुरं रसे। वातजिद्वक्तजाद्यन्नसोषदक्तं कफापहम्॥ २४३॥ (मं चोलौपोफल। कं चोलिय श्रदकी।)

त्रय पूगफलिक्षिषगुगाः।—
पूगं सम्मो इकत्सवं कषायं स्वादु रचनम्।
त्रिदोषश्मनं कच्चं वक्तको दमलापहम्॥ २४४॥
(मं साधारगपोफला।)

त्रय ग्रष्काग्रष्कतो विभिन्नावस्थतया पूगस विभेषग्रणाः ।— श्रामं पूगं कषायं सुखमलग्रमनं कर्ण्डगुर्डिं विधत्ते रत्तामश्रेषपित्तप्रग्रमनसुदराश्चानहारं सरञ्च । श्रष्कं कर्ण्डामयन्नं क्चिकरसुदितं पाचनं रेचनं स्थात् तत्पर्योनायुतं चेत् भाटिति वितनुते पाग्रहुवातञ्च शोषम् ॥२४५॥

त्रय नागवल्लीनामंगुणाः।-

श्रथ भवति नागवन्नी तास्त्रू ली फिण्लिता च सप्तश्रिरा।
पर्णेलता फिण्विन्नी भुजगलता भच्छपत्री च ॥ २४६॥
नागवन्नी कटुस्तीच्णा तिक्ता पीनसवातिजत्।
कफकासहरा कच्चा टाइक्क ही पनी परा॥ २४०॥

[ 323]

राजनिष्यपुः ।

( मं साधारणपर्थं। तें तामलपातुः। तां वेष्टिनी । वम्॰ नागवेन। हिं, गी, पान।)

अय नागवद्वीभेदादिः।-

सा श्रीवाद्यस्तादिवाटादिनाना-ग्रामस्तोमस्थानभेदाहिभिन्ना । एकाऽप्येषा देशमृत्स्नाविशेषा-न्नानाकारं याति काये गुणे च ॥ २४८॥

म्रघ मीवाटीगुणाः।—

श्रीवाटी मधुरा तीन्त्या वातिपत्तकफापहा।
रसाक्या सुरसा क्या विपाके शिशिरा स्मृता ॥ २४८॥
(मं सिरिवाडीपान। कं सिरिवाडिन।)

अध अस्वाटीगुषाः।-

स्यादम्तवाटी कटुकाम्त्रतिक्षा तीच्णा तथीणा मुखपाककर्ती। विदाइपित्तास्त्रविकोपनी च विष्टम्भदा वातनिवर्हणी च ॥२५०॥

(मं श्रम्बाडे पर्य।)

त्रथ सतसागुणाः। (सातसी)।—

सतसा मधुरा तीन्त्या कटुरुखा च पाचनी। गुल्मोदराभानहरा रुचिक्कहीपनी परा॥ २५१॥

(मं सातसीपर्यम्।)

त्रय सप्तशिरागुणाः। (सदाशिरा)।—

गुष्टागरे सप्तिशा प्रसिद्धा सापर्धेनू र्णाऽतिरसाऽतिरचा ।

सुगन्धि तीन्त्या सधुराऽतिच्च्या सन्दोपनी पुंस्त्वकराऽतिबच्या ॥ २५२॥

(मं ऋडगरपर्थ।)

षय श्रवस्वागुगाः।-

नान्नाऽन्याऽस्त्रसरा स्तीन्द्यमधुरा क्चा हिमा दाहनुत् पित्तोद्रेकहरा स्दीपनकरी बच्चा मुखामोदिनी। स्त्रीसीभाग्यविवर्षनी मदकरी राज्ञां सदा वस्तमा गुल्माभानविबन्धजिञ्च कथिता सा मालवे तु स्थिता॥२५३॥ (मालवे ज्रङ्गरापर्थं दति प्रसिद्धम्।)

त्रय पटुलिकागुर्गाः ।—
त्रम्भे पटुलिका नाम कषायोग्गा कटुस्तया ।
मलापकर्षा कराइस्य पित्तकद्वातनायनी ॥ २५४॥
(त्रम्थुदेशे पोटुकुलिपर्गं द्दति प्रसिद्धम् ।)

त्रय हे सयौयागुगाः।—

ह्वेसणीया कटुस्तीच्णा हृद्या दीर्घदला च सा । कफवातहरा रुचा कटुदीपनपाचनी ॥ २५५ ॥ (घोरससुद्रदेशपर्णम्।)

त्रय ताम्बूखस विशेषराणाः।—

सद्यस्तोटितभचितं मुखरजाजाधावहं दोषकत् दाहारोचकरत्तदायि मलक्षिष्टिस्थ वान्तिप्रदम् । यद्गूयो जलपानपोषितरसं तचेचिरात् त्रोटितं ताम्बूलोदलमुत्तमञ्च रुचिक्षद्वर्शं त्रिदोषार्त्तिनृत् ॥२५६॥ (मं नवेझ्नें पानाचेगुण। कं होस्यवेद्द्वेयवेगुण।)

## राजनिष्ठस्यः।

त्रय क्रणशुस्रपर्धगुराः।—

्रक्तर्था पर्धे तित्तसुर्था कषायं धत्ते दाहं वक्तजाद्यं सलच्च । शुक्तं पर्धे श्लेषवातासयन्नं पथ्यं क्चं दीपनं पाचनच्च ॥२५०॥

त्रय पर्वाश्चरा-श्चीर्यताम्बूलयोर्व्याः।—

शिरा पर्णस्य शैथित्वं कुर्यात्तस्यासहद्रसः। शीर्षं लग्दोषदं तस्य भचिते च शितं सदा॥ २५८॥

विना ताम्बूलं पूराभचगादीषाः।—

त्रनिधाय मुखे पणें पूगं खादात यो नरः।

मतिभंशो दरिद्रः स्थादन्ते स्मरित नो हरिम् ॥ २५८ ॥

ग्रथ ताम्बूलवीटिकायाः कल्पनाभेदेन ग्रथमेदाः।—

पर्णाधिको दीपनी रङ्गदाती पूगाधिको रूचदा क्षच्छदाती। साराधिको खादिरे शोषदानी चूर्णाधिको पित्तक्षत्पृतिगन्धा ॥२६०॥

त्रय चूर्णगुषाः।—

चूणे चार्जुनवच्चनं कपहरं गुल्मघ्नमकीह्वयं भोपघं कुटनं करञ्जनितं वातापहं क्चदम्। पित्तघं जलनं बेलाम्निक्चिदं भैलाह्वयं पित्तदं \* स्माटिक्यं दृद्दन्तपंत्तिजननं भ्रुत्त्यादिनं कृचदम्॥ २६१॥ (मं चूना। कं चूणी। गौ चूणा।)

इसं नानाफलतरुलतानामतत्ततुणादि-व्यक्तास्थानप्रगुण्दचनाचारुसीरभ्यसारम्।

जलजं में तिकम्।

वर्गं वज्ञास्त्रुक् हवलभीलास्यलीलारसालं विद्यावद्यः खलु सफलयेदेतमान्त्रायसून्ता ॥ २६२ ॥ \* यान्युपभुज्जानानां स भवति संसारपादपः सफलः । तिषामिष फलानां वर्गः फलवर्गं द्वति कथितः ॥२६३॥ '१ यस्याजस्विकस्वरामलयभः प्राग्भारपृष्णीद्गमः साश्चर्यं विवुधिस्तानि फलिति श्रीमान् करः स्वर्द्भः ।

\* इदानीं वर्गसुपसंइरित इत्यिनित्यादितिसिः श्लोकैः। विद्या-वैद्यः (कर्त्तृपदम्) विद्यया वैद्यः न तु नामतः इति भावः। इत्यम् श्लोन प्रकारिण नाना विविधाः याः तक्षमल्लताः तासां नामानि ते ते पूर्वोक्ता गुणादयः गुणप्रकाराश्च (श्लादिश्वन्दस्थात प्रकारवाचित्वं श्लेयम्) तिषां व्यक्तास्थानानि स्मृटवचनानि तेः या प्रगुणरचना सनि-विश्वप्रक्रष्टता सेव चाकः मनोइरः सौरभ्यसारः परिमलोत्कषः यस्य तथाभूतम्। पुनः, वक्लाम्बुकदं सुखपद्मिव वलभौ प्रासादाग्रस्थितं ग्रद्धं तत्र या लास्यलीला चत्यविलासः तस्यै रसालं चूतव्रचं (सुखग्रोभा-संवर्षकत्यैवसुक्तं) एतं वर्गम् श्लामायभूमा श्लभ्यासवादुल्येन सफलयेत् सफलं कुर्य्यात्। (प्रार्थनायामिप लिख् दृश्यते)।

† यानीत्यादि। — यानि फलानि उपभुझानानां खादयतां नराणां स प्रसिद्धः संसारपादपः संसारवृत्तः सफलः चितितार्थां मनितः चिति मिधिवसतामेतेषां फलानासुपभोग एव जीवनसाफल्यम् इति भावः ; तेषां फलानामेष वर्गः फलवर्ग इति नामा कथितः उत्तः, मया इति श्रीषः।

## राजनिष्यपुः।

तस्यायं किततः किती नरहरेरामादिरेकादशो
वर्गः स्वर्गसभाभिषाभिरभिषाचूड्रामणावीरितः ॥२६४॥ \*
दित श्रीनरहरिपण्डितिवरिषति निष्यपुराजापरनामि
श्रीमदभिषानचूड्रामणौ फलवर्गापरास्थीऽयमाम्रादिवर्ग एकादशः।

## श्रय चन्द्रनाद्विगी:।

श्रीखगढं ग्रवरं पीतं पत्नाङ्गं रक्तचन्दनम् ।
वर्वरं हरिगन्धञ्च चन्दनं सप्तधा स्मृतम् ॥ १ ॥
देवदारु द्विधा प्रोक्तं चीड़ा सप्तच्छदस्तथा ।
सरलः कुङ्गुमे कङ्गः कस्त्री रोचना तथा ॥ २ ॥
कर्पूरी स्थाज्जवादिस्तु नन्दी च जातिपत्रिका ।
जातीफलञ्च कक्कोलं लवङ्गं स्वाटुरुच्यते ॥ ३ ॥

\* यसेत्यादि । यस नरहरिकविरित्यधः, श्रनसं निरन्तरं विक-स्वराणि प्रस्कृटितानि श्रमलानि यशांसि एव प्राग्भारः छत्त्रष्ठः पृष्पो-इमः कुसुमप्रवृत्तिर्थस्य तथाभूतः श्रीमान् श्रीयुक्तः खद्रंमः कन्यपादपः एव करः विव्वधानामीसितानि श्रमिलिषितानि (श्रत्न भावे क्तः) साश्रयं सविस्मयं यथा तथा फलति, तस्य कवितः पिष्कृतस्य क्रतौ निर्माणे श्रमिधानां चूड्रामणो स्वर्गसभाभिष्ठिमः खवेँदैः श्रश्चिनीकुमारप्रसृतिभिः ईरितः कथितः श्रयम् श्रासादः एकादशः वर्गः, समाप्तिं गत इति श्रीष्ठः। श्रगर्व्धश्व तिधा मांसी तुरुष्त्री गुग्गुलुस्त्रिधा । राल: जुन्दुरुक: कुष्ठं सारिवा तु हिधा नखी ॥ ४ ॥ स्प्रका स्थीणियकं चैव सुरा भैलेयचीरक: । पद्मप्रपौष्डरीके च लामकं रोहिणी हिधा । श्रीविष्टोभीरनलिका सुनिबाणिसताह्वया: ॥ ५ ॥

त्रथ श्रीखण्डनामगुणाः।--

श्रीखण्डं चन्दनं प्रोतं महाईं खेतचन्दनम्। गोश्रीषं तिलपर्णेच सङ्गल्यं सलयोद्भवम् ॥ ६ ॥ गत्धराजं सुगन्धञ्च सर्पावासञ्च भीतलम्। गन्धाकां गन्धसारच भद्रश्रीभीगिवस्रभम्। शीतगन्धी मलयजं पावनञ्चाङ्गभूह्वयम् ॥ ७॥ \* श्रीखर्षं कट्तिक्षशीतलगुणं खादे कषायं कियत् पित्तस्त्रान्तिविभाज्यरिक्रिमित्वषासन्तापशान्तिप्रदम्। वृष्यं वक्करजापद्यं प्रतनुते कान्तिं तनोर्देहिनां लिप्तं सुप्तमनोजसिन्धुरमदारशादिसंरश्रदम्॥ ८॥ श्रेष्ठं कोटरकर्परोपकलितं सुग्रस्य सद्गीरवं केरे रक्तमयं तथा च विमलं पीतश्च यह्वपेण । स्वादे तिज्ञकटुः सुगन्धबद्धनं शीतं यदत्यं गुणि चीणचाईगुणान्वतं तु कथितं तचन्दनं मध्यमम् ॥ ८॥ (मं साधारणश्रीखण्ड। कं श्रीगन्ध। गौ सादाचन्दन।)

<sup>\*</sup> अङ्गमूत्रयम् एकोनविंग्रतिसंज्ञकम्।

## राजनिषयुः।

#### ग्रन्यच ।

चन्दनं दिविधं प्रोत्तं बेहसुक्षड़िसंज्ञनम् । वेहं तु सार्ट्रविच्छेदं खयं ग्रुष्कं तु सुक्षड़ि ॥ १०॥

अय वेट्टचन्द्ननामकारणं, तद्गुणाञ्च।-

मलयाद्रिसंसीपस्थाः पर्वता बेद्दसंज्ञकाः ।
तज्ञातं चन्दनं यतु बेद्दवाच्यं क्षचिन्मते ॥ ११ ॥
बेद्दचन्दनमतीव शीतलं दाइपित्तशमनं ज्वरापहम् ।
क्रिंदिमोहत्विकुष्ठतैसिरीत्वासरक्तशमनं च तिक्तकम् ॥ १२ ॥
(मं बेद्दश्रीखण्ड । कं बेद्दपचेगन्य । )

त्रय सुक्षड्चिन्दनगुणाः।—

सुक्काङ्चिन्दनं तिक्तं क्षच्छिपित्तास्त्रदाइनुत्। शैत्यसुगन्यदं चाद्रं ग्रुष्कं लेपे तदन्यया॥ १३॥

(मं सुक्क डिंगन्ध।)

त्रय करातनाम्गुणाः। ( प्रवर )।--

नातिपीतं कौरातं शबरञ्चन्दनं सुगन्धम् । वन्यञ्च गन्धकाष्ठं किरातकान्तञ्च शैलगन्धं च ॥ १४ ॥ कौरातमुणां कटुशीतलञ्च श्लेषानिलग्नं अमिपत्तहारि । विस्मोटपामादिकनाशनञ्च ढषापहं तापविमोहनाशि ॥ १५ ॥

( प्रवरचन्दनं दति कोङ्ग्यो प्रसिद्धम्।)

त्रथ पौतनामगुखाः।-

पीतगन्धं तु कालीयं पीतकं माधवप्रियम्। कालीयकं पीतकाष्ठं बर्बरं पीतचन्दनम्॥ १६॥ पीतन्त्र श्रीतलं तित्तं कुष्ठश्लेषानिलापहम् ।

कण्डू विचर्चिकादद्गु-स्निम्हलान्तिदं परम् ॥ १९ ॥

(पीतचन्दन इति होसपादेशे प्रसिद्धम् । कलम्बक इति

द्राविड्देशे प्रसिद्धम् ।)

न्राध्य प्रवाङ्गनामगुगाः ।—

पत्तक्षचेव पनाक्षं रक्तकाष्ठं सुरक्षदम्।

पत्नाच्चं पहरागच्च भाव्यविचय रक्तकः ॥ १८ ॥

लोहितं रक्षकाष्ठच्च रागकाष्ठं कुचन्दनम्।

पहरच्चनकच्चेव सुरक्षच्च चतुर्द्ग्ग ॥ १८ ॥

पत्नाक्षं कटुकं रूचमन्तं ग्रीतं तु गौच्चकम्।

वातिपत्तच्चरम्नच्च विस्फोटोन्सादस्तृत्वत् ॥ २० ॥

(भं पतक्षा ते चेवमन्। हिं,वम्०, पत्तक्ष्। गौ वकम्, रोहन्।)

त्रघ रत्तचन्द्रनंगामगुणाः।—

रत्तचन्दर्नासद्ञ लोहितं ग्रोणितञ्च हरिचन्दनं हिसम् । रत्तसारमथ ताम्मसारकं चुद्रचन्दनसथार्कचन्दनम् ॥ २१ ॥ रत्तचन्दनमतीव ग्रीतलं तित्तमीचणगदास्रदोषनुत् । भूतिपत्तकप्रकाससञ्चरभान्तिजन्तुविमिजित्तृषापहम् ॥ २२ ॥ (मं रत्तचन्दन । ते एर्रगन्धपुचेक्क । तां सेन्शाण्डनम् । सण्डले सुर्ख द्ति पारस्रदेशीयभाषा । सण्डले श्रसार दंति श्रारवदेशे प्रसिद्धम् । दां, हिं, लालचन्दन । गी रक्तचन्दन । )

अध वर्वरनामगुगाः।—
बर्वरीत्यं वर्वरनां म्वेतवर्वरनां तथा।

## राजनिष्यपुः।

श्रीतं सुगन्धि पित्तारि सुरिम चेति सप्तथा ॥ २३ ॥ बर्बरं श्रीतलं तिक्तं कप्तमार्ग्तपित्तजित्। कुष्ठकण्ड्त्रणान् इन्ति विश्रेषाद्रक्तदोषजित्॥ २४ ॥ (मं वर्वगन्थ।)

त्रथ इरिचन्दननामगुणाः ।—
इरिचन्दनं सुराईं इरिगन्धिमन्द्रचन्दनं दिव्यम् ।
दिविजञ्च महागन्धं नन्दनजं लोहितञ्च नवसंत्रम् ॥ २५ ॥
इरिचन्दनं तु दिव्यं तिक्तहिमं तदिह दुर्लभं मनुजैः ।
पित्ताटोपविलोपि चन्दनवच्छमग्रोषमान्यतापहरम् ॥ २६ ॥
(इरिचन्दन इति कोङ्ग्ये प्रसिद्धम् । गौ सारचन्दन ।)

श्रध चन्दनसामान्यगुणाः।—
चन्दनानि समानानि रसतो वीर्ध्यतस्तथा।
भिद्यन्ते किन्तु गन्धेन तत्राद्यं गुणवत्तरम्॥ २०॥
श्रध देवदावनामगुणाः।—
देवदाव सुरदाव दावकं स्निन्धदावरमरादिदाव च।
भद्रदाव शिवदाव शास्मवं भूतहारि भवदाव बद्रवत्॥२८॥
स्निन्धदाव स्मृतं तिक्तं स्निन्धोणां श्लेषवातिनत्।
श्रामदोषविवन्धार्थः-प्रमेष्ठन्वरनाश्यनम्॥ २८॥
(मं चोपडादेवदाव। हिं देवदार। गौ देवदाव।)

त्रय देवकाष्ठनामगुणाः ।—
देवकाष्ठं पूर्तिकाष्ठं भद्रकाष्ठं सुकाष्ठकम् ।
त्रसम्भदाक्कञ्चेव काष्ठदाक् षड़ाह्मयम् ॥ ३०॥
देवकाष्ठन्तु तिक्तोष्णं रूचं श्लेषानिलापहम् ।

भूतदोषापहं धत्ते लिप्तमङ्गेषु कालिकम् ॥ ३१ ॥ (मं, कं, काट्देवदारः!)

देवदाक हिधा च्रेयं तत्नाद्यं स्निम्धदाक्कम्। हितीयं काष्ठदाक स्यादुहयोनीमान्यभेदतः॥ ३२॥

म्रथ चौड़ानामगुगाः।—

चौड़ा च दारुगन्धा गन्धवधूर्गन्धमादनी तरुणी। तारा च भूतमारी मङ्गल्या तु कपाटिनी ग्रहभीतिजित् ॥३३॥

चौड़ा कटूष्णा कासन्नी कफिन्हीपनी परा। श्रास्त्रक्तसिविता सा तु पित्तदोषभ्त्रमापहा॥ ३४॥

(मं चीडादेवदार ।)

त्रय सप्तपर्यानामगुगाः।—

सप्तपर्णः पत्नवर्णः श्रुत्तिपर्णः सुपर्णकः। सप्तच्छदो गुच्छपुष्पोऽयुग्मपर्णो सुनिच्छदः॥ ३५॥

वृष्टस्वग्बद्धपर्णेश्व तथा श्रात्मिलिपत्नकः। मदगन्धो गन्धिपर्णी विज्ञेयो विज्ञसूमितः॥ ३६॥ \*

सप्तपर्णसु तिक्तोषास्त्रिदीषप्तय दीपनः।

सद्रगस्थी निरुन्धेऽयं व्रण्रतासयक्रिमीन् ॥ ३०॥

(मं सातव्या। कं एवेलग। तें एडाकुल, ऋरिटाकु। वम्

क्रातिवण । चिं क्रातियान् । गौ क्रातिम । )

म्रथ सरसनामगुगाः।—

सरलसु पूरिकाष्ठं तुस्बी पीतद्वरुखितो दीपतरः। स स्निग्धदारसंज्ञः स्निग्धो मारीचपत्रको नवधा॥ ३८॥

<sup>•</sup> विक्रभूमितः तयोद्श्रसंचकः।

## [ ३०२ ]

### राजनिषयुः।

सरल: कटुतिकोणाः कफवातिवनाग्रनः।
त्वग्दोषग्रोफकण्डूति-व्रणमः कोष्ठग्रहिदः॥ ३८॥
(मं, वम्, सुक्वेमाषः। ते गरिके, देवदारिचेद्धः। तां सरलदेवदारी। दां चिर्। हिं चिरकापेड़, सरल,
ध्वसरल। गौ सरल।)

त्रय बुङ्गनामगुगाः।—

त्रेयं लुङ्गममन्त्रिखरमस्कास्त्रीरजं पीतकं कास्मीरं रुधिरं वरच्च पिश्चनं रक्तं श्चठं श्लोणितम् । बाह्नीकं घुस्टणं वरिख्यमरुणं कालेयकं जागुड़ं कान्तं विक्विशिखच्च केसरवरं गौरं कराचीरितम् ॥ ४० ॥ \* लुङ्गमं सुरिम तिक्तकटूणं कासवातकफ्काण्ठरुजान्नम् । मूर्धशूलविषदोषनाशनं रोचनच्च तनुकान्तिकारकम् ॥ ४१ ॥ (मं लुङ्गकेसर । तें लुङ्ग । हिं जाफ्रान् । गौ लुङ्ग ।)

त्रय त्याकुङ्गनामगुगाः।—

त्यमुङ्गमं त्यासं गिश्वत्यं शोणितञ्च त्यपुष्यम् ।
गन्धाधिकं त्यात्यं त्यागीरं लोहितं च नवसं ज्ञम् ॥ ४२ ॥
त्यमुङ्गमं कटूषां कप्तमाक्तशोप्तनुत् ।
कण्ड्तिपामाञ्जष्ठाम-दोषघं भास्करं परम् ॥ ४२ ॥
(त्यमुङ्गम दति काष्मीरे प्रसिद्धम् । मं त्याकेश्वर ।
गो कुङ्गमास ।)

त्रंघ प्रियङ्गुनानगुणाः।—

प्रियङ्गः फलिनी श्यामा प्रियवज्ञी फलप्रियां।

कराचीरितं द्वाविंग्रत्थाख्यं कथितम्।

गौरी गोवन्दनो हत्ता कारम्श सङ्गु कङ्गुनी ॥ ४४ ॥ ॰ भङ्गुरा गौरवज्ञी च सुभगा पर्णभेदिनी । ग्रुभा पीता च सङ्गल्या खेयसी चाङ्गस्र्मिता ॥ ४५ ॥ ॰ प्रियङ्गु: ग्रीतला तिक्ता दाहिपत्तास्त्रदोषजित् । वान्तिस्त्रान्तिञ्चरहरा वक्तजाद्यविनाश्रनी ॥ ४६ ॥ (मं प्रियङ्ग । कं निर्पंत्रग्र । तें प्रेंक्सप्चेटु । वम्॰ गहुला । हिं प्रयङ्ग । गौ प्रयङ्ग । )

अय कस्त्रीनामगुषाः।—

कस्तूरो स्रगनाभिस्त मदनी गन्धचेलिका।
विधमुख्या च मार्जारो समगा बहुगन्धदा ॥ ४० ॥
सहस्रविधी प्यामा स्यालामानन्दा स्रगाण्डजा।
कुरङ्गनाभी लिलता मदो स्रगमदस्तथा।
श्यामली काममोदी च विज्ञेयाऽष्टादशाह्वया॥ ४८ ॥
कस्तूरो सुरभिस्तिक्ता चत्तुष्या मुखरोगजित्।
किलासकप्तदीर्गन्ध-वातालन्भीमलापहा ॥ ४८ ॥
(मं कस्तूर। ते कस्तूरिपिति। हिं कस्तूरो। गो स्गनामि।)

त्रांघ कांत्रीभेदाः।—

कपिला पिङ्गला कष्णा कस्तूरी तिविधा क्रमात्। नेपालेऽपि च काम्मीरे कामरूपे च जायते॥ ५०॥ साऽप्येका खरिका तत्रश्च तिलका च्रेया कुलिस्थाऽपरा पिण्डाऽन्थाऽपि च नायिकेति च परा या पञ्चभेदाभिधा।

<sup>\*</sup> त्रङ्गभूमिता एकोनविंग्रतिसंचका।

सा श्रदा सगनाभितः क्रमवशादेषा चितीशोचिता
पच्चत्यादिदिनत्रयेषु जनिता कस्तृरिका स्तृयते ॥ ५१ ॥
चूर्णाक्रतिस्तु खरिका तिलका तिलाभा
कौलत्यवीजसदृशो च कुलित्यका च ।
स्यूता ततः कियदियं किल पिण्डिकास्या
तस्याच किच्चिद्रिका यदि नायिका सा ॥ ५२ ॥
अथ कस्तृरीपरीचा।—

स्वादे तिक्का पिन्तरा केतकीनां गन्धं धत्ते लाधवं तोलने च। याऽसु न्यस्ता नैव वैवर्ण्यभीयात्मस्त्री सा राजभोग्या प्रशस्ता ॥५३

या गन्धं केतकोनामपहरित मदं सिन्धुराणाञ्च वर्णे स्वादे तिज्ञा कटुर्वा लघुर्य तुलिता मर्दिता चिक्कणा स्थात्। दाइं या नैति वज्ञी शिमिशिमिति चिरं चर्मागन्धा इताशे सा कस्तूरी प्रशस्ता वरस्रगतनुजा राजते राजभोग्या॥ ५४॥

#### श्रन्यच ।—

बाले जरित च हरिणे चीणे रोगिणि च मन्दगन्धयुता। कामातुरे च तरुणे कस्तूरी बहुलपरिमला भवति॥ ५५॥

श्रय क्रतिमक्तूरीलच्यम्।—

या सिन्धा धूमगन्धा वहित विनिहिता पीततां पायसीऽन्त-निः प्रेषं या निविष्टा भवित हतवहे भस्मसादेव सद्यः । या च न्यस्ता तुलायां कलयित गुरुतां मिर्हिता रूचताच च्रेया कस्त्र्रिकेयं खलु क्षतमितिभः क्षतिमा नैव सेव्या ॥५६॥ (मं कारीणोकसूरीलचणम्।)

### त्रघ कस्तूरीप्रशंसा।--

श्रुद्धो वा मिलनोऽस्तु वा सगमदः किं जातमितावता कोऽप्यस्थानविधयमत्कृतिनिधिः सौरभ्यमेको गुणः । येनासौ सारमण्डनैकवसितभीसे कपोसे गसे दोर्मूसे कुचमण्डसे च कुकते सङ्गं कुरङ्गोद्दशाम् ॥५०॥

श्रय गोरोचनानामगुखाः।--

गोरोचना रुचि: श्रोभा रुचिरा श्रोभना श्रुमा। गौरो च रोचना पिङ्गा सङ्ख्या पिङ्गला श्रिवा ॥ ५८॥ पीता च गौतमी गव्या वन्दनीया च काञ्चनी। मिध्या मनोरमा श्रामा रामा भूमिकराह्वया॥ ५८॥ \*

> गोरोचना च शिशिरा विषदोषह ली रुचा च पाचनकरी क्रिमिकुष्ठहन्ती। भूतग्रहोपश्मनं कुरुते च पथ्या शृङ्गारमङ्गलकरी जनमोहिनी च॥६०॥ (मंगोरोचन।गो गारोचना।)

> > ज्ञाय कर्पूरनाम।—

कर्पूरी घनसारकः सितकरः श्रीतः श्रशाद्धः श्रिला श्रीतांश्रिक्तं स्वालुका हिमकरः श्रीतप्रभः शास्त्रवः । श्रुश्चांश्रः स्फटिकाश्वसारमिहिकातारास्त्रचन्द्रेन्दव-सन्द्रालोकतुषारगीरकुसुदान्येकादशाह्वा हिशः॥ ६१॥ (सं कर्पूरसः। हिं कापुरः। गो कर्पूरः।)

भूमिकराह्नया एकविंश्रतिसंज्ञका।

रा-र॰

# [ 30€ ]

# राजनिवयुः।

अध कर्प्रभेदाः, तद्गुगाञ्च।—

पोतासो भोमसेनस्तदनु सितकरः ग्रह्मरावाससंज्ञः प्रांग्धः पिञ्जोऽब्दसारस्तदनु हिमयुता बालुका ज्टिका च। प्रवादस्यासुषारस्तदुपरि सहिमः ग्रोतलः पिक्ककाऽन्या कर्पूरस्रेति भेदा गुणरसमहसां वैद्यदृश्चेन दृश्याः ॥ ६२ ॥ कर्पूरो नूतनस्तिकः सिम्धश्चोश्णोऽस्रदाहदः । विरस्थो दाहदोषन्नः स धौतः ग्रुभक्कत्परः ॥ ६३ ॥

श्रध कर्प्रलच्यानि।-

श्रिरो मध्यं तलं चेति कर्पूरस्तिविधः स्मृतः। श्रिरः स्तभाग्रसञ्जातं मध्यं पर्णतले तलम्॥ ६४॥ भास्तिद्यदपुलकं श्रिरोजातं तु मध्यमम्। सामान्यपुलकं स्तव्कं तले चूणें तु गौरकम्॥ ६५॥ स्तभागभीस्थतं श्रेष्ठं स्तभावाद्ये च मध्यमम्। स्वक्तमीषत् हरिद्रामं श्रभं तन्मध्यमं स्मृतम्। सुदृदं श्रभक्ष्यं च पुलकं बाह्यजं वदेत्॥ ६६॥

ऋषि च।-

स्तव्हं सङ्गारपत्नं लघुतरिवयदं तोलने तिज्ञकचेत् स्तादे गैत्यं सुद्धयं वहलपरिमलामोदसौरभ्यदायि । नि:स्नेहं दार्क्वपतं ग्रुभतरिमित चेत् राजयोग्यं प्रशस्तं कर्पूरं चान्यथा चेद्दहतरमश्रने स्फोटदायि व्रणाय ॥ ६०॥ (ते कर्प्रपोतास)। श्रथ चीनकनामगुगाः। (कर्ण्रविश्वषः)।— चीनकश्चीनकर्णूरः क्वत्निमी धवतः पटः। मेघसारगुषारश्च द्वीपकर्णूरजः स्मृतः॥ ६८॥ चीनकः कटुतिक्वीणा ईषच्छीतः क्रफापहः। कार्युद्वोषहरो सेध्यः पाचनः क्रिसिनाशनः॥ ६८॥ (गो चीनेर कर्णूर।)

त्रय जवादिनामगुगाः।—
जवादि गन्धराजं स्थात् क्षत्रिमं स्थानमंजम्।
समूहगन्धं गन्धान्धं स्निग्धं सास्त्राणिकदमम्।
सुगन्धं तैनिर्ध्यासं कुटामोदं दशाभिधम्॥ ७०॥
सौगन्धिकं जवादि स्थात् स्निग्धञ्चोणं सुखावहम्।
वाते हितं च राज्ञाञ्च मोहनाह्वादकारणम्॥ ७१॥
(मं जवादोकस्त्री। गो खाटाश्रो।)

श्रघ जवादिलचयम्।—
जवादि नीलं सिस्नम्धमीषत्पीतं सुगन्धदम्।
श्रातपे बहुलामीदं राज्ञां योग्यं न चान्यया॥ ७२॥
श्रय तूर्णीनामगुषाः।—

त्णीकस्त्रणिकस्तूणी पीतकः कच्छपस्तथा।
नन्दी कुठेरकः कान्तो नन्दीष्टचो नवाह्वयः॥ ७३॥
नन्दीष्टचः कटुस्तिकः शीतस्तिकास्त्रदाइजित्।
श्रिरोऽर्त्तिश्वेतकुष्ठम्नः सुगन्धः पुष्टिबीर्थ्यदः॥ ७४॥
(नन्दोव्रच द्रित कोङ्ग्ये प्रसिद्धः। ते विद्विद्धः। हिं विजयापिपरः। गौ तूणगाक्कः।)

# [ 我。正]

# राजनिषण्डः।

त्रघ जातीपत्रीनामगुषाः।—
जातीपत्री जातिकोशः समनःपतिकाऽपि सा।
मालतीपत्रिका पञ्च-नाम्त्री सीमनसायिनी॥ ७५॥
जातीपत्री कटुस्तिक्षा सुरभिः कपानाश्रनी।
वक्षविश्रयजननी जाह्यदोष्ठनिक्षन्तनी॥ ७६॥
(मं जायपत्री। कं जाइपत्री। हिं जावत्री। गौ जैत्री।)

त्रध जातीप्रस्तामग्रणाः।—
जातीप्रसं जातिप्रस्यं प्रास्तूनं मासतीप्रसम्।
मज्जासारं जातिसारं पुटं च सुमनःप्रसम्॥ ७७॥
जातीप्रसं क्षायीणं कटु कर्ग्छामयार्त्तिजित्।
वातातिसारमेहमं सम्र वहा वृष्यं च दीपनम्॥ ७८॥
( मं जाइप्रस्त । गी जायप्रस्त । )

श्रय कक्षोत्तनामगुणाः। (कङ्गोत्त)।—
कक्षोत्तनं क्षतप्रतं कोलकं कट्नं प्रतम्।
विदेश्यं स्थूतमित्तं कर्कोतं माधनोत्तितम्।
कङ्गोतं कट्पतं प्रोत्तं मारीचं क्र्रसिमतम्॥ ७८॥ \*
कक्षोतं कट् तित्तोष्णं वक्षजाद्यहरं परम्।
दीपनं पाचनं क्चं कप्पवातिनक्षन्तनम्॥ ८०॥
(मं कङ्गोतः। गौ कँकताः।)

त्रय लवङ्गामगुणाः ।— लवङ्गमलिका दिव्यं लवङ्गं ग्रेखरं लवम् ।

<sup>\*</sup> रुद्रसन्मितम् एकाद्रशाभिधम्।

श्रीपुष्यं देवनुसुमं रुचिरं वारिसस्थवम् ॥ ८१ ॥ तीन्तापुष्यं तु सङ्गारं गीर्वाणनुसुमं तथा । पुष्पनं चन्दनादि स्थात् ज्ञेयं त्योदशाह्वयम् ॥ ८२ ॥ लवङ्गं शीतलं तिक्तं चन्तुष्यं भक्तरोचनम् । वातिपत्तकपञ्चन्न तीन्तां मूर्देवजापहम् ॥ ८३ ॥

अपि च।-

लवङ्गं सोश्यानं तोन्त्यां विपाने मध्रं हिमम्। वातिपत्तनपाममं चयनासास्त्रदोषनुत्॥ ८८॥ (मं, नं, लवङ्गनिका। तें लवङ्गल्। दां लवङ्। पारस्य लींग, मेखन्। तां निरम्वेर। हिं लोङ्। गौ लवङ्ग।)

त्रथ खाइनामगुगाः।—

स्वादुस्वगरुसारः स्यात् सुध्रम्यो गन्धध्रमजः । स्वादुः कटुकषायोशाः सधूमामोदवातिजत्॥ ८५॥ (सं अगरु। तें इरुगुइवेटुः। हिं अगरः।)

त्रय लाषागरनामगुषाः।—

क्षणागर स्थादगर शृङ्गारं विश्वरूपकम्।

श्रीषे कालागर केश्यं वसकं क्षणकाष्ठकम्।

धूपाई वसरं गन्ध-राजकं दादशाह्ययम्॥ ८६॥

क्षणागर कट्षाञ्च तिक्तं लेपे च श्रीतलम्।

पाने पित्तहरं किञ्चित् विदोषप्तमुदाहृतम्॥ ८०॥

(मं, कं, क्षणागर, श्रिश्रवाचे माड़। हिं कालागर।

गी काल श्राहा।)

### राजनिषयुः।

अथ काशगरनामग्याः।—

अन्यागर पोतकञ्च लोहं वर्षप्रसादनम्। अनार्य्यक्रमसारञ्च क्रिमिजग्धञ्च काष्ठकम्॥ ८८॥ काष्ठागरु कटूष्णञ्च लेपे रूचं कफापहम्॥ ८८॥ (मं, कं, काष्ठागरु। गौ पौत अगुरु।)

त्रघ दाहागस्नामगुणाः।—

दाहागर दहनागर दाहककार्ष च विक्तकाष्ठ्य।
धूपागर तैलागर पुरच पुरमयनवल्लभच्चैव ॥ ८० ॥
दाहागर कटुकोष्णं केशानां वर्डनच वर्ण्यंच।
श्रपनयति केशदोषानातन्ति सन्ततच्च सौगन्यम् ॥ ८१ ॥
( दाहागर इति गुर्जर प्रसिद्धम् ।)

त्रय मङ्ख्यानामग्याः। (त्रगत्तमेदः)।--

मङ्गल्या मिल्लका गन्ध-मङ्गलाऽगक्वाचका।
मङ्गल्या गुक्शिशिरा गन्धाच्या योगवाहिका॥ ८२॥
(मङ्गल्यागक इति केदारे प्रसिद्धः।)

त्रय जटामांसीनामगुराः।—

मांसी तु जिटला पेशी क्रव्यादी पिशिता मिशी।
केशिनी च जटा हिंसा जटामांसी च मांसिनी ॥ ८३॥
जटाला नलदा मेषी तामसी चक्रवर्त्तानी।
माता भूतजटा चैव जननी च जटावती।
स्रगभचाऽपि चेत्येता एकविंश्रतिधाभिधा;॥ ८४॥
सुरभिस्तु जटामांसी कषाया कटुशीतला।

कफहृद्भूतदाइम्नी पित्तन्नी सोदकान्तिकत्॥ ८५॥ ( मं साधारणजटामांसी। चिं कनुवर। गो जटामांसी।)

श्रय गन्धमांसीनामगुणाः !—
हितीया गन्धमांसी च केशी भूतजटा स्मृता ।
पिश्राची पूतना चैव भूतकेशी च लोमशा ।
जटाला लघुमांसी च ख्याता चाङ्मिताह्वया ॥ ८६ ॥ \*
गन्धमांसी तिक्तशीता कफकण्टामयापहा ।
रक्तपित्तहरा वर्ष्णी विषभूतज्वरापहा ॥ ८० ॥
(सं, सं, बहुलगन्धजटामांसी।)

श्रव श्राकाश्रमां शैनामगुषाः ।—
श्राकाश्रमां से स्वाऽन्या निरालस्वा खसम्भवा ।
सेवाली स्वापती च गौरी पर्वतवासिनी ॥ ८.८ ॥
श्रभ्तमां सी हिमा श्रोफ-त्रणनाड़ी रूजापहा ।
लूतागर्दभजालादि-हारिणी वर्णकारिणी ॥ ८८ ॥
(श्राकाश्रजटामां सो । श्रसाः केदारे उत्पत्तिः ।)

त्रय तुरुष्कनामगुषाः।—

तुरुष्को यावनो धूम्बो धूम्बवर्षः सुगन्धिकः । सिद्धतः सिद्धसारश्च पीतसारः कपिस्तथा ॥ १००॥ पिख्याकः कपिजः कल्कः पिख्डितः पिख्डतेलकः । करेवरः क्रिसको लेपनो सुनिभूह्वयः॥ १०१॥ प

<sup>\*</sup> अङ्किताह्वया नवाभिषा।

<sup>†</sup> मुनिभूह्वयः सप्तद्शा व्यवः ।

## राजनिषयुः।

तुरुष्कः सुरभिस्तिकः कटुम्निग्धश्च कुष्ठजित्। कफपित्तास्मरीमृत्राचातभूतज्वरार्त्तिजित्॥ १०२॥ (मं पिखतैल। गौ शिलारम।)

अध गुरगुलुनामगुषाः।—

गुग्गुलुयंवनिहष्टो भवाभोष्टो निषाटकः । जटालः कालनिर्धासः पूरो भूतहरः प्रिवः ॥ १०३ ॥ कौशिकः प्राम्भवो दुर्गी यातुष्त्रो महिषाचकः । देवेष्टो मक्देग्योऽपि रचोहा रूचगन्धकः । दिव्यसु महिषाचय नामान्येतानि विंग्रतिः ॥ १०४ ॥ गुग्गुलुः कट्तिक्तोष्णः कप्माक्तकामजित् । क्रिमिवातोदरष्ठीष्ट-श्रोपार्शीष्ठो रसायनः ॥ १०५ ॥

(मं गुरगुल् । तें गुग्गिलसुचेष्टु । गौ गुरगुल । )

त्रघ गन्धराजनामगुगाः।---

गन्धराजः स्वर्णकणः सुवर्णः कणगुगुतः।
कानको वंशपोतश्च सुरसश्च पलङ्कषः॥ १०६॥
काणगुगुतः कटूषाः सुरिभवीतनाश्चनः।
श्रूलगुत्सोदराधान-कापनश्च रसायनः॥ १००॥
(मं कणगुगुत्तु।)

त्रय भूमिजगुरगुलुनामगुणाः।—

गुगुलुश्च ढतीयोऽन्यो भूमिजो दैत्यमेदजः। दुर्गोद्वाद इड़ाजात ग्राशादिरिपुसन्भवः। मज्जाजो मेदजश्चैव महिषासुरसन्भवः॥ १०८॥ गुग्गुलुर्भूमिजस्तितः: कटूणः: कफवातित्। उमाप्रियस भूतन्नो मेध्यः सौरभ्यदः सदा॥ १०८॥ (मं भूमिनगुग्लु इति काग्रीदेशे प्रसिद्धः। गौ त्राग्रापूरीधूप इति लोके।)

श्रय रालनामगुणाः।—

राल: सर्जरसश्चेव प्राल: कनकलोइव: ।

ललन: प्रालिनर्व्यासो देवेष्ट: प्रीतलस्तया ॥ ११० ॥
बहुरूप: प्रालरस: सर्ज्जीनर्व्यासकस्तया ।
सुरिध: सुरधूपश्च यचधूपोऽग्निवल्लभ: ।
काल: कललज: प्रोक्तो नान्ना सप्तद्याङ्कित: ॥ १११ ॥
रालस्तु प्रिपिर: स्निष्ध: कषायस्तिकसंग्रह: ।
वातिपत्तहर: स्कोट-क्षण्डूतिव्रणनायन: ॥ ११२ ॥

(मं राख। कं सर्ज्ञरमः। तें सर्ज्ज, सर्ज्जरसम्। प्रझा॰ राखत्राहुँ। हिं किंखि। गौ घूना।)

त्रघ कुन्दुक्कनामगुखाः।—

कुन्दुक्तः सीराष्ट्रः शिखरी कुन्दुक्तकुन्दुकस्तीन्ताः।
गोपुरको बहुगन्धः पालिन्दो भीषण्य दश्मंत्रः॥ ११३॥
कुन्दुक्मधुरस्तितः क्रफपित्तार्तिदाहनुत्।
पाने लेपे च शिशिरः प्रदरामयशान्तिकत्॥ ११४॥
(मं कुन्दुक्तः। कं इड्बोल। गौ कुन्दुक्खोटौ।)

श्रय कुष्ठनामगुगाः।—

कुष्ठं रुजाऽगदो व्याधिरामयं पारिभद्रकम्। रामं वानीरजं वाप्यं चेयं लग्दोषमुत्पलम्।

### [885]

## राजनिषणुः।

कुत्सच पाठवं चैव पद्मनं मनुसंज्ञकम् ॥ ११५ ॥ \* कुष्ठं कट्रष्णं तित्तं स्थात् कफमारुतकुष्ठजित्। विसपेविषकप्डूति-खर्जूददुप्नकान्तिकत् ॥ ११६ ॥ (मं कोष्ट। तें चेंगलिकोष्टु। चिं कूट्। गो कुड़।)

त्रय सारिवानाम ।—
सारिवा शारदा गोपा गोपवल्ली प्रतानिका ।
गोपकन्या लताऽऽस्फोता नवाल्ला काष्ठसारिवा ॥ ११७ ॥
(गो ग्यानालता ।)

अध कणमूजीनामगुणाः।—

सारिवाऽन्या कण्णमूजी कण्णा चन्दनसारिवा।

भद्रा चन्दनगोपा तु चन्दना कण्णवक्षप्रिय ॥ ११८॥

सारिवे दे तु मधुरे कप्पवातास्त्रनामने।

कुष्ठकण्डू ज्वरहरे मेहदुर्गस्थिनामने॥ ११८॥

(मं सारिवा। कं भेंववेज। हिं उपजसरी, गोरियासाड। उत्॰

गुयापानमूज। गौ अनन्तमूज।)

अध नखनामगुषाः।—

नखः कररुः शिखी श्रुक्तिः शङ्घः खुरः श्रुपः । वलः कोशी च करजो हनुर्नागहनुस्तथा ॥ १२० ॥ पाणिजो बदरीपत्नो धूप्यः पख्यविलासिनी । सन्धिनालः पाणिरुः स्थादष्टादशसंज्ञकः ॥ १२१ ॥ नखः स्थादुख्यकटको विषं इन्ति प्रयोजितः ।

मनुसंचवः चतुदंशनामकम्।

कुष्ठकण्डूत्रणञ्जस्य भूतिवद्रावणः परः॥ १२२॥ (मं नख। तें नखमुचिष्प। गौ नखौ।)

त्रथ चत्रीनामगुषाः।-

नखोऽन्यः स्याद्वलनखः सूटस्यस्त्रनायतः । चक्री चक्रनखस्त्रसः काली व्याप्ननखः सृतः ॥ १२३ ॥ द्वीपिनखो व्यालनखः खपुटो व्यालपाणिजः । व्यालायुधो व्यालनलो व्यालखद्गस षोड्ग ॥ १२४ ॥ व्यालनखसु तिक्तोष्णः कषायः कफ्तवातित् । कुष्ठकख्त्रव्यप्तस्य वर्षः सीगन्ध्यदः परः ॥ १२५ ॥ (मं, ७त्॰ वाधनखा । गो वाधनखी ।)

त्रय स्प्रकानामगुषाः।—

स्प्रका च देवी पिश्चना बधू सकोटि भेनु ब्री ह्या शिका सुगन्धा। ससुद्रकान्ता कुटिला तथा च मालालिका भूतलिका च लघी। ॥ १२६॥

निर्मांच्या सुकुमारा च मालाली देवपुतिका।
पञ्चगुप्तिरस्वक्प्रोक्ता नखपुष्पी च विंश्यति: ॥१२०॥
स्प्रका कटुकषाया च तिक्ता श्लेषार्त्तिकासजित्।
श्लेषमेन्द्राश्मरीकच्छ-नाश्मी च सुगम्बदा॥१२८॥
(मंस्रका। कं हिक्के। ते स्रुक्तुवनेहुद्रव्यमु। गौ विहिंशाक!)

त्रष्य खौर्ययनामगुर्याः।-

स्थीणियकं वर्हिणिखं ग्रक्क्हदं मयूरचूड़ं ग्रकपुक्क्कं तथा।

## राजनिष्यः।

विकीर्णरोमापि च कीरवर्णकं
विकर्णसंज्ञं इरितं नवाद्वयम्॥ १२८॥
स्थीणयं कफवातम्नं सुगन्धि कटुतिक्तकम्।
पित्तप्रकोपशमनं बलपुष्टिविवर्द्वनम्॥ १३०॥
(संस्थीणय। कंस्थीणके। हिं युनर। नेपाले सटिनर् इति
प्रसिद्धम्। गौ गे ठेला।)

त्रय सुरानामगुषाः।—

सुरा गत्थवती दैत्या गत्थाच्या गत्थमादनी।
सुरिमर्भूरिगत्था च कुटी गत्थकुटी तथा॥ १३१॥
सुरा तिक्ता कटु: श्रीता कषाया कफिपत्तहृत्।
श्रासासृग्विषदाहार्ति-भ्रममूक्किष्टषापहा॥ १३२॥
(मं सुरा। कं सुरे। सुगन्धिद्रश्यं गोर्करे प्रसिद्धम्। गौ सुरामांसो।)

अय ग्रैलियनामगुगाः।—

शैलेयं शिलजं वृदं शिलापुषं शिलोइवम् ।
स्वितं पिलतं जीणें तथा कालानुसार्थ्यकम् ॥ १३३ ॥
शिलोखन्न शिलादद्वः शैलजं गिरिपुष्पकम् ।
शिलाप्रस्नं सुभगं शैलकं घोड़शाह्वयम् ॥ १३४ ॥
शैलेयं शिशिरं तित्तं सुगन्धि कफपित्तजित् ।
दाहृद्वणाविम्बास-व्रणदोष्ठविनाश्चनम् ॥ १३५ ॥
(मं शैलज । कं कलद्व । हिं भूरक्रिल, क्रा । तें शैलेयमनदृव्यम् । गो शैलज ।)

त्रय चोरकनामगुगाः। (ग्रस्थिपर्धमेदः )ः— चोरकः मङ्कितस्रण्डा दुष्पतः चेसको रिपुः।

# चन्दनादिवर्ः।

[ €.9 €.]

चपलः कितवो ध्र्तः पट्नींचो निशाचरः ॥ १३६॥
गणहासः कोपनकसौरकः फलचोरकः ।
दुष्कुलो ग्रन्थिलसैव सुग्रन्थः पर्यचोरकः ।
ग्रन्थिपणी ग्रन्थिदलो ग्रन्थिपत्रस्तिनेत्रधा ॥ १३०॥ \*
चोरकस्तीत्रगन्धोष्णस्तिको वातकफापहः ।
नासासुखक्जाजीर्थ-क्रिमिदोषविनाश्रनः ॥ १३८॥
(संगाठिवना । ते लितिहाँ । चोरा इति पार्वतीयदेशे प्रसिद्धः ।)

त्रघ पद्मकनामगुणाः ।—
पद्मकां पीतकां पीतं सालयं शीतलां हिसम् ।
शुश्चं केदारजां रक्तां पाटलापुष्पसित्तसम् ।
पद्मकाष्ठं पद्मवृत्तं प्रोक्तां स्थाद्वादशाह्वयम् ॥ १३८ ॥
पद्मकां शीतलां तिक्तां रक्तपित्तिवनाश्रनम् ।
सोहदाहञ्चरश्चान्ति-कुष्ठविस्सोटशान्तिकृत् ॥ १४० ॥
( मं पद्मका । तें एग्रुगुसहदेवि । हिं पद्माका । गौ पद्मकाष्ठ । )

त्रघ प्रपोख्डरोकनामगुणाः।—
प्रपौर्ख्डरोकं चत्तुष्यं पुर्ख्य्यं पुर्ख्डरोयकम्।
पौर्द्ध्यं च सुपुष्पञ्च सानुजं चानुजं स्मृतम्॥ १४१॥
प्रपौर्द्धरोकं चत्तुष्यं सधुरं तिक्तश्रोतलम्।
पित्तरक्तव्रणान् हन्ति ज्वरदाहृष्टषापहृम्॥ १४२॥
(मं पुर्ख्डरोक। ते पुर्ख्डरोकमनुगिविष्यानम्। हिं पुर्ख्डरो।
गौ पुर्ख्डरोकाष्ठा)

<sup>\*</sup> विनेवधा वयोविंश्रातनामकः।

[ = 9 = ]

## राजनिष्युः।

श्रय लामज्जतनामगुणाः। (उग्रीरमेदः)।— लामज्जतं सुनालं स्थादमृणालं लवं लघु। दृष्टकापथकं ग्रीघं दीर्घमूलं जलाश्रयम्॥ १४३॥ लामज्जकं हिमं तित्तं मधुरं वातिपत्तजित्। दृष्टद्राहश्रममूक्शिति-रत्तापित्तज्वरापहम्॥ १४४॥ (मं लामज्जा। तें तहवद्विह। गौ गन्ववेगा।)

न्नामञ्जा। तं तहवष्टिवेरः। गां गन्धवणा। ) त्रिष्ठ रोहिणौनामगुणभेदाश्च।—

मांसरोहि खितिरहा वृत्ता चर्मकषा च सा।
विकसा मांसरोही च ज्ञेया मांसरहा मुनि: ॥ १४५ ॥ \*
ग्रन्था मांसी सदामांसी मांसरोहा रसायनी।
सुलोमा लोमकरणी रोहिणी मांसरोहिका ॥ १४६ ॥
विकसा कटुका तिक्ता तथीणा स्वरसादनुत्।,
रसायनप्रयोगाच सर्वरीगहरा मता।
कषाया ग्राहिणी वर्ष्या रक्तिमनाग्रमादनी ॥ १४० ॥
रोहिणीयुगलं ग्रीतं कषायं क्रिमिनाग्रनम्।
कर्ष्युद्धिकरं रुचं वातदोषनिस्दनम्॥ १४८ ॥

(मं रोहियो। वं मांसरोहियो।) अध स्रोवेष्टनामगुखाः।—

श्रीविष्टो द्वचधूपश्च चीड़ागन्धो रसाङ्गकः। श्रीवासः श्रीरसो विष्टो ज्वच्मीविष्टस्तु विष्टकः॥ १४८॥ विष्टसारो रसाविष्टः चीरशीर्षः सुधूपकः। धूपाङ्गस्तिलपर्णश्च सरलाङ्गोऽपि षोड्श ॥ १५०॥

<sup>\*</sup> सुनिः सप्ताद्वया।

# चन्द्रनादिवर्गः।

[29\$]

श्रीवेष्टः कटुतितस्य कषायः स्रेषपित्तजित्। योनिदोषर्जाजीर्णत्रणप्नाधानदोषजित्॥ १५१॥ (श्रीवेष्टक दति सौराष्ट्रे प्रसिद्धः। गो नवनौतखोटि, तार्पिन्। गन्धविरजा दति केचित्।) श्रथ उभ्रोरनामगुषाः।—

उश्रीरमग्रणालं स्याज्जलवासं हरिप्रियम्।

ग्रणालसभयं वीरं वीरणं समगन्धिकम्॥ १५२॥

रणप्रियं वारितरं शिश्रिरं शितिमूलकम्।
विणीगमूलकं चैव जलासीदं सुगन्धिकम्।

सुगन्धिमूलकं ग्रुमं बालकं ग्रहभूह्वयम्॥ १५३॥ \*

उश्रीरं शीतलं तिकं दाहत्रमहरं परम्।

पित्तज्वरार्त्तिश्रमनं जलसीगन्ध्यदायकम्॥ ३५४॥

(मं बाला। कं बालदवेस । तें विष्टवेसु। हिं खस्। गौ वेणामूल।)

त्रय नित्तकानामगुगाः।—

निर्मिष्या।
सुषिरा धमनो सुत्या रक्तदला नर्त्तको नटी रुद्राः ॥ १५५॥ क निर्मिषा तिक्तकटुका तीन्छा च मधुरा हिमा। कमिवातोदरार्त्व्यर्थः-श्रूलन्नी मलशोधनी ॥ १५६॥ (मं निर्मितालाइ। कं वेतलिको। तें पक्षेमुका। गौ नाल्को।)

द्रसं गन्धद्रव्यकद्ग्बाह्वयवीर्थ्यव्याख्या-वाचोयुक्तिविविक्तोञ्चलसर्गम्।

ग्रह्मभूह्मण्योनविंग्रितिनामकम्।

<sup>†</sup> स्ट्राः एकाद्याञ्चयाः।

[ \$ \$ 0 ]

राजनिष्यः!!

वर्गं वक्ताभोरुहमोदाई मधीयायैनं

सध्येसंसदसी दीव्यतु वैद्यः ॥ १५०॥ \*

ये गन्धयन्ति सकलानि च मृतलानि

लोकांच येऽपि सुखयन्ति च गन्धलुब्धान् ।

तेषामयं मलयजादिसुगन्धिनान्नां

भूर्गन्धवर्ग इति विश्वतिमिति वर्गः ॥ १५८॥ विश्वस्थिने स्थानि भ्रोतस्थाने ।

दुव्यादिव्रजना निषद्गजनितं द्राग्दौः स्थमास्थन् स्वतम् ।

\* पूर्ववत् वर्गमुपसं हरित दत्यिमित्य। दिश्चोकत्रयेण । दत्यम् अनेन प्रकारेण गन्धद्रव्याणां चन्दनादीनाम् कदम्बस्य समूहस्य आह्नयाः नामानि वोद्ये प्रभावश्च तयोव्यां व्याचाः वाक्यस्य युक्तिः प्रमाणञ्च ताम्यां विविक्तः निर्मेखः उच्चवश्च सर्गः रचना यस्य तथाभृतं वक्ताम्भोक्हस्य सुखपद्मस्य मोदाई सुर्शिकरणयोग्यम् एनं वर्गम् अधीय पठित्वा असौ अधीतवर्गः वैद्यः संसदः सभायाः मध्ये (पारे मध्ये पष्ठाा वा दत्यनुश्वासनात् साधुः ) दीव्यत् क्रीडृत् यथेकं विहरत् दत्यर्थः ; परपरिभवभावनातो सुक्तो भवतु दति भावः । दीव्यति दति च केषुचित् पुस्तकेषु पाठो दृश्यते ।

† य इति ।—ये गन्धाः पूर्वोहिष्टसुरिमदूत्र्यासि इत्यधः, सक्तलानि निखलानि भूतलानि गन्धयन्ति सुरभोनि कुर्वन्ति, येऽपि च गन्धलुद्धान् गन्धलोलुपान् लोकान् विलासिनश्च सुखयन्ति सुखिनः कुर्वन्ति ; मलय- जाहोनि यानि सुगन्धीनि श्रोभनगन्धाः इत्यधः तान्धेव नामानि येषां तेष्ठाम् एतहर्गस्थितानां गन्धद्रव्यासां मूः स्थानम् अयं वर्गः गन्धवर्गे इति विश्वतिं स्थातिम् एति प्राप्नोति ; वर्गस्थास्य गन्धवर्गे इति चाप- राख्या इति तात्स्यर्थम् ।

### चन्दनादिवर्गः।

[ ३२१ ]

तस्यायं क्षतिनः क्षतौ नरहरः श्रीचन्दनादिः स्थितिं वर्गी वाञ्छति नामनैगमिश्रखाभूषामणौ द्वादशः ॥१५८॥ \* दति श्रीनरहरिपिख्डितविरिचति निष्यपुराजापरपर्यायनाम-धेयवत्यभिधानचू द्वामणो गन्धवर्गापरनामा चन्दनादिवर्गी द्वादशः।

विश्वीत । - सत्यालनः सत्यः अवितयः आत्मा यस तस्य सत्येकरतस्य यस उन्नैः उनतानि महान्ति इति यावत् भौतानि भौतनानि
स्रभौणि दिगन्ति क्कित्तितया इति बोध्यम् ; चरितानि अभ्यस्य
सविभेषं पर्यानोच्य द्वश्वारित्नजनाः मन्दस्वभावाः निषद्भजनितं संस्
गैजं स्वतम् आत्मीयं दौःस्यं दौर्जन्यं द्राक् भाटिति, ("द्राक् भाटित्यञ्चसाद्वाय" दत्यमरः ) आस्मन् दूरमचिपवित्यर्थः ; (अस्तेर्नुष्टि क्पिसिन्धः)
अयं चन्दनादिः हादभो वर्गः तस्य उन्निखितप्रभाववतः क्रतिनः पण्डितस्य
आयुर्व्वेदविद् इत्यर्धः ; नरहरेः क्रतौ निम्मांगे, निगम्यते अभिधीयते
अनेनिति निगमः घातूनामनेकार्धत्वात्, स एव नैगमः स्वार्धे अन्,
अभिधानमित्यर्थः, नामः नैगमः अभिधानं तस्य भिष्वेव भौषेख्यानिव
तस्या भूषाये अनुकुरणार्थं मिणिरिव तत्र उत्कष्टतमे इत्यर्धः नामनैगमभिष्याचूजामणौ स्थितिम् अवकाभं वाज्कति अभिन्तप्रति, वर्गोऽयम्
अतेव तिष्ठतु इति यावत्।

# अथ सुवर्णादिवर्गः।

MANAMA MANAMA

तिस्वर्षरौष्यतास्त्राणि त्रपु सीसं दिरीतिका। कांस्यायो वर्त्तकं कान्तं किष्टं मुख्ड्य तीन्त्यकम् ॥ १॥ शिला सिन्दूरभूनागं हिङ्गुलं गैरिकं दिधा। तुवरी हरितालञ्च गन्धकं च शिलाजतु ॥ २॥ सिकथकच दिकासीसं माचिकी पच्चधाऽच्चनम्। कम्पिक्षतुत्थरसकं पारदो चाश्वकं चतुः ॥ ३॥ स्मटी च चुल्लकः शङ्की कपर्दः शुक्तिका दिधा। खटिनो दुग्धपाषाणो मणिश्व कर्पूराद्यकः॥ ४॥ सिकता च दिकङ्ग्षं विश्ला च दिधा मता। तथाऽऽखुप्रस्तरश्चैव शरवेदिमित। ह्वया:। श्रय रतं नवं वच्चे पद्मरागादिकं क्रमात्॥ ५॥ माणिकामुताफलविद्रमाणि गारुकातं स्यादय पुष्परागः। वर्जं च नीलञ्च नव क्रमेण गोमेदवैदूर्थ्ययुतानि तानि ॥ ६ ॥ स्फटिक्य स्थिकान्तो वैक्रान्तयन्द्रकान्तकः। राजावर्त्तः पेरोजं स्यादुभी बाणाश्व संस्थया ॥ ७ ॥

त्रथ सुवर्धनामगुषाः।---

खर्षं सुवर्षननको ज्ज्वलकाञ्चनानि कल्याणहाटकहिरस्थमनोहराणि। गाङ्गेयगैरिकसहारजतास्निवीर्थ-रुक्मास्निहेसतपनीयकसास्त्रराणि ॥ ८ ॥ जास्नूनदाष्टापदजातरूप-पिञ्जानचासीकरकर्नुराणि । कार्त्तेखरापिञ्जरसर्भभूरि-तेजांसि दीप्तानलपीतकानि ॥ ८ ॥ सङ्ख्यसीमेरवण्णातज्ञस्य-ग्रङ्गारचन्द्राजरजास्ववानि । ज्ञास्नेयनिष्कास्निणिखानि चेति नेतास्थिनिर्दारितनास हेस ॥१०॥#

खर्षे सिग्धकषायितत्तमधुरं दोषत्रयध्वंसनं
ग्रीतं खादु रसायनञ्च क्चिल्लचन्तुष्यमायुष्पृदम् ।
प्रज्ञावीर्थ्यवलस्भृतिखरकरं कान्तिं विधत्ते तनोः
सन्धत्ते दुरितचयं श्रियमिदं धत्ते तृषां धारणात् ॥ ११ ॥

दाई च रत्तमय यच सितं छिदायां काम्मीरकान्ति च विभाति निकाषपटे। स्निम्धच गौरवसुपैति च यत्तुलायां जात्या तदेव कनकं सृदु रत्तपीतम्॥ १२॥

अध सुवर्णजातिः।—

तचैकं रसविधनं तदपरं नातं खयं भूमिनं किञ्चान्यद्वहुलोहसङ्करभवञ्चेति निधा काञ्चनम् । तत्राद्यं किल पीतरक्तमपरं रक्तं ततोऽन्यत्तया मैरालं तदिकमेण तदिदं स्थात् पूर्वपूर्वीत्तसम्॥ १३॥

श्रय रौषनामगुणाः।— रौप्यं ग्रभ्तं वसुत्रेष्ठं रुचिरं चन्द्रलोहकम्।

नैतार्व्यिनिद्वीरितनाम द्वाचत्वारिंग्र्यामकिमित्वर्धः ।

[ 328]

#### राजनिघयः।

म्बेतनं तु महाम्भं रजतं तप्तरूपनम् ॥ १४ ॥
चन्द्रभूतिः सितं तारं कलधौतेन्दुलोहनम् ।
कुष्यं धौतं तथा सीधं चन्द्रहासं मुनीन्दुनम् ॥ १५ ॥ \*
दीष्यं स्निष्धं कषायास्तं विपाने मधुरं सरम् ।
वातिपत्तहरं रूचं बलीपलितनामनम् ॥ १६ ॥
दाहच्छेदनिकामेषु सितं स्निष्धञ्च यहुरु ।
सुवर्षेऽपि च वर्णाक्यमृत्तमं तदुदीरितम् ॥ १७ ॥
(मं, गौ रूपा। मं विद्वा)

अध तामनामगुणाः।—

तामं में क्लिमुखं ग्रलं तपनिष्टमुदुम्बरम्।
त्राम्बनं चारिवन्दञ्च रिवली हं रिविप्रियम्।
रक्तं नेपालकञ्चेव रक्तधातुः करिन्दुधा॥ १८॥ क
तामं सुपनं मधुरं कषायं तिक्तं विपानि कटु शीतलञ्च।
कामापहं पित्तहरं विबन्ध-शूलप्रपाण्डूदरगुल्मनाशि॥ १८॥
घनघातसहं सिग्धं रक्तपत्रामलं सृदु।
ग्रहाकरसमुत्पनं तामं श्रममसङ्करम्॥ २०॥
(ते राणि। तां सेनवु। हिं तौ वा। गौ तामा।)

त्रघ तपुनामगुणाः।—

तपु तपुसमाण्डूनं वङ्गच मधुरं हिमम्। कुरूप्यं पिचटं रङ्गं पूतिगन्धं दशाह्वयम्॥ २१॥

मुनौन्दुकं सप्तद्याह्नम् ।

<sup>†</sup> करेन्द्रभा द्वाद्रमविधः।

तपुसं कटुतिक्ता हिसं कषायलवणं सरच मेहन्नम्। क्रिसिदा हपा ग्लुग्रमनं कान्तिकारं तद्रसायनचैव ॥ २२ ॥ ग्रेतं लघु स्टटु खच्छं सिग्धसृष्णापहं हिसम्। स्तपत्रकारं कान्तं तपु श्रेष्ठसुदा हृतम्॥ २३ ॥ (मं किथल। कं तवर। गो राष्ट्, वङ्ग।)

जय सीसकनामगुणाः।-

चीसकन्तु जड़ं सीसं यवनिष्टं भुजङ्गसम्।
योगीष्टं नागपुरगं कुवङ्गं परिपिष्टकम् ॥ २४ ॥
च्छु क्षणायसं पद्मं तारम्य ज्ञिकरं स्मृतम्।
सिरावृत्तं च वङ्गं स्थाचीनिपष्टच षोड्म ॥ २५ ॥
सीसन्तु वङ्गतुः स्थात् रसवीर्ध्यितिपाकतः।
उण्यच कफवातममर्भोष्मं गुरु लेखनम् ॥ २६ ॥
स्वर्णे नीलं च्छु स्विग्धं निर्मलच सुगौरवम्।
रौप्यसंभोधनं चिपं सीसकच तदुत्तमम् ॥ २० ॥
ः(तें भिषम्। दा॰ गिम्। इं सोषका।गो सीसा।)

अय रौतिनामगुणभेदाः ।-

रोति: चुद्रसुवर्षं सिंहलनं पिङ्गलच पित्तलकम्। लौहितकमारकुटं पिङ्गललोच्च पीतकं नवधा ॥ २८॥ राजरीति: काकतुग्डी राजपुत्री महेग्बरी। ब्राह्मणी ब्रह्मरीतिच कपिला पिङ्गलाऽपि च॥ २८॥ रीतिकायुगलं तिकं शीतलं लवणं रसे। शोधनं पाग्डुवातम्नं क्रिमिम्नोच्चात्तिपत्तिज्त्॥ ३०॥ शुडा स्निष्धा सदुः शोता सरङ्गा स्त्रपतिणो। हिमोपमा ग्रुभा खच्छा जन्या रीति: प्रकीर्त्तिता ॥ ३१॥ (मं पित्तल। कं पितालियरडु। हिं काँचीपीतरी। गी पितल।)

त्रय कांश्वनामगुगाः।—

कांस्यं सौराष्ट्रिकं घोषं कंसीयं विज्ञलो हकम्। दीप्तं लोहं घोरपुष्पं दीप्तकं सुमनाह्वयम् ॥ ३२ ॥ कांस्यन्तु तिज्ञमुणां चन्नुषां वातकफविकारप्तम्। कृचं कषायर्चं लघु दीपनपाचनं पष्यम्॥ ३३॥ खेतं दीप्तं मृदु च्योति: गृब्दाक्यं स्निग्धनिर्मलम्। घनाग्निसहस्त्राङ्गं कांस्यमुत्तसमीरितम् ॥ ३४ ॥ ( सं कांसें। कं कच्च। हिं कांसा। गी कांसा।)

अध वर्त्तलोहनामगुषाः।-

वर्त्तलोहं वर्त्ततीच्यां वर्त्तवं लोहसङ्गरम्। नीलिका नीललोइञ्च लोइजं वहलोइकम् ॥ ३५॥ द्दं लोइं कट्णाच तिक्तच शिशिरं तथा। कफहृत्यित्तशमनं मधुरं दाइमेहनुत् ॥ २६ ॥

(मंबाटललोइ। कं पचलोइ। वम् पचरसलोइ। "विदरी" द्रति लोके प्रसिद्धम्।)

त्रय त्रयस्कान्तनामगुणाः।—

त्रयस्तान्तं कान्तलोहं कान्तं स्यान्नोहकान्तिकम् । कान्तायसं क्षणलोहं महालोह्य सप्तधा ॥ ३७॥

त्रपि च।-

स्याङ्गासमं तदन चुम्बकरोसकाख्यं स्याच्छेदकाख्यमिति तच चतुर्विधं स्यात्। कान्तास्मलोच्याणवृद्धि ययाक्रमेण दार्चाङ्गकान्तिकचकार्णात्रविरोगदायि॥ ३८॥

तथा च।--

श्रंयस्तान्तिविशेषाः स्युभ्जीमका सुम्बकादयः। रसायनकराः सर्वे देहसिडिकराः पराः॥ ३८॥ न स्तिन विना कान्तं न कान्तेन विना रसः। स्तिकान्तसमायोगाद्रसायनसुदीरितम्॥ ४०॥

त्रथ लोहिकिट्टनामगुगाः।—

लोहिकहन्तु किहं स्थाबोहिचूर्णमयोमलम्। लोहिजं क्षणाचूर्णेच कार्णीय लोहमलं तथा॥ ४१॥ लोहिकिहन्तु मधुरं कटूर्णं क्रिमिवातन्त्। पिताशूलं मरुक्कृलं मेहगुल्मार्त्तिशोफनुत्॥ ४२॥ (मं लोहिकिह। गौ मण्डूर।)

त्रय मुख्डली हनाम।—

मुण्डं मुण्डायसं लोहं दृषत्सारं शिलात्मजम् ॥ श्रमजं क्षिलोहञ्च ग्रारं कृष्णायसं नव ॥ ४३॥

अय तौचानाम।-

तीच्यां शस्त्रायसं शस्तं पिण्डं पिण्डायसं शठम्। स्रायसं निश्रितं तीत्रं लोइखद्भव सुण्डनम्।

### राजनिष्ठण्टुः।

अयिखतायसं प्रोत्तं चीनजं वेदसूमितम् ॥ ४४ ॥ \* ( सं पुढेंतीखें। सं काबुन। तें होगरखोह। गौ दसात। ) अय लोहसामान्यगुगाः।—

लोइं रूचोश्यतिक्तं स्याद्वातिपत्तकफापहम्।
प्रमेहपाग्डुशूलम्नं तीन्त्यां मुग्डाधिकं स्मृतम्॥ ४५॥
अय समकाशोधितधातुदोषाः।—

खर्षं सम्यग्रोधितं त्रमकरं खेदावहं दुःसहं
रोष्यं जाठरजाद्यमान्यजननं ताम्यं विसम्यान्तिदम् ।
नागञ्च त्रपु चाङ्गदोषदमयो गुल्यादिदोषप्रदं
तीच्यां भूलकरञ्च कान्तमुदितं कार्ष्येप्रामयस्कोटदम् ॥ ४६ ॥

विग्रुडिहोनी यदि मुख्तीच्या चुधापही गौरवगुलादायकी। कांस्यायमं क्लेदकतापकारकं रीत्यी च मंमोहनशोषदायिके॥४०॥

त्रय मनःश्रिलानामग्रयाः ।— मनःश्रिला स्थात् क्षनटी मनोज्ञा श्रिला मनोज्ञाऽपि च नागजिज्ञा।

नेपालिका स्थान्मनसञ्च गुप्ता

• कल्याणिका रोगिशिला दशाह्वा ॥ ४८ ॥ मनःशिला कटुः स्निग्धा लेखनी विषनाशनी । भूताविश्वभयोन्माद-हारिणी वश्यकारिणी ॥ ४८ ॥ (मं मणश्रिला। कं मनश्रिले। गौ मनक्राला।)

त्रय सिन्द्रनामगुगाः।—

सिन्दूरं नागरेणुः स्याद्रक्तं सीमन्तकं तथा।

वेदभूमितं चतुईश्रसङ्ग्रकम् ।

नागजं नागगर्भञ्च शोणं वीररजः स्नृतस् ॥ ५०॥
गणेशस्त्रषणं सन्धा-रागं शृङ्गारकं स्नृतस् ।
सीभाग्यस्रषणं चैव मङ्गल्यं मनुसस्मितस् ॥ ५१॥ \*
सिन्दूरं कटुकं तिज्ञसृषणं व्रणविरोपणम् ।
कुष्ठास्त्रविषकण्डूति-वीसपंश्रमनं परम् ॥ ५२॥
(मं, दा॰, हिं, सिन्दूर। तें चेन्दुरस्। तां चेन्दूरम्।
पारस्य शिरिन्ज्। गौ सिन्दूर।)

अध सिन्द्र तच्यम्।—

सुरङ्गोऽग्निसहः सूच्सः स्निग्धः स्वच्छो गुरुर्भेदुः । सुवर्णेकरजः ग्रुडः सिन्दूरो सङ्गलप्रदः ॥ ५३ ॥ श्रुष भूनागनामगुषाः ।—

भूनागः चितिनागय भूजन्तू रक्तजन्तुकः । चितिजः चितिजन्तुय भूमिजो रक्ततुग्छकः ॥ ५४ ॥ भूनागो वज्रमारः स्थानानिज्ञानकारकः । रसस्य जारणे तृक्तं तस्त्रचन्तु रसायनम् ॥ ५५ ॥ (मंदाणवे। कंनैयिनोत्तवे।)

त्रय हिङ्खनामगुगाः।—

हिङ्गुलं वर्बरं रत्तं सुरङ्गं सुगरं सृतम्।
रञ्जनं दरदं क्लेच्छं चित्राङ्गं चूर्णपारदम्॥ ५६॥
अन्यच मारकं चैव मणिरागं रसोइवम्।
रञ्जकं रसगर्भञ्च बाणभूसंख्यसिक्ततम्॥ ५९॥ १

<sup>\*</sup> मनुसम्मितं चतुईशपरिमितम्।

<sup>\*</sup> बाग्रभूसंख्यसमितं पचदशसंब्स्तम्।

#### [ 330 ]

### राजनिघग्टुः।

हिङ्गुलं सध्रं तित्तमुश्यवातकपापहम्। तिदोषदन्ददोषोत्यं ज्वरं हरति सेवितम्॥ ५८॥ (मं हिङ्जा। कं हिङ्जुलीयक। गौ हिङ्जा।)

अध गैरिकदयनामगुणाः।—

गैरिकं रक्तधातुः स्थात् गिरिधातुर्गवेधुकम् । धातुः सुरङ्गधातुय गिरिजं गिरिस्टङ्गवम् ॥ ५८ ॥ सुवर्षगैरिकं चान्यत् स्वर्षधातुः सुरक्तकम् । सन्ध्याभ्तं बभ्नुधातुय शिलाधातुः षड़ाह्वयम् ॥ ६० ॥ गैरिकं मधुरं शीतं कषायं व्रणरोपणम् । विस्कोटाशीऽग्निदाइन्नं वरं स्वर्णदिकं शुभम् ॥ ६१ ॥

(मं गेरु, सोनेगेरु। कं जाजुद्दोजाजु। गो गेरिमाटौ।)

त्रय तुवरीनामगुराः !-

तुवरी सच सौराष्ट्री सत्स्ना सङ्गा सुराष्ट्रजा।
भूष्त्री सतालकं कासी सित्तका सुरसितका।
सुत्या काङ्की सुजाता च ज्ञेया चैव चतुर्दश ॥ ६२॥
तुंवरी तिक्तकटुका कषायास्त्रा च लेखनी।
चत्तुष्या ग्रहणीक्कृदि-पित्तसन्तापहारिणी॥ ६३॥

(मं तुवरो। कं तुवरियमणु। सौराष्ट्रे प्रसिद्धा। गौ तिसकमाठी।)

त्रय इरितालनामगुषाः।-

हरितालं गोदन्तं पीतं नटमण्डनञ्च गौरञ्च। चित्राङ्गं पिञ्चरकं भवेदालं तालकं च तालं च॥ ६४॥

### सुवर्णादिवर्गः।

[ ३३१ ]

कनकरसं काञ्चनकं विङ्गालकञ्चेव चित्रगन्धञ्च।
पिङ्गञ्च पिङ्गसारं गौरीललितञ्च सप्तद्यसंज्ञम् ॥ ६५ ॥
इरितालं कटूषाञ्च स्निग्धं लग्दोषनाप्रनम् ।
भूतश्चान्तिप्रशमनं विषवातक्जात्तिजित् ॥ ६५ ॥
( सं, गौ, चरिताल । कं चरिदाल । )

त्रघ गन्धकनामगुगाः।—

गत्मको गत्मपाषाणो गत्मास्मा गत्ममोदनः ।
पूतिगत्मोऽतिगत्मस्य वटः सौगत्मिकस्तथा ॥ ६० ॥
सुगत्मो दिव्यगत्मस्य गत्मस्य रसगत्मकः ।
कुष्ठारिः क्रूरगत्मस्य कीटमः सरसूमितः ॥ ६८ ॥ \*
गत्मकः कटुक्षास्य तीव्रगत्मोऽतिविज्ञकत् ।
विषमः कुष्ठकर्ष्ट्रित खर्जूत्वग्दोषनास्रनः ॥ ६८ ॥
( म, द्विं, गो, गत्मक । पारस्य गोगिदं । )

श्रय गन्धकभेदाः।—
श्रेतो रक्तय पौतय नीलश्चेति चतुर्विधः।
गन्धको वर्णतो ज्ञेयो भिन्नो भिन्नगुणात्रयः॥ ७०॥
श्रेतः कुष्ठापहारी स्याद्रको लोहप्रयोगकत्।
पोतो रसप्रयोगाही नीलो वर्णान्तरोचितः॥ ७१॥

त्रव शिलाजतुनामगुणाः । — शिलाजतु स्थादस्मीत्वं शैलं गिरिजमस्मजम् । स्रश्मलाचाऽस्मजतुनं जलस्मकमिति स्मृतम् ॥ ७२ ॥

<sup>\*</sup> श्रम्भितः पञ्चदशाह्नयः।

### राजनिष्ययुः।

शिलाजतु भवित्तिकं कट्रणाञ्च रसायनम् ।

मेहोन्सादाश्मरीशोफ-कुष्ठापस्मारनाशनम् ॥ ७३ ॥
(मं, गौ, शिलाजतु । कं कलुवेवकः । "शिलाजित्" इति लोके ।)

श्रय सिक्यनामगुणाः ।—

सिक्यकं मधुकं सिक्यं सधुजं मधुसम्भवम् ।

सदनकं मधूक्षिष्टं सदनं मिक्कामलम् ॥ ०४ ॥
चौद्रेयं पीतरागञ्च सिग्धं मान्निकां तथा ।
चौद्रजं मधुप्रेष च द्रावकं मिक्काश्रयम् ।

सधूषितञ्च सम्प्रोतं मधूयं चोनविंग्रति ॥ ७५ ॥

सिक्यकं कपिलं खादु कुष्ठवातार्त्तिजन्मृदु ।

कटु सिग्धञ्च लेपेन स्फुटिताङ्गविरोपणम् ॥ ७६ ॥

(मं, वं नेया। गौ मोम्।)

श्रय धातुकासीसनामगुगाः :--

कासीसं धातुकासीसं केसरं इंसलीमशम्। श्रीधनं पांश्रकासीसं शुभ्तं सप्ताह्वयं मतम्॥ ७०॥ कासीसं तु काषायं स्थात् शिशिरं विषकुष्ठजित्। खर्जूिक्रिमिचरचैव चत्तुष्यं कान्तिवर्षनम्॥ ७८॥ (मं, कं, कासीस। इंकीसीस्। गौ हिराकस्।)

श्रथ घुष्पकासीसनामगुणाः।— दितीयं पुष्पक्रासीसं वत्सकञ्च मलीमसम्। इन्हलं नेत्रीषधं योज्यं विश्वदं नीलमृत्तिका॥ ७८॥ पुष्पकासीसकं तिक्तं शीतं नेत्रामयापहम्।

### स्रवर्णीदिवर्गः ।

[ ३३३ ]

लेपेनात्यासञ्जष्ठादि-नानात्वग्दोषनाश्वनम् ॥ ८०॥
(मं, कं, पृष्पकासीस। पीतवर्णकासीसभेदः ; तत्तृ भस्मवत्।)
श्रय पात्तमाचिकनामग्रणाः, तद्गेदाश्च।—
साचिकचैव भाचीकं पीतकं धातुसाचिकम्।
तापीजं ताप्यकं ताप्यसापीतं पीतसाचिकम् ॥ ८१॥
श्रावत्तं सधुधातुः स्थात् चौद्रधातुस्त्रयाऽपरः।
प्रोत्तं साचिकधातुश्च वेदभूईंसमाचिकम्॥ ८२॥ \*
साचिकं सधुरं तित्तसम्बं कटु कफापहम्।
असहस्तासस्च्र्क्वार्त्ति-म्बासकासिवषापहम्॥ ८३॥
साचिकं दिविधं प्रोत्तं हेमाह्वं तारमाचिकम्।
सिन्नवर्णविश्रेषत्वात् रसवीर्यादिकं पृथक्॥ ८४॥
तारवादादिकं तार-माचिकच्च प्रशस्यते।
देहे हेमादिकं शस्तं रोगह्वचलपृष्टिदम्॥ ८५॥
(गो स्वर्णमाचिक, रोप्यमाचिक।)

त्रय नीलाञ्जननामगुषाः।-

श्रुद्धनं यासुनं क्षणं नादेयं मेचकं तथा। स्रोतोजं दृक्प्रदं नीलं सीवीरच्च सुवीरजम्॥ ८६॥ तथा नीलाच्चनच्चैव चच्चष्यं वारिसम्भवम्। कपोतकं च कापोतं सम्मोक्तं श्ररसूमितम्॥ ८०॥ १ श्रीतं नीलाच्चनं प्रोक्तं कटु तिक्तं कषायकम्।

<sup>\*</sup> वैद्भू: चतुईशाह्यम्।

<sup>†</sup> शरभूमितं पचदशसंख्यतम्।

### [ ३३४ ] राजनिष्ठरंटुः।

चचुष्यं कप्पवातम् विषम्नञ्च रसायनम् ॥ ८८॥ (मं सौतीराञ्चन । गौ नीलसुर्मा ।)

त्रघ कुलत्याञ्चननामगुगाः।—

कुलस्या हक्प्रसादा च चत्तुष्याऽय कुलस्यिका।
कुलाली लोचनिहता कुम्भकारी मलापहा॥ ८८॥
कुलस्यिका तु चत्तुष्या कषाया कटुका हिमा।
विषविस्फोटकण्डूति-व्रणदोषनिविर्हिणी॥ ८०॥
(मं, कं, कुलस्याञ्चन। तां कसकुटकिनवीज। हिं खापरिया।)

त्रय पुष्पाञ्जननाम गुणाः।—

पुष्पाञ्चनं पुष्पकेतुः कौसुभं कुसुमाञ्चनम्। रोतिकं रोतिकुसुमं रोतिपुष्पञ्च पौष्पकम्॥ ८१॥ पुष्पाञ्चनं हिमं प्रोक्तं पित्तहिकाप्रदाहनुत्। नाश्योदिषकासार्त्तिं सर्वनित्रामयापहम्॥ ८२॥

त्रय रसाञ्चननामगुणाः।—

रसाञ्चनं रसोइतं रसगभें रसायजम्।
कतकं बालभेषज्यं दार्वीकाशोइवं तथा ॥ ८३॥
रसजातं ताच्यंशैलं द्रेयं वर्य्याञ्चनं तथा।
रसनाभं चाग्निसारं दादशाह्वञ्च कीर्त्तितम्॥ ८४॥
रीत्यां तु भायमानायां तिक्विद्यन्तु रसाञ्चनम्।
तदभावे तु कर्त्तव्यं दार्वीकाथसमुद्रवम्॥ ८५॥
(मं, गो, रसाञ्चन। हिं रसीत।)

### सवर्णादिवर्गः।

[ ३३५ ]

श्रय स्रोतोऽञ्जननामगुगाः।—

स्त्रोतोऽज्जनं वारिभवं तथाऽन्यं स्त्रोतोज्ञवं स्त्रोतनदीभवञ्च। सौवीरसारच कपोतसारं वल्मोकशीषं सुनिसस्मिताच्चम्॥८६॥ \* स्त्रोतोऽज्जनं शीतकट् कषायं क्रिसिनाशनम्।

त्रय स्रोतोऽञ्जनलच्यम्।—

वल्योकिशिखराकारं भिन्ननीलाञ्चनप्रभम् । ष्टुष्टे च गैरिकावर्षं श्रेष्ठं स्त्रोतोऽञ्चनञ्च तत्॥ এদ॥

रसाञ्चनं रसे योग्यं स्तन्यवृद्धिकारं परम् ॥ ८.७ ॥

श्रव किम्पन्ननाग्रणाः।—
किम्पन्ननोऽय रत्नाङ्गो रेचनी रेचकस्तया।
रज्जनो लोहिताङ्गश्र किम्पन्नो रत्नचर्णकः॥ ८८॥
किम्पन्ननो विरेची स्थात् क्षट्रणो व्रणनाग्रनः।
कप्तकासार्तिहारी च जन्तुक्रिसिहरो लघुः॥ १००॥
(हिं कस्तीला। गो कमलागुँ ड्रि।)

त्रयं नीलाभ्मजं नीलं हिताभ्मञ्च तुत्यकम्।
तुत्यं नीलाभ्मजं नीलं हिताभमञ्च तुत्यकम्।
मयूरगीवकञ्चेव ताम्मगर्भाग्यतोद्भवम्।
मयूरतुत्यं सम्प्रोत्तं शिखिकग्रदं दशाह्मयम्॥ १०१॥
तुत्यं कटु कषायोणां श्वित्रनेतामयापहम्।
विषदोषेषु सर्वेषु प्रशस्तं वान्तिकारकम्॥ १०२॥
(मं तुत्य। कं मयूरतृत्य। गो तुँते।)

<sup>\*</sup> मुनिसम्मिताह्वं सप्तसंचनम्।

### राजनिघण्टुः।

त्रथ खर्परीनामगुगाः।—

हितीयं खर्परीतुरं खर्परी रसकं तथा। चच्चष्यममृतीत्मनं तुत्थखर्परिका तु षट्॥ १०३॥ खर्परी कटुका तिका चच्चष्या च रसायनी। व्यन्दोषशमनी कचा दीप्या पुष्टिविवर्षनी॥ १०४॥

त्रय पारदनामगुगाः।—

पारदो रसराजञ्च रसनायो महारस:। रसर्वेव महातेजा रसलोही रसोत्तमः ॥ १०५॥ स्तराट् चपलो जैतः शिववीजं शिवस्तथा। असतञ्च रसेन्द्र: स्याज्ञोतियो धूर्त्तर: प्रभु: ॥ १०६ ॥ क्ट्रजो हरतेजय रसधातुरचिन्यजः। खेचरश्वामरः प्रोक्तो देहदो मृत्यनायनः ॥ १००॥ स्तन्दः स्तन्दांशकः स्तो देवो दिव्यरमस्तथा। प्रोत्तो रसायनश्रेष्ठो यशोदस्त्रित्रधाह्नय:॥ १०८॥# पारदः सकलरोगनाश्यनः षड्रसो निख्लियोगवाह्यः। पश्चभूतमय एव कीत्तितो देइलोइपरसिडिदायक: ॥ १०८॥ मूर्च्छितो इरते व्याधीन् बद्धः खेचरसिद्धिदः। सर्वेसिडिकरी नीली निरुद्धी देइसिडिद: ॥ ११०॥ विविधव्याधिभयोदयमर् णजरासङ्गरेऽपि मर्त्यानाम् । पारं ददाति यसात्तसादयमेव पारदः कथितः ॥ १११॥ (मं पारद। कं पारदरसः। गौ पारा।)

तितिधात्रयः तयस्तिंशत्सं चकः ।

### सुवर्णादिवर्गः।

[ 0 | 5

अध अस्रकनामगुगाः।—

श्रभ्वकमभ्यं स्टक्तं व्योमास्वरमन्तरिचमाकाशम्। बद्दपतं खमनन्तं गौरीजं गौरिजियमिति रवय:॥११२॥ श्र खेत पीतं लोहितं नीलमभ्यं चातुर्विध्यं याति भिन्नक्रियार्हम्। खेतं तारे काञ्चने पीतरक्ते नीलं व्याधावश्रमग्रंत्र गुणाव्यम्॥११३॥ (हिं श्राम्। गौ श्रम्र।)

त्रथ तथास्त्रभेदाः।—

नीलाभं दर्दुरो नागः पिनाको वच्च इत्यपि। चतुर्विधं भवेत्तस्य परीचा कथ्यते क्रामात्॥ ११४॥

त्रय दर्दुराहीनां खचगानि ।---

यहक्री निश्चितं तनीति नितरां भेकारवं दर्दुरी नागः पूल्कुक्ते धनुःखनमुपादत्ते पिनाकः किल्। वर्जं नैव विकारमेति तदिमान्यासेवमानः क्रमात् गुल्मी च व्रणवांच कुत्सितगदी नीक्क् च सञ्जायते ॥११५॥

त्रथ रसास्रवयोक्त्यत्तः।—

मनोजभावभावितौ यदा शिवौ परस्परम्। तदा किलाभ्यपारदौ गुष्ठोइवौ बभूवतु:॥ ११६॥

त्रंघ संटीनामगुणाः।—

स्फटी च स्फटिकी प्रोक्ता खेता ग्रभ्वा च रङ्गदा। रङ्गदृढ़ा दृढ़रङ्गा रङ्गाङ्गा वसुसिम्मता॥ ११७॥

\* रवयः हाद्शाह्यः।

रा-२२

Charge 18.5 Springs

## [ 395]

# राजनिघयुः।

स्मटी च कटुका सिन्धा कषाया प्रदरापहा। मेहकच्छवमीशोष-दोषन्नी टढ़रङ्गदा॥ ११८॥ (मं, कं, स्मटिकी। गी पट्किर।)

त्रय चुड्डकनामगुगाः।—

चुन्नकः चुद्रगङ्घः स्यात् ग्रस्त्रको नखगङ्घकः । चुन्नकः कटुकस्तिकः भूलहारी च दीपनः ॥ ११८॥ (मं षुपटगुद्धे। गो जोङ्गरा।)

त्रय प्रज्ञनामगुगाः।—

ग्रह्वी च्चर्णीभवः कम्बुर्जलजः पावनध्विनः।
कुटिलोऽन्तर्भचानादः कम्बूः पूतः सुनादकः॥ १२०॥
सुखरो दीर्घनाद्य बच्चनादो च्चरिप्रियः।
एवं षोड्गधा च्चेयो धवलो मङ्गलप्रदः॥ १२१॥
ग्रह्यः कटुरमः ग्रीतः पृष्टिवीर्थ्यबलप्रदः।
गुल्मग्र्लच्यः खास-नाग्रनो विषदोषनुत्॥ १२२॥
(मं, कं, ग्रह्वः। गौ ग्राँक।)

श्रय क्रिमिश्रङ्खनामगुषाः।—

क्रिमिशङ्घ: क्रिमिजलजः क्रिमिवारिक्चय जन्तुकम्बुय । कथितो रसवीर्याद्यै: क्रतधीभः शङ्कसदृशोऽयम् ॥ १२३॥ (गौ ग्रासुक्।)

श्रय कपर्दनामगुषाः।—

कपर्दकी वराटस कपर्दिस वराटिका। चराचरसरो वर्यो बालक्रीडनकस सः॥ १२४॥

### सुवर्णादिवगः।

[ ३३८ ]

कपर्दः कटुतिक्तोष्णः कर्णभूलव्रणापहः। गुल्मभूलामयञ्जस नेव्रदोषनिक्वन्तनः॥ १२५॥ (सं कवड़ी। हिं कौड़ी। गी कड़ि।)

श्रव श्रिक्तनामग्याः।—
श्रुक्तिर्मुक्ताप्रस्येव सहाश्रिक्तय श्रुक्तिका।
स्रुक्तास्कोटस्तौतिकन्तु सीक्तिकप्रसवा च सा।
श्रेया सीक्तिकश्रिक्तय स्रुक्तासाताऽङ्कधा स्मृता॥ १२६॥ \*
स्रुक्ताश्रिक्तः कटः स्निग्धा खासहृद्रोगहारिणी।
श्रुक्तप्रश्रमनी क्चा सधुरा दीपनी परा॥ १२०॥
(मं नीतोंसीप। मं मुक्तिनिधंषु। गो समुद्रेर वड़ मिनुका।)

श्रय जलश्चित्तनामगुगाः।—
जलश्चित्तवीरिश्चित्तः क्रिमिस् चुद्रश्चित्तवा।
शब्बुका जलश्चित्तश्च पुटिका तोयश्चित्तका॥ १२८॥
जलश्चित्तः कटुः स्निग्धा दीपनी गुल्मश्चलनुत्।
विषदोषच्चा कच्चा पाचनी बलदायिनी॥ १२८॥
(मं नैचौसीपि। कं तीरेयिषंषु। गौ क्षोटिमनुका।)

त्रथ खटिनीनामगुणाः। — खटिनी खटिका चैव खटी धवलस्रक्तिका। सितधातुः खेतधातुः पाण्डुस्रत्याण्डुस्रक्तिका॥ १३०॥ खटिनी सधुरा तिक्ता शीतला पित्तदाच्चत्। व्रणदोषकफास्त्रभी नेवरोगनिकन्तनी॥ १३१॥ (मं खड़ी। कं विशेवद्वा गो खड़ि।)

<sup>•</sup> त्रङ्घा नवाभिषा।

# राजनिषयुः।

## त्रयः दुग्धपात्रायानामगुषाः ।—

दुग्धासमा दुग्धपाषाणः चीरी गोमेदसन्निभः।
वजाभी दीप्तिकः सीधो दुग्धी चीरयवीऽपि च ॥ १३२ ॥
दुग्धपाषाणको रुच ईषदुण्णो ज्वरापदः।
पित्तद्वदोगश्र्लप्नः कासाधानिवनाश्रनः॥ १३३ ॥
(मं सिरिगोला। कं रङ्गवालियदरेहः। हिं शिरगोला।
गो फुलख्दौ।)

श्रथ कर्प्रमणिनामगुणाः।-

कर्पूरनामभिश्वादावन्ते च मिणवाचकः । कर्पूरमिणनामाऽयं युक्त्या वातादिदीषनुत् ॥ १३४ ॥ ("काफुरद्दाना" दित लोके।)

#### अध सिकतानामगुषाः।—

सिकता बाबुका सिक्ता भीतला स्त्यभक्ता।
प्रवाहोत्या महाश्वन्या स्त्या पानीयचूर्यका॥ १३५॥
बाबुका सध्रा भीता सन्तापश्रमनाभिनी।
सेकप्रयोगतश्वेव भाखाभैत्यानिलापहा॥ १३६॥

(मं वालू भलालु। गो वालि।)

त्रय कङ्गुष्ठदयनामगुर्गाः।—

कङ्गुष्टं कालकुष्ठञ्च विरङ्गं रङ्गदायकम् । रिचकं पुलकञ्चेव शोधकं कालपालकम् ॥ १३०॥ कङ्गुष्टं च द्विधा प्रोत्तं तारहेमाभ्यकं तथा ।

### सुवर्णादिवर्गः।

[ \$88]

कट्कं कप्पवातम् रेचकं व्रणशूलच्चत् ॥ १३८॥ ( मं कंकुष्ठ । हिमवत्पादिशाखरचे हरितालवत् पाषाणविश्रेषे । ) श्रष्ट विमलनामगुणाः ।—

विमलं निर्मलं खच्छममलं खच्छधातुकम्। बाणसंख्याभिधं प्रोत्तं तारहेम दिधा मतम्॥ १३८॥ विमलं कटुतिकोणां लग्दोषव्रणनाश्रनम्। रसवीर्व्यादिके तुल्यं विधे स्याङ्गित्रवीर्य्यकम्॥ १४०॥

(मं, वं, विमला। गौ विमल।)

श्रय श्राख्यावाणनामगुणाः।— स्रूषकस्थाभिधा पूर्वे पाषाणस्थाभिधा ततः। श्राख्यावाणनामाऽयं लोइसङ्करकारकः॥ १४१॥ (मं उन्हिरपावाण। गो चुन्बुक्रपाथर।) श्रथ रत्नान।—

तत रत्निक्तिः।—

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत्। ततो रत्नमिति प्रोत्तं ग्रब्दशास्त्रविशारदैः॥ १४२॥

श्रध रत्नपर्यायाः।-

द्रश्यं किञ्चन लक्षोभोग्यं वसुवसुसम्पदो वृद्धिः। श्रीर्व्यवहार्य्यं द्रविणं धनमर्थो राः खापतेयं च ॥ १४३॥ रतं वसुमणिरुपलो ट्रषट्टविणदीप्तवीर्य्याणि। रौहिणकमस्थिसारं खानिकमाकरजमित्यभिनार्थाः॥१४४॥ श्रय माणिक्यनामगुणाः।—

माणिकां शोणरत्नश्च रत्नराष्ट्रविरत्नकम्।

#### [ ३४२ ]

### राजनिषयुः।

शृङ्गारि रङ्गमाणिकां तरली रत्ननायकः ॥ १४५॥
रागद्दक् पद्मरागञ्च रत्नं श्रोणोपलस्तथा।
सीगन्धिकं लोहितकं कुरुविन्दं श्रीन्दुकम् ॥ १४६॥ \*
माणिकां मधुरं स्निग्धं वातिपत्तप्रणाशनम्।
रत्नप्रयोगप्रज्ञानां रसायनकरं परम् ॥ १४०॥

(गौ माथिक।)

त्रयं माणिका जचाम्।—

स्निग्धं गुरुगात्रयुतं दीप्तं खच्छं सुरङ्गच । इति जात्यादिमाणिकां कल्याणं धारणात्कुरुते ॥ १४८॥

त्रथ माणिकादोषकायनम्।—

दिच्छायमभ्यपिहितं कर्कप्रशक्ति सिन्नधूम्बञ्च । रागविकलं विरूपं लघु साणिकां न धारयेद्वीमान् ॥१४८॥

त्रय माखिक्यंभेटाः।-

तद्रत्तं यदि पद्मरागमय तत्यीतातिरत्तं दिधा जानीयात्तुक्तिन्दकं यदक्णं स्यादेषु सीगन्धिकम् । तन्त्रीलं यदि नीलगन्धिकमिति ज्ञेयं चतुर्धा बुधै-मीणिक्यं कषघर्षणेऽप्यविकलं रागेण जात्यं जगु ॥ १५०॥

त्रथ सुताफलनामगुणाः।—

मुक्ता सीम्या मीक्तिकं मीक्तिकेयं तारं तारा भीतिकं तारका च। श्रमःसारं श्रीतलं नीरजञ्च नचत्रं स्यादिन्दुरत्नं वलचम् ॥१५१॥

<sup>\*</sup> ग्ररेन्डुकं पञ्चद्रासंज्ञकम्।

सुताफलं विन्दुफलच्च सुतिका

श्रीतेयकं श्रुक्तमणिः श्रिशियम्।
स्वच्छं हिमं हैमवतं सुधांश्रमं
सुधांश्रदतं श्रदिवसियतम्॥१५२॥ क मौतिकच्च मधुरं सुशीतलं दृष्टिरोगश्रमनं विषापहम्।
राजयद्मसुखरोगनाश्रनं चीणवीव्यवलपुष्टिवर्द्वनम्॥१५३॥

(हिं सीती। गी मुक्ता।) अय मीक्तिक खच ग्रम्।—

नचत्राअं द्वत्तमत्यन्तमुत्तं स्निग्धं स्थूलं निर्मेलं निर्वेण्य । न्यस्तं धत्ते गौरवं यत्तुलायां तिन्नर्भूत्यं मौत्तिकं सौख्यदायि॥ १५४॥

यिक्कायं मौतिकं व्यङ्गकायं ग्रितिस्पर्धे रत्तातां चापि धत्ते। सत्याच्यामं रूचसुत्ताननिम्नं नैतदार्थे धीमता दोषदायि॥१५५॥

त्रय त्रष्टविधमोक्तिकोत्पत्तः।—

मातङ्गोरगमीनपोतिशिरसस्वक्सारशङ्घास्तुस्रत् श्रुक्तीनासुदराच मीक्तिकमिषः स्पष्टं भवत्यष्टधा। क्रायाः पाटलनीलपोतधवलास्ततापि सामान्यतः सप्तानां बहुशो न लिखरितरच्छीक्तेयकं तूल्वणम्॥ १५६॥ श्रथ मौक्तिकपरीचा।—

लवणचारचोदिनि पात्रे गोमूत्रपृरिते चिप्तम् । मर्दितमपि प्रालितुषैर्यदिविकतं तत्तु भीक्तिकं जात्यम् ॥१५०॥

ग्रानिवसिमातं पञ्चविंग्रत्यभिषानकम् ।

# राजनिषय्टुः।

त्रय उत्तमप्रवातनामगुणाः ।—
प्रवालोऽङ्गारकमणिर्विद्धमोऽन्भोधिपस्रवः ।
भीमरत्रच रत्ताङ्गो रत्ताङ्गरो लतामणिः ॥ १५८॥
प्रवालो मधुरोऽन्त्रच कप्पपत्तादिदोषनुत् ।
वीर्थ्यकान्तिकरः स्त्रीणां धतो मङ्गलदायकः ॥ १५८॥
(मं प्रवाल। गौ पला, प्रवाल। हिं सुङ्गा।)
न्यय प्रवाललवणम्।—

ग्रुडं टढ़घनं वृत्तं स्निग्धगात्रं सुरङ्गकम् । समं गुरु ग्रिराहीनं प्रवालं धारयेत् ग्रुभम् ॥ १६०॥

अय सुप्रवाललच्यम्।—

गौररङ्गं जलाक्रान्तं वक्षं सूच्यं सकोटरम्। रूचं क्षणं लघु खेतं प्रबालमग्रुमं त्यजीत्॥ १६१॥

. श्रथ उत्तमप्रवालपरीचा।—

बालार्किकरण्रता सागरसलिलोइवा प्रवाललता।

या न त्यजित निजक्चिं निकषे घृष्टाऽपि सा स्मृता जात्या॥१६२॥

अय गावसतनामगुणाः। ( मरकतम् )।—

गारुत्मतं सरकतं रीहिण्यं हिरमणि:।
सीपणं गरुड़ाहीणं वुधरताध्मगर्भजम्।
गरलारिर्वायवालं गारुडं रुद्रसिम्मतम्॥ १६३॥ \*
सरकतं विषम्नञ्च शीतलं मधुरं रसे।
श्रामणित्तहरं रुचं पुष्टिदं भूतनाश्चनम्॥ १६४॥
(मं मरकत । गो पान्ना।)

<sup>\*</sup> रुट्रसिमतम् एकादशसङ्ग्रकम्।

त्रय शुभगार्कतलच्याम्। —

खच्छं गुरु सच्छायं स्निग्धं गात्रे च मार्दवसमितम् ।ःः अव्यक्षं बहुरक्षं सक्षारि मरकतं ग्रुमं विस्रयात्॥१६५॥

श्रय दृष्टगारुमतलचयाम्।— श्रकीर्लकालिलक्चं मिलनं लघु हीनकान्ति कल्याषम्। त्रासयुतं विक्तताङ्गं मरकतममरोऽपि नोपसुक्कीत ॥ १६६॥

श्रव गावसतपरीचा।—
यत् श्रैवालशिखण्डिशाद्दलहरिलाचेश्र चाषक्कदैः
खद्योतेन च बालकीरवपुषा श्रेरीषपुष्येण च।
छायाभिः समतां दधाति तदिदं निर्दिष्टमष्टात्मकं
जात्वं यत्तपनातपैश्र परितो गावसतं रच्चयेत्॥ १६०॥

अथ पुष्परागनामगुगाः।—

पीतस्तु पुष्परागः पीतस्प्रितिस्य पीतरत्तश्च । पीतास्मा गुरुरतं पीतमणिः पुष्परागञ्च ॥ १६८ ॥ पुष्परागीऽस्त्रशीतश्च वातिजद्दीपनः परः । श्वायुः श्रियञ्च प्रज्ञाञ्च धारणाळ्युरुते तृणाम् ॥ १६८ ॥ (भं पुष्पराग । गौ पोख्राज ।)

त्रघ पुष्परागलचग्रम्।—

सच्छायपीतगुरुगात्रसुरङ्गग्रहं
स्मिष्यच्च निर्मलमतीव सुवृत्तग्रीतम्।
यः पुष्परागममलं कलयेदमुष्य
पुष्पाति कीत्तिमतिग्रीर्थसुखायुर्थान्॥ १७०॥

त्रथ दुष्टपुष्परागलच्याम।—

क्षणविन्दक्षितं रूचं धवलं मिलनं लघु। विक्शायं शर्कराङ्गामं पुष्परागं सदोषकम् ॥ १७१॥

त्रघ पुष्परागपरोचा।—

ष्ट्रष्टं निकाषपट्टे यत्युष्यति रागमधिकमात्मीयम् । तेन खलु पुष्परागी जात्यतयाऽयं परोचकैरुताः ॥ १७२ ॥

त्रय वजनामगुषाः।—

वज्रमिन्द्रायुधं होरं भिदुरं कुलिशं पिवः ।
ग्रमिद्यमिश्ररं रतं दृढं भागेवकं स्मृतम् ।
षट्कोणं बहुधारच श्रतकोट्यव्यिभूमितम् ॥ १७३॥ \*
वज्रं च षद्रसोपेतं सर्वरोगापहारकम् ।
सर्वाध्यमनं सौख्यं देहदाव्यं रसायनम् ॥ १७४॥
(गौ हौरा।)

अघ कुवज्रलच्यम्।—

भस्माङ्गं काकपादञ्च रेखाक्रान्तं तु वर्त्तुलम् । ग्रधारं मलिनं विन्दु-सन्त्रासं स्फुटितं तथा । नीलाभं चिपिटं रूचं तद्दचं दोषदं त्यजीत् ॥ १७५ ॥

त्रय वज्रस चतुर्वर्णलचणम् ।—

खेतालोहितपीतकमेचकतया छायायतस्तः क्रमात् विप्रादिलमिहास्य यत् सुमनसः ग्रंसन्ति सत्यं ततः।

त्रिक्षभूमितं चतुर्दश्रसंचलम्।

स्मीतां कीर्त्तिमनुत्तमां त्रियमिदं धत्ते यथाखं धतं मर्त्वानामयथायथं तु कुलिशं पथ्यं हि नान्यत्ततः ॥ १०६॥

अध वजपरीचा।—

यत्पाषाणतले निकाषनिकरे नोदृष्ट्यते निष्ठुरै-र्यचोलूखललोइसुद्वरघनेर्लेखां न यात्याहतम् । यचान्यन्त्रिजलीलयैव दलयेद्वजेण वा भिद्यते तज्जात्यं कुलिशं वदन्ति कुशलाः साध्यं महार्ध्यंच तत्॥ १७०॥

त्रय चतुर्वेर्धवज्रगुणलचणम्।—

विप्र: सोऽपि रसायनेषु वलवानष्टाङ्गसिषिप्रदो राजन्यसु तृणां बलीपलितजित् सत्यं जयेदञ्जसा। द्रव्याकर्षणसिषिदसु सुतरां वैश्योऽय श्रूद्रो भवेत् सर्वव्याधिहरस्तदेष कथितो वन्नस्य वर्खी गुर्दः॥ १७८॥

अथ नौलनामगुषाः।—

नीलसु सीरिरतं स्थानीलाक्ष्मा नीलरतः । नीलीपलस्तृणयाची मचानीलः सुनीलकः । मसारमिन्द्रनीलं स्थाद्रक्षकः पद्मरागजः ॥ १७८॥ नीलः सितत्तकोणाश्च कप्पपत्तानिलापचः । यो दधाति भरीरे स्थात् सीरिमेंङ्गलदो भवेत्॥ १८०॥

(:सं नीख। गी नीखा।)

त्रधोत्तमनोत्तत्त्वस्यम्।— न निन्नो निर्मलो गात्रमस्रणो गुरुदोप्तिकः। त्रणयाची सदुनीलो दुर्लभो लच्चणान्वितः॥ १८१॥

### अथ कुनोललचग्रम्।—

म् म्हक्तिराध्मका विकायो मिलनो लघुः। क्चः स्फुटितगत्तीय वर्ज्यो नीलः सदोषतः॥ १८२॥

त्रथ नीलपरीचा !—

सितशोषपीतक्कषाण्काया नीले क्रमादिमाः कथिताः।
विप्रादिवर्णसिद्धैर धारणसम्यापि वच्चवत् फलवत् ॥ १८३॥
कि व्यास्थानं चन्द्रिकास्थन्दं सुन्दरं चीरपूरितम्।
यः पात्रं रच्चयत्थाश्च स जात्यो नील उच्चते॥ १८४॥

त्रध गोमेदकनामगुणाः।—
गोमेदकलु गोमेदो राहुरतं तमोमणिः।
स्वर्भानवः षड़ाह्वोऽयं पिङ्गस्फटिक दत्यपि॥१८५॥
गोमेदकोऽस्त उष्णश्च वातकोपविकारजित्।
दोपनः पाचनश्चैव धृतोऽयं पापनाश्चनः॥१८६॥

अय गोमेदलच्याम्।—

गोमूत्राभं यन्तृदु सिग्धमुग्धं ग्रह्मच्छायं गौरवं यच धत्ते। हेमारतं त्रीमतां योग्यमेतत् गोमदाख्यं रत्नमाख्यान्ति सन्तः

AMERICAL PROPERTY

॥ ६८०॥

# त्रय गोमेदपरोचा।—

पात्रे यत न्यस्ते पयः प्रयात्येव गोजलोज्ज्वलताम् । घर्षेऽप्यचीनकान्तिं गोमेदं तं बुधा विदुर्जात्यम् ॥१८८॥ त्ररङ्गं खेतक्षणाङ्गं रेखात्रासयुतं लघु । विच्छायं प्रकरागारं गोमेदं विबुधस्यजेत् ॥ १८८॥

### सुवर्णादिवगै:।

[ 38¢ ]

श्रय वैदूर्यं नामगुणाः। (वैदूर्यंम्)।—

पविदूर्यं नेतुरत्नच्च कैतवं बालवीयजम्।

पावष्यसभ्वलीच्च खग्रव्दाङ्ग्रकस्तथा। \*
वैदूर्य्यस्तं सन्प्रीतं न्नेयं विदूरजं तथा॥ १८०॥
वैदूर्य्यमुणामस्तच्च कफमारुतनाग्रनम्।

गुल्पादिदीत्रग्रसनं भूषितच्च ग्रुभावच्चम्॥ १८१॥

(चिं लस्निया।)

श्रय वैदूर्यं लच्चम्।

एकं विश्वपनाभपेभन्न सायूरक गढिवा

मार्जारेच श्वपिङ्गलच्छ विज्ञा श्वेयं तिथा च्छायया।

यद्गाते गुरुतां दधाति नितरां स्त्रिश्चन्तु दोषोज्भितं

वैदूर्ये विमनं वदन्ति सुधियः स्वच्छं च तच्छो भनम् ॥१८२॥

श्रय क्वेद्रय्येन च शम् । —

विच्छायं स्टच्छिलागभें लघु रूचच सचतम्।

सत्रासं पर्षं क्षणां वैदूर्यं दूरतस्यजेत्॥ १८३॥

श्रध वैदूर्यंपरोचा।—

एष्टं यदात्मना खच्छं खच्छायां निक्काश्मनि । स्मुटं प्रदर्शयदेतद्वेद्र्यं जात्यसुच्यते ॥ १८४ ॥ हित्तं नवरतानि । ]

भ्य नवग्रहरतन्नमः।— माणिकां पद्मबन्धोरतिविमलतमं मौत्तिकं शौतभानो-

मीहियस्य प्रवालं मरकतमतुलं कल्पयेदिन्दुस्नोः।

\* र चयोरभेदं मत्वा केचित् असरोहमिति पठन्ति।

### राजनिष्ययुः।

[ ३५०]

देवेन्ये पुष्परागं कुलिशमिप कवेनीलमर्कात्मजस्य स्वर्भानोश्वापि गोमेदकमय विदुरोद्वावितं किन्तु केतो: ॥१८५॥

अध नवग्रहेषु नवरत्नगुणाः।—

द्रस्मितानि रत्नानि तत्तदुदेशतः क्रमात्। यो दद्याद्विस्यादाऽपि तिस्मिन् सानुग्रहा ग्रहाः॥ १८६॥

त्रघ साधारसरतदोषाः।—

सन्यच्य वज्रमेकं सर्वेत्रान्यत्र सङ्घाते। लाघवमय कोमलता साधारणदोष एव विज्ञेय:॥१८०॥

श्रय महारतीपरतानि।—

लोहितकवच्रमौतिकमरकतनीला महोपलाः पञ्च। वैदूर्यपुष्परागप्रवालगोमेदकादयोऽर्वाञ्चः ॥ १८८॥ गोमेदप्रवालवायव्यं देवेच्यमणीन्दुतरिषकान्ताद्याः। नानावर्णगुणाव्या विज्ञेया स्मिटिकजातयः प्राज्ञैः॥ १८८॥

अघ स्फटिकनामगुगाः।—

स्फटिकः सितोपनः स्थादमनमणिर्निर्मनोपनः स्वच्छः। स्वच्छमणिरमनरत्नं निसुषरत्नं शिवप्रियं नवधा ॥ २००॥ स्फटिकः समवीर्थ्यय पित्तदाहार्त्तिदोषनुत्। तस्याचमाना जपतां दत्ते कोटिगुणं फनम्॥ २०१॥

श्रय साटिकपरीचा।-

यद्रङ्गातोयविन्दुच्छविविमलतमं निसुषं नेत्रहृद्यं स्निग्धं ग्रुडान्तरालं मधुरमतिहिमं पित्तदाहासहारि। पाषाणैर्यनिष्टष्टं स्फुटितसपि निजां खच्छतां नैव जन्नात् तज्जात्यं जाललम्यं ग्रभभुपचिनुते भैवरतं विचित्रम् ॥२०२॥

त्रय सूर्य्यकान्तनामगुणाः।-

श्रथ भवति स्थैकान्तस्तपनमणिस्तपनश्च रिवकान्तः। दीप्तोपलोऽग्निगर्भी ज्वलनाश्माऽकीपलश्च वसुनामा ॥२०३॥ स्थिकान्तो भवेदुश्णो निर्मलश्च रसायनः। वातश्चेषाहरो सिध्यः पूजनाद्रवितुष्टिदः॥ २०४॥ (गौ श्वातसी सिंग।)

त्रय सूर्य्यकान्तपशीद्या।—

शुद्धः स्त्रिष्धो निर्वणो निस्तुषोऽन्तर्यो निर्मृष्टो व्योग्नि नैर्मे स्वमिति । यः स्थ्यांश्रस्पर्शनिष्ट्रातविक्वजीत्यः सोऽयं जायते स्थ्यकान्तः

॥ २०५ ॥

अय वैकान्तनामगुषाः।--

वैक्रान्तं चैव विक्रान्तं नीचवर्जं कुवज्रकम्।
गीनासः चुद्रकुलिशं चूर्णवज्जञ्ज गीनसः॥ २०६॥
वज्जाभावे च वैक्रान्तं रसवीर्य्यादिके समम्।
चयकुष्ठविषमञ्ज पुष्टिदं सुरसायनम्॥ २००॥
वज्जाकारतयैव प्रसद्य हरणाय सर्वरोगाणाम्।
यद्विक्रान्तिं धत्ते तद्दैक्रान्तं वुधैरिदं किष्यतम्॥ २०८॥
(गौ चुिषा)

त्रघ चन्द्रकान्तनामगुगाः।-

इन्दुकान्तयन्द्रकान्तयन्द्राप्ता चन्द्रजोपलः।

# [ ३५२ ]

### राजनिधयः

श्रीताश्मा चन्द्रिकाद्रावः श्रशिकान्तय सप्तधा ॥ २०८॥ चन्द्रकान्तलु शिशिरः स्निन्धः पित्तास्रतापहृत् । श्रिवप्रीतिकरः खच्छो यहालस्त्रीविनाशकृत् ॥ २१०॥

त्रय चन्द्रकान्तलचयाम्। —

स्निम् खेतं पीतमात्रासमितं धत्ते चित्ते खत्कृतां यन्त्रनीनाम्। यच स्नावं याति चन्द्रांश्रसङ्गाज्ञात्यं रत्नं चन्द्रकान्ताख्यमितत् ॥ २११॥

त्रय राजावत्तनामगुखाः।—

राजावंत्ती तृपावत्ती राजन्यावर्त्तकस्तथा।

आवर्त्तमणिरावर्त्तः स्थादिखेषः भराह्वयः॥ २१२॥

राजावर्त्तः कटुः स्निन्धः भिभिरः पित्तनाभनः।

सीभाग्यं कुरुते नृणां भूषणेषु प्रयोजितः॥ २१३॥

(मं राजावर्त्तः। हिं रेवटो।)

त्रय राजावर्तपरीचा।—

निर्गारमसितमस्यं नीलं गुरु निर्मालं बहुच्छायम्। शिखिकग्रहसनं सीम्यं राजावत्तं वदन्ति जात्यमणिम्॥ २१४॥

अध पेरोजनामगुगाः।—

पेरोजं हरिताश्मच भसाङ्गं हरितं दिधा।
पेरोजं सुक्रवायं स्थान्मधुरं दीपनं परम्॥ २१५॥
स्थावरं जङ्गमचैव संयोगाच यथा विषम्।
तस्तवं नाशयेत् शीघ्रं शूलं भूतादिदोषजम्॥ २१६॥
(मं पेरोज। गौ फिरोजा।)

अय अशोधितधातुरत्वदोषाः।--

सिंदाः पारदमभ्वकं च विविधान् धातृंश्व लोहानि च प्राहुः किञ्च मणीनपीह सकलान् संस्कारतः सिद्धिदान् । यत् संस्कारविहीनमेषु हि भवेद्यचान्यया संस्कृतं तन्मार्त्यं विषविद्यहिन्त तिदह ज्ञेया वृषेः संस्क्रियाः ॥ २१०॥

यान् संस्कृतान् ग्रुभगुणानय चान्यया चेद्-दोषांय यानिप दिश्चान्ति रसाद्योऽसी । यायेच सन्ति खलु संस्कृतयस्तदेत-न्नात्राभ्यधायि बच्चित्त्र्त्तसीतिसाम्मिः ॥ २१८॥ इति लोच्चातुरसरत्नतिद्वद्विधागुणप्रकटनस्सुटाचरम् । ग्रवधार्यं वर्गीमिससाद्यवैद्यकप्रगुणप्रयोगनुश्चो सवेद्यः ॥२१८॥

कुर्वन्ति ये निजगुणिन रसाध्वगेन नृणां जरन्यपि वर्षूषि पुनर्नवानि । तिषासयं निवसतिः कनकादिकानां वर्गः प्रसिध्यति रसायनवर्गनास्ता ॥ २२०॥

नित्यं यस्य गुणाः किलान्तरतसक्तस्याणभूयस्तया चित्ताकषणचञ्चवस्त्रिभुवनं भूमा परिष्कुर्वते । तेनात्रैष क्वतं नृसिंहक्ततिना नामादिनूड्रामणी संस्थामिति मितस्त्रयोदशतया वर्गः सुवर्णादिकः ॥ २२१॥ इति श्रीनरहरिपण्डितविरचिते निष्ठस्याजापरपर्यायनामाभि-

धानचू ड्रामणी रसायनवर्गमग्र्डनवर्गापरपर्याय-नामधेयसुवर्णादिवर्गस्त्रयोद्शः।

रा-२३

# अय पानीयादिवर्गः।

त्रय पानीयनामगुखाः।—

पानीयजीवनवनासृतपुष्करान्धःपायोऽस्बुश्स्वरपयःसित्नलोदकानि ।
श्रापः कवार्यकवन्धजलानि नीरकालालवारिक्रमलानि विषार्यसी च ॥ १ ॥
भुवनं दहनारातिर्वास्तोयं सर्वतोसुखं चीरम् ।
घनरसिनम्ममेघप्रसवरसाञ्चेति विक्रिमिताः ॥ २ ॥
पानीयं मधुरं हिमं च रुचिदं तृष्णाविश्रोषापहं
मोहस्नान्तिमपाकरोति कुरुते भुक्तामपिक्तं पराम् ।
निद्राऽऽलस्यनिरासनं विषहरं त्रान्तातिसन्तर्पणं
नृणां धीवलवीय्यतिष्टिजननं नष्टाङ्गपुष्टिप्रदम् ॥ ३ ॥
(मं पाणो । कं नौरपसर । गो जल ।)

त्रथ दिव्योदकनामगुणाः।—
दिव्योदकं खरारि स्यादाकाश्रमिललं तथा।
व्योमोदकं चान्तरिच-जलं चेष्वभिधाद्वयम्॥ ४॥ \*
व्योमोदकं तिदोषन्नं मधुरं पथ्यदं परम्।
रूचं दीपनदं तृष्णा-श्रममेहापहारकम्॥ ५॥
सद्योतृष्ट्यम् भूमिस्यं कलुषं दोषदायकम्

इष्विभिषाद्वयं पञ्चनामकम् ।

# पानीरगदिवगैं:।

[ ३५५ ]

चिरस्थितं लघु खच्छं पष्यं खादु सुखावहम् ॥ ६ ॥ (मं भूईवरिलपाउसाचें उदका गो वृष्टिर जला)

श्रव समुद्रनाम-तज्जलगुणाश्व ।—
यादोनाथसमुद्रसिन्धुजलदाकूपारपायोधयः
पारावारपयोधिसागरसरिन्नाथाश्व वारां निधिः ।
श्रक्षोराधिसरस्रद्रब्बुधिनदीनाथाव्यिनित्यार्णवीदन्बद्दारिधिवार्धयः कधिरपांनाथोऽपि रत्नाकरः ॥ ७ ॥
सागरसिललं विस्तं लवणं रत्नामयप्रदं चोष्णम् ।
वैवर्ष्वदीषजननं विश्रेषाद्दाद्वार्त्तिपत्तकरणं च ॥ ८ ॥

त्रघ नया नाम-तज्जलस्य च गुगाः।--

नदी धनी निर्भारिणी तरङ्गिणी सरस्रती शैवलिनी समुद्रगा। क्लंकषा क्लवती च निन्त्रगा शैवालिनी सिन्धुरयापगाऽपि च ॥ এ॥

इदिनी समुद्रकान्ता सागरगा इहादिनी सिवलार्षू: । स्त्रोतस्त्रिनी सुनीरा रोधोवक्रा च वाहिनी तिटिनी ॥ १०॥ नादेयं सिललं स्वच्छं लघु दीपनपाचनम् । रुचं तृष्णापहं पृथ्यं मधुरं चेषदुष्णकम् ॥ ११॥

त्रथ सामान्यनदोनाम।

गङ्गा भानुसुता रेवा चन्द्रभागा सरस्तती।

मधुमती विपाणाऽय शोणो घर्षरकस्तया॥ १२॥
विव्रावती चौद्रवती पयोण्णी तापी वितस्ता सरयूच सिन्धुः।

महाश्रतद्वर्द्धय गौतमी स्थात् कृष्णा च तुङ्गा च कवेरिकन्या॥१३॥

#### [ ३५६ ]

## राजनिवय्टुः।

इत्येवमाद्याः सरितः समस्तास्तज्ञगवापीक्रदक्पकाद्याः । श्रन्येऽप्यनूपात्मकदेशभेदाः कीलाभिधानैः खयसूहनीयाः ॥ १४ ॥ धाराकारादिकातीयमन्तरिचोद्ववं तथा । परीच्येत यथा चोक्तं ज्ञातव्यं जलवेदिभिः ॥ १५ ॥

अय भागीरधीनाम-तज्जलगुणाय ।--

गङ्गा खर्गसरिहरा तिपयगा मन्दािकनी जाङ्गवी पुष्या विषापदो समुद्रसुभगा भागीरयी खर्णदी। ति:स्नोता सुरदीर्घिका सुरनदी सिहापगा खर्धुनी ज्येष्ठा जङ्गसता च भीषाजननी ग्रुभ्या च गैलेन्द्रजा॥ १६॥ ग्रीतं खादु खच्कुमत्यन्तरुचं पथं पाक्यं पावनं पापहारि। दृष्णामोहध्वंसनं दीपनं च प्रज्ञां दत्ते वारि भागीरथीयम्॥ १०॥

त्रय यसुनानाम-तव्जलगुणाञ्च।—

यमुना तपनतनुजा कलिन्दकन्या यमस्वसा च कालिन्दी ॥१८॥ पित्तदाह्वमनश्रमापहं स्वादु वातजननं च पाचनम् । विज्ञदीपनकरं विरोचनं यामुनं जलिमदं बलप्रदम् ॥ १८॥

श्रथ नर्मदाया नाम तळ्ळ गुगाय। — रेवा मेकलकन्या सोमस्ता नर्मदा च विश्वेया॥ २०॥ सिललं लघु शीतलं सुपथ्यं कुरुते पित्तकफप्रकीपणम्। सिकलामयमहैनं च रुचं मधुरं मेकलकन्यकाससुस्रम्॥२१॥

त्रय चन्रमागाजलगुगाः।— चान्द्रभागसलिलं सुत्रीतलं टाइपित्तश्मनं च वातदम्॥ २२॥ श्रथ सरखतीनाम-तज्जलगुणाश ।—
सरखती प्रचससुद्भवा च सा वाक्प्रदा ब्रह्मसती च भारती ।
विदायणीश्वैव पयोष्णिजाता वाणी विश्वाला कुटिला दशाह्वा ॥२३ ॥
सरखतोजलं स्वादु पूर्त सर्वक्जापहम् ।
क्चं दीपनदं पथ्यं देहकान्तिकरं लघु ॥ २४ ॥
श्रथ समुमतीजलगुणाः !—

चान्द्रभागगुणसाय्यदं जलं किञ्च साधुसतमग्निदीपनम् ॥ २५ ॥ (सधुमती काम्मीरनदी।)

श्रय भ्रतह्र भर्गतनदीजलगुगाः।—

ग्रतद्रोविपाभायुजः सिन्धुनद्याः सुभीतं लघु स्वादु सर्वासयम् ।

जलं निर्मलं दीपनं पाचनच्च प्रदत्ते बलं वृद्धिमधाऽऽयुषच्च ॥२६॥

(मं सुक्द्रिः। कं विपाभासिन्धु।)

त्रथ श्रोणचर्षरकवेतावतीनदीजलगुणाः ।—
श्रोण घर्षरके जलं तु एचिदं सन्तापश्रोषापद्यं
पथ्यं विद्धकारं तथा च बलदं चीणाङ्गपुष्टिप्रदम् ।
ततान्या दधते जलं सुमधुरं कान्तिप्रदं पुष्टिदं
वृष्यं दीपनपाचनं बलकरं वितावती तापिनी ॥ २७ ॥
(श्रोणनदः घर्षरनदी बिन्योत्तरे प्रसिद्धा ; बबंर दित केचित् ।
नेतवती वितावतीति नामा उत्तरे प्रसिद्धा ।)

अघ पयीष्णीनदीनलगुगाः।—

पयोश्णीसलिलं क्चं पिवतं पापनाश्चनम्।
सर्वामयहरं सौख्यं बलकान्तिप्रदं लघु॥ २८॥
(पयोश्णी बिन्याचलद्विणे प्रसिद्धा।)

#### [ ३५८ ]

## राजनिघयः।

अध वितस्तानदीजलगुगाः।-

वितस्तासलिलं स्वादु तिदोषश्मनं लघु। प्रज्ञाविद्वप्रदं पथ्यं तापजाबाहरं परम् ॥ २८॥

(वितस्ता काम्मीरे प्रसिद्धा।)

त्रय सरयूनदीजलगुगाः।-

सरयूसलिलं खादु बलपुष्टिप्रदायकम् ॥ ३०॥ ( सरय्नदी उत्तरे प्रसिद्धा। )

श्रय गोदावरीनदीनाम-तज्जलगुणाश्च ।-

गोदावरी गौतमसभावा सा ब्रह्माद्रिजाताऽप्यथ गौतमी च ॥३१॥ पित्तार्त्तिर ज्ञार्त्तिसमीर हारि पथ्यं परं दीपनपाप हारि। कुष्ठादिदुष्टामयदोषहारि गोदावरीवारि त्रषानिवारि ॥३२॥

(गोदावरी विन्ध्यदिच्यो प्रसिद्धा।)

त्रय संधानदीनाम-तज्जलगुयाय।-

क्षणानदी कष्णससुद्भवा स्थात्मा कष्णवेणाऽपि च कष्णगङ्गा ॥३३॥ कार्थीं जाडाकरं खादु पूतं पित्तास्त्रकोपनम्। क्षण्विणाजलं खच्छं रुचं दीपनपाचनम् ॥ ३४॥ (क्रणागङ्गा विन्ध्यदिचियी प्रसिदा।)

म्रय मलापद्दाभीमरयीचट्टगानदीजलगुगाः।--

मलापहा भीमरथी च घटगा यथा च क्षणाजलसाम्यदा गुणै:। मलापहाचद्दगयोस्तयाऽपि पथ्यं लघु स्वादुतरं सुकान्तिदम् ॥३५॥

त्रय तङ्गद्रानदीजलगुवाः।— तुङ्गभद्राजलं सिग्धं निर्मलं स्वाददं गुरु।

#### पानौयादिवर्गः।

[३५८]

काण्ड्पित्तास्तदं प्रायः सात्मेत्र पष्यकरं परम् ॥ ३६ ॥ ( तुङ्गमद्रा दिचणे प्रसिद्धाः। )

श्रय काविरीनहोजलगुगाः ।— काविरीसलिलं खादु श्रमग्नं लघु दीपनम् । दहुकुष्ठादिदोषग्नं मेधावुडिक्चिप्रदम् ॥ ३०॥

त्रय नदीविष्रेषजनगणः ।— नदीनामित्यमन्यासां देशदोषादिभेदतः । तत्ततुषान्वितं वारि ज्ञातव्यं क्षतबुद्धिभः ॥ ३८॥

त्रघ देशविशेषाचदीजलगुगाः।--

सर्वा गुर्वी प्राङ्मुखी वाहिनी या लघी पश्चाहाहिनी निश्चयेन ! देशे देशे तहुणानां विशेषादेषा धत्ते गौरवं लाघवच्च ॥ ३८॥

बिन्ध्यात्राची याऽप्यवाची प्रतीची
या चोदीची स्थान्नदी सा क्रमेण।
वाताटोपं श्लेषपित्तार्त्तिलोपं
पित्तोद्रेकं पथ्यपाकच्च धत्ते॥ ४०॥
हिमवति मलयाचले च बिन्ध्ये
प्रभवति सद्यगिरी च या स्ववन्ती।
स्वाति किल प्रिरोक्जादिदोषानपनुदतिऽपि च पारियात्रजाता॥ ४१॥

त्रथ कालमेदावदीजलगुग्रमेदाः।—
नदाः प्रावृषिजालु पीनसकप्रश्वासार्त्तिकासप्रदाः
पथ्या वातकपापहाः ग्ररदिजा हेमन्तजा बुद्धिदाः।

सन्तापं श्रमयन्ति शं विद्धते शैशिर्ध्यवासन्तजा-स्तृष्णादाच्चविमयमार्त्तिशमदा श्रीषो यथा सहुणाः॥ ४२॥

अध अन्पदेशजलगुगाः।—

अनूपसिंत्वं खादु स्निग्धं पित्तहरं गुरु । तनोति पासकार्ष्टूति-कफवातच्चरामयान् ॥ ४३ ॥

श्रध जाङ्गलदेशजलगुगाः।—
जाङ्गलस्तिलं स्वादु तिदोषन्नं रुचिप्रदम्।
पर्यं चायुर्वलवीय्य-पृष्टिदं कान्तिसत्परम्॥ ४४ ॥

त्रय साधारगजनगुगाः।—

साधारणं जलं रुचं दीपनं पाचनं लघु । असंख्णापहं वात-कफमेदोन्नपुष्टिदम् ॥ ४५ ॥ े

श्रथ देशभूमिभेदात् जलगुणाः।—
जातं तास्त्रस्टदस्तदेव सिललं वातादिदोषप्रदं
देशाज्जाद्यकरं च दुर्जरतरं दोषावहं धूसरम्।
वातम्नं तु शिलाशिरोत्यममलं पथ्यं लघु स्नादु च
श्रेष्ठं ग्यामस्टदस्त्रदोषश्रमनं सर्वामयम्नं पयः॥ ४६॥

श्रय द्रदर्वारिग्रणाः।—

ह्रदवारि विज्ञजननं मधुरं कफवातचारि पथ्यं च ॥ ४०॥

(श्रीचल।)

श्रथ प्रस्ववणजलगुगाः।—
प्रस्ववणजलं खच्छं लघु सधुरं रोचनं च दीपनक्कत् ॥ ४८॥
(मं दराचेम्पाग्री। कं श्रीरविनवदक्का। गो भर्गार जल।)

त्रघ तद्वागजलगुगाः।—

तड़ागसिललं स्वादु कषायं वातदं क्रियत् ॥ ४८ ॥ \*
(सं तलावाचिम्पागी । कं केरेयत्रर ।)

श्रथ वापीजलगुर्खाः ।— वापीजलं तु सन्तापि वातस्रेक्षकरं गुरु ॥ ५०॥ <sup>त</sup> श्रय कूपजलगुर्खाः ।—

क्षफ झं कूपपानीयं चारं पित्तकरं ख घु ॥ ५१ ॥ ध (मं कूपजल। कं सेन्देयवापि। गौ क्षयोर जल।)

त्रय उद्गिदजलगुगाः।—

श्रीद्भिदं पित्तशमनं सलिलं लघु च स्मृतम्॥ ५२॥ १। ( मं विहरी। वं श्रीरते। )

त्रध केदारजलगुषाः।—
केदारसिललं स्वाटु विपाके दोषदं गुरु।
तदेव बद्धसुत्तन्तु विश्रेषाद्दोषदं भवेत्॥ ५३॥
(मं पाटाचिम्यायो। कं कालवेय उदकर।)

- प्रश्नसभू विभागस्थी वहु श्वंतसरोषितः ।
   जलाग्रयस्त ङ्ग्गाः स्थात् ताङ्गं तळ्ळालं स्मृतम् ॥ -
- † पाषाणेरिष्टकामिर्वा बद्धः कूपो बद्धतरः। ससीपाना भवेदापी तज्जलं वाप्यसुच्यते॥
- ‡ भूमी खातोऽव्यविखारो गन्भौरो मण्डलाक्रतिः। बह्नोऽबद्धः स क्रूपः स्थात्तदम्भः कौपमुच्यते॥
- शिवदार्थ्य भूमिं निम्नां यत् महत्या धारया सवत् ।
  तत्तोयमौद्धिदं नाम वदन्तीति महर्षयः ॥

अध इंसोदकगुणाः।—

नादेयं नवस्रह्यदेषु निहितं सन्तप्तमकीं श्रमि-र्यामिन्यां च निविष्टमिन्दु किरणैर्मेन्दा निलान्दो लितम् । एलाद्यै: परिवासितं अमहरं पित्तोण्यदाहे विषे मूर्च्कारक्तमदात्ययेषु च हितं शंसन्ति हंसोदकम् ॥ ५४॥

श्रथ प्रायपोतोदकगुणाः।—

यः पानीयं पिबति शिशिरं खादु नित्यं निशीये
प्रत्येषे वा पिबति यदि वा घ्राणरन्थेण धीरः।
सोऽयं सद्यः पतगपतिना सार्षते नित्रशक्त्या
स्वर्गाचार्यं प्रहसति धिया देष्टि दस्ती च तन्वा॥ ५५॥

श्रघ दूषितजललच्यम्।—

विषमूत्रार्णनी लिकाविषहतं तप्तं घनं फेनिलं दन्तग्राह्ममनात्तवं सलवणं श्रैवालके: संव्रतम् । जन्तुत्रातविमिश्रितं गुरुतरं पर्णौधपङ्गाविलं चन्द्राकीं श्रितरोहितं च न पिवेनीरं जड़ं दोषलम् ॥ ५६॥

श्रथ रोगिविश्वेष श्रीताम्बुपरिवर्जनम्।— पार्श्वश्रुली प्रतिश्वाये वातदोषे नवन्तरे। हिकाऽऽभानादिदोषेषु श्रीताम्बु परिवर्जयेत्॥ ५७॥

श्रथ रोगिवभिषे भ्रतभोतज्ञ्ञम्।—
धातुचये रक्तविकारदोषे वान्यस्त्रमेहे विषविश्वमेषु।
जीर्णज्वरे भैथिलसन्निपाते जलं प्रभस्तं शृतभीतलन्तु॥ ५८॥
(मं कदुभौलपायो। कं कादारिदनीक्। गौ ठाय्डाकरा गरमज्ञ्जः।)

त्रय पादादिहीनतप्तजलगुगाः।—

तप्तं पायः पादभागेन हीनं प्रोत्तं पथ्यं वातजातामयन्नम् । अक्षांश्रोनं नाश्येदातपित्तं पादपायं तत्तु दोषत्रयन्नम् ॥ ५८॥

त्रय ऋत्विभेषे पादादि ही नतप्तजलम्।—

हेमन्ते पादहीनन्तु पादार्जीनन्तु शारदे। प्रावृड्वसन्ते शिशिरे ग्रीभे चार्जावशिषितम्॥ ६०॥

अय ऋतुविभेषे ग्राम्यं कौपाद्जलम्।—

कीपं प्रास्त्रवणं वाऽपि शिशिरर्त्तुवसन्तयोः । ग्रीसे चौड़ं तु सेवेत दोषदं स्थादतोऽन्यया ॥ ६१॥

त्रय उषाजलस व्यवहारिनयमः।—

तप्तं दिवा जाड्यसुपैति नक्तं नक्तं च तप्तं तु दिवा गुरू स्थात्। दिवा च नक्तं च नृभिस्तदाल-तप्तं जलं युक्तसतो यहीतुम् ॥६२॥३

अय अवस्थाविभेषे भौतीर्णजनस्य दितकारिता।—

उष्णं कापि कापि शीतं कवीष्णं कापि कापि काषशीतच्च पाषः। इस्यं नृणां पष्यमेतत् प्रयुक्तं कालावस्थादेइसंस्थानुरोधात्॥ ६३॥

अध रात्री उच्चाम्बुपानस गुचाः।-

अपनयति पवनदोषं दलयति कफमाश्च नाश्यत्यक्चिम्। पाचयति चान्नमनलं पुश्चाति निशीयपीतसुश्चासः॥ ६४॥

<sup>\*</sup> द्वितातमं रालिवर्च्यम् ; रालितमं दिवावर्च्धमित्यर्धः।

अय समयविश्रेषे जलपानगुगाः।—

रात्री पीतमजीर्गदीषशमनं शंसन्ति सामान्यतः पीतं वारि निशाऽवसानसमये सर्वामयध्वंसनम् । भुक्ता तूर्द्वमिद्च पुष्टिजननं प्राक् चेदपुष्टिप्रदं रुचं जाठरविज्ञपाटवकरं पष्यच्च भुत्वान्तरे ॥६५॥

श्रय जलपानविधिः।—

अत्यस्बुपानान विपचतेऽन्नसनस्बुपानाच स एव दोष: । तस्मानरो वज्ञिविवर्द्धनार्थे सुदुर्सुदुर्वारि पिवेदसूरि ॥६६॥

त्रय त्रन्तरीच जलमेदाः।—

जलं चतुर्विधं प्राहुरन्तरिचोज्ञवं बुधाः। धारं च कारकं चैव तौषारं हैमिसिखपि॥ ६०॥

त्रय धारादोनां चतुर्थां खरूपम्।—

ग्रम्बु वर्षोद्भवं धारं कारं वर्षोपलोद्भवम् । नीहारतोयं तौषारं हैसं प्रातिहंसोद्भवम् ॥ ६८ ॥

अध धाराया मेदौ।—

धारं च दिविधं प्रोक्षं गाङ्गसामुद्रभेदतः । तत्र गाङ्गं गुणाच्यं स्थात् ग्रदोषं पाचनं परम् ॥६८॥

त्रय गाङ्गनललचयम्।—

यदा स्वादाधिने मासि स्थः स्वातिविधाखयोः। तदाध्य जलदेर्भुतं गाङ्गमुत्तं मनीषिभः॥ ७०॥ श्रय सामुद्रजललच्यम्। —

अन्यदा सगशीर्षास्-नचत्रेषु यदब्बुदैः ।

अभिव्रष्टमिदं तीर्यं सासुद्रामित शब्दितम् ॥ ७१ ॥

त्रय गाङ्गजलय लच्यान्तरम्।—

धाराधरे वर्षति रौप्यपाते विन्यस्य ग्रास्थोदनसिद्धपिग्छे । दभ्गोपदिग्धे निहितं सुहर्त्तादिविक्रियं गाङ्गमयान्यया स्यात् ॥७२॥

अय गाङ्गजलगुगाः।—

गाङ्गं जलं खादु सुग्रीतलं च क्चिप्रदं पित्तकपापहञ्च। निर्दीषसक्कं लघु तज्ञ नित्यं गुणाधिकं व्योन्ति ग्रहीतमाहु:॥७३॥

> त्रव चन्द्रकान्तमिषासुतज्ञेषाः।— चन्द्रकान्तोद्ववं वारि पित्तम्नं विमलं लघु। सूर्क्कापित्तास्त्रदाहेषु हितं कासमदात्वये॥ ७४॥

त्रय सामुद्रजलगुगाः ।— सामुद्रसलिलं शीतं कफवातप्रदं गुरु । चित्रायासाध्विने तच्च गुणाकां गाङ्गवद्भवेत् ॥ ७५ ॥

त्रय भूमिविशेषे पिततज्ञलय गुणाः।—

पिततं भुवि यत्तीयं गाङ्गं सामुद्रमेव वा।

स्वस्वाययवशाह च्छोदन्यदन्यद्रसादिकम्॥ ७६॥

श्रम्तं च लवणं च स्थात्पितितं पार्थिवस्थले।

श्राप्ये तुः, मधुरं प्रोत्तं कटु तिकं च तैजसे॥ ७०॥

कषायं वायवीये स्याद्यत्वं नाससे स्मृतम्।

तत्र नाससमेवोत्तमुत्तसं दोषवर्जितम्॥ ७८॥

## राजनिष्युः।

श्रथ श्राश्विनमासे व्रष्टाभावस दोषोत्तिः।—
यत्न चेदाश्विने मासि नैव वर्षति वारिदः।
गाङ्गतोयविष्टीने स्युः काले तत्नाधिका रुजः॥ ७८॥
श्रथ सर्वावस्थायामेव जलस्य देयतानिर्देशः।—
कादिदृश्यं काचिक्त्तीतं काचित् काथितश्रीतलम्।
काचिद्रेषजसंयुक्तं न काचिद्दारि वार्थ्यते॥ ८०॥
[इति पानीयप्रकरणम्।)

त्रय दक्षेदाः।—

इचवः पश्चधा प्रोक्ता नानावर्णगुणान्विताः। सितः पुर्ण्डः करङ्केचः क्षणो रक्तस्र ते क्रमात्॥ ८१॥ अध साधारण इचनाम।—

इन्नः कर्कटको वंगः कान्तारः सुकुमारकः। ग्रसिपत्नो मधुद्धणो वृष्यो गुड़द्धणो नव ॥ ८२॥ (तें चेरकु। प्राक्ततः कंस्। हिंगाखा, उख्। गौ ग्राक्।)

श्रध श्रेतेचुनामगुगाः।—

खेते ज्ञुसु सिते ज्ञुः स्थात्माष्ठे ज्ञुनैं श्रापत्न कः । सुवंशः पाण्डुरे ज्ञुस काण्डे ज्ञुनैव ले ज्ञुकः ॥ ८३॥ सिते ज्ञुः कि ठिनो क्चो गुरुस कफमूत्र कत् । दीपनः पित्तदा हुन्नो विपाके को श्यादः स्मृतः ॥ ८४॥ (मं पाण्ढरा जंस। कं विजियक ज्ञु। गौ शादा स्नाक्।)

त्रथ पुराष्ट्रनामगुराः।—

पुण्डुकलु रसाल: स्यात् रसेन्तः सुनुमारकः।

# पानोयादिवर्गः।

[ २६७]

कर्नुरो सिय्ववर्णस नेपालेचुस सप्तधा ॥ ८५ ॥ पुण्ड्रोऽतिसधुर: ग्रीत: कफक्कत्यित्तनाग्रन:। दाहम्मसहरो रूचो रसे सन्तर्पण: पर:॥ ८६ ॥ (मं पुण्डाकँस। कं वासरकतु। गौ पुँड्रो जाक, क्रांवि जात्।)

त्रथ करङ्गनामगुगाः।—

श्रन्यः करङ्गशालिः स्थादिन्नुवाटीन्नुवाटिका।
यावनी चेन्नुयोनिश्च रसाली रसदालिका॥ ८०॥
करङ्गशालिर्मधुरः शीतली क्चिक्तन्मृदुः।
पित्तदान्नुचरो वृष्यस्तेजीवलविवर्षनः॥ ८८॥

(मं रसदालि। कं रसालकंस।)

त्रथ क्षणेचुनामगुणाः।—

कणो चुरिचुरः प्रोक्तः श्यामेचुः को किलाचकः । श्यामवंशः श्यामलेचुः को किलेचुय कथ्यते ॥ ८८॥ कणो चुरुको मधुरय पाके खादुः सुद्धद्यः कटुको रसाद्यः। विदोषचारी श्रमवीर्थद्य सुबत्यदायी बहुवीर्थदायी॥ ८.०॥ (भं कालाजंस। कं करियक्तवु। गौ काल्लि श्राक्।)

श्रय रत्तेचुनामगुणाः।-

रते चु: स्कापत्र योगो लोहित उकाट:।

मध्रों इस्तमूलय लोहिते चुय कोर्त्तित:॥ ८१॥
लोहिते चुय मध्रः पाने स्थाच्छीतलो मृदुः।

पित्तदा इस्रो वृष्यस्ते जोवलिव वर्षनः॥ ८२॥

( भं लोहितवा जँष। गो वोम्बाइ ग्रान्।)

# [ 382]

## राजनिषखुः।

त्रय द्चुमूलनाम।—

द्रुमूलं लिखुनेतं तच मोरटकं तथा। वंशनेतं वंशमूलं मोरटं वंशपूरकम् ॥ ८३॥ (मं जँ साचेंमूल। कं किव्यनवेष। गौ त्राकेर मूल।)

त्रघ दचुरण्डमूजमध्याग्रेषु रसविशेषाः ।—
मूलाटूईन्तु मधुरा मध्येऽतिमधुरास्तथा ।
दचवस्तेऽग्रभागेषु क्रमास्रवणनीरसाः ॥ ८४ ॥
त्रघ दिनस्र समयविशेषे भृतेचुगुणाः ।—
त्रभृतो पित्तहास्रेते भृतो वातप्रकोपणाः ।
भृतमध्ये गुरुतरा दतीच्रणां गुणास्त्रयः ॥ ८५ ॥

त्रघ दन्तिम्यीडितेचीः गुणाः ।—
वृष्यो रत्तास्विपत्तत्रमग्रमनपटुः ग्रीतनः स्रेषदोऽत्यः
स्निग्धो हृद्यस् क्यो रचयित च मुदं मूत्रग्रिडं विधत्ते ।
कान्तिं देइस्य दत्ते बलमित कुक्ते वृंहणं तृप्तिदायी
दन्तैनिष्मीडा काण्डं मृदुयितरिसतो मोहनस्रे सुदण्डः ॥ ८६॥
(मं दान्ती चावित्यां कं साचेगुणः । कं हिंहनिंह-

तिन्दिकविनगुषा। गौ दाँते क्रम्डान त्राकेरगुषा।)

ग्रन्यच ।--

पीयूषोपिमतं तिदोषग्रमनं स्याइन्तिनिष्पीडितं तदचेदग्रहयन्त्रजं तदपरं श्लेषानिलन्नं कियत्। एतद्वातहरन्तु वातजननं जाद्यप्रतिग्यायदं प्रोक्तं पर्युषितं कफानिलकरं पानीयसिचद्भवम्॥ ८०॥

## पानीयादिवर्गः।

[ ३६८ ]

श्रय यावनालग्ररसमुगाः।—

सधुरं लवणचारं स्निग्धं सोष्णं क्चिप्रदम्। वृष्यं वातकाफन्नं च यावनालग्ररात् रसम्॥ এদ॥ (सं सेताचाजँस। कं केजोलदकवु।)

त्रय पक्षेच्रसगुगाः।—

पक्षेत्रुरसः स्त्रिग्धः स्थात् कफवातनाश्रनोऽतिगुरुः। श्रतिपाक्षेन विदाहं तनुति पित्तास्त्रदोषशोषांस्र ॥ এএ॥

> ( सं ताविलारस । कं.कासिट्रसु । ) [ दति दच्यमकरणम् । ]

> > त्रघ गुड़नाम।—

गुड़: स्थादिच्चसारस्त सधरो रसपाकजः । भिश्चप्रियः सितादिः स्थादक्षो रसजः स्मृतः ॥ १००॥ ( मं नवागुड़ाचानामगुग । कं होसवेद्वदहिसक्गुग । गो गुड़ ।)

त्रघ पुरातनगुड्गुगाः।—

पित्तन्नः पवनार्त्तिजिद्धचिकरो हृद्यस्तिदोषापहः संयोगेन विश्रेषतो ज्वरहरः सन्तापशान्तिप्रदः । विर्म्भूत्रामयशोधनोऽग्निजननः पार्ष्डुप्रमेहान्तकः स्निग्धः स्वादुतरो लघुः श्रमहरः पष्यः पुराणो गुडुः ॥१०१॥

(मं जुनागुल। कं इतियविज्ञ।)

त्रव यावनालोक्षवगुड्गुगाः।— स्याद्यावनालरसपाकभवो गुड़ोऽयं चारः कटुः सुमधुरः कफवातहारी।

रा-२8

## [00]

## राजनिघर्दः।

पित्तप्रदः सततमिष्ठ निषेव्यमाणः
क्राण्डूतिकुष्ठजननोऽस्रविदाइहारी ॥ १०२ ॥
(मं कालकंवेजोधलेयांचाकं साचागूल् । कं हेसुरुगंविजोलदकेविनवेद्व । गौ जनारेर गुड़ ।)
[ द्रति गुडप्रकरणम् । ]

त्रव साधारगाप्रकेरानामगुगाः।—

श्वितीक्ता तु मीनाण्डी खेता मत्य्यण्डिका च सा।
श्रिक्कृता तु सिकता सिता चैव गुड़ोइवा॥ १०३॥
श्विता मधुरा श्रीता पित्तदाहत्रमापहा।
रक्तदोषहरा भान्ति-क्रिमिकोपप्रणाशिनी॥ १०४॥

त्रय पचेचुप्रकंरायुगाः।—

स्निम्धा पुग्डुकशकरा हितकरी चीणे चयेऽरोचके चच्चथा बलवर्षिनी सुमधुरा रूचा च वंश्रेचुजा। वृष्या त्रिक्तप्रदा समहरा स्थामेचुजा श्रीतला स्निम्धा कान्तिकरी रसालजनिता रक्षेचुजा पित्तजित्॥१०५॥

त्रय यावनाली प्रकंरानामगुणाः।-

यावनाली हिमोत्पन्ना हिमानी हिमग्रकीरा।
चुद्रग्रकीरका चुद्रा गुनुड़ाजालविन्दुजा॥ १०६॥
हिमजा ग्रकीरा गौल्या सोण्या तिक्वाऽतिपिक्छिला।
वातन्नी सारिका कच्या दाहपित्तास्त्रदायिनी॥ १००॥
(मं गुड़गुड़ा। कं तुगितु। गौ जनारेर चिनि।)

[ इति श्वराप्रकरणम्।]

श्रय मधुप्रकरानामगुणाः।—
सितजाऽन्या धर्नरजा साधनी सधुधर्करा।
साचीकप्रकरा प्रोक्ता सिताखण्ड्य खण्डकः॥ १०८॥
सिताखण्डोऽतिसधुरयन्ध्यः इदिनाधनः।
कुष्ठवणकप्रधास-हिकापित्तास्त्रदोषनुत्॥ १०८॥

( मं, कं, मालखण्ड। गौ सिताखण्ड, पाटाली।)

अध तवराजमर्करा।—

यवासम्पर्करा त्वन्या सुधा मोदकमोदकः।
तवराजः खण्डसारः खण्डजा खण्डमोदकः॥ ११०॥
तवराजोऽतिमधुरः पित्तन्यमृत्वष्ठापदः।
वृष्यो विदाहमूक्कृत्ति-स्नान्तिमान्तिकरः सरः॥ १११॥
(येना इति प्रसिद्याः)

श्रय तवराजखग्डनामगुगाः।--

तवराजोद्भवः खण्डः सुधा सोदक्षजस्तथा।
खण्डजो द्रवजः सिद्ध-मोदकास्रतसारजः॥११२॥
दाहं निवारयित तापमपाकरोति
दृप्तिं नियच्छृति निहन्ति च सोहसूर्च्छ्यम्।
श्वासं निवारयित तर्पयतीन्द्रियाणि
श्रोतः सदा सुमधुरः खलु सिद्धिखण्डः॥११३॥
(मं खण्डतवराज। कं तिसरेमालखण्ड। तें सूरनेयपाकदमस्रखण्ड। गौ भेनारखाँड।)

[ इति मञ्जखाडानि।]

# [ 305]

# राजनिघर्षुः!

#### त्रय मधुसामान्यनाम।---

मधु चीद्रं च माचीवं साचिवं कुसुमासवम्। पुष्पासवं पवित्रच्च पित्रंग पुष्परसाह्वयम्॥ ११४॥ (मं चेनतुष्प। हिं सहद्। तां मघ। तें तेले। गौ मधु।)

त्रय मधुजातयः।—

साचिकं स्नासरं चौद्रं पौत्तिकं छात्रकं तथा। श्रार्घमौद्दालकं दांलमित्यष्टी सधुजातयः॥ ११५॥

, त्रय माचिकमधुलचयम्।—

नानापुष्परसाहाराः कपिला वनसिक्तकाः । याः स्थूलास्ताभिरुत्पन्नं सधुमािक्तसुचिते ॥ ११६ ॥

अध सामरमधुलचणम्।—

ये स्निष्धान्त्रनगोलाभाः पुष्पासवपरायणाः । भ्रमरैर्जनितं तैलु स्नामरं सधु भण्यते ॥ ११७॥

त्रय चौद्रमधुलचयम्।-

पिङ्गला मिचिकाः स्त्याः चुद्रा इति हि विश्वताः । ताभिक्त्यादितं यत्तु तत् चौद्रं मधु कथ्यते ॥ ११८॥

त्रय पौत्तिकमधुलचयम्।-

श्रवजा मिल्लाः पिङ्गाः पुत्तिका दति कीर्त्तिताः। तज्जातं अधु धीमद्भिः पौत्तिकं समुदाद्वतम्॥ ११८॥

त्रघ कालकमधुलचयम्।—

क्रव्राकारन्तु पटलं सरघाः पोतिपिङ्गलाः। यत्नुर्वन्ति तदुत्पन्नं मधु क्षात्रकसीरितम्॥ १२०॥ श्रय श्रार्ध्वमधुलचणम्।—

मिचिकास्तीन्त्रातुण्डा यास्तया षट्पदसिन्नभाः॥

तदुद्भृतं यदर्वाहें तदाष्टें सधु वर्ण्डते॥ १२१॥

श्रय श्रोहालकमधुलचणम्।—

श्रीहालाः कपिलाः कोटा भूमेरुहलनाः स्मृताः।

श्रीहालाः कापलाः काटा सूसर्ह्लनाः स्नृताः । वस्त्रीकान्तस्तदुत्पन्नमीहालकसुदीर्थ्यते ॥ १२२ ॥

त्रय दालमधुलचयम्।—

इन्द्रनीलदलाकाराः स्र्त्याक्षिन्वन्ति सचिकाः । यहचकोटरान्तस्यं सधु दालसिदं सृतन्॥ १२३॥ श्रय श्रष्टमधुनर्याः।—

द्रत्येतस्याष्टधा भेदैक्त्पत्तिः कथिता क्रमात्। द्रिय वच्दास्यहं तेषां वर्षवीर्य्यादिकं क्रमात्॥ १२४॥ माचिकं तैनवर्षं स्थात् खेतं स्नामरमुचते। चौद्रन्तु कपिनाभासं पौत्तिकं प्टतसिन्नमम्॥ १२५॥ द्रापीतवर्षे छातं स्थात्पङ्गनं चार्घ्यनामकम्। द्रीहानं स्वर्षसदृश्मापीतं दानसुचते॥ १२६॥

त्राय त्रष्टिविधमधुगुगाः।—

माचिकं मधुरं रूचं लघु खासादिदोषनुत्।
भामरं पिच्छिलं रूचं मधुरं मुखजाखाजित्॥ १२०॥
चौद्रं तु शीतं चचुष्यं पिच्छिलं पित्तवातहृत्।
पौत्तिकं मधु रूचोष्णसस्विपत्तादिदाहकृत्॥ १२८॥
खिलमेहिकासिम्नश्च विद्याच्छातं गुणोत्तरम्।
स्रार्ध्यमध्वितचचुष्यं कफपित्तादिदोषहृत्॥ १२८॥

## राजनिघण्टुः।

श्रीहालकन्तु कुष्ठादि-दोषघ्नं सर्वेसिडिदम् । दालं कटु कषायाम्हं सधुरं पित्तदायि च ॥ १३०॥ [ इति श्रष्टमधुगुगाः । ]

श्रथ नूतनपुरातनमधुगुगाः।—
नवं सधु भवेत् स्थीत्वं नातिश्लेषकारं परम्।
देहस्थीत्वापहं ग्राहि पुराणं सधु लेखनम्॥ १३१॥
(मं नवाजुना। कं योसपवियज्ञीनतुष्पंगलु।)

श्रथ पकाममधुनीः गुषाः ।—
पक्षं दोषत्रयम्नं मधु विविधक्जाजाद्यजिह्वाऽऽसयादिध्वंसं धत्ते च क्ष्यं बलमतिष्टतिदं वीर्थ्यद्विदं विधत्ते ।
श्रामं चेदामगुल्मामयपवनक्जापित्तदाह्यस्वदीषं
हन्याद्वातञ्च शोषं जनयति नियतं ध्वंसयत्यन्तद्विद्यम् ॥१३२॥
(मं ताविलाहिरिवामधाचेगुण । कं कासिद्पसियजीन-

तुपांदगुगा।)

त्रय मध्वादिगुणाः।— व्रणग्रोधनसन्धाने व्रणसंरोपणादिषु। साधारण्या मधु हितं तत्तुच्या मधुग्रर्करा॥ १३३॥

त्रय उषामधुगुगाः।—

उर्थोः सहोश्यकाले वा स्वयमुष्यमथापि वा । ग्रामं मधु मनुष्याणां विषवत्तापदायकम् ॥ १३४॥

श्रय इष्टमधुलचग्रम् ।— कोटकादियुतमस्तदूषितं यच पर्युषितकं मधु स्ततः । कार्य्यकोटरगतच्च भेचकं तच गेइजनितच्च दोषकृत् ॥१३५॥

#### पानीयादिवर्गः ।

[ ३७५ ]

श्रय निर्दोषसदोषमधुगुगाः ।—
दग्डैनिहत्य यदुपात्तमपास्तदंशं
ताद्दग्विभं सधु रसायनयोगयोग्यम् ।
हिक्कागुदाङ्गुरिनशोफनफन्नणादिदोषापहं अवित दोषदमन्यया चेत्॥ १२६॥
श्रय सधुश्रकैरानासगुगाः ।

माध्वी सिता मधूत्पन्ना सधुजा सधुप्रकरा।
माचीकप्रकरा चैषा चौद्रजा चौद्रप्रकरा॥ १३०॥
यदुगुणं यन्मधु प्रोक्तं तहुणा तस्य प्रकरा।
विश्रिषाद्वतव्यञ्च तर्पणं चौणदेहिनाम्॥ १३८॥
[ इति मधुप्रकरणम्। ]

त्रव मयसामाचनाम, तहुणाय:—

मदां सुरा प्रसन्ना स्थान्मदिरा वारुणी वरा।

मत्ता कादस्वरी भीता चपला कामिनी प्रिया॥ १३८॥

मदगन्धा च माध्वीकं मधु सन्धानमासवः।

परिस्ताऽस्ता वीरा मधावी मदनी च सा॥ १४०॥

सुप्रतिभा मनोन्ना च विपाना मोदिनी तथा।

हालाह्लगुणाऽरिष्टं सर्वोऽथ मधूलिका।

मदोल्कटा महानन्दा हाविंग्रदिभधाः क्रमात्॥ १४१॥

मदां सुमधुरान्हं च कफमारुतनामनम्।

बलदीप्तिकरं हृद्यं सरसेतन्मदावहम्॥ १४२॥ \*

<sup>\*</sup> मद्यं तावित्रिविधं, गौड़ी नाध्वी प्रैष्टिकी चैति; तानि त्रस्मनदानि सौगन्धिकादिद्रव्यान्तरयोगती विविधानि च।

#### राजनिघएः।

#### अन्यच।—

स्यादातकीरसगुड़ादिक्षता तु गौड़ी
पुष्पद्रवादिमधुसारमयी तु माध्वी।
पैष्टी पुनर्विविधधान्यविकारजाता
स्थाता मदाधिकतयाऽत च पूर्वपूर्वा॥ १४३॥
तालादिरसनिर्यासै: सैन्धीं हालां सुरां जगुः।
नानाद्रव्यकदस्बेन मद्यं कादस्बरं स्मृतम्।
सैन्धी कादस्बरी चैव दिविधं मदालचणम्॥ १४४॥

त्रघ गोड़ोमयग्याः।—

गौड़ी तीच्योश्यमधुरा वातद्वत्यित्तकारियी। बलक्कहीपनी पथ्या कान्तिकत्तर्पयी परा॥ १४५॥

त्रय माध्वीमदगुराः।—

माध्वी तु मधुरा हृद्या नात्युश्णा पित्तवातहृत्। पार्श्वुकामलगुल्मार्थः-प्रमेष्ट्रशमनी परा॥ १४६॥

त्रय पैष्टीगुगाः।—

पैष्टी कट्रणा तीच्णा स्थान्मधुरा दीपनी परा ॥ १४०॥ अध सैन्थीमधगुराः।—

सैन्धी श्रीता काषायास्ता पित्तहृद्वातदा च सा॥ १४८॥ श्रय ऋतुभेदतः मद्यभेदव्यवस्था।—

गौड़ी तु शिशिरे पेया पैष्ट्री हेमन्तवर्षयोः। शरदुशीस्रवसन्तेषु माध्वी याद्या न चान्यथा॥ १४८॥

#### पानीयादिवर्गः ।

[ 200]

#### अध कतिचित् मद्यगुषाः।—

कादम्बरीयर्करजादि सद्यं सुग्रीतलं वृष्यकरं सदाव्यम्।
साध्वीससं स्थानृणवृद्यजातं सद्यं सुग्रीतं गुरु तर्पण्य ॥ १५० ॥
सर्वेषां दृणवृद्याणां निर्य्यासं ग्रीतलं गुरु ।
सोइनं बलक्षडृद्यं दृष्णासन्तापनाग्रनम् ॥ १५१ ॥
ऐत्तवं तु भवेन्मद्यं ग्रिगिरश्च सदोल्लटम् ।
यवधान्यक्षतं सद्यं गुरु विष्टक्षदायकम् ॥ १५२ ॥
ग्रर्कराधातकीतोये क्षतं ग्रीतं सनोइरम् ।
ग्रार्करं कथ्यते सद्यं वृष्यं दीपनसोइनम् ॥ १५३ ॥

#### विचा-

अन्ये दादश्धा सद्य-भेदानाहुर्भनीषिण:। डक्तेव्वन्तर्भवन्तीति नान्येसु पृथगीरिता:॥ १५४॥

#### त्रघ नवजीर्धसयगुगाः।—

मद्यं नवं सर्वविकारहेतु: सर्वन्तु वातादिकदोषदायि। जीर्णन्तु सर्वं सकलामयम्नं बलप्रदं ब्रष्यकरच दीपनम् ॥१५५॥

#### श्रय मद्यप्रयोगाईनिदेशः।-

मद्यप्रयोगं कुर्वन्ति श्र्झादिषु महार्त्तिषु । दिजैस्त्रीभिस्तु न याद्यं यद्यप्युच्जीवयेन्मृतम् ॥ १५६ ॥ दक्षं वार्षिनदीनदद्वदसरःकुष्यादितीरान्तर-प्रक्रान्तेच्चगुड़ादिमाचिकभिदामद्यप्रभेदानपि ।

## राजनिघएटुः।

प्रागस्मात्रितिबुध्य नामगुणतो निर्णीतयोगीचिती
यायातव्यवणादिनिश्चितमनाः कुर्वीत वैद्यः क्रियाम् ॥१५०॥
ये रस्यमाना हि तृणां यथास्तं दोषािन्दरस्यन्यिप दुर्निरासान् ।
तेषां रसानां वसितः किलायं वर्गः प्रसिद्धो रसवर्गनाम्ना ॥१५८॥
निस्पन्दं दुग्धसिन्धावस्तमथ समस्तौषधीनां न दोहं
तापाइं नो चिकित्सामिभलषित रसं नािप दोषाकरस्य ।
लस्या यत् सौद्धदयं जगित वुधजनस्तेन वर्गः कतोऽस्मिन्
पानीयादः प्रसिद्धं व्रजति सनुमितो नामगीमौतिरत्ने ॥१५८॥

दित ग्रीनरहरिपण्डितविरिचिते निचण्टुराजे पानीयादिवगैः चतुर्देशः।

# अय चौराद्विग:।

त्रय दुग्धनाम्।—

चीरं पीयूषसूधस्यं दुग्धं स्तन्यं पयोऽस्ततम् ॥ १ ॥ (मं दूष। कं हालूः। गौ हुष।)

अथ दध्वादिनाम।—

चीरजं दिध तद्रूष्यं विरतं सस्तु तज्जलम् ॥ २ ॥ (चीरजं दिध । मं दिहं। कं भींसक् । तद्रूष्यं विरतं । मं पातालदंहिं। कं निश्चित्भींसक् । गी दै। मस्तु मं दिहं, चेंपाणि । कं भींसरनीक् । गी दै-एर मात्।) श्रय नवनीतनाम (तक्तजम्)।— द्धिजं नवनीतं स्थात्सारी हैयङ्गवीनक्षम् ॥ ३॥ ( भं, कं, लोखी। गौ ननी. माखन।)

श्रय द्यतनाम।—

प्टतसान्यं इति: सिंध: पित्रतं नवनीतजम्। अस्तं चासिघारस होस्यसायुस तैजसम्॥ ४॥ (मं तूप। वं तूप। गौ घि।) स्त्रच्यां स्नेष्टनं स्नेष्ट: स्निष्धता स्त्रच एव च। अस्यङ्गोऽस्यन्त्रनचीव चोपड्स प्टतादिक:॥ ५॥

( मं चोप्पड। कं इडस्तु। )

त्रय तक्षनाम ।—
तक्षं गोरसजं घोलं कालभेयविलोडितम् ।
दग्डाइतमरिष्टोऽन्तसुदध्वित्वधितं द्रव: ॥ ६ ॥
( सं ताक । कं मिक्जिगे । गौ घोल् । )

श्रव तक्तविश्रेषः ।—
तक्रं त्रिभागदिधसंयुतसम्बु धीरैक्तां दिधि हिगुणवारियुतन्तु सस्तु ।
दध्यश्रसी यदि समे तदुदिखदाहुस्तलेवनं तु मिथतं सुनयो वदन्ति ॥ ७॥

त्रघ गोमूलमलनाम ।—
गोमूतं गोजलं गोऽस्थो गोनिष्यन्दस गोद्रवः ।
गोमयं गोपुरीषं स्थादु गोविष्ठा गोसलच्च तत् ॥ ८ ॥
[ इति चौरादिसमस्रद्रव्यनामानि । ]

गोमि हिषोक्षागला विकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम्। चीरादिकगुणदोषी वच्चे क्रमतो यथायोगम्। ८॥

अध गोदुग्धगुगाः।--

गव्यं चीरं पथ्यमत्यन्तर्चं खादु सिन्धं पित्तवातामयप्तम् ।

कान्तिप्रज्ञावुहिमेधाङ्गपुष्टिं धत्ते स्पष्टं वीय्यवहिं विधत्ते ॥१०॥

(मं गाईचेंद्रधः)

त्रय महिषीदुग्धगुणाः।—

गौत्यन्तु महिषीचीरं विपाने ग्रीतनं गुरु। बलपुष्टिप्रदं वृष्यं पित्तदाहास्त्रनाशनम्॥ ११॥ (मं म्हेषोचेंदूध। कं यम्प्रेयहानू।)

त्रय त्रजापयोगुगाः।—

श्रजानां लघुकायत्व।नाम्रव्यनिषेवणात्। नात्यम्बुपानाद्वरायासात्सवैव्याधिष्टरं पय:॥ १२॥ (मं भ्रेलौदूध। कं पृष्ट श्राङ्निहालु। तां जाजनगरे।)

त्रथ सूच्याजपयोगुगाः। -

मुद्माजदुग्धेति च संवदाईं (?) गोदुग्धवीर्घ्यात्वधिकं गुण च। मुचीणदेहेषु च पथ्यमुक्तं स्थूलाजदुग्धं किल किञ्चिद्नम् ॥१३॥ (मं घोरेग्रेलिचेंद्रधगुण। कं हिरिय ग्राडोनहालु।)

त्रधावीदुग्धगुगाः।—

श्राविकन्तु पयः स्निग्धं क्रफपित्तहरं परम्। स्थील्यमेहहरं पथ्यं लोमधं गुरु वृद्धिदम्॥ १४॥ (मं मेंद्रिचेंद्र्ध। कं कम्बलगुरियहालु।) त्रघ इक्तिनीपयोगुगाः।—

सधुरं हस्तिनीचीरं दृष्यं गुरू कषायकम् । स्निग्धं खैर्थ्यकरं ग्रीतं चत्तुष्यं बलवर्षनम् ॥ १५॥

( मं हाति शिचें दूध। वं त्रानेय हालु।)

अय अश्वीचीरगुगाः !-

श्रम्बीचीरं तु रूचान्तं लवणं दीपनं लघु। देचस्यैध्येकरं बच्चं गौरवं कान्तिकत्परम्॥ १६॥

(मं घोड़ीचेंद्रध।)

त्रय गर्दभीचीरगुणाः.।—

बलक्षद्वर्धभोचीरं वातम्बासहरं परम् । सधुराब्ह्नरसं रूचं दीपनं पथ्यदं स्मृतम् ॥ १७॥

( मं गाड़वीचेंद्रघ। वां कत्तेयचालु।)

त्रघ उद्दीपयोगुखाः।—

उष्ट्रीचीरं कुष्ठशोफापहं तित्पत्तार्शीघं तत्कफाटीपहारि। ग्रानाहार्त्तिजन्तुगुल्मोदराख्यं खासोन्नासं नाश्रयत्याश्र पीतम् ॥१८॥

( मं करचीद्रध । कं श्रींठेयचालु । )

अध मानुषीचीरगुगाः।—

मधुरं मानुषीचीरं कषायञ्च हिमं लघु । चत्तुष्यं दीपनं पथ्यं पाचनं रोचनं च तत्॥ १८॥

(मं स्त्रीचेंद्रुध। कं हैक़्सिनहालु।)

[ इति एकादमचौरगुगाः।]

#### [ ३८२ ]

## राजनिष्ययुः।

#### त्रयामपकदुग्धग्याः।—

चीरं कासम्बासकीपाय सर्वे गुर्वासं स्थात्रायशो दोषदायि। तचेत्तसं वर्त्तितं पथ्यमुक्तं नारीचीरं त्वासमिवासयप्तम्॥ २०॥ (मं हिरवेताविनेंद्रभ। कं विस्विद्यानकासिद्दान्।)

त्रघ घारीणचीरगुणाः।—

उत्तं गव्यादिकं दुग्धं धारोष्णसमृतोपसम्। सर्वासयहरं पथ्यं चिरसंख्यं तु दोषदम्॥ २१॥

#### त्रन्यच ।--

केऽप्याविकं पथ्यतमं ऋतोषां चीरं त्वजानां ऋतशीतमाहः। दोहान्तशीतं महिषीपयस गव्यं तु धारीषामिदं प्रशस्तम्॥२२॥

अथ कालविश्रेषे वयोविश्रेषे च पौतचीरगुषाः।—

वृष्यं वृष्टिश्यमम्बिवर्षनिकारं पूर्वाह्मपीतं पयो मध्याच्चे बलदायकं कपाहरं क्षच्छस्य विच्छेदकम्। बाल्ये विक्लकारं ततो बलकारं वीर्थ्यप्रदं वार्षके रात्री चीरमनेकदोषशमनं सेव्यं ततः सर्वदा॥ २३॥

श्रय दीर्घकालमपकदुग्धदोषाः।—

चीरं मुहर्त्तितयोषितं यदतप्तमेतिहिक्ततिं प्रयाति । उणां तु दोषं कुरुते तदुह्वं विषोपमं स्यादुषितं दणानाम् ॥२४॥

त्रय चरे हम्धप्रयोगस्य गुगारोषी । जीर्णे च्यारे काफी चीर्णे चीरं स्थारमृतीपसम् । तदेव तरुणे पीतं विषवद्यन्ति सानुषम् ॥ २५॥ श्रघ जलसंदितपक्षचीरगुषाः ।—
चतुर्धभागं सलिलं निधाय यत्नाद् यदावर्त्तितसुत्तसं तत् ।
सर्वासयम्नं बलपुष्टिकारि वीर्थ्यप्रदं चीरसतिप्रशस्तम् ॥२६॥

त्रय कालविभेषे दुग्वविभेषः ।— गव्यं पूर्वोत्तकाले स्थादपरात्ते तु साहिषम् । चीरं समर्करं पष्यं यहा सात्मेत्र च सर्वदा ॥ २० ॥

त्रय इतसीतादिचीरगुणाः।—

पित्तम्नं स्तसीतनं नफहरं पक्षं तदुणां भवेच्छीतं यत्तु न पाचितं तदिखनं विष्टक्षदीषप्रदम्।
धारीणां लस्तं पयः समहरं निद्राकरं कान्तिदं
वृष्टं वृंहणसम्निवर्द्धनस्तिस्वादु विदोषापहम्॥ २८॥

त्रघ वर्जनोयचोरम्।—
चौरं न युच्जीत कदाऽप्यतप्तं तप्तं न चैतन्नवर्णेन सार्द्वम्।

पिष्टान्नसन्धानकसाषमुद्रकोशातकीकन्दफलादिकैय ॥ २८॥

#### ऋन्यच।—

मत्यमांसगुड्मुहमूखकैः ज्ञुष्ठमावहति सेवितं पयः । शाकजाम्बवरसेजु सेवितं मारयत्यवुधमाग्रु सर्पवत् ॥ ३०॥

त्रय चौरसेवनविधिः।-

स्निग्धं श्रीतं गुक् चीरं सर्वकालं न सेवयेत्। दीप्ताग्निं कुक्ते सन्दं सन्दाग्निं नष्टमेव च ॥ ३१ ॥ नित्यं तीव्राग्निना सेव्यं सुपक्षं साहिषं पय:। पुष्पान्ति धातव: सर्वे बलपुष्टिविवर्षनम् ॥ ३२ ॥

## राजनिष्ठण्टुः।

अध नवप्रस्तायाः चौरदीषाः।—

चीरं गवाजकारे में धुरं चारं नवप्रस्तानाम्।
कचच पित्तदाहं करोति रक्तामयं कुक्ते॥ ३३॥
(मं तानीचें दूष। कं यलगंदियहालु।)

त्रध मध्यचिरप्रमूतायाः चीरगुग्यदोषाः।—

सधुरं त्रिदोषश्मनं चीरं सध्यप्रसूतानाम्।

लवणं सधुरं चीरं विदाह्यननं चिरप्रसूतानाम्॥ ३४॥

(मं पाड्सेगाईचेंद्रधा कं कड़कन्दियाविनपालु।)

त्रय त्रव्यवयस्तादीनां चौरगुषाः।—

गुणहीनं नि:सारं चीरं प्रथमप्रस्तानाम्। मध्यवयसां रसायनमुक्तमिदं दुर्बलं तु वहानाम् ॥ ३५ ॥ ( मं पाढ़ उलादिद्रथ । वां चोचिक्षुभोदलागिपालु । )

त्रघ गर्भिखाः चौरगुणाः।—

तासां मासत्रयादू हुं गुर्विणीनाञ्च यत्पय:। तदाहि लवणं चीरं मधुरं पित्तदीषक्वत्॥ २६॥ (मंगिभंगीगायिचेंदूच। कंगव्यदाविनपान्छ।)

त्रथ देशवर्णादिविशेषात् चीरगुणाः।—
गवादीनां वर्णभेदादुगुणा दुग्धादिके पृथक्।
कैस्विदुक्तो विशेषाच विशेषो देशभेदतः॥ ३०॥

तथा चीत्तम्।

देशिषु देशिषु च तेषु तेषु त्यास्त्रुनी याद्यस्तेषयुत्ते। तस्तेवनादेव गवादिकानां गुणादि दुग्धादिषु ताद्यं मतुम् ॥३८॥

## त्रघ कीलाटगुणाः।— 🐪 💛 💛 📈

श्रीतं स्निग्धं गुरुगीँ त्वं वृष्यं पित्तापहं परम्। ज्ञेया चैवाभिधा तस्य कीलाटन्तु पय:च्छ्दः॥ ३८॥ [ इति चीस्प्रकरणम्ः]

#### त्रध गोदिधगुणाः ।—

दिध गव्यमितिपवितं शीतं स्निग्धञ्च दीपनं बलकत्।
सध्रमरोचकहारि ग्राहि च वातामयन्नञ्च ॥ ४०॥
( मं गाईचेंदिहं । कं त्राकलसीसह। )

त्रय मस्त्रिपोद्धिगुर्खाः।—

माहिषं मधुरं सिग्धं स्रोपातद्वतित्। बलास्त्रवर्द्धनं वृष्यं समन्नं ग्रोधनं दिधि॥ ४१॥ (मं महिषिचेदिहिं। कं यम्येयमोसक्।)

🌅 😘 📑 त्रेष्ठ त्रजाद्धिगुगाः ।— 💆 📆 📆

दथ्याजं कफवातम्नं लघूष्यं निवदोषनुत्। दुर्नामखासकासम्नं रुच्यं दीपनपाचनम् ॥ ४२ ॥ (मं ग्रीलचेंद्रस्थि । मं ग्राडिनमीसर्गः)

त्रय त्राविकद्धिगुणाः i—

श्राविकं दिध सुस्तिग्धं कफिपत्तकरं गुरु। वाते च रक्तवाते च पथ्यं श्रीफव्रणापहम्॥ ४३॥ (मं में द्विचेंद्रिष्ठं। कं कुरियमींसरु।)

त्रथ इस्तिनीद्धिगुगाः।—

इस्तिनीदिध कषायलघृष्णं पिताशूलश्रमनं क्चिप्रदम्

रा-२५

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

## [ ३८६ ]

# राजनिवण्टुः।

दीप्तिदं खलु बलासगदम्नं वीश्यविद्वनबलप्रदस्रुत्तम् ॥ ४४ ॥ (मं हातिगीदिहं। कं त्रानेयमीयक्।)

अध अधीदधिगुगाः।—

श्रश्वीदिध स्थान्मध्रं कषायं कफार्त्तिमृच्छीऽऽसयहारि रूचम्। वातान्यदं दीपनकारि नेत्रदोषापहं तल्कियतं पृथिव्याम् ॥४५॥ (मं घोडिचेंदिहं। कं बुदिरेयभीसह।)

त्रघ गर्दभीद्धिगुगाः।-

मर्दभीदिधि रूचीर्षां लघु दीपनपाचनम्।
मधुराक्तरसं रूचं वातदीष्रविनाप्रनम्॥ ४६॥
(मं गाढ़वीचेंदिहं। वः कत्तेयमीसरू।)

त्रय उष्ट्रीद्धिगुगाः।—

श्रीष्ट्रमश्रींस कुष्ठानि क्रिमिश्चलोदराणि च । निहन्ति कटुकं खादु किञ्चिदक्तरसं दिधि॥ ४७॥ (मं करहीचेंदिहं। कं श्रींठेयमींसरः।)

त्रय खीद्धिनामगुर्गाः।—

विपाने मधुरं बल्यमन्तं सन्तर्पणं गुरु।

चन्नुष्यं ग्रहदोषन्नं दिध स्त्रीस्तन्यसन्भवम् ॥ ४८॥

(नं हैन्ग्रेक्कलहालिनमीसरु।)

[ इति नवभेदं दिध । ]

त्रय सामान्यद्धिगुगाः।—

दध्यस्तं गुरु वातदोषशमनं संग्राहि सूतावहं बत्यं शोफकरञ्च रुच्चशमनं वक्केश्व शान्तिप्रदम्।

#### चीरादिवर्गः।

[ 520 ]

कासम्बाससुपीनसेषु निषमे शीतज्वरे स्थादितं रत्तोद्रेककरं करोति सततं शुक्रस्य द्वद्धिं पराम् ॥ ४८.॥

#### ग्रन्थच।-

द्धि मधुरमीषदस्तं मधुराम्तं वा हितं न चात्युण्यम् । यावद्यावन्मधुरं दोषहरं तावदुक्तमिदम् ॥ ५०॥

ऋष दिधिसेवनविधिः गुणाश्च ।—

लवणमरिचसिंपः प्रकरासुद्गधातीकुसुमरसिवहीनं नैतदश्चित्त नित्यम् ।
न च ग्ररिद वसन्ते नोष्णकाले न रात्री
न दिध कफिवकारे पित्तदोषेऽपि नाद्यात् ॥ ५१ ॥
तिकटुकयुतमेतद्राजिकाचूर्णमिश्रं
कफहरमिनलम्नं विज्ञसन्धुचण्ड्य ।
तुष्टिनिग्रिग्रिरकाले सेवितं चातिपथ्यं
रचयित तनुदाब्धं कान्तिमत्त्वं च नृष्णम् ॥ ५२ ॥
[ इति दिधिषकरणम् । ]

#### त्रय मस्तुगुगाः।—

उष्णास्तं रुचिपतिदं क्लमहरं बच्चं कषायं सरं
भुतिच्छेदकरं द्वषोदरगद्श्लीहार्थसां नायनम् ।
स्रोत:ग्रुडिकरं कफानिलहरं विष्टस्मश्र्लापहं
पाय्डुखासविकारगुल्मश्रमनं मस्तु प्रशस्तं लघु ॥ ५३॥
(मं दिचंचेंवाणीगुण । कं मींसरुनीरगुण ।)

#### [ ३८८ ]

## राजनिष्ययुः।

#### त्रघ तक्रवयगुगाः।—

उत्तं स्रेषसमीरहारि मिष्यतं तत् स्रेषपित्तापहं रूचं प्राहुरुद्धिदाख्यमधिनं तन्नं त्रिदोषापहम् । मन्दाग्नावरुचौ विदाहिवषमधासार्त्तिकासादिषु स्रेष्ठं पथ्यतमं वदन्ति सुधियस्तन्नत्रयं द्युत्तमम् ॥ ५४॥

तथा च।-

तक्रं तिदोषश्मनं क्चिदीपनीयं
क्चं विस्थानं क्चिदीपनीयं
क्चं विस्थानं क्षमहारि मसु।
बच्चप्रदं पवननाश्मुदिश्वदाख्यं
श्रदं कफश्चममक्दमनेषु घोलम्॥ ५५॥
श्रय तक्रखास्नादिरसानां गुणाः।—

अस्तेन वातं मधुरेण पित्तं कर्षां कषायेण निहन्ति सद्यः। यथा सुराणामस्रतं हिताय तथा नराणामिह तक्रमाहः॥५६॥

#### अपि च।-

श्रामातिसारे च विस्चिकायां वातञ्चरे पाण्डुषु कामलेषु । प्रमेच्युत्कीद्रवातश्ले नित्यं पिवेत्तक्रमरोचके च ॥ ५०॥

श्रीतकालेऽग्निमान्छे च कफे पाख्वामयेषु च।
मार्गोपरोधे कुष्ठादि-व्याधौ तक्रं प्रश्रस्थते॥ ५८॥
वातोदरी पिवेत्तकं पिप्पलीलवणान्वितम्।
शर्करामरिचोपेतं खादु पित्तोदरी पिवेत्॥ ५८॥
यवानोसैन्धवाजाजी-व्योषयुक्तं कफोदरेः
सन्निपातोदरे तक्रं विकटुचारमैन्धवम्॥ ६०॥

श्रय रोगादिविश्रेषे तक्रस वर्जनीयता।—

तन्नं ददान्नो चते नोश्यकाले नो दौर्बेच्ये नो त्वामूर्क्छिते च। नैव भ्वान्तौ नैव पित्तास्त्रदोषे नैतइ घाष्ट्रतिकायां विश्रेषात् ॥६१॥

🕶 🥦 अय अनुवृतोवृतसे चतक्रगुगाः।—

तक्रं स्नेष्ठान्वितं तुन्द-निद्राजाद्यप्रदं गुरु । ऋषीविश्रष्टं सामान्यं नि:श्रेषं लघु पथ्यदम् ॥ ६२ ॥

🧵 🥠 🥛 (संताकः। कंत्र्यत्तेमज्जिगे।)

CLUBING OF SAME SELECT

[इति तक्रप्रकर्णम् । ]

अय साधारणन्यनीतगुणाः।-

श्रीतं वर्षवलाव इं सुमधुरं वृष्यं च संग्राहकं वातमं कफहारकं क्विकरं सर्वाङ्गशूलापहम् । कासमं यमनाशनं सुखकरं कान्तिप्रदं पृष्टिदं च छुष्यं नवनीतसुहृतनवं गो: सर्वदोषापहम् ॥ ६३ ॥ (मं साधार शाली शिया चेंगुर्य। कं साधार श्रविशेगुर्य।)

त्रथ गीम[हथोर्नवनीतग्रणाः।—

गव्यञ्च साहिषञ्चापि नवनोतं नवोज्ञवम् । शस्यते बालद्वडानां बलक्तत्पुष्टिवर्डनम् ॥ ६४ ॥ (संगादम्हैसिचेंलोगौ। वं त्राकलयम्यविग्रीगा।)

त्रय माहिष्नवनीतस्य विश्रेषगुषाः।—

माहिषं नवनीतन्तु क्षषायं मधुरं रसे। श्रीतं वृष्यप्रदं ग्राहि पित्तन्नं तु बलप्रदम्॥ ६५॥

( मं महिषीलोगीगुण । कं यमीयविषेगुण । )

#### [ 320]

## राजनिष्ययुः।

त्रय लघुनानवनीतगुगाः।—

लघुजाजन्तु मधुरं कषायञ्च तिदोषनुत्। चच्चष्यं दीपनं बच्चं नवनीतं हितं सदा ॥ ६६ ॥ (मं जाजनगरमेलिलोणिगुण । कं दीपदाड़िवणीयगुण ।)

त्रय छागनवनीतगुषाः।—

नवनीतं नवोत्यन्तु छागजं चयकासजित्। बल्धं नेत्रासयम्नं च कप्तम्नं दीपनं परम्॥ ६०॥ (मं लोवसरीलिचेंगुणः। कं देसवाल ग्राज्जिनवेगीयगुणः।)

त्रय त्राविकनवनीतगुणाः।—

ग्राविकं नवनीतन्तु विपाके तु हिमं लघु। योनिशूले कफी वाते दुर्नीन्त्र च हितं सदा॥ ६८॥ (मं एड़िकौचेंलोगीगुग्ग। कं एलगुग्रियवेगीगुग्ग।)

श्रय एड्कनवनीतगुगाः।—

ऐडकं नवनीतन्तु कषायं श्रीतलं लघु । मिधाच्चदुगुरु पुद्धां च स्थील्यं मन्दाग्निदीपनम् ॥ ६८॥ ( मं में दिनें लोगीगुर्गा । कं क्षरियनेगीगुर्गा । )

श्रय इस्तिनीनवनीतगुगाः।-

हस्तिनीनवनीतं तु कषायं शीतलं लघु । तिक्तं विष्टिभा जन्तुमं हन्ति पित्तकप्रक्रिमीन् ॥७०॥ (मं हातिगोलोगोगुग । कं ग्रानियवेगीगुग्ग । )

त्रथ त्रश्चीयनवनीतगुर्याः।— त्रश्चीयं नवनीतं स्थात्मवायं काफवातजित्। चत्तुष्यं कटुकं चोष्णमोषद्वातापहारकम् ॥ ७१ ॥ ( मं घोड़ोचें बोगोगुग्ग । कं कुदिरेबेगेगुग्ग । ) अथ गर्दभीनवनीतगुग्गाः।—

गर्दभीनवनीतन्तु कषायं कफवातनुत्। बच्चं दीपनदं पाके लघूष्णं सूत्रदोषनुत्॥ ७२॥ (संगादवीचें लोगीगुगः। कं कत्तेयवेगीगुगः।)

अध उद्दोनवनोतगुणाः।-

श्रीष्ट्रन्तु नवनीतं स्थादिपाने लघु श्रीतलम् । व्रणक्रिसिनाफास्त्रप्तं वातप्तं विषनाश्रनम् ॥ ७३ ॥ (मं नरेहीचेंलीखोगुख । नं श्रींठेयनेखेयगुख । )

ऋय नारीनवनीतगुयाः।-

नवनीतन्तु नारीणां रुचं पाने लघु स्मृतम्। च तुष्यं सर्वरोगम्नं दीपनं विषनाशनम्॥ ८४॥

( मं स्त्रीचें लो यो गुण । कं हैं शुसिन बे यो यगुण । )

त्रघ सद्योनवनौतगुगाः।—

श्रोतं रुचनवोद्दृतं सुमधुरं तृष्यञ्च वातापहं कासम्नं क्रिमिनाशनं कफकरं संग्राहि श्रूलापहम्। बल्यं पुष्टिकरं तृषार्त्तिशमनं सन्तापविच्छेदनं चत्तुष्यं त्रमहारि तर्पणकरं दध्युद्भवं पित्तजित्॥ ७५॥

अय पर्युषितनवनीतगुगाः।—

एकाहाद्यषितं प्रोत्तस्तरोत्तरगत्यदम्।

[ 327]

। राजनिषयुः।

श्रह्यं सर्वरीगाच्यं दिधजं तहुतं स्मृतम्॥ ७६ ॥ (मं जुनें जो गौतूपगुण । कं पचपवे येयगुण ।) [ इति एका दश्चनवनी तप्रकरणम्।]

त्रघ गव्यष्टतगुराः।—

धीकान्तिसृतिदायकं बलकरं मिधाप्रदं पुष्टिकत् वातस्रोपहरं अमीपग्रमनं पित्तापहं हृद्यदम् । वक्नेवेंडिकरं विपाकमधुरं वृष्यं वपुःस्थैर्थदं गव्यं ह्यातमं घृतं बहुगुणं भीग्यं भवेद्गाग्यतः ॥ ७०॥ (मंगाइचेंतूप। वं ग्राक्वतुप्पह । )

न जाइपर्या न आवालपुष्पचा

त्रिय महिषीष्टतगुणाः ।—
सिर्पिमी हिषमुत्तमं धृतिकरं सीख्यप्रदं कान्तिकृत्
वातस्रोद्यनिवर्षणं बलकरं वर्णप्रदाने चमम् ।
दुर्नामग्रहणीविकारणमनं मन्दानलोहीपनं
चन्नुष्यं नवगव्यतः प्रसिदं हृद्यं मनोहारि च ॥ ७८॥
( मं रहेसीचेंतूप । कं यस्यतुष्पन । )

त्रथ त्रजाष्टतगुषाः ।— त्राजमान्यन्तु चत्तुष्यं दीपनं बलवर्षनम् ।

कासम्बासकफान्तकं राजयन्त्रसु शस्यते ॥ ७८ ॥ (मं श्रेलीचेत्र । कं सर्गलवनस्य

(मं ग्रेलीचेत्पा । कं ग्राडिनतुष्पत्र ।) त्रयं त्राविकष्टतगुषाः ।—

पाने लघु विकं सिर्पिनेवं पित्तप्रकोपणम्। योनिदोषे केपे वाते शोफे कम्पे च तिहतम्॥८०॥ (मं एडिचेतूप। कं एलगुरियतुण्यः।)

## ः चोरादिवर्गः।

अथ एड्कष्टतगुराः।—

ऐड़कं घतमतीवगौरवाद्वर्चमेव सुकुमारदेहिनाम् । वुद्धिपाटवकरं वलावहं सेवितं च कुरुते तृणां वपु: ॥ ८१ ॥ (मं मेंद्रोचेंतूप । कं त्रिणगुर्वियतुष्प ।)

त्रघ इस्तिनोष्टतगुराः।-

निच्चन्ति चिस्तिनीसिपः कपित्तिविषक्तिमीन्। कषायं लघु विष्टिस्थि तिक्षं चान्निकरं परम्॥ ८२॥ (सं चातिसीतूपः वं कुदिरेतुषः।)

त्रय त्रश्रीष्टतगुगाः।—

अश्वीसर्पितु कटुकं सधुरं च कषायकम् । र्भूषद्दीपनदं सूर्च्छा-हारि वातात्यदं गुरु ॥ ८३ ॥ (सं घोड़िचेतूप । कं घोडिगेयतुष्प । )

त्रय गर्दभोष्ठतगुषाः ।—

प्रतं गार्दभिकं बल्यं दीपनं सूत्रदोषनुत् ।

पाके लघूषावीर्थाञ्च कषायं कफनाप्रनम् ॥ ८८ ॥

(मं गाढ़वीचेंतूप । कं कत्तेयतुष्प । )

त्रय उद्गीष्ठतगुषाः ।—

प्रतमीष्ट्रन्तु सधुरं विपाने कट्रशीतलम् ।

कुष्ठक्रिमिहरं वात-कफगुल्मोदरापहम् ॥ ८५॥

(मं करहीचेंतूप। वं श्रोंटेयतुष्प।)

त्रघ नारीष्टतगुषाः।— नारीसर्पिसु चत्तुष्य' पथ्यं सर्वासयापहम् ।

## राजनिष्ययुः।

मन्दाग्निदीपनं रुचं पाके लघु विषापहम् ॥ ८६॥ (मं स्त्रीचेंतूप। कं हेड्डिसनतुष्प।)

श्रथ पुरायाष्ट्रतगुषाः ।—

सदापस्मारसृक्कीदि-शिरःकणीचिजा रुजः ।

सर्पिः पुराणं जयित व्रणशोधनरोपणस् ॥ ८०॥

(सं, कं, जुनेंतूप ।)

श्रय साधारण छतगुणाः।—
श्रायुर्वृष्ठिं वपुषि दृढ्तां सीक्षमार्थ्यं च कान्तिं
बुद्धिं धत्ते स्मृतिब बक्तरं शीतिविध्वंसनं च।
पथ्यं बाल्ये वयसि तक्षे वार्षके चातिबल्यं
नान्यिकिञ्चिज्ञगति गुणदं सिपेष्ठः पथ्यमस्ति॥ ८८॥
[इति छतप्रकरणम्।]

श्रय काञ्चिकनामगुषाः ।—
काञ्चिकं काञ्चिका वीरं कुल्माषाभिभवं तथा ।
श्रवन्तिसीमं धान्यान्तमारनालोऽस्त्रसारकः ॥ ८८॥
काञ्चिकं वातशोफन्नं पित्तन्नं ज्वरनाशनम् ।
दाहमूक्किंश्यमन्नञ्च श्र्लाधानविवन्धनृत्॥ ८०॥
(मं काञ्च। वं श्रांब्वल। गौ कंजि।)

त्रय काञ्चिते गुणाः।—
काञ्चिकं काञ्चिते त्राव पतितं वातकारकम्।
दाहकं गात्रणैयिन्धं मर्दनात्र च भच्चणात्॥ ८१॥
त्रय चुक्रनामगुणाः। (काञ्चिकभेदः)।—
चुक्रं सहस्रवेधच्च रसाम्बं चक्रवेधकम्।

शाखान्त्रभेदनच्चैवमन्त्रसारच चुिक्रका ॥ ८२ ॥ चुक्रं तिक्तान्त्रकं खादु कफपित्तविनागनम् । नासिकागददुर्गन्ध-शिरोरोगहरं परम् ॥ ८३ ॥

अध सौवीरक तुषीदकनामगुषाः।—

सीवीरकं स्वीराक्तं ज्ञेयं गोधूमसस्यवम् ।

यवाक्तजं यवीत्यं च तृषीत्यं च तृषीदकम् ॥ ८४ ॥
सीवीरकं चाक्तरसं केश्वं सस्तकदोषितित् ।

जराश्रीयव्यहरणं बलसन्तर्पणं परम् ॥ ८५ ॥

तग्डुलीत्यं तग्डुलाक्ष्व कषायं मधुरं लघु ।

संग्राहि विषविच्छिदि-त्टड्दाह्रवणनाशकत् ।

तुषास्त्र दीपनं हृद्यं हृत्याग्डुक्तमिरोगनुत् ॥ ८६ ॥

((सं धुवण । कं अक्तिगिच्हरे । गो गम ग्री यवेर कं।ित ।)

त्रघ मत्तवाञ्चिकगुराः।—

ब्रनोदनः शिवरसस्त्र्यहात्पर्येषिते रसे। दीपनो सधुराम्बसु दाहनिस्रघुतर्पणः॥ ८०॥ (सं, कं, शिवरस।)

[ इति काञ्चिकादिप्रकर्णम् । ]

त्रघ गोमूलगुगाः।--

गोमूतं कटुतिकोणां कफवातहरं लघु । पित्तकहीपनं मेध्यं लग्दोषम्नं मतिप्रदम् ॥ ८८॥

(कं त्राकलगोत्तगुगा।)

त्रय माहिषम्तगुगाः।—

माहिषं मूत्रमानाह-शोषगुल्माचिद्रोषनुत्।

कटूर्णं कुष्ठकण्ड्ति-भूजोदरक्जापहम्॥ এএ॥ ( मं म्हेमोहेंमूत । कं यमोगींत । )

अध अजामूलगुराः।—

अजाम् तं कटूणाञ्च रूचं नाड़ीविषात्तिजित्। म्रीहोदरकप्रखास-गुल्मशोपाहरं लघु॥ १००॥ (मं सेलिचेंमूत्र। गो छागलेर मूत।)

अध अविक्रमूत्रगुयाः।—

श्राविकं तित्तकटुकं मूलमुश्यं च कुष्ठजित्। दुर्नीमोदरश्लास्त-शोफमेहविषापहम् ॥१०१॥ (मं श्राविनगोमूल। कं कुरौयगोमूल। गौ मेड़ारमूत।)

इस्तिमृतगुगाः।--

हस्तिमूतं तु तिक्तोश्णं लवणं वातभूतनुत्। तिक्तं कषायं श्रूलप्नं हिकाध्वासहरं परम्॥ १०२॥ (मं हातिग्रीचेंमूत्र। कं ग्रानेयगोमूत्र।)

अध अधमूलग्याः।—

श्रम्भ मृतं तु तिक्तोष्णं तीन्त्यं च विषदीषजित्। वातप्रकीपण्यमनं पित्तकारि प्रदीपनम्॥ १०३॥ (मं घोड़ियाचेंसूत। कं कुदरैयमूत्र।)

त्रय गर्दभमूतगुगाः।—

खरमूतं कट्रणं च चारं तीच्णं कफापहम्।
महावातापहं भूत-कम्पोन्मादहरं परम्॥ १०४॥
(मं गाढ़वीचेंमूत। कं कत्तेयमूत्र।)

अध उष्ट्रमूतगुगाः।—

चौष्ट्रक्तं कटु तिक्तोणां खवणं पित्तकोपनम् । बच्चं जठररोगन्नं वातदोषविनाशनम् ॥ १०५॥

( मं करहीमूल । कं श्रींठेयगींवत । )

त्रय मानुषस्तग्याः।—

सानुषं सूत्रसामन्नं क्रिसित्रणविषार्त्तिनुत्। तिज्ञोणां जवणं कत्तं भूतत्वग्दोषवातजित्॥ १०६॥

( मं नरमूत।)

त्रघ गोमूलसाध्यरोगाः।—

भूलगुल्सोदरानाह-वातविच्छर्दनादिषु । स्रुतप्रयोगसाध्येषु गोसूत्रं कल्पयेहुषः ॥ १०० ॥ [ इति नवसूत्रप्रकरणमा ]

द्यय तेलयोनयः ।— 💛 💯 👑 🚧

तैलं यत्तिलसर्षपोदितकुसुक्षोत्यातसीधान्यजं

यचैरण्डकरञ्जकेङ्गुदिफलैर्निस्वाचिश्रयृस्थिभिः।

ज्योतिषात्यभयोज्ञवं मधुरिकाकोशस्त्रचिञ्चाभवं

कर्पूरत्रपुसादिजञ्च सकलं सिद्धैर क्रमात् कथ्यते ॥ १०८॥

त्रघ तिलतैलगुगाः।—

बिज्ञतैलमलङ्गरोति केशं मधुरं तिक्तकषायसुष्णतीच्याम्। बलकल्लफवातजन्तुखर्जूत्रणकण्डूतिहरं च कान्तिदायि॥१०८॥

त्रय सार्वपतेलगुगाः।—

सर्वपतैलं तित्तं कट्कोणं वातकपविकारम् । पित्तास्त्रदोषदं क्रिमिकुष्ठम्नं तिलजवच चत्तुष्यम् ॥ ११०॥

## [ 325]

#### राजनिघण्टुः।

त्रघ कुसुमातेलगुगाः। -

कुसुमातेलं क्रिमिहारि तेजोबलावहं यक्तमलापहं च। त्रिदोषक्तत्पृष्टिबलच्चयं च करोति काण्डूच करोति दृष्टे: ॥१११॥

(गो जुसुमवीजिर तेल।)

श्रय त्रतसीतैलगुखाः।—

मधुरं त्वतसीतैलं पिच्छिलं चानिलापहम् ।

मदगन्धि कषायञ्च कप्रकासापहारकम् ॥ ११२ ॥

(मं एसेल । कं अगसेयसी । हिं अल्सीका तेल । भी तिसिर तेल,

मस्नेर तेल । )

त्रघ धान्यजतेलगुगाः।—

गोधूमयावनासत्रीहियवाद्यखिलधान्यजं तैसम्। वातकफपित्तशमनं कण्डूकुष्ठादिहारि चत्तुष्यम्॥ ११३॥

अध एरख्तेलगुगाः।—

एरण्डतैलं क्रिमिदोषनाश्चनं वातामयन्नं सकलाङ्गश्चलहृत्। कुष्ठापन्नं स्वादु रसायनोत्तमं पित्तप्रकोपं कुरुतिऽतिदीपनम् ॥११४॥ (सं श्राडलक्षेययेणे। गौ रेड्रोर तेल।)

त्रथ करञ्जतैलगुगाः।—

करज्जतैलं नयनार्त्तिनाश्रनं वातामयध्वंसनमुख्यतीच्याकम् । कुष्ठार्त्तिकख्र्तिविचर्चिकापहं लेपेन नानाविधचर्मदोषनुत्'॥११५॥ (कं हुलिगिन्नेयणे। गो करम्चार तेल।)

त्रय द्रङ्गुदीतैलगुगाः।— स्निग्धं स्यादिङ्गुदीतैलं सधुरं पित्तनायनम्। भोतलं कान्तिइं बल्धं श्लेष्पलं केमवर्डनम् ॥ ११६॥ (सं हिडुगाचेतेल । सं हिडुलयणे।)

श्रय निम्बतैलगुराः।—

निस्वतेलं तु नात्युष्णं क्रिमिक्कष्टकपापहम्॥ ११७॥ (कं विविनेणे।)

अय अचतेलगुगाः।--

आर्चं खादु हिमं केश्वं गुरु पित्तानिलापहम् ॥ ११८॥ (मं वेद्ववेयाचेंतेल। कं तरिययणे। गौ वद्देड्वावीचेर तेल।)

त्रघ प्रियुतैलगुगाः।—

शिगुतैलं कटूणाच वाति जिलाफनाश्चनम् । त्वग्दोषत्रणकाण्डूति-शोफचारि च पिच्छिलम् ॥ ११८॥ (मं सेगुतेल । वं नुगिययणे । गो सिननावीकीर तेल ।)

त्रय च्योतिषातोतेलगुगाः।—

कटु ज्योतिषातीतेलं तिक्तीष्णं वातनाश्रनम्। पित्तसन्तापनं मेधा-प्रज्ञावुद्धिववर्षनम्॥ १२०॥ (मं केंकिनेथे। गौ लताप्रद्कीर तेलः।)

श्रय हरीतकीतैलगुगाः।—
श्रीतं हरीतकीतैलं कषायं मधुरं कटु।
सर्वव्याधिहरं पथ्यं नानात्वग्दोषनाश्रनम्॥ १२१॥
(मं हिरहेल। कं अग्रिकेयणे।)

त्रय राजिकातैलगुगाः।—

तीच्यान्तु राजिकातैलं ज्ञेयं वातादिदोषनुत्।

#### राजनिषयुः।

शिशिरं कटु पुंस्त्वम्नं केश्वं त्वग्दोषनाश्चनम् ॥ १२२ ॥ (मं सुद्वरितेल । कं सासवेययणे । गौ रादसरिकार तेल ।)

अय कीशामनतैलगुगाः।—

सरं कोशास्त्रजं तैलं क्रिमिकुष्ठव्रणापहम्। तिक्तास्त्रमधुरं बल्धं पथ्धं रोचनपाचनम्॥ १२३॥ (मंत्रांबेल। कं माविनेणे। गो क्याग्रोड़ारतेल।)

त्रय चिञ्चातैलगुगाः।—

यच चित्राभवं तैलं कटु पाके विलेखनम्।

कफवातहरं रुचं कषायं नातिशीतलम्॥ १२४॥

(मं पिंसीरातेल। कं चिक्कणिकेययणे। गी काँदवीजेर तेल।

त्रय वर्ष्रतेलनामगुणाः।—

कर्पूरतैलिहमतैलिसतां ग्रातैल-ग्रीताभ्रतेलतु हिनां ग्रस्थां ग्रतेलम् । कर्पूरतैलं कटुकोष्णकफामहारि वातामयप्ररददार्ब्यदिपत्तहारि॥ १२५॥

(मं कपुरेय थें। गौ कपूरेर तेल।)

त्रय वपुसादितैलम्।—

त्रपुसैर्वाक्कचारककुषाग्डप्रस्थितिवीजजं च यत्तेलम्। तन्मधुरं गुक् शिशिरं केश्यं कफपित्तनाश्चि कान्तिकरम्॥१२६॥ (मं काकड़ी। कं वालुकादितेलं। ते सीतगुवलादि-यंसीते। गौ श्रसा, कांकुड़ द्वादिवीनर तेल्ला)

#### चीरादिवर्गः ।

[808]

त्रय त्रविधिप्रयुक्ततेलय विषत्त्वता ।—
तेलं न सेवयेडीमान् यस्य कस्य च यद्गवेत् ।
विषसास्यगुणलाच योगे तन प्रयोजयेत् ॥ १२७ ॥
उक्तच ।—

विषय तैवय न किञ्चिदन्तरं स्रतय स्रमय न किञ्चिदन्तरम्। दृष्यय दासया न किञ्चिदन्तरं स्रूष्य काष्ट्य न किञ्चिदन्तरम्॥ १२८॥ [ इति तैवप्रकरणम्। ]

द्रस्यं गवादिकपयः प्रस्तिप्रपञ्चप्रस्ताववर्षितितिलादिकतैलजातम्।
वर्गे निसर्गलिलोज्ज्वलप्रव्हसर्गे
बुद्धा भिषक्पतिरप्रद्भतया भिषज्येत्॥१२८॥
पातारमास्ननः किल यान्ति प्रस्युपचिकीर्षया यानि।
तेषामेव निवासः परिकथितः पेयवर्गे द्रति क्षतिभिः॥१३०॥
पायं पायं मधुरविमलां ग्रीतलां यस्य कीर्त्तिस्रोतोधारां जहति सुजना दुर्जनासङ्गदीस्थ्यम्।
वर्गस्तस्य व्रजति नृहर्रनामनिर्माणनान्तस्रूड्रात्ने खलु तिथिमितः चीरकादिः समाप्तिम्॥१३१॥
दति स्रीनश्वरिपण्डितविर्णित राजनिष्यस्यै

चीरादिवर्गः पञ्चद्गः समाप्तः।

---

# श्रय शाल्यादिवर्गः।

त्रय धान्यप्रकर्णम् ।-

धान्यं भोग्यञ्च भोगार्हमनायं जीवसाधनम्। तच तावत् तिधा ज्ञेयं शूकशिम्बीटणाद्वयम्॥१॥

त्रीच्चादिनं यदि इ श्वसमन्वितं स्थात्
तच्छ्वकथान्यमय मुद्रमकुष्टकादि ।
श्रिम्बीनगृद्धिति तत्प्रवदन्ति श्रिम्बीधान्यं त्रणोज्ञवतया त्रणधान्यमन्यत् ॥ २ ॥
वातादिदोषश्मनं लघु श्वकथान्यं
तेजोबलातिश्यवीर्थ्यविद्यद्विद्यि ।
श्रिम्बीभवं गुक् हिमं च विबन्धदायि
वात्लकं तु शिशिरं त्रणधान्यमाहः ॥ ३ ॥

देशे देशे श्र्कधान्येषु संख्या ज्ञातुं शक्या नैव तहैवतैर्वा। तस्मादेषां येषु भोगोपयोगास्तान्यस्माभिर्व्याक्रियन्ते कियन्ति ॥ ४॥

श्रथ शालिनाम ; तद्वेदाश्च।—

शालयः कलमा कचा ब्रीहिश्रेष्ठा तृपप्रियाः। धान्योत्तमाश्च विज्ञेयाः कैदाराः सुकुमारकाः॥५॥ राजान्नषष्टिकसितेतररक्तमुग्ड-स्थूलाग्रगश्चिनरपादिकशालिसंज्ञाः। त्रीहिस्तथिति दयधा श्रुवि यालयसु तेषां क्रमेण गुणनामगणं व्रवीमि ॥ ६॥

त्रथ राजानादिशालिलचयम्।—

राजानं दीर्घश्तः खरिपुदिवसजं षष्टिको वर्णतो ही
नि:शूको सुण्डशालिः खगुणविश्वदितः खाभिधानास्त्रयोऽन्ये।
मासैर्योऽन्यस्तिभः स्थात् स भवति निरपो योऽपि व्रध्यम्बुसम्भूरेष स्थाद्वीहिसंच्चस्तदिति दश्यविधाः शालयस्तु प्रसिद्धाः॥ ७॥

अय राजाननामगुगाः तद्वेदाश्च।-

प्रालिनंपात्रं राजात्तं राजाहं दीर्घभूतकम् ।
धान्यश्रेष्ठं राजधान्यं राजिष्टं दीर्घभूरकम् ॥ ८ ॥
राजात्तं तु तिदोषग्नं सुस्तिग्धं मधुरं लघु ।
दीपनं बलकत्पय्यं कान्तिदं वीर्थवर्ष्ठनम् ॥ ८ ॥
राजात्रं तिविधं स्वभूकिभदया च्चेयं सितं लोहितं
कृष्यं चेति रसाधिकं च तदिदं स्थादौत्तरोत्तर्थितः ।
तैविध्यादिह तण्ड्लाश्च हरिताः खेतास्तया लोहिताः
सामान्येन भवन्ति तिऽप्यय गुणैः स्युः पूर्वपूर्वीत्तराः ॥१०॥
(राजानं कार्याटके प्रसिद्धम् । गौ राजभोग । )

त्रय प्रष्टिकनामगुषाः।—

षष्टिकः षष्टिशालिः स्थात् षष्टिजः स्निग्धतग्र् लः । षष्टिवासरजः सोऽयं न्नेयो मासदयोद्भवः ॥ ११ ॥ गौरो नीलः षष्टिकोऽयं दिधा स्था-दाद्यो रूचः श्रीतलो दोषद्वारी।

## [ ४०४ ] राजनिष्युः।

वल्य: पथ्यो दोपनो वीर्थ्यवृद्धिं दत्ते चास्मात्मिञ्चटूनो दितीय:॥ १२॥ ( षष्टिमात्मिणवे प्रसिद्धः। गो षेटेधान। )

त्रय क्षणप्रालिनामगुणाः।—

कृष्णभाविः कावभाविः ग्यामभाविः सितेतरः॥ १३॥ कृष्णभाविष्त्रदोषन्नो मधुरः पृष्टिवर्षनः। वर्षकान्तिकरो बच्चो दाञ्चजिद्दीश्चेष्टदिक्कत्॥ १४॥ (कं करियनेचु। गौ केविधान।)

त्रय रक्तश्रालिनामगुगाः।— 🐪 🦠

रत्त्रशालिस्तास्त्रशालि: शोणशालिश्व लोहित:।
रत्त्रशालि: सुमधुरो लघु: स्निग्धो बलावह:॥ १५॥
रिचकहोपन: पथ्यो मुखजाद्यरुजापह:।
सर्वामयहरो रुचो पित्तदाहानिलास्त्रजित्॥ १६॥
(तं नेदनेनु। ते एर्रनिवर्णगलधान्यमु। गौ निह्निदादखानि।)

त्रथ मुख्डप्रालिनामगुर्याः।—

मुख्यालिम् खुनको नि:शूको यवशूकजः॥ १७॥

मुख्यालिस्त्रिदोषन्नो मधुरास्तो बलप्रदः॥ १८॥

(मं नि:शूक्यालि। कं वीखनलु। वम्॰ वीख़केभात।

गौ वोरोधान।)

त्रय खूबप्राविनामगुगाः।—

स्यू लगालिमें हागालि: स्यू लाङ्गः स्यू लतग्डु लः। एवंगन्धाव्य गालिस नासान्यू चानि स्रिमिः॥१८॥

## ग्राखादिवर्गः।

[ કબ્ધ ]

महायालि: खादुर्मधुरिग्रिश्चर: पित्तश्चसनी ज्वरं जीर्षं दाहं जठरक्जमङ्गाय श्रमयेत्। श्चिश्चनां यूनां वा यदिष जरतां वा हितकर: सदा सेव्य: सर्वेरनलबलवीर्याणि कुक्ते॥ २०॥ (संबङ्गेश्चालि। कंदोडुनेलु। गौ मोटाधान।)

त्रय सूच्मशालिनामगुषाः।—

स्त्रमालि: स्विमालि: पोतमालिस स्वतः ॥ २१ ॥ स्त्रमालि: समध्रो लघु: पित्तास्त्रदाहनुत्। दीपन: पाचनसैव किश्चिद्वातिकारिजत्॥ २२ ॥ (मं कोटाधान। कं समन्त्र। गो सस्धान।)

त्रथ गत्वशालिनामगुणाः।—

गन्धग्रालिख कल्माषो गन्धालुः कलमोत्तमः । सुगन्धिर्गन्धबद्दुलः सुरिमर्गन्धतग्डुलः ॥ २३ ॥ सुगन्धग्रालिमेधुरोऽतिवृष्यदः पित्तश्रमास्त्राक्विदाह्यगन्तिदः । स्तन्यस्तु गर्भस्थिरताल्पवातदः पुष्टिप्रदश्चाल्पकपश्च बल्यदः ॥२४॥ (कं कमाकलवो । गौ सुगन्धिधान ।)

त्रय निरपप्रालिगुगाः।— \*

निरपो मधुर: स्निग्ध: श्रीतलो दाइपित्तजित्। तिदोषश्मनो रुच: पथ्य: सर्वामयापनुत्॥ २५॥ .... (मं रूपशालि। कं तुरुनेलु।)

जलग्र्यचेते वृद्यम्ब्सङ्गातगालिधा न्यविगेषे ।

#### राजनिष्ठय्ः।

त्रिय त्रीहिशालिगुगाः ।—
त्रीहिगौँरी सधुरशिशिरः पित्तहारी कषायः
सिन्धो तृष्यः क्रिसिक्पहरस्तापरत्तापहञ्च ।
पुष्टिं दत्ते असग्रसनक्षद्वीय्यवृद्धिं विधत्ते
क्चोऽत्यन्तं जनयति सुदं वातक्षक्येचकोऽन्यः ॥ २६ ॥
(सं सातुवे। कं केद्येनेतृ। गौ आशुधान, आउश्रधान।)

अथ पृथक्षा लिनामानि।-

मण्डन: स्यूनियानिश्व स्यादिस्वयानिकस्तया।
निजातियाणहुन्याश्व विस्वी नीसेन्द्रकस्तया॥ २०॥
प्रसाधिका जीरकास्या सम्यामा मधुरा मता।
राजानां मीनिकस्यापि यानिः स्यादुर्वरी तथा॥ २८॥
स्व्यायानिः कुदितिका स्यानिर्गुरुयानयः।
वनशानिर्गुण्डुरुकी चीरिका पङ्त्रयः प्रथक्।
एतानि यानिनामानि प्रस्थातानि प्रसिद्धतः॥ २८॥

त्रध वीद्विषष्टिधान्यनाम।-

अशोचा पाटला ब्रीहिबीं हिको ब्रीहिधान्यकः। ब्रोहिसंधान्यसुद्दिष्टः अर्धधान्यसु ब्रीहिकः॥ ३०॥ गर्भे पाकणिकः षष्टिः षष्टिको बलसम्भवः। सुधान्यं पथ्यकारी च सुपिवः प्रज्ञविप्रियः॥ ३१॥ (मं साठी।)

त्रय कलमप्रालिनामगुगाः।— प्रालिख कलमाद्यसु कलमो नाकलायकः। कदम्बपुष्पगन्धस कलजातः कलोद्भवः॥ ३२॥ पित्तस्रोधनारो छत्यः कलसो सधुरस्तया॥ ३३॥ (संकलमा गो कलाधाना) अथ रक्तशालिनासगुगाः।—

त्रिया रत्रशासिन पुषाः ।— स्वीहितो रत्त्रशासिः स्थात् काष्ठसो हितशास्यः । स्वाली रुपशासिस्त रत्त्रशास्यः सुशास्यकः ॥ २४ ॥ त्रियान्नो ससकस्त्रन्नो हृद्यस्तु सतिदाः परे॥ २५ ॥

त्रय सगन्वशालिनामगुषाः ।— सन्दाशालिः सुगन्धा स्थात् सुगन्धा गन्धसन्धवा । गन्धान्धा गन्धमात्या च गन्धानी गन्धमालिनी ॥ ३६ ॥ सुगन्धा मधुरा हृद्या कफपित्तज्वरास्नजित्॥ ३७॥

श्रय कुड्सभग्राविनामगुगाः।— जलोद्गवा जलक्हा जलजाता सुजातका। रक्ताङ्गुलं सुकारच्च कुड्समं समवर्षजा॥ ३८॥ कुड्समा मधुरा श्रीता रक्तपित्तातिसारजित्॥ ३८॥

त्रव तिलवाधिनौग्रालिनामगुणाः। —
तिलजा नीलनामा स्याद्दीर्घकुण्णा सुपूजका।
मधुरा च सुगन्धा च तिलवासी निगद्यते॥ ४०॥
राजादनी राजप्रिया राजभावा सुनिप्रिया।
तिलनी तिलपणी च त्रामगन्धा प्रवासिनी॥ ४१॥
कफिपत्तहराः स्निश्वाः कासम्बासहराः पराः।
ग्रीन्नपाकत्ररा हृद्या लववः ग्रुक्रवर्षनाः॥ ४२॥
कोमलाहारसभूतास्तिलवासीमहागुणाः।
पाण्डुरोगेषु शूलेषु चामवाते प्रयस्यते॥ ४२॥

त्रथ वक्तप्रालिनामगुणाः।—

वक्तको वक्तप्रालि: स्थात् दीर्घेसु ग्राग्रकोपित: । राजप्रिया पथ्यकरा मध्यदेशसमुद्भवा ॥ ४४ ॥ विक्तका स्वव: प्रोक्ता मुख्याककरास्तथा ॥ ४५ ॥ (मं भकोइधान।)

ष्रथ कलाटकनामगुगाः।—

कलाटकः किवलः स्याद्वरसो गरुडः स्मृतः।
गुरुवको गुरुवकः सुखभोजी सुभोजकः॥ ४६॥
किवलो गन्धकारी च लघुपाककरोऽपि च।
किपित्तहरः स्वादुः शूलखासनिवारणः।
गृहणीगुल्मकुष्ठम्नो विकलो भोजने शुभः॥ ४७॥
(कं किवलागरुड्शालिगुण। गौ पन्निराज्यान।)

त्रथ कुषाव्छिकाशासिनामगुणाः।— कुषाव्छिका कुश्विहिका रक्ता सुमधुरा गुरुः। सुगन्धा दुर्जरा पीता स्थूलतव्छुसकीमसा॥ ४८॥ (मं कुषाव्छिशासि।)

श्रय कुभशाणिगुणाः।—
कुभिका मधुरा स्निन्धा वातिपत्तिनिवर्ष्टिणी ॥ १८ ॥
श्रय कौसुभौशालिनासगुणाः।—
सौरभं श्रिण्डिकः श्रण्डी कौसुभौ कठिनोऽक्रकः ॥ ५०॥
कौसुभौ लघुपाका च वातिपत्तिनिवर्ष्टिणी ॥ ५१॥

#### घाल्यादिवर्गः।

[ 308]

यय जन्यासप्रालिनानगुगाः।--

उम्पासः उम्प्रकाशां विभीष्ठरा गुरुतग्ङ्वा । बहुशूका सुगन्धाच्या तारुण्यजनवस्त्रभा ॥ ५२ ॥ उम्प्रिका सधुरा सिग्धा सुगन्धा च कषायका । पित्तस्रेषहरा रूचा उम्प्रकाऽनिबनाशिनी ॥ ५३ ॥

अध पचिक्रशालिनामगुराः। —

पचिकः पचिवावणः पचिराजो सुनिप्रियः । खूलतण्डुलसम्भूता-गन्धो बह्नगन्धक्तत् ॥ ५४ ॥ (सं पांवियाशावि।)

त्रय प्रालिविग्रेषाः।—

दग्धायामवनी जाताः शालयो लघुपाकिनः ।
किञ्चित् सितक्का मधुराः पाचना बलवर्षनाः ॥ ५५॥
केदारा मधुरा वष्या बच्चाः पित्तविवर्षनाः ।
र्ष्रप्रकाषायान्यम् ला गुरवः कफनाश्रनाः ॥ ५६॥
शालयो ये च्छिन्नरुष्ठा रुचास्ते बढवर्षसः ॥ ५०॥
रोप्यातिरोप्या लघवः शोघ्रपाका गुणोत्तराः ।
विदाष्टिनो दोषष्टरा बच्चा मूत्रविवर्षनाः ॥ ५८॥

[ इति शाखयः । ]

#### त्रथ यावनालनाम।-

यावनालो यवनालः शिखरी वृत्ततग्डुलः। द्रीर्घनालो दीर्घग्ररः चेत्रेच्चस्चेचुपत्रकः॥ ५८॥

#### [880]

#### राजनिघण्टुः।

(मं सामान्यजुवारि। कं जोलद हैसरा तें जोनला वम्॰ मकद, वजा, बुट। तां मक्क शोलम्। हिं मका; सुट्टा। गो जनार।)

त्रय श्वेतयावना लना मगुणाः।—

धवलो यावनालस्तु पाण्ड्रस्तारतण्ड्लः ।
नचत्राक्ततिविस्तारो वृत्तो मौत्तिकतण्ड्लः ॥ ६० ॥
जूर्णाद्वयो देवधान्यं जूर्णलो वीजपुष्पकः ।
जूनलः पुष्पगन्धश्च सुगन्धः सेगुरुन्दकः ॥ ६१ ॥
धवलो यावनालस्तु गौत्यो बन्धस्तिदोष्ठित् ।
वृष्यो रुचिप्रदोऽशीन्नः पथ्यो गुल्सव्रणापदः ॥ ६२ ॥
(मं श्वेतजुवारि । कं विलियजोल ।)

अथ तुवरनामग्याः।—

श्रय तुवरयावनालखुवरस कषाययावनालस।
स रक्तयावनालो हितलोहितखुवरधान्यस॥ ६३॥
तुवरो यावनालखु कषायोष्णो विश्रोफकत्।
संग्राही वातश्ममो विदाही शोषकारकः॥ ६४॥
(सं तुरेनोंधले। कं श्रांगरजाल। गो रक्तजनारे।)

त्रय शारदयावनालगुषाः।—

शारदो यावनालसु श्लेषदः पिच्छिलो गुरु:। शिशिरो मधुरो वृष्यो दोषन्नो बलपुष्टिदः॥ ६५॥

(मं कारमांग्रसनीं घते । कं काचनीत ।)

[ इति यावनाखः । ]

## शाखादिवर्ः।

[888]

#### अध गोधूमनामगुषाः।-

गोधूमो बहुतृग्धः स्यादपूपो म्हेक्क्सोजनः । यवनो निसुषः चौरो रसालः सुमनश्व सः ॥ ६६ ॥ गोधूमः स्निग्धमधुरो वातष्नः पित्तदाहकत् । गुरुः स्नेषासदो बच्चो रुचिरो वीर्थ्यवर्षनः ॥ ६०॥ (मं गहुं। कं गोधि। तें गोधुमतु। हिंगें हुं। गौ गम्।)

त्रय लघुगोधूमगुगाः।--

स्तिग्धोऽत्वो लघुगोधूमो गुक्रविष्यः कफापहः। ग्रामदोषकरो बल्बो मधुरो वीर्थ्यपुष्टिदः॥ ६८॥१ (मं छोटागोद्दं। वं समगोधौ।)

ः [ इति गोधूम। ]

#### त्रय यवनामगुषाः।—

यवसु मिध्यः सितशूकसंज्ञो दिव्योऽच्यतः कञ्चुकिधान्यराजी ।
स्थात्ती च्याशूकसुरगप्रियञ्च श्रक्तुर्ह्यष्टञ्च पिवत्रधान्यम् ॥६८॥ ं यवः कषायो मधुरः सुश्रीतलः प्रमेहिजित्तिक्तकपापहारकः । श्रशूक्रमुख्हसु यवो बलप्रदो वृष्यञ्च नृृ्णां बहुवीर्थ्यपुष्टिदः ॥७०॥ (मं जव, युज । कं सुख्ड, जयवे । तें यवलने हुधान्यस् । तां वार्लिश्ररिस् । गौ यव ।)

त्रथ वेगाजयवनामगुगाः।—

वेगुजो वेगुवीजय वंग्रजो वंग्रतण्डुतः। वंग्रधान्यं च वंग्राह्वो वेगुवंग्रहिधायवः॥ ७१॥

#### [883]

#### ्राजनिष्युः।

श्रीतः कषायो मधुरसु रूचो मेहिक्तिमिश्लेषिविषापह्य ।
पृष्टिं च वीर्थ्यञ्च जलञ्च टत्ते पित्तापहो वेख्यवः प्रशस्तः ॥७२॥
(मं विग्रज्ञव । कं विदरको । ते वेद्रह विर्ध्यसु । गो वंशिर चाल । )
[ इति यवः । ]

#### त्रय सुद्गनाम।—

मुद्गसु स्पन्नेष्ठः स्यादणां हेन्य रसोत्तमः । भुतिप्रदो हयानन्दो भूबलो वाजिभोजनः॥ ७३॥ (मं साधारयम्ंग। कं हैसयेरा। तें पेसलु। पञ्जा॰ सुन्नि। हिं हारिमुं। गौःसुग।)

अथ कषासुद्रनानगुषाः।—

कण्णसुद्गस्तु वासन्तो माधवस सुराष्ट्रजः ॥ ७४ ॥ कण्णसुद्गस्त्रिदोषन्नो मध्रो वातनाश्रनः । लघुस्र दीपनः पथ्यो बलवीर्याङ्गपुष्टिदः ॥ ७५ ॥ (मं करियामुंग । कं करिच्चेसक । गो क्रणसुग । )

श्रय शारदसुद्गनामगुगाः।—
शारदसु हरिनाद्गो धूसरोऽन्यश्व शारदः॥ ७६॥
हरिनादः कषायश्व मधुरः कफिपत्तहत्।
रक्तमूत्रामयप्तश्व शीतली लघुदीपनः॥ ७७॥
(मं हरियरमुंग। कं हसस्सेसस्। गौ हारिसुग।)

त्रध धूसरसुद्रगुणाः।—
तदच धूसरो सुद्रो रसवीर्थ्यादिषु स्मृतः।
काषायो मधुरो रुच्यः पित्तवातविबन्धक्तत्॥ ७८॥
(मं धूसरमुंग। वं पीयरमूंग। तें वीगृत्यद्दीगेंसर्।)

त्रथ सुद्गयूषगुणाः।—

पित्तज्वरात्तियमनं लघु सुद्गयूषं
सन्तापद्वारि तदरोचकनाश्यनञ्च।
रत्तप्रसादनसिदं यदि सैन्धवेन
युत्तं तदा भवति सर्वेक्जापद्वारि॥ ७८॥
( मं मूंगकडण । कं हैसक्कटु।)

त्रय धात्यभाषनामगुणाः।—

साषलु कुरुविन्दः स्थाडान्यवीरो व्रषाकरः।

सांसलस्य बलाव्यस्य पित्रत्रस्य पित्रजोत्तमः॥ ८०॥

साषः स्निग्धो बहुमलकरः ग्रोषणः स्रेष्मकारी

वीर्व्यणोष्णो भटिति कुरुते रक्तपित्तप्रकोपम्।

हन्यादातं गुरुबलकरो रोचनो भच्यमाणः

स्वादुर्नित्यं स्रमसुखवतां सेवनीयो नराणाम्॥ ८१॥

(मं चरिद। सं चढु। तें मिनुमलु। गौ माषकलाय।)

श्रध राजमाषनामगुषाः।—
राजमाषो नीलमाषो तृपमाषो तृपोचितः॥ ८२॥
कफिपत्तहरो रुच्यो वातक्षडलदायकः॥ ८३॥
(मं नीललरीद। कं नीललख्डा डिं लोबिया, रैस, बोड़ा।
गो वर्वटी।)

[ इति माषाः । ]

त्रय चयवनामगुणाः।—

्चणसु हरिमत्यः स्थाक्षुगन्धः कष्णकचुकः। बालभोज्यो वाजिभचयणकः कचुको च सः॥ ८४॥

## [888]

# राजनिवण्टुः।

चणको सध्रो रूची मेइजिहातिपत्तिकत्।
दीप्तिवर्णकरो बच्चो रूचश्वाधानकारकः॥ ८५॥
(मं चणा। कं कडते। हिं चाणा। गो छोला।)

त्रध त्रामचणकगुणाः।—

श्रामश्रणः श्रीतलक्चकारी सन्तर्पणी दाहृद्धषापहारी। गौल्योऽप्रसरीशोषविनाशकारी कषाय ईष्रत्कट वीर्ध्यकारी ॥८६॥ (मं कंचेश्रोदे, रहिला। कं हिस्यक डंडे। गौ कंचा छोला।)

त्रय क्षणचणकगुणाः।—

क्षणासु चणकः श्रीतो मधुरः कासिपत्तच्चत्।

पित्तातिसारकासन्नो बल्यस्वैव रसायनः॥ ८०॥

(मं करियाचणा। कं करियकडि । गो कालकोला।)

त्रध गौरवणकगुणाः।--

चणो गौरस्तु मधुरो बलक्षद्रोचनः परः । खेतो वातकरो रुचः पित्तन्नः शिश्रिरो गुरुः ॥ ८८॥ (मं श्वेतचणा। कं विलियकडिं। गौ श्राहा छोला।)

त्रय भृष्ट्चर क्रमुणाः।—

सुस्ष्टचणको क्चो वातन्नो रत्तदोषकत्। वीर्य्यणोश्यो लघुस्रव कप्तश्रीत्यापहारकः ॥ ८८॥ (मं फ्टामुझा। कं हुक्कडले। गी माजा कोला।)

त्रथ चराकयूषगुराः। —

चणस्य यूषं मधुरं कषायं कफापहं वातिवकारहेतुः। म्बासोर्ड्वकासल्लमपीनसानां करोति नामं बलदीपनत्वम् ॥८०॥ (मं रहिलाकरजूसः।) त्रय पर्य्वेषितचणीद्वागुणाः।—

चणोदकं चन्द्रसरीचिशीतं पीतं प्रगि पित्तक्जापहारि।
पुष्टिप्रदं नैजगुर्णं च पाके सन्तर्पणं सन्त्रुलसाधुरीकम् ॥ ८१॥
(मं रातिभिज्ञाचणाकरपाणि। कं दक्तननदकडवेपनीच।

गौ कोलाभिजान जल।)

श्रथ वनसुद्गनामगुखाः।—

सञ्जष्टको सयष्टय वनसुद्धः क्षमीलकः । श्रस्तोऽरण्यसुद्धय विद्योसद्धय कीर्त्तितः ॥ ८२ ॥ सञ्जष्टकः कषायः स्थान्यधुरो रक्षपित्तिजित् । ज्वरदाह्हरः पथ्यो क्चिक्तसर्वदोषहृत् ॥ ८३ ॥ (मं सुङ्गहेसक्भेद । मालवे प्रसिद्धः । हिं सुह्द, मोट, सुगानौ । गौ वनसुग ।)

श्रय मसूरनामगुगाः।—

मसूरो रागदालिखु मङ्गल्यः पृथुवीजकः।

शूरः कल्याणवीजश्र गुरुवीजो मसूरकः॥ ८४॥

मसूरो मधुरः श्रोतः संग्राही कफिपत्तिजत्।

वातामयकरश्चेव मूलक्क्ष्रहरो लघुः॥ ८५॥

(सं चग्रई। कं चग्रिंग। गौ सुसूरी।)

त्रथ कलायनामगुणाः ।—
कालायो मुण्डचणको हरेणुस सतीनकः ।
त्रासनो नालकः \* कण्ठी सतीनस हरेणुकः ॥ ८६ ॥

<sup>\*</sup> केचित् नलक इति पठन्ति।

#### राजनिघण्टुः।

[884]

कलाय: कुरुते वातं पित्तदाहकफापह: । रुचिपुष्टिप्रद: शीत: कषायश्वामदोषक्षत् ॥ ८७॥

( मं बटुरा। कं वष्टकड़ित्त । गो मटर । )

त्रघ लङ्घानामगुणाः।—

सङ्घा करासा त्रिपुटा काण्डिका रूचणात्मिका ॥ ८८॥ सङ्घा रूचा हिमा गौल्या पित्तजिद्दातसद्गुरु:॥ ८८॥

( मं मटुराचपटा। कं लांक। गो तेत्रोड़ा। )

त्रय त्राद्वीनाम ; तद्वेदा गुणाश्व ।—

श्राद्वी तुवरी वर्धा करवीरभुजा तथा।

वृत्तवीजा पीतपुष्पा खेता रक्ताऽसिता विधा ॥ १०० ॥

श्राद्वी तु कषाया च मधुरा कफपित्तजित्।

रूषदातकरा रुचा विदला गुरुग्राहिका ॥ १०१ ॥

सा च खेता दोषदावी तु रक्ता रुचा बल्या पित्ततापादिहन्त्री।

सा श्रामा चेहीपनी पित्तदाहध्वंसा बल्यञ्चादकीयूषमुक्तम् ॥१०२॥

(मं साधारणतूरी। वं तोगरि। हिं रहर, तुमर, टर्। गी ऋड्र, ऋदि।)

अध कुलित्यनामगुणाः।—

कुलित्यस्ताम्बनीजस खेतवीज: सितेतर: ॥ १०३ ॥ कुलित्यस्त कषायोश्यो रूची वातकफापह: ॥ १०४ ॥ (मं कुलित्य। कं हुलवते। तें ऋोलवतु । गो कुर्तिकलाय।)

#### अध चवनामगुगाः।--

चवः चुधाऽभिजननश्वपतो दीर्घशिक्ष्विकः।

सुकुमारो हत्तवीजो मधुरः चवकश्व सः॥ १०५॥

चनः कषायसध्रः शीतनः कफिपत्तच्चत्।

व्रष्य: श्रमहरी रुच: पवनाधानकारक: ॥ १०६॥

( मं रत्तरा। कं राजमाष। तें वरवटा। तां अलसंदे। गो ववैटी।)

अंघ निष्पावनामगुषाः ; तद्वेदाय। —

सध्रः खेतनिष्पावी साध्वीका सधुशर्करा।

्रप्लङ्कषा स्थूलिशस्त्री वत्ता मधुसिता सिता ॥ १०७॥ 🦪

सध्यक्रा सक्चा मध्रात्मकायका । : : : :

शिशिरा वातुला बल्याऽप्याधानगुरुपृष्टिदा ॥ १०८ ॥

(मं निवारानि। कं त्रावरे। तें वर्षे। गौ प्रादाप्रिम्।)

सीऽन्यस कटुनिष्पावः खर्वुरी नदीजस्तया ॥ १०८ ॥

नदीनिष्यावकस्तिकः कट्कोऽस्त्रप्रदो गुरः।

वातलः कफदो रूचः कषायो विषदोषतुत्॥ ११०॥

(मं नदीचेवर्गे। वं तीरेश्रावरे।) श्रथ तिलनामगुणाः।—

तिलसु होमधान्यं स्थात् पवित्रः पित्रतर्पेणः।

पापन्न: पूतधान्यञ्च जटिलस्तु वनोङ्गव:॥ १११॥

स्निग्धी वर्णवलामिवद्विजननस्तन्यानिलम्भी गुरुः

सोच्याः पित्तकरोऽल्पमूत्रकरणः केथ्योऽतिपथ्यो त्रणे।

संयाची मध्रः कषायसचितस्तिको विपाने कटः

क्रथाः पंचातमः सितीऽत्यगुणदः चीणास्तवाऽन्ये तिलाः ॥११२॥

रा-२७

#### [862]

#### राजनिषयुः।

(मंतिल । कं एल । तें नुळ्लु, मिखनूने नुळ्लु। तां वाझेनेय। फा॰ कुञ्चदृ। दां वारिकतिल । हिं मिठातिल। गौतिल।)

अध पललनामगुगाः।—

पललं तिलक स्वं स्यात्तिल चूर्णेच पिष्टकम् ॥ ११३॥ पललं मधुरं कचं पित्तास्त्र बलपुष्टिदम् ॥ ११४॥ (मं पिना। कं गिस्यगेसक हिं तिलकुटि। गौ तिलवं।टा।)

अथ तिलकिष्टनामगुणाः।-

तिलिकि इन्तु पिख्याक: खल: स्थात् तिलकल्कज: ॥ ११५॥ पिख्याक: कटुको गौल्य: कफवातप्रमेचनुत्॥ ११६॥ (मं खरी। कं चिख्रा गौ खेल।)

त्रथ त्रतसीनामगुर्णाः।---

श्रतसी पिच्छला देवी मदगन्धा मदोलाटा।
उमा चुमा हैमवती सुनीला नीलपुष्पिका॥ ११०॥
श्रतसी मदगन्धा स्थान्धपुरा बलकारिका।
कामवातकरी चेषत् पित्तच्चत् कुष्ठवातनुत्॥ ११८॥
(मं श्रवसी। कं श्रस्ती। तें नच्चयगिस। गौ मिसना।)

त्रय त्रामुरीनामगुगाः।-

श्रासुरी राजिका राजी रिक्तका रक्तसर्षपः। तीन्स्रागन्धा मधुरिका चवकः चवकः चवः॥११८॥ श्रासुरी कटुितका चातम्री हार्त्तिश्चलनुत्। दाहिपत्तप्रदा हन्ति कफगुल्मकमित्रणान्॥१२०॥

## शांखादिवर्गः।

[882]

( मं सहुरी । वं सासिराई । तें अवती । तां कड़वी । हिं माक्ड़ा-राद । गौ रादसरिया।)

त्रय राजचवकनामगुखाः।—

राजचनकः क्षष्यस्तीन्त्राफला राजराजिका राज्ञी। सा क्षष्यसर्वपाख्या विज्ञेया राजसर्वपाख्या च॥ १२१॥ राजसर्वपकस्तिकः कटूष्यो वातश्रूलनुत्। पित्तदाप्त्रपदो गुल्म-कख्बुक्षष्ठव्रणापष्टः॥ १२२॥

(गौ कालसरिषा।)

त्रय तीत्रावनामगुराः।—

तोत्त्यक्षय दुराधर्षी रचोन्नः क्षष्ठनाग्रनः ।
सिद्धप्रयोजनः सिद्ध-साधनः सितसर्षपः ॥ १२३ ॥
सिद्धार्थः कटुतिकोच्यो वातरक्षयद्वापदः ।
व्वग्दोषग्रसनो रूच्यो विष्ठभूतव्रणापदः ॥ १२४ ॥
(मं श्वेतसरिसो । कं विश्वियसासवे। गो ग्रादासरिषा।)
[द्दित सर्षेपाः।]

त्रय ग्रिम्बीधान्यनास ।-

धान्यानां कञ्चके शिब्बी वीजगुप्तिय शासवी। तद्गुप्तानि च धान्थानि शिब्बीधान्यानि चचते ॥१२५॥ [ इति शिब्बीधान्यप्रकरणम्।]

श्रघ ग्यामाकनामगुगाः।—

श्वामाकः श्वामकः श्वामिक्तवीजः स्वादविप्रियः। सुकुमारो राजधान्यं त्वणवीजोत्तमञ्च सः॥ १२६॥

#### [820]

# राजनिष्युः!

श्यामाको मधुरः सिग्धः कषायो लघुगीतलः। विविद्यापातिकः। विविद्यापातिकः। १२०॥ (मं सावा। कं साव। गौ स्थामाधान।)

अर्थ कोट्रवनामगुगाः।—

कोद्रवः कोरदूषय जुद्दालो सदनायजः।
स च देशिवशेषेण नानाभेदः प्रकीर्त्तितः॥ १२८॥
कोद्रवो सधुरिस्तिको व्रिणनां पथ्यकारकः।
कप्रित्तिहरो रूची मोइलदातलो गुरुः॥ १२८॥
(मं कोद्रव। वं द्वारक। गो कोहोधान।)

त्रय वरकनामगुणाः।—

वरकः स्थूलकङ्गुश्च रूचः स्थूलप्रियङ्गुकः ॥ १३०॥ वरको मधुरो रूचः कषायो वातपित्तकत्॥ १३१॥ (मं वरग्न। कं प्रियङ्ग्। गौ मोटा कांनिधान।)

श्रथ कडूनामगुणाः।—

कङ्गुणी कङ्गुनी प्रोज्ञा चीनकः पीततण्ड्लः। वातनः सुकुमारस सःच नानाविधामिधः॥ १३२॥ प्रियङ्गमधुरो क्चः कषायः स्वादुग्रीतनः। वातकत्पित्तदाष्ट्रप्तो क्चो भग्नास्थिबन्धकत्॥ १३२॥ (मं कांक्ष। कं नवणे। ते फ्रेंकण्यु, कीट्रल्। गौ कांनिधान।)

श्रथ नीवारनामगुग्यः।-

नीवारोऽरखधान्यं स्थानुनिधान्यं त्यणोद्भवम्॥ १३४॥ नीवारो मधुरः स्थिन्धः पवितः पथ्यद्रौ लघुः॥ १३५॥

#### शाल्यादिवर्गः।

[838]

( मं नीवारा। वां ज्यरहुमेधे। तें निवरिवट्टु। हिं तीखी। गी छड़िधान।)

# त्रथ रागीनामगुणाः।—

रागी तु लाञ्छनः स्याबहुदलकाणिशय गुच्छकणिशय ॥१२६॥ तिक्तो मधुरकषायः श्रीतः पित्तास्त्रनाश्रनो बलदः ॥ १३०॥ (मं नाचणे। संरविगुचणे।)

ः 👵 ा अष जुरीधान्यगुगाः।—

कुरी तु त्यावान्यं स्थान्यधुरं तद्वसप्रदम्।
हरितं वार्षकं पक्षं वाजिनां पुष्टिदायकम्॥ १३८॥
(मं, कं, कुरिधान्याइक्कूबे। यसनातीरे प्रसिद्धाः।)
[द्दित त्याधान्याचि।]

#### अध्य लाजादिनासगुर्याः।—

ये के च ब्रोह्यो स्रष्टास्ते लाजा इति कीर्त्तिताः ॥ १३८॥ यवादयस्य ये स्रष्टा धानास्ते परिकीर्त्तिताः ॥ १४०॥ लाजा च यवधाना च तर्पणी पित्तनाधिनी । गोधूमयावनालोत्याः किञ्चिदुश्णास दीप्रनाः ॥ १४१॥ (मं लाजाधान्य । कं लाईकर ब्रन् । तें ब्रोतने । हिं बहुड़ा । गो खैं ; यवादि भाजा ।:)

त्रय त्राकुलानामगुणाः।—

तप्तरपक्तगोधूमैराकुलाः परिकोत्तिताः । आकृता गुरवो द्वथा सधुराः बलकारिणः ॥ १४२ ॥ (मं, कं, येवे। इरापोड़ा इति माषा।)

#### [822]

## राजनिष्ययुः।

त्रय पृथ्वानामगुषाः।—

ब्रीह्योऽप्यर्देपकाष तप्तास्ते पृथुकाः स्मृताः । पृथुकाः स्वादवः स्निग्धा हृद्या मदनवर्दनाः ॥ १४३॥ (मं विचरा। वं पत्ते । गौ विँड़े ।)

अथ पूपलागुणाः।—

पूपला मधुरा: प्रोक्ता खष्यास्ते बलदा: स्मृता:।
पित्तव्वत्तर्पणा द्वद्या: स्निग्धास्ते बलवर्षना:॥ १४४॥
(मं श्रोफली। वं हरियातने। गो वड़ा, पुली।)

त्रय चिपिटानामगुणाः।—

ये चान्ये यावनालाद्याश्विपिटास्तप्ततग्बुला: ॥ १४५ ॥ भालेययावनालीय-चिपिटा: पुष्टिवर्षना: ॥ १४६ ॥ (मंगादाजोणरीकरितने । गौ जनारप्रस्तिर चिंडा।)

त्र्य दुग्धवीजानामगुषाः।—

अत्रतर्येख्यास्ते तु दुग्धवीजाः प्रकीर्त्तिताः ॥ १४७ ॥ दुग्धवीजा समधुरा दुर्जरा वीर्थ्यपृष्टिदा ॥ १४८ ॥ ( मं वेख्वसेयनीवक । )

, प्राथ तप्तसुद्रादिगुगाः।—

तप्तासु मुद्रचणकाः सुमनादिलङ्का सद्यस्वार्त्तरिविपित्तकतश्च जन्धाः। वातात्पदाः सुखकरा द्वावलाश्च रूचा द्वद्या भवन्ति युव-जर्जरबालकानाम्॥ १४८॥ (मं पूर्याचणकरलावा।) त्रथ ऋष्वपक्षसुद्गादिगुणाः।—

सुद्गगोधूमचणका यावनालादयः स्मृताः।

यदर्जपकं तज्ञान्यं विष्टन्याधानदोषकत् ॥ १५०॥]

(मं, वं, घुघुनी।)

अय कर्णिकानाम।—

ग्रुष्कगोधूमचूर्णन्तु कर्णिका समुदाद्वता ॥ १५१ ॥ (मं कणिकि।)

अघ दाखिनाम।-

स्फ्रोटखु चणकादीनां दालिति परिकीर्त्तिताः ॥ १५२ ॥ (सं दालिचणाकी। गौ डा'ल।)

अध हरितलूनगुषाः।—

पक्षं हरितलूनच्च धान्यं सर्वेशुणावहम् ॥ १५३॥ (सं हिरनेंसांविगलें।)

त्रघ ग्रुष्कलूनगुगाः।—

शुष्कालू नन्तु निःसारं रूचं तत्मचनाशनम् ॥ १५४॥

(मं शुष्क अव।)

त्रध कोषधान्यादिगुणाः।—

कोषधान्यं नवं बच्यं मधुरं वत्सरोषितम् ॥ १५५ ॥

(मं राखा पुराना अनकरगुणाः।)

त्रघ नवपुराणादिधान्यगुणाः।-

नवं धान्यमभिष्यन्दि लघु संवसरोषितम्।

द्वाब्दोषितं लघु पथ्यं त्रिवर्षोदवलं भवेत्॥ १५६॥

(मं नवाधान्यकरगुगा।)

## राजनिघण्टुः।

त्रघ नवपुराणचणकाहिगुणाः।—
चणास्तु यवगोधूम-तिलमाषा नवा हिताः।
पुराणा विरसा रूचास्वहिता दुर्जराबलाः॥ १५०॥

श्रथ वापितादिधान्यानां गुणाः।—
धान्यं वापितमुत्तमं तदिख्लं किन्नोङ्गवं मध्यमं
श्लेयं यद्यदवापितं तदधमं निःसारदोषप्रदम्।
दग्धायां भुवि यत्नतोऽपि विपिने ये वापिताः शालयो
ये च किन्नभवा भवन्ति खलु ते विष्मृत्नबन्धप्रदाः॥ १५८॥

अय चारोदको इतधान्यगुगाः।—

चारोदकसमुत्पनं धान्यं श्लेषक्जापहम् ॥ १५८॥

त्रय सिग्धभूमिसमुद्भवधान्यगुगाः।—

सुसिग्धं सुतिको दूर्तं धान्यमी जीव लाव हम् ॥ १६०॥

त्रय बालुकामयभूमिधान्यगुणाः।—

बलपुष्टिप्रभावम्नं बालुकास्टित्तिकोद्भव्म् ॥ १६१॥ (मं भरडभूमिधान्यगुणा।)

त्रय घान्यादीनां येशत्वनिरूपग्रम्।—

धान्यं श्रेष्ठं षष्टिकं राज्भोग्यं मांसं त्वाजं तैत्तिरं लावकीयम् । पानीयं स्थात् कृष्णमृत्स्वासमुखं चीराज्यादी गव्यमाजं प्रशस्तम् ॥ १६२॥ दृखं प्रसिद्धत्रधान्यगुणाभिधान-वीर्य्याभिवर्णनिवश्कुलवाग्विलासम् । श्राम्नाय वर्गीमसमाश्र समेत वैद्यो विद्यां विषस्पननजीवनदानधन्याम् ॥ १६३ ॥ यानि सदा भुज्यन्ते भुज्ञानजनाश्च यानि भुज्जन्ते । तिषां खलु धान्यानां वर्गीऽयं भोज्यवर्ग दित कथितः ॥१६४॥ येनाचारचणेन मुग्धमधुरश्रीशालिना सन्महा-सानाही बहुधान्यसम्पद्रचिता संनीयते सन्ततम् । तिन श्रीतृहरोखरेण रचिते नामोत्तिचूड्रामणी वर्गीऽयं स्थितमिति नूलरचनो धान्याह्नयः षोड्शः ॥ १६५॥ दित श्रीनरहरिपण्डितविरचिते राजनिचण्डौ भोज्यवर्गापर-नामधान्यवर्गः षोडशः।

-0\*0-

# अथ सांसादिवर्गः।

अय मांसनाम ।—

मांसन्त पिशितं क्रव्यं पलन्तु रस्यमस्त्रजम् ।
पललं जाङ्गलं कीरमामिषञ्च तदुच्यते ॥ १ ॥
अध सबोहतहरियादिमांसगुवाः ।—
सद्योहतस्य मांमं श्रेष्ठं हरियादिकस्य यूनस्तु ।
श्रेयं सुगन्धि पथ्यं जाङ्गलदेशस्थितस्य पथ्यतमम् ॥ २ ॥
अध त्याच्यमांसक्यनम् ।—

बालस्य वृद्धस्य क्रमस्य रोगिणो विषाग्निदम्धस्य सृतस्य चाम्बुषु । त्यान्यं सृगादेः पिभितं तु तस्य विगन्धि ग्रम्कच चिरस्थितच् ॥३॥

#### राजनिषयुः।

अय मांसानां सामान्यगुषाः।—

सवें मांसं वातिवध्वंसि वृष्यं बच्चं क्चं वृंहणं तच मांसम्। देशस्थानाचात्मसंस्यं स्वभावैर्भूयो नानारूपतां याति नूनम् ॥४॥ अध अनूपादिदेशवयोद्भतमांसगुणाः।—

तत्रानूपीयमांसं गवयर्रम्थाक्रोड्गण्डादिकानां सिग्धं पर्यं च बच्चं लघु ग्रग्राग्रखराद्युद्भवं जाङ्गलीयम् । पुष्टिं दीप्तिं च दत्ते रुचिक्तदय लघु स्वादु साधारणीयं वृष्यं बच्चं च रुचं रुरुहरिणस्गक्रोड्सारङ्गकाणाम् ॥ ५ ॥

मांसं सारसहंसरात्रिविरहिक्री द्यादिजं घीतलं सिग्धं वातकफापहं गुरु ततः खादु तिदीषापहम्। पथ्यं लावकितित्तरादिजनितं वृष्यं लघु स्थात्परं चक्रकी द्यमयरितित्तरभवं देशत्रयादी दृशम्॥ ६॥ अथ द्वतादिगामिनां विलादिवासिना च जातिभेदाः।—

हुतो विलिक्ष्वितस्वैव प्रवस्ति गतैस्त्रयः । स्थानतोऽपि त्रयस्ते तु विलस्थलजलास्त्रयाः ॥ ७ ॥ प्रनस्ते तु प्रसहना प्रतुदा विल्किरा इति । स्वभावतस्त्रयः प्रोत्ताः क्रमभो स्गपिचिषः ॥ ८ ॥ स्रथेषां क्रमभो लक्ष-गुणान्वच्यामि वर्गमः । एवं नवविधाः प्रोत्तास्त एव स्गपिचिषः ॥ ८ ॥

अथ दुतगतिसगायां नाम मांसगुयास ।—

श्रजशशहरिणादयः खयं ये द्रुतगमना द्रुतसंज्ञकाः स्मृतास्ते। तदुदितपललं च पथ्यवच्यं रचयति वीर्थ्यमदप्रदं लघु स्थात्॥१०॥

## मांसादिवर्गः।

[830]

ः अध विलम्बितगतिम्गाणां नाम मांसगुणाश्च ।— गजखङ्गमुखा महाम्रगा निजगत्यैव विलम्बिताः स्मृतास्ते । बलकत्पिणितं च पिच्छलं कफकासानिलमान्यदं गुरु स्यात् ॥११॥

श्रथ प्रवगतिसगायां नाम मांसगुयाश्व ।— सारसहंसवलाकाश्वक्रक्रीश्वादयो जले प्रवनात् । प्रवसंज्ञाः कथितास्ते तन्मांसं गुरूषां च बलदायि ॥ १२ ॥

त्रवं विविधयानां नाम तन्त्रांसगुणाञ्च।— त्राह्मनञ्जलप्रत्यगोधासूषकासुख्या विलेशयाः कथिताः। श्वासानिलकासहरं तन्त्रांसं पित्तदाहकरम्॥ १३॥

अध खलेशयानां नाम मांसगुणाश्व।— क्रोड़रुरुत्तुरङ्गाद्या विविधा ये स्मादयः। खलेशयासु ते सर्वे मांसं सर्वेगुणावहम्॥ १४॥

श्रय जिलेशयानां नाम मांसगुणाय।— भाषमकरनक्रककेटकूर्मप्रमुखा जिलेशयाः कथिताः। मांसं तेषां तु सरं वृष्यं गुरु शिशिरवलसमीरकरम्॥ १५॥

त्रय प्रसद्देनानां नाम मांसगुणाय।— प्रादू लिसंहप्ररभर्च तरत्त्रुसुख्या येऽन्ये प्रसद्घ विनिह्न्त्यभिवर्त्तयन्ति। ते कीर्त्तिताः प्रसहनाः पललं तदोय-मर्पः प्रमेहजठरामयजाद्यहारि॥ १६॥

त्रय प्रतुदानां नाम मांसगुणाञ्च।— भोता निष्कृष्यामिषं स प्रतुदः प्रोत्तो ग्टभ्रग्येनकाकादिको यः।

## [835]

## राजनिवय्टुः।

मांसं तस्य स्वादु सन्तर्पणञ्च स्निग्धं बच्चं पित्तदाहास्त्रदायि ॥१०॥

श्रष्ठ विष्त्रिराणां नाम तन्नांसगुणाञ्च।

भच्याय कुकुटकपोतकतित्तिराद्याः चौणौं विलिख्य नखरैः खलु वर्त्तयिका। ते विष्किराः प्रकथिताः पिश्रितं तदीयं वृष्यं कषायमधुरं शिशिरं च रुचम् ॥ १८॥

अध स्थानविशेषगतस्गपित्यां मांसगुगाः।—

स्यमित्र गुणो ज्ञेयः पित्तिणां च यथाक्रमम् । स्ट ॥ विक्यां च गतिक्यते ॥ १८ ॥ विक्यां यत्र स्थिता ये गतितोऽपि देशादन्यत याता सगपित्रसुखाः । स्विकोचितस्थानिवर्ज्ञनेन सांसेऽपि तेषां गुणपश्चियाः स्यः ॥ २०॥

्र श्रृथ खन्नमां सगुण्ए I' (गण्डकः) I—

मांसं खड़क्रगोत्यं तु बलकद वृंहणं गुरु ॥ २१॥

॥ ११ म । . . . अथ गवयमांसगुवा: I— 🛊 . 🗩 hab bib

गवयस्यासिषं बत्धं रुचं वृष्यञ्च वृंहणम् ॥ २२ ॥ (सं मनायु)

त्रथ रहसांसगुवाः। ( कुल्चरसगमेदः )।—— रहक्रव्यं गुरु स्निग्धं सन्दवक्तिवलप्रदम् ॥ २३॥ ( मं रोच्च । )

<sup>\*</sup> गलक्तस्वलग्रन्यः गोसदृशः कूलचरपशुमेदः।

## मांसादिवर्गः।

[ 824 ]

श्रय गोमांसगुणाः।--

अपूर्त गोभवं क्रव्यं गुरु वातक प्रप्रदम्॥ २४॥ (मंगायत्रांकेल ।)

त्रय वनमहिषमांसगुवाः।-

वनमहिषामिषं स्थादीषज्ञञ्ज दीपनञ्च बलदायि ॥ २५॥
प्रथ ग्राममहिषमांसगुगाः ।—

यामीणमहिषमांसं सिग्धं निद्राकरच पित्तहरम्॥ २६॥

त्रघ इस्तिमांसगुवाः।—

हस्तिक्रव्यं गुरु स्निग्धं वातलं श्लेषकारकम्। बहुपुष्टिप्रदं चैव दुर्जरं सन्दविद्वदम्॥ २०॥

ा अय अश्वमांसगुर्याः ।—

श्रश्वमांसं भवेदुश्यं वातन्नं बलदं लघ्घ । पित्तदाष्ट्रप्रदं नृृृृ्णां तदेतचातिसेवनात् ॥ २८॥ श्रष्ट षष्ट्रमांसगुगाः।—

उष्ट्रमांसन्तु शिशिरं त्रिदोषश्मनं लघु।
बलपुष्टिप्रदं रुचं मधुरं वीध्यवर्षनम्॥ २८॥
(मं बन्देयमांस। गो उटेरमांस।)

त्रव ग्राम्यारखगर्दभमांसगुग्रामः ।— गर्दभप्रभवं मांसं किञ्चित्तृतः बलप्रदम् । तृच्यं तु वन्यजं ग्रीत्यं बहुवीर्थ्यबलप्रदम् ॥ ३०॥

श्रय एकमांसगुकाः। 👉 \*

एणस्य मांसं लघुशीतवृष्यं तिदीषद्वत् षड्मजञ्च रच्यम् ॥३१॥

<sup>\*</sup> एगः क्रणसारः।

### राजनिष्ठण्टः।

अध कुरङ्गमांसगुणाः। (कुरङ्गः खन्महिरणः)।—
कुरङ्गमासं मधुरच्च तद्दत् कफापहं मांसदिपत्तनाधि॥ ३२॥
अध सारङ्गमांसगुणाः।—
सारङ्गं जाङ्गलं स्निग्धं मधुरं लघु तृष्यकम्॥ ३३॥
(गो चित्रसग।)

त्रव शिखरीमांसगुगाः। ( सगमेदः )।— ।
शिखरीसस्थवं भांसं लघु द्वयं बलप्रदम्॥ ३४॥
( मं इन्दीपमांस।)

अध ग्राम्यारखवराह्यमंसग्रगाः।—
वराह्यमंसं गुरु वातहारि वृष्यं बलस्वेदकरं वनीत्यम् ॥ ३५ ॥
तस्माहुरु ग्रामवराह्यमंसं तनीति मेदो बलवीर्थ्यवृह्यम् ॥ ३६ ॥
( मं गढ़गूरी। )

त्रथ प्ररम्ध्य सांसं तु गुरु स्निग्धं कपप्रदम् ।

बच्चं व्रष्टकारं पुष्टि-किञ्चिद्वातकरं परम् ॥ ३०॥

(मं भ्राड्निमांस।)

श्रय छागमांसगुणाः।—

छागमांसं लघु स्निग्धं नातिशीतं रुचिप्रदम्।
निर्दीषं वातिषत्तम् मधुरं बलपुष्टिदम्॥ ३८॥

छागपोतभवं मांसं लघु शीतं प्रमेहिजत्।
ईषम्रघु बलं दत्ते तदेव त्यणचारिणः॥ ३८॥

(मं श्राडिनमरीयमांसगुणाः, करवलकुरीयमांस।गौ
पाटारमांस।)

अध औरसमांसगुगाः। ( कम्बलम्गः।)

श्रीरक्षं सधुरं श्रीतं गुरु विष्टिस्थ वृंहणम् ॥ ४०॥ ( मं भेड़ीकरमांच । गो म्याड़ारमांच । )

अय आविकमां रग्याः।—

श्वाविकं सधुरं सांसं किञ्चितुरु बलप्रदम्॥ ४१॥ (मं एडड्कियसांस। गो भेड्रारसांस।)

अय प्रत्यमांसगुगाः।—

श्रच्यमांसं गुरु स्निग्धं दीपनं श्वासकासजित् ॥ ४२ ॥ (मं मङ्खीयमांस । गी सजाहमांस ।)

त्रघ नाकुलमांसगुणाः।—

पिच्छिलं नाकुलं सांसं वातम्नं श्लेषपित्तकत्॥ ४३॥ (मं वुचडु। गौ नेचलेरमांस।)

श्रय गोधामांसगुगाः।— गोधामांसन्तु वातम्नं म्बासकासहरच्च तत्॥ ४४॥

( मं मीलनमांस। हिंगोहीमांस। गौ गीसापर मांस।)

त्रथ प्रप्रमांसगुर्याः।—

श्राश्मांसं निदोषम्नं दीपनं म्बासकासजित् ॥ ४५ ॥ (मं खरहा। तें चैवुलिपिह्नि। गो खरगीषेरमांस।)

त्रघ वर्च्यवित्रियमांसगुगाः।—

श्रन्धे विलेशया ये स्युः कोकड़ोन्दुरुकादयः ।\* मांसच्च गर्हितं तेषां मान्यं गौरवदुर्जरम् ॥ ४६ ॥

[ द्रति मृगाः । ]

कोकड़: "कहुग्छार" दित लोके। उन्हरकः मूिषकः।

# राजनिवय्टुः।

श्राय श्रारण्यकुकुटमांसग्रणाः ।—
श्राय श्रायकुकुटमांसग्रणाः ।—
श्रायकुकुटनं स्निग्धं वातहृहीपनं गुरु ॥ ४८ ॥
(ते कोष्ट्रि, कुका चिंसगां। गौ कुंक्ड़ा।)
श्रय द्वारीतमांसग्रणाः ।—
द्वारीतपलनं स्वादु कफपित्तास्नदोषजित् ॥ ४८ ॥
(गौ दत्तेल पूचु।)

त्रव विविधवपीतमांसगुणाः।—
वर्षनं वीर्थ्यवलयोस्तद्देव कपीतजम्॥ ५०॥
पारावतपलं सिग्धं मधुरं गुरु भीतलम्।
पित्तास्तदाहनुद्वल्यं तथाऽन्यद्वीर्थ्यवृद्धिदम्॥ ५१॥
(मं परेवामांस। ते पास्वापिष्ट। गौ पायरारमांस।)

त्रथ तित्तिरिमांसगुणाः। (वसन्तगौर)। — स्त्रिग्धं तित्तिरिजं मांसं लघु वीय्यबलप्रदम्। कषायं मधुरं शीतं त्रिदोषशमनं परम्॥ ५२॥ (गौ टिटिरमांस।)

त्रय जावकमांसगुणाः।—

तदच लावकं मांसं पथ्यं ग्राहि लघु स्मृतम् ॥ ५३॥ (मं लाबुकपिष्ट, लावुगे। गौ वटेरपाखी।)

श्रय वर्त्ततमां सगुगाः।— तदम वर्त्ततं मांसं निर्देषिं वीर्थ्यपुष्टिदम्॥ ५४॥ (मं गृक्षि। हिं वटेरी गुड़गुड़े। गी मारदमाखी।) त्रथ ग्राम्यारख्यचटकमांसगुर्याः।—

चटकायाः पर्व भीतं लघु वृष्यं वलप्रदम्॥ ५५॥ तद्वचारच्यचटक-क्रव्यं लघु च पव्यदम्॥ ५६॥ (मं चिरैया, वन्त्रोरई, विमगा। हिं चतुर्हेया। गौ चढ़ाद्र।)

अय कपिञ्चलमां सगुगाः। (गौरति चिरिः)। —

चटकात् श्रीतलं रुचं वृष्यं कापिञ्जलामिषम् ॥ ५०॥

त्रय चकोरमांसगुखाः।—

तहज्ञकोरजं सांसं दृष्णं च वलपुष्टिदम् ॥ ५८॥ ( चिं तोक्षा । गौ चातकपाखी । )

श्रय चन्नवासमांसगुषाः।—

क्रव्यं तु चक्रवाकस्य लघु स्निग्धं बलप्रदम्। विक्रक्तसर्वेयूलव्रमुश्यं वातामयापद्यम्॥ ५८॥ (गो चकाचको, रामचका।)

त्रय सारसमांसगुगाः।—

सारसस्य तु मांसञ्च मधुरान्तकषायकम्। महातीसारपित्तन्नं यहत्यर्थोक्जापहम्॥ ६०॥

त्रयं जलचरपचिमांसगुगाः।—

स्निग्धिहिमं गुरु वृष्यं मांसं जलपिचणान्तु वातहरम्॥ ६१॥ तेष्विप च इंसमांसं वृष्यतमं तिमिरहरणञ्च॥ ६२॥ (मं बेद्धिता गौ इंस इत्यादि।)

त्रथ वकादिमांसग्याः।—

अन्ये वकवलाकाद्या गुरवो मांसभचणात्।

रा-३८

## राजनिघर्षुः।

त्रनुतं तु सगादीनां मांसं याद्यं हितादिषु ॥ ६३ ॥ [ द्रति पित्रमांसगुवाः । ]

त्रय मत्यय सामान्यगुवाः।—

सत्याः सिम्धोषागुरवी वातन्ना रक्तपित्तदाः। तत्र कांश्विदपि ब्रूमी विश्रेषगुणलचणान्॥ ६४॥

(मं मत्यगलु।)

केवाञ्चित् मत्यानां नामानि ।—

रोहितो गर्गरो भीरुर्बालको बर्बरस्तथा।
हागलो रक्तमत्योऽय महिष्ठश्वाविलस्तथा॥ ६५॥
वात्कोऽलोमणा चाऽपि चेया कर्णवणादयः।
लच्चलचणवीर्यादीन् कथयामि यथाक्रमम्॥ ६६॥

श्रथ रोहितमत्यलच्यागुणाः।—

क्षणः शल्ली खेतकुचित्तु मत्स्यो
यः श्रेष्ठोऽसौ रोहितो वृत्तवक्षः ।
कोणां बन्धं रोहितस्यापि मांसं
वातं हन्ति सिग्धमाप्नोति वीर्थ्यम् ॥ ६०॥

(ते एरमीया। गौ सदमाछ।)

त्रय गर्गरमत्यलच्यागुगाः।—

यः पीतवर्णोऽपि च पिच्छिलाङ्गः पृष्ठे तु रेखाबहुलः सग्रल्कः स गर्गरो वर्वरनादकचो जङ्ख ग्रीतः कफवातदायी ॥ ६८॥

(गो गाग्रामाक् ।)

# मांसादिवगः।

श्रिष भीषमत्यवचणगुणाः ।—
पृष्ठे पची दी गले पुच्छनं चेत्
सर्पाभः स्थात् फूल्कृतो व्रत्ततुग्डः ।
श्रेयः शक्की मत्यको भीष्वतः
स्मिग्धो वृष्यो दुर्जरो वातकारी ॥ ६८ ॥
(मं श्रव्हि । मं इमलग)

त्रव बालमत्वलचगगगाः।—
नातिस्वूलो वृत्तवक्षोऽपि प्रस्तो
धत्ते दन्तान् श्मश्रुलो दीर्घकायः।
सन्ध्यायां वा रात्रिभेषे च वथ्यः
प्रोक्षो बालः पथ्यबन्धः सुवृष्यः॥ ७०॥

त्रय वर्वरमत्यलच्यागुराः।-

पृष्ठे कुची कर्यकी दीर्घतुर्णः सर्पाभी यः सोऽप्ययं वर्षराख्यः। वाताटोपं सोऽपि दत्ते जङ्ख बल्यः स्निग्धो दुर्जरो वीर्य्यकारी॥७१॥

त्रय कागलमत्यलचयागुयाः।—

खेतं सुकायं समदीर्घवतां नि:शब्कतां छागलतां वदन्ति । गले दिकायः किल तस्य पृष्ठे कायः सुपय्यो रुचिदो बलप्रदः ॥७२ (गौ त्राइमाछ)

> त्रव रक्तमत्व्यवचयगुणाः ।— यो रक्ताङ्गो नातिदीघीं न चाल्पो नातिस्थूलो रक्तमत्व्यः स चोक्तः । श्रीतो क्चः पुष्टिकहीपनोऽसी नार्थं धत्ते किञ्च दोषत्वयस्य ॥ ७३॥

[834]

## राजनिष्यः:।

त्रय महिषमत्यलच्यागुगाः।—

यः क्षणो दीर्घकायः स्थात् स्थूलगल्को बलाधिकः। मत्स्यो महिषनामाऽसौ दीपनो बलनीर्थदः॥ ७४॥

त्रघ त्राविलमत्यलचयागुगाः।—

शुक्काङ्गस्ताम्वपची यः खल्पाङ्गश्वाविनाद्वयः । सुक्चो मधुरो बल्पो गुणाच्यो वीर्थ्यपृष्टिदः ॥ ७५ ॥

त्रय वातूकमत्यलचगगगाः।—

यः स्थूलाङ्गो माहिषाकारको यस्तालुस्थाने नीरजाभां दघाति। श्रत्कं स्थूलं यस्य वातूककोऽसी दत्ते वीर्थं दीपनं वृष्यदायी॥७६॥

अधालोमश्रमत्खलच्यगुगाः।—

वितस्तिमानः खेताङ्गः स्ट्यश्लाः स्टीपनः। श्रनोमशाह्नयो मत्स्यो बलवीर्याङ्गपृष्टिदः॥ ७०॥ श्रव कर्यवर्शादमत्स्यन्वस्यस्याः।—

यो वृत्तगौत्यः क्षणाङ्गः प्रत्को नर्पवप्राभिधः ॥ ৩८॥ दीपनः पाचनः पष्यो द्वष्योऽसी बलपुष्टिदः॥ ৩८॥

(गौ काल्वभ्।)

त्रय सम्राज्यसत्यानां गुयाः।--

नि:शक्ता निन्दिता सत्याः सर्वे शक्तयुता हिताः। वपुःस्थैर्थकरा वीर्थ-बलपुष्टिविवर्डनाः॥ ८०॥

अय इदादिजातमत्यानां गुगाः।

ष्ट्रदक्षस्थाजनिधिनिर्भरतङ्गगवापीजने च ये मत्स्याः। ते तु जड़ा नादेया यथोत्तरं लघुतरासु नादेयाः॥ ८१॥ #

<sup>\*</sup> ते जड़ा मत्याः न त्रादेयाः न ग्रह्योयाः त्रा-दाञी रूपिनदम् ;

त्रय समुद्रमत्यगुगाः।—

चाराब्बुमत्स्या गुरवोऽस्त्रदाहदा विष्टश्वदास्ते बवणार्णवादिजाः । तानग्नतां स्त्रादुजबस्थिता ग्रिप च्रेया जड़ास्तेऽपि तथा श्रतानिसान् ॥ ८२ ॥ [ द्वति मत्स्याः । ]

श्रव श्रेलादिजप्राणिमांसानामस्त्री हेतः।—
श्रेलाटवीनगरभूजलचारिणो ये
ये केऽपि सत्त्वनिवहाः खलु सप्तसंख्याः।
तन्त्रांसमत्र न वितथ्यमयाभ्यधायि
ग्रम्थस्य विस्तरभयाञ्च नवोपयोगात्॥ ८३॥
श्रव पक्षभ्रष्टमांसगुलाः।—

पक्षं भांसं हितं सर्वं बलवीर्य्यविवर्धनम् । सृष्टभांसं विदाहि स्थादस्त्रवातादिदोषक्षत् ॥ ८४ ॥ स्रथ स्त्रीपुरुषभेदेन मांसगुषाः ।—

पूर्वाई पुरुषस्य तहुरुतरं पश्चाईभागः स्त्रियाः स्त्री गुर्वी किल गुर्विणी यदि तथा योषिच तुल्या लघुः । पची चेत्युरुषो लघुः मृणु भिरःस्त्रन्थोरुप्टे क्रमात् मांसं यच कटिस्थितं तदस्तिलं गुर्वेव सर्वात्मना ॥ ८५॥

रसरतादिधातृनां गुरुः स्यादुत्तरोत्तरम्। मिद्रवक्षयक्तन्यांसं वार्षणं चातिसावतः॥ ८६॥

तिषां मोजनं न विधियमिति तात्पर्यम् । नादेयाः नदां भवाः इति वाक्ये षोयप्रत्ययः बोध्यः।

#### [834]

#### राजनिषयुः।

द्रसं प्रतिस्थलिवलाम्बुनभःप्रचारप्राख्यङ्गसांसगुणिनर्णयपूर्णमेनम्।
वर्गं विचार्ये भिषजा विनियुज्यमानो
भुज्ञाऽयनं न विक्रतिं समुपैति मर्त्यः ॥ ८०॥
यस्यासीत् समितिद्विपाधिपष्टच्चत्कुन्भान्तरस्थामिषप्रायाभ्यासिपपासयेव तरुणी नेवाम्बुधारा दिषाम्।
तस्यायं पुरुषप्रतापसुद्धदः श्रीमनृसिंहिशितुवर्गः सप्तद्यो निषीदित क्रतौ नामादिचूड्रामणौ ॥ ८८॥
इति श्रीनरहरिपख्डितविर्विते निष्युद्धराजापरनाम्ग्रभिधानचूड्रामणौ मांसादिवर्गः सप्तद्याः समाप्तः।

# त्रय मनुष्यादिवर्गः।

अध मनुष्यनाम।-

मनुष्या मानुषा मर्स्या मनुजा मानवा नराः। द्विपादाश्चेतना भूस्था भूमिजा भूस्थ्रशो विशः॥१॥

त्रय पुरुषनाम।--

पुरुषः पूरुषो ना च नरः पञ्चजनः पुमान् । श्रयां श्रयोऽधिकारी स्थालमाई य जनोऽर्थवान् ॥ २॥ (मं हैगुमु।)

#### त्रघ स्तीनाम। -

स्त्ती योषिद्दनिताऽबला सुनयना नारी च सोमन्तिनी
रामा नामहगङ्गना च ललना कान्ता पुरम्त्री बधू: ।
सुभ्तू: सा वरवर्षिनी च सुतनुस्त्रन्ती तनु: कामिनी
तन्बङ्गी रमणी कुरङ्गनयना भीक्: प्रिया भामिनी ॥ ३ ॥
योषिन्बहेला महिला विलासिनी
नितस्त्रिनी साऽपि च मत्तन्ताधिनी ।
जनी सुनेता प्रमदा च सुन्दरी
स्थादिच्चतश्चूर्लेलिता विलासिनी ॥ ४ ॥
मानिनो च वरारोहा नताङ्गो च नतोदरा ।
प्रतीपदर्भिनी स्थामा कामिनी दर्भनी च सा ॥ ५ ॥

अध मर्त्तानाम ।—

भत्ती पतिर्वरः कान्तः परिणितां प्रियो ग्टहो ॥ ६ ॥ ( मं हिग्डतीयहेसक । )

त्रय भार्यानाम।-

भार्या पत्नी प्रिया जाया दाराश्व ग्रहिणी च सा॥ ७॥ अध नपुंसकादिनाम।—

नपुंसकं भवेत् क्षीवं हतीया प्रकृतिस्तया । वर्षः पर्ण्डस नारी तु पोटा स्त्रीपुंसलचणा ॥ ८ ॥

त्रव राजः प्रधानपतीनाम ।— त्रव राज्ञी च पद्टार्ही सहिषी राजवत्तभा ॥ ८ ॥ ( मं काह्निवह । )

# राजनिघग्टुः।

श्रय राजः श्रन्यान्यपतीनाम ।—

भोगिन्योऽन्या विलासिन्यः सम्भुङ्ते यासु पार्थिवः ॥१०॥ राजभोग्याः समुख्यो यास्ता भहिन्य इति स्मृताः ॥ ११॥ ।

भू हे । ज्या विश्वानाम् । - -

विष्या तु गणिका भोग्या वारस्त्री स्मरदीपिका ॥ १२ ॥ अध ब्राह्मणनाम i—

ब्रह्मा तु ब्राह्मणो विष्रः षट्कर्मा च हिजोत्तमः ॥ १३॥ अयु चित्रयनाम।—

राजा तु सार्वभौमः स्थात् पार्थिवः चित्रयो तृपः ॥ १४॥
अध वैभ्यनाम ।—

वैष्यसु व्यवहर्त्ता विड् वार्त्तिको बाणिजो बणिक्॥ १५॥ (श्रीकिलिङ्गन्।)

त्रय शूद्रनाम।—

मूद्रः पञ्जसतुर्धः स्थात् द्विजदास उपासकः ॥ १६॥ अध सङ्रचात्युत्पत्तिकथनम्।—

विप्रः चत्रो वैश्यश्र्द्रौ च वर्णाश्वलारोऽमी तत्र पूर्वे दिजाः स्युः। एषामेव प्रातिलोम्यानुलोम्याज्ञायन्तेऽन्या जात्यः सङ्करेण ॥१०॥

अय बालसामान्यनामानि।—

बालः पाकोऽर्भको गर्भः पोतकः पृथुकः प्रिष्यः। प्रावोऽर्भौ बालियो डिमो वटुर्माणवको मतः॥ १८॥ श्रय वयोविश्रेषात् श्रिश्चनामानि ।—

जातोऽर्भकः पचिदिनेन सासतः
पाकिस्तिसस्तैरय पोतकाभिधः ।
प्रज्ञिसस्त सासैः प्रयुकोऽन्दतः ग्रिश्चस्त्रिभिर्वटुर्साणवक्षय सप्तभिः ॥ १८ ॥
ग्रथ वयोऽत्तरिण वालादिसंज्ञाविश्रेषः ।—
बालोऽन्दैः पञ्चदश्रभः क्षसारिस्तंश्रता स्मृतः ।
युवा पञ्चाश्रता वर्षेर्वेदः स्यादत उत्तरैः ॥ २०॥

त्रथ कोनारायवस्थाविषः।— क्रीसारं पञ्चमान्दान्तं पौगर्द्धं दश्माविष्ठ। क्रीशोरमा-पञ्चदशादयौवनं तु ततः परम्॥ २१॥

त्रय युवव्रद्वनामानि।—

युवा वयः स्थस्तरु पो व्रहसुं स्थिवरो जरन्। प्रवया यातयामञ्च जोनो जीणञ्च जर्जरः ॥ २२ ॥ [ इति पुरुषवयोऽवस्था । ]

त्रघ वालिकानामानि।— बालोत्तानग्रया डिग्भा स्तनपा च स्तनन्धयो ॥ २३॥

त्रय कत्यानामानि।— कन्या कुमारी गौरी तु निनकाऽनागतार्त्तवा ॥ २४॥

त्रघ मध्यमानाम।-

सा मध्यमा वयःस्था च युवती सुस्तनी च सा। चिरुष्टी सुवयाः स्थामा प्रीट़ा दृष्टरजाञ्च सा॥ २५॥

## राजनिष्युः।

ग्रथ गुविंगोनाम ।— गुर्विग्खापनसत्त्वा स्थादन्तर्वत्नी च गर्भिणी ॥ २६ ॥ ग्रथ हडानाम ।—

निष्फला जरतो हुद्धा स्थितरा च गतार्त्तवा ॥ २०॥
अथ रजखलानाम।—

पुष्पिता मलिना म्हाना पांग्रला च रजखला ॥ २८॥
॥ अथ वस्थानाम ।—

बस्याऽविकेशिनी शून्या मोघपुष्पा व्रयाऽऽत्तेवा ॥ २८ ॥ श्रय तनुनामानि ।—

तनुस्तनू: संइननं ग्ररीरं कलेवरं चेत्रवपु:पुराणि।
गातं च मूर्त्तिर्धनकायदेहावष्टाङ्गपीड़ानि च विग्रहस्र॥२०॥
श्रव श्रव यवनाम।—

ग्रङ्गमंसः \* प्रतीकश्वापघनीऽवयवोऽपि च ॥ ३१ ॥ ग्रथ शिरोनामानि।—

शिरः शोर्षकमुण्डं च मूर्डा मीलिश्व मस्तकम्। वराङ्गमुत्तमाङ्गश्च कपालं केशसृत् सृतम्॥ ३२॥ त्रय केशाहिनाम ।—

किशाः शिरसिजा बालाः कुन्तला सूर्षजाः कचाः।
चिक्रराः करुहासाय तदेष्टाः कवरीमुखाः॥ २३॥
अय दृष्टिनाम।—

हुग्हिश्वीचनं नेतं चत्तुन्यनमस्वकम्।

र्चणं ग्रहणं चाचि दर्शनञ्च विलोचनम् ॥ ३४॥,

\* अङ्गमंस दत्यत अङ्गमङ्ग इति पाठान्तरं कि चित् दृष्यते।

श्रघापाङ्गाद्नाम ।—

श्रपाङ्गी नेत्रपर्थ्यन्तो नयनोपान्त इत्यपि। तयोर्भध्यगता तारा विव्विनी च कनीनिका॥ ३५॥

त्रथ खलाटादिनामानि।—

भानं निर्मालकं कथयन्ति गोधि-र्श्वू सिक्का च नयनोड्वंगरोमराजिः। मध्यं तयोर्भवति कूर्चमय स्त्रतिस्त

योत: यव: यवणकर्णवचीग्रहास । ३६॥

त्रथ त्रोष्ठादिनामानि।-

श्रीष्ठोऽधरो दन्तवासो दन्तवस्त्रं रदच्छदः।

तयोरस्यतो देशौ यौ प्रान्तौ स्वक्षणी च तौ ॥ ३०॥

अध प्रायनाम।—

ब्राणं गन्धवहो घोणा सिङ्घिनी नासिका च सा॥ ३८॥

श्रय प्रह्वस्य नाधिकामलस्य च नाम ।— प्रह्वः कार्णसमीपः स्थात्, सिङ्वाणं नासिकामले ॥ ३८॥

त्रय सुखनाम ।—

तुग्डमास्यं सुखं वक्षां वदनं लपनानने ॥ ४०॥

श्रय चिव्कादिनाम।-

श्रोष्ठाधरसु चिवुकं गण्डो गन्न: कपोलक: ॥ ४१ ॥

त्रय इन्वादिनाम।-

हनूस्तरूईं दश्रनास दन्ता दिजा रदास्ते रदनास्तथोक्ताः ॥ ४२ ॥

त्रध जिह्नादिनाम।-

जिल्ला रसजा रसना च सोता स्थालाकुदं तालु च तालुकं च॥४३

#### अथ चिएटवादिनाम।—

तदू हुँ सूद्धाजिह्वा या घिएका लिखका च सा॥ ४४॥ अन्याऽधोमूलजिह्वा स्थात् प्रतिजिह्वोपजिह्विका॥ ४५॥

त्रथ अवदुनाम।-

अवटुसु शिर:पश्चालिक्षिघीटा स्वकाटिका ॥ ४६॥

अध ग्रीवानाम।—

ग्रीवा च कन्धरा कन्धिः शिरोधिश्व शिरोधरा ॥ ४७ ॥ ग्रथ कछादिनाम ।—

करहो गलो निगालोऽथ घरिएका गलश्रुरिका ॥ ৪८॥ अब ग्रिरादिनाम।—

धमनी तु शिरांऽसे तु स्त्रस्थोऽधःशिखरं तथा ॥ ४८ ॥ तस्य सन्धितु जतु स्थालचा दोर्मूलसंज्ञका ॥ ५० ॥ अथ पार्श्वपृष्ठनाम ।—

तद्धस्ताद्भवेत्यार्थे पृष्ठं पश्चात्तनोः स्मृतम्॥ ५१॥ श्रथ बाचुनाम।—

दोदीषा च प्रवेष्टस बाहुर्बाहा भुजो भुजा ॥ ५२ ॥ स्रव हस्तनाम ।—

पाणिस्तु पञ्चशाखः स्थात् करो हस्तः शयस्तथा ॥ ५३॥ अथ करमूलादिनाम।—

करमूले मणिबन्धी सुजमध्ये कूर्परः कफीणिय ॥ ५४ ॥ ... तस्मादधः प्रकोष्ठः प्रगण्डकः कूर्परांसमध्यं स्थात् ॥ ५५ ॥

# मनुष्यादिवर्गः।

[884]

#### त्रयाङ्खादिनाम ।—

श्रङ्गुख्यः करणाखाः स्युः प्रदेशित्यां तु तर्जनी।
पर्वः स्यादङ्गुलीसन्धिः पर्वसन्धित्र कष्यते॥ ५६॥
श्रयाङ्गुष्ठप्रदेशिन्यौ सध्यसाऽनामिका तथा।
कनिष्ठा चेति पञ्च स्युः क्रसेणाङ्गुलयः स्मृताः॥ ५०॥

अध नखनाम।-

कामाङ्क्ष्याः कररुहाः करजा नखरा नखाः।
पाणिजाङ्गिलसभ्यूताः पुनर्भवपुनर्नवाः॥ ५८॥
श्रय प्रपाखादिनाम।—

करस्थाधः प्रपाणिः स्थाटूर्ड्वं करतलं स्मृतम् । रिखाः सासुद्रिके ज्ञेयाः ग्रुभाग्रुभनिवेदिकाः ॥ ५८॥

अध खननाम।—

स्तनोरसिजवचोज-पयोधरकुचास्तया ॥ ६० ॥ श्रष्ट चचुकनाम ।—

स्तनाग्रं चूचुकं वन्तं शिखा स्तनसुखच्च तत्॥ ६१॥ त्रथ वचीनाम।—

वची वत्ससुर: क्रोड़ो हृदयं हृज्ञुजान्तरम् ॥ ६२ ॥ अथ क्रिवाम।—

कुत्तिः पिचिग्डो जठरं तुन्दं स्थादुदरञ्च तत्॥ ६३॥
अध मर्भविकनाम।—

जीवस्थानं तु सर्म स्थात् कटिप्रान्ते तिकं स्मृतम् ॥६४॥

## राजनिषयुः।

त्रय नाभ्यादिनाम।

नाभि: स्यादुदरावर्त्तस्ततोऽधो वस्तिक्चते। वस्तिस वातशीर्षं स्यादु गर्भस्थानच्च तत् स्तिया:॥ ६५॥

अघ गर्भाभ्यनाम।-

गर्भाशयो जरायुश्व गर्भाधारश्च च स्मृतः ॥ ६६ ॥ श्रव श्वामाश्रयनाम ।—

नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामाश्यः दति स्मृतः ॥ ६७॥ श्रय पक्षाश्रयादिनाम।—

पक्षाणयो द्याची नाभेर्वस्तिमूत्राणयः स्मृतः॥ ६८॥
प्राच कट्यादिनाम।—

किट: ककुज्ञती श्रोणी, नितम्बश्च कटीरकम्। श्रारोहं श्रोणिफलकं कलतं रसनापदम्॥ ६८॥ नितम्बश्चरमं श्रोणे: स्त्रीणां जघनमग्रतः॥ ७०॥

त्रध ककुन्दरादिनाम ।—
ककुन्दरी तु सर्वेषां स्थातां जघनकूपकी ।
कटिप्रोधी स्फिची पायुर्गुदापानं तदासनम् ॥ ७१ ॥

अध भगनाम।-

गुदमुष्कद्दयोर्मध्ये यो भागः स भगः स्मृतः ॥ ७२ ॥ श्रष्ट सुष्कनाम ।---

मुष्कीऽग्डमग्डकोषय द्यषणो वीजपेशिका ॥ ७३ ॥

त्रय शिश्रादिनाम।—

शिश्चं श्रेष्मश्च लिङ्गञ्च मेद्रं साधनमेहने ॥ ७४ ॥ योनिर्भगो वराङ्गं स्थादुपस्थं स्नरमन्दिरम् ॥ ७५ ॥

## सनुषादिवगै:।

[888]

अध जर्वादिनाम।-

जरू तु सक्यिनी श्रोणि-सक्योः सन्धिसु वङ्घणः। जङ्घोरूमध्यपर्व स्थाज्जान्वष्ठीवच चित्रका॥ ७६॥ श्रथ जङ्घादिनाम।—

जङ्घा तु प्रस्रता ज्ञेया तन्मध्ये पिग्छिका तथा॥ ७७॥ त्रय घुटिकानाम।—

जङ्घाऽङ्गिसन्धियन्यौ तु घुटिका गुल्फ दत्यपि॥ ৩८॥ त्रय पाण्योदिनाम।—

गुल्फस्याधसु पार्ष्याः स्थात् पदाग्रं प्रपदं सतम् ॥ ७८ ॥ त्राव पादनामः !—

विक्रसश्चरणः पादः पादाङ्मिश्च पदं क्रमः॥ ८०॥ त्रय उसङ्गदिनाम।—

क्रोडमङ्गस्तथोत्सङ्गः प्राग्भागो वपुषः स्मृतः ॥ ८१ ॥ श्रय चपेटादिनाम।—

> करो भवेत् संहितविस्तृताङ्गुल-स्तलश्वपेटः प्रतलः प्रहस्तकः । सृष्टिभवेत् संहृतपिण्डिताङ्गुला-वाकुञ्चितोऽग्रे प्रस्तः प्रकीर्त्तितः ॥ ८२ ॥

त्रध मङ्ग्रतर्जन्यायोग्नतरावनाम ।— स्यात् तर्जनी मध्यमिका त्वनामिका किनिष्ठिकाऽङ्गुष्ठयुता यदा तदा । प्रादेशतावाभिधगोस्रवस्तया वितस्तिरत्यर्थमिह क्रमादियम् ॥ ८३॥

# राजानवस्टु! ।

अघ इसनाम। इस्तलु विस्तृते पाणावा-मध्याङ्गुलिकूपैरम् ॥ ८४ ॥ अध सरतारतारोनीम। बद्दमुष्टी सरितः स्थादरितरकिनष्ठकः ॥ ८५ ॥ त्रघ व्यामनाम।-व्यामः सहस्तयोः स्थात् तिर्वग्वाह्वीर्यदन्तरम्। जहुँ विस्तृतदोष्याणिन्धैमानं पौरूषं विदुः ॥ ८६ ॥ त्रय मधीनाम।-जीवस्थानं तु मर्म स्थाज्जीवागारं तदुच्यते ॥ ८७ ॥ त्रघ मर्भाखानानि।-मर्मस्थानं च तल्रोत्तं भूमध्यादिष्वनेवधा ॥ ८८॥ भ्रमध्यवग्ढगलगङ्खकचांसपृष्ठ-यीवागुदाग्डपदपाणियुगास्थिसन्धीन्। वैद्याः शरेच्णिमितानि वदन्ति मर्म-स्थानानि चाङ्गगतिनाश्कराणि मर्खे ॥ ८८॥

. अथ लालानाम।—

लाला भवेन्सुखस्रावः स्रणिका स्वन्दिनी च सा ॥ ८० प्रथ खेदनेत्रमलनामः ।—
स्वेदो घम्य घमांभी दूषिका नेत्रयोमेलम् ॥ ८१ ॥
प्रथ मलम्त्रयोनीमः ।—
सलं विष्ठा पुरीषञ्च विट् किटं पूतिकञ्च तत्।

मूतं तु गुच्चनिष्यन्दः प्रसावः स्ववणं स्ववः॥ ८२ ॥

## सनुष्यवर्गः।

[885]

अध वलीनाम।-

बली चर्मतरङ्गः स्थात्त्वगूर्मिस्त्वत्तरङ्गनः॥ ८३॥
अध पिलतनाम।—

पलिलञ्च जरा लच्छा केशशीक्षाञ्च तद्ववेत् ॥ ८४ ॥ अय सप्तातवः।—

रसास्द्रशांसमेदोऽस्थि-सञ्जानः शक्रसंयुताः।

श्रीरख्यैयदाः सन्यक् विज्ञेयाः सप्त धातवः ॥ ८५ ॥

त्रय रसनाम।--

रसलु रसिका प्रोता खेदमाता वपुःस्रवः। चर्माभ्ययमेसार्य रत्तस्रस्त्रमात्वना॥ ८६॥

त्रय रत्तनाम।—

रतास्तं रुधिरं त्वग्जं कीलालचतजानि तु। कि केल शोणितं लोहितं चास्टक् शोणं लोहञ्च चर्मजम्॥ ८०॥ अथ मांसनाम। अ

मांसन्तु पिशितं ऋव्यं पलं तु रस्यमस्रजम्।
पललं जाङ्गलं कीरमामिषञ्च तदुच्यते॥ ८८॥
अध भेदोनाम।—

. मेद्रसु मांससार: स्थान्सांसस्नेहो वसा वपा ॥ ८८ ॥ ; अधास्थिनाम ।—

मेदोजमस्थिधातुः स्थात् कुत्यं कीकसकं च तत् ॥१००॥
अथ मज्जनाम।—

ग्रस्थिसारसु मज्जा स्थात्तेजो वीजं तथाऽस्थिजम्।

ं ः एषः स्रोकस्तु ग्रंन्थकारेण मांसाहिवर्गारको प्रागुद्टेङ्कि।ः रा—२८

## राजनिष्ययुः।

जीवनं देहसार्य तथाऽस्थिस्नेहसंज्ञकम् ॥ १०१ ॥ अध्यक्षकाम ।—

शुक्रं पुंस्वं रेतो वीजं वीर्ध्यञ्च पौरुषं कथितम्। इन्द्रियमन्नविकारो मज्जरसी हर्षणं बलच्चैव॥ १०२॥

त्रघ रसादीनामुत्यत्तिक्रमक्यनम्।-

रसादस्तं ततो मांसं मांसान्मेदोऽस्थि तज्ञवम्। श्रस्त्रो मञ्जा ततः श्रक्रमित्यमेषां जनिक्रमः॥ १०३॥

त्रय क्षोममस्तिष्कयोनीम।—

तिलकं क्लोम मस्तिष्कं स्नेइस्तु मस्तकोद्भवः॥ १०४॥

श्रय अन्त्रगुलायोर्नाम।—

अन्तं पुरीतदाख्यातं भ्लीहा गुला इति स्मृतः ॥ १०५॥

श्रथ सायादिनाम।—

वसा तु वससा स्नायुर्वेत्सोत्ता देहवल्कलम्।
सा त्वक् ... ... ... ॥ १०६॥

अथ विविधनाड़ीनाम।—

··· ·· शिरोधिजा भन्या धमनी धरणी धरा। तन्तुको जीवितज्ञा च नाड़ी सिंही च कीर्त्तिता॥१००॥

त्रथ वारहरानाम।—

करण्डरा तु महास्नायुर्महानाड़ी च सा स्मृता ॥१०८॥
श्रय शरीरास्यादिनाम।—

प्ररोरास्यि तु कङ्कालं स्थालरङ्कोऽस्थिपञ्जरः। स्रोतांसि खानि च्छिद्राणि कालखण्डं यक्तनातम्॥ १०८॥ श्रय शिरोऽस्थादिनास।—

श्चिरोऽस्थि तु करोटि: स्थात् श्चिरस्त्राणं तु श्रीषंक्षम्। तत् खण्डं खर्परं प्राष्ट्रः कपालं च तदीरितम्॥ ११०॥

अध पृष्ठास्य।दिनाम।—

पृष्ठास्थि तु करिव: स्थात् शाखास्थि नलकं स्मृतम् ॥ १११ ॥

अय पार्शास्थिनाम।—

पार्खास्य पर्धका प्रोक्तमिति देहाङ्गनिर्णय: ॥ ११२ ॥

अध पालनाम।-

जाला श्रवीरी चेत्रज्ञ: पुत्रल: प्राण देखर:।

जीवी विशु: पुमानीय: सर्वज्ञ: शसुरव्यय: ॥ ११३॥

श्रय प्रकृतिनाम।—

प्रधानं प्रकृतिर्माया चित्रिश्चैतन्चमित्यपि ॥ ११४॥

अथ अच्छारनाम।—

षहक्कारोऽभिमानः स्थादहंताऽहंमतिस्तथा॥ ११५॥

श्रय मनीनाम।--

मानसं द्वटयं स्वान्तं चित्तं चेती मनश्च द्वत्॥ ११६॥

त्रय सत्तादिगुगानाम।—

सर्चं रजस्तमस्रेति प्रोक्ताः पुंसस्त्रयो गुणाः॥ ११७॥

त्रय त्रवपञ्चकनाम।—

श्रीतं त्वयसना नेतं नासा चेत्यचपञ्चकम् ॥ ११८॥

यथ इन्द्रियनाम।-

अर्च ह्रषीकं करणं बर्हणं विषयीन्द्रियम् ॥ ११८॥

## राजनिषयः।

#### अध विषयनाम।—

भन्दः सभी रसी रूपं गन्धश्च विषया अभी। किया हिन्द्रयार्था गोचरास्ते पञ्चभूतगुणाः खर्तु ॥ १२०॥

अध पञ्चभूतनाम।—

अवाश्यमिनस्तीयं तेजः पृथ्वी च तान्यपि। अमेण पञ्च भूतानि कोर्त्तितानि मनीषिभिः॥ १२१॥

> द्रत्येषः मानुषवयोत्तरवर्षगातः धालङ्गलचणनिरूपणपृथ्यमाणः।

वर्गः क्षतस्तु भिषजां बहुदेहदोष-े किया गाउँ

ा नामा निदानगणनिर्णयधीनिवेश: ॥ १३२ ॥ ि

इति पशुपतिपादास्थीजसेवासमाधि-प्रतिसमयससुस्थानन्द्सीख्यैकसीन्त्रा ।

नरहरिक्ततिनाध्यं निर्मिते याति नाम-

प्रचयमुकुटरते गान्तिमष्टादशाङ्कः ॥ १२३ ॥

इति श्रीनरहरिपण्डितविरचिते जिन्नस्टुराजापरनास्त्रभिधान-

ा १९ वृद्धामयीः मनुष्यवर्गीऽष्टादशः। किन्त किन्ति

ज्यां संस्थितियास्य हरू

1911 ting th<del>osy in</del>terioral pur top -replace or

कीई संप्रमुख हिंदी गाँउ। पैक्सप्राचन १ १९५ म

-----

LASS BESTATIONAL TOPS TOTO SOLD SON

# अथ सिंहादिवर्गः।

--0谷0---

# अध शिंहनाम ।—

सिंहः पञ्चमुखो नखी स्गंपितर्मानी हरिः केसरी क्रव्यादो नखरायुधो स्गरियः ग्रूर्य काग्छीरवः। विक्रान्तो दिरदान्तको बहुबलो दीप्तो बली विक्रमी हर्य्यचः स च दीप्तपिङ्गल दति ख्यातो स्गेन्द्रय सः॥ १/॥

# अध प्रदश्नाम ।—

महायङ्गसु गरभो मेघस्कस्थो सहामनाः। अष्टपादो महासिंहो मनस्तो पर्वताययः॥ २॥

#### ्त्रय व्याप्रनास । 💳 🗆 🏋 🗒 📜 🖫

व्याघ्रः पञ्चनखो व्यातः मार्दूनोऽय गुहामयः। विकास व

#### ॥ ्र 🗆 अश्र विवयात्रनामः।— 💛 🤃 🎾

चित्रकश्चित्रकायः स्थादुपव्याच्चो स्थान्तकः । भूरत्र चुद्रभार्दूनश्चित्रव्याच्चत्रं संस्मृतः ॥ ८॥ः

#### अध ऋचनाम 🚗 👙 🔑 🔑

ऋचो भन्नकोऽय भन्नः सगन्यो दुर्घीषः स्यात् भन्नकः पृष्ठदृष्टिः। द्राघिष्ठः स्यात् दीर्घकेमिश्वरायुर्जेयः सोऽयं दुश्वरो दीर्घदगी ॥५॥

## राजनिघय्टुः।

अध तरच्नाम।—

स्गादसु स विज्ञेयस्तरसुर्वीरदर्भनः ॥ ६ ॥ (सिं तरख। गौ नेक्ड़ेवाघ।)

श्रय ग्रगालनाम।-

श्चिता तु भूरिमायः स्थात् गोमायुर्म्धगधूर्त्तेतः । श्वां वञ्चतः क्रोष्टा फिरवः फिराजब्बुकौ । श्वां वञ्चतः श्वां व्यां प्रस्तेत्रकः ॥ ७॥ ( हिं गिद्दं, गार्द् । गौ श्रेयां । )

अय ईहासगनाम।—

देशस्मासु कोकः स्याहको वस्तादनोऽविसुक्।
गोवसारिञ्छागलारिञ्छागलान्तो जलाश्रयः॥ ८॥
(गौ धोग्।)

मथ कुकुरनाम।—

कुक्तुरः सारमेयस भषकः खानकः श्रुनः । भूस्तरो वक्रलाङ्गूलो वकारी राव्रिजागरः ॥ ८ ॥ कौलेयको ग्रामसृगो सृगारिस्थ्रगदंश्रकः । श्रुरः श्रुनिः श्रयालुस भषः श्ररदि कासुकः ॥ १० ॥

श्रय विड़ालनाम।—

विड़ालो मूषकारातिः हषदंशो विड़ालकः। शालाहकस मार्जारो मायावी दीप्तलोचनः॥ ११॥

श्रय लोमश्रविड़ालनाम। (गन्धमार्जार)।— श्रन्यो लोमश्रमार्जार: पूर्तिको मारजातक:।

## सिंहादिवर्गः।

[844]

सुगन्धिस्रूतपतनो गन्धसार्जारकच सः॥ १२॥ [ इति प्रसद्याः।]

षय इस्तिनामानि।—

हिरदगजसतङ्गजेभकुन्धि-हिरदनवारणचिर्त्तपद्मिनागाः। करिकारिटिविषाणिकुन्जरास्ते रदनिसदाबलसंसदिहपास्य॥१३॥

भद्रः स्तब्बेरमी दन्ती द्रुमारिः षष्टिचायनः। मातङ्गः पुष्करी दन्ता-बस्त्रानिकपस्त्विभः॥ १४॥

स्रय तिविधगजनामानि।—

भद्रो सन्दो स्मिबेति विज्ञेयास्त्रिविधा गजा:।

वनप्रचारसारूप्य-सत्त्वभेदोपलचिताः॥ १५॥

श्रय बालादिइस्तिनामानि।—

स बालः कलभो जेयो दुर्दान्तो व्याल उचते। प्रभिन्नो गर्जितो स्नान्तो सत्तो मदकलश्च सः॥ १६॥

त्रय करियोनामानि।--

इभी तु करिणी जेया हस्तिनी धेनुका वणा। करिणः पद्मिनी चैव मात्ङ्गी वासिता च सा॥ १७॥

श्रय खद्गनामानि।—

खड़: खड़म्गः क्रोधी मुख्यङ्गो मुखेबली।
गण्डको वज्रचर्मा च खड़ी वार्ड्यणस्य सः॥ १८॥\*
(गौ गण्डार।)

• वार्जीयसः इत्यत्र बन्नोयामीयसानिति पाठमेदो इञ्यते।

## राजनिवस्टः।

्र अष्ट ज्षूनामानि।—

उष्ट्रो दीर्घगितिर्वली च करभो दासरको ध्रसरो लखोष्ठो लवण: क्रमेलक-महाजङ्कौ च वीजाङ्कित:। दीर्घ: शृङ्खलको महानय महाग्रीवो महाङ्को महा-नाद: सोऽपि महाध्वग: स च महापृष्ठो बलिष्ठश्च स:॥१८॥

त्र्य महिषनामानि।—

सिंदियः कासरः क्रोधी कलुषश्चापि सैरिमः।

लुलापमत्तरताचा विषाणी कवली बली ॥ २०॥

(मंकीण। तें इनपोत्। हिं मैस। गौ मोस।)

श्रथ महिषीनामानि।

सिंहिषो मन्द्रगमना सहाचीरा पयस्त्रिनी।
लुलापकान्ता कलुषा तुरङ्गदेषिणी च सा॥ २१॥
(मं एको।)

अध वषनामानि।—

गौलु भद्रो बलीवदी दस्यो दान्तः स्थिरो बली। उचाऽनड्वान् कलुद्धान् स्थाद्यभो व्रषभो व्रषः ॥ २२॥ धुर्यो धुरीणो धौरयः शाङ्करो हरवाहनः। रोहिणीरमणो वोढ़ा गोनाथः सौरभेयकः॥ २३॥

त्रन्यच ।--

वषभसु वषः प्रोक्तो महोचः पुङ्गवो बली। विश्व सः ॥ २४ ॥

त्रय गवां वर्षीमेदाः।—

धवनः भवनस्तास्रसित्रस धूसरस्तथा।

दृत्यादिवर्णभेदेव च्चेया गावीऽत्र सेदिताः॥ २५॥ 💛

विनोतः शिचितो दान्तो धूर्यो वोढ़ा च धौरिकः ॥२६॥
अध वालव्यवासानि ।—

बालो वत्सतरः प्रोक्तो दुर्दान्तो गड़िक्चिते ॥ २०॥

गौर्मातोस्ना शृक्षिणी सौरभेयी माइयी \* स्वाद्रोहिणी धेनुरन्नगा। दोम्ब्री भद्रा भूरिमत्वानडुन्नी काल्याणी स्वात्पावनी चार्जुनी च॥ २८॥

श्रय वनवृष्यंनामानि।— वनगौर्यवयः प्रोत्ती बलभद्रो सहागवः॥ ২০॥

श्रय वनगवीनामानि ।— गवयो वनधेनुः स्थासीव भिन्नगवो सता ॥ ३०॥

अध चमरचमरी सग्नामानि।—

चमरो व्यजनो वन्या धेनुगो बालिधिप्रियः। तस्य स्त्रो चमरी प्रोक्षा दीर्घबाला गिरिप्रिया॥ ३१॥ (मं चवरीगाय। कं इंडि। गो चामरीगामि।)

श्रधारखवराइनामानि।— बराइ: स्तब्धरोमा च रोमग्र: शूकर: किरि:। वक्रदंष्ट्र: किटिदंष्ट्री क्रोड़ो दन्तायुधी बली॥ ३२॥

<sup>\*</sup> मादियोत्यत मादिन्द्रोति पाठान्त्रं इध्यते ।

## राजनिष्युः।

पृथुस्तन्थश्व भूदारः पोत्री घोणान्तभेदनः । कोलः पोत्रायुधः शूरो बह्नपत्यो रदायुधः ॥ ३३॥ अय ग्राम्यवराइनाम ।—

त्रन्यस्त विड्वराष्टः स्याद्यामीणो यामश्करः। याम्यक्रोड़ो याम्यकोलो विष्ठाशी दारकश्च सः॥ ३४॥ [ इति विजन्नितम्रगाः। ]

त्रथ घोटकनामानि।—

श्रक्षो घोटसुरङ्गोऽर्वा तुरगञ्च तुरङ्गमः । वाहो वाजी मुद्गभोजी वीतिः सप्तिश्व सैन्धवः ॥ ३५ ॥ हरिर्हयश्व धाराटो जवनो जीवनो जवी । गन्धर्वी वाहनश्रेष्ठः श्रीभ्राताऽस्रतसोदरः ॥ ३६ ॥ (मं कुट्ठरे । गो घों डा ।)

अधाम्रभेदाः।-

श्रारद्वसिन्धुजवनायुजपारसीक-काम्बीजबाद्धिकमुखा विविधासुरङ्गाः। साम्बाणग्रीपकमुखा श्रपि देशतः स्यु-वैर्णेन तेऽपि च पुनर्बहुधा भवन्ति ॥ ३०॥

श्रय वर्णभेदेन नामभेदकथनम्।—

खेतः कर्कः सोऽय रक्तसु घोणो हैमः क्षणो नीलवर्णसु नीलः । श्रभ्नैनेंत्रैर्मिक्तकाचो निदिष्टः क्षण्णैरुक्तः सोऽयिमन्द्रायुधाख्यः ॥३८॥ दृत्यं नानावर्णभेदेन वाजी ज्ञातव्योऽयं लोकरूदैः सुधीभिः । स्रतासाभिने प्रपञ्चः क्षतोऽसादाजानेयोऽप्यतः वाजी कुलीनः ॥३८॥ त्रय वाखचोटकनामानि।-

सुकुत्तः सुविनीताम्बः निम्मोरस्तुरगार्भेकः॥ ४०॥

ग्रधाश्विनीनासानि ।-

वाजिनी वड़वा चापि प्रस्राधाः शिवनी च सा ॥ ४१॥

श्रथ गईभनामानि।—

गर्दभः ग्रङ्ककर्षञ्च वालेयो रासभः खरः। भारवाहो भूरिगमञ्चन्नीवान् धृसराह्वयः॥ ४२॥

(वं वर्त्ते। गो गाधा।)

ष्रणाश्रायां गईभादुत्पचय नामानि।-

विसरस्वश्वखरजः सक्तद्वभीऽध्वगः चमी।

सन्तुष्टो मित्रजः प्रोत्तो मित्रयण्दोऽतिभारगः॥ ४३॥

(गौ खचर।)

त्रय छागलनामानि।--

श्रजो बुक्क सिध्यः स्यात्तस्वकर्णः पश्चश्च सः। क्रागलो वर्करञ्छागसुंभी बस्तः पयस्वलः॥ ४४॥

त्रधानानामानि।—

अजा पयस्तिनी भीतृण्छागी मिध्या गलस्तनी ॥ ४५ ॥

त्रय भेषनामानि।-

मेषो भेड़ो हुड़ो मेख्द्रः जर्णायुक्रणस्तथा।

एड़कः खड़िणोऽविः स्यादुरभ्यो रोमभो बली ॥ ४६॥

नानादेयविभेषेण मेषा नानाविधा स्रमी ॥ ४०॥

## राजनिषयुः।

#### श्रथ स्गमेदानां नामानि।-

स्गः कुरक्को वातायुः क्षण्यसारः सुनोचनः।
हिरणोऽनिनयोनिः स्यादेणः पृष्ठत इत्यपि॥ ४८॥
ककुवागय सारकः श्राखियक्षः चित्तनः।
श्राच्य भारयक्षः स्यात् सहायक्षो वन्त्रियः॥ ४८॥
रुख्तु रौहिषो रोहो स्यायक्षुश्चैव श्रुक्तरः।
नौनकः पृष्ठतश्चैव रक्षुः श्रवनपृष्ठकः॥ ५०॥
श्रिखर्युपकुरकः स्यात् श्रोकारो च सहाजवः।
जवनो विगहरिणो जङ्गानो जाङ्विकाह्नयः॥ ५१॥

अध वानरनाभानि।-

वानरो मर्कटः कीशः किषः शाखास्त्रगो हिरः । प्रवंगमो वनीकाश्व प्रवङ्गः प्रवगः प्रवः ॥ ५२ ॥ श्रष्य वानरायां जातिमेदाः।—

गोलाङ्ग्लसु गौरास्यः कपिः कष्णसुखो हि सः। मन्दुराभूषणास्थोऽयं विच्चेयः कष्णवानरः॥ ५३॥

त्रय प्रव्यवनामानि।—

प्रत्यकः स्थात् प्रत्यसगो वज्रश्वतिर्विषयः ॥ ५४ ॥ (मं एमयसग। कं खनते मांजर। गौ प्रजास।)

अध प्रव्यक्षभेदः, तक्षोमनाम च।— प्रव्योऽन्यः म्बाविदित्युतः, प्रवी च प्रव्यवी च सः॥५५॥ प्रव्यवीनि तु विज्ञेया प्रव्यवी प्रवर्षं प्रव्यम्॥ ५६॥ अय कोकड्नामानि।-

कोकड़ो जवन: प्रोत्तः कोकोवाची विलेशयः। ज्ञेयश्वमरपुंच्छश्च लोमशो धृक्ववर्णकः॥ ५०॥ (मं मरे। कहुग्हार दति लोके।)

त्रय नकुलनामानि।—· 🌼 🔆 🦻 🤈

नकुतः स्चिरदनः सर्पारिकोहिताननः ॥ ५८॥ (मं नेषरा। वं मङ्गुरा। हिं नेष्ठतः। गो वेणी।)

त्रय सर्पनासान ।—
दर्नीकरो दिरसनः पातालनिलयो बली।
नागस काद्रवियस वक्रगो दन्दश्ककः ॥ ५८ ॥
चन्धः स्रवा विषधरो गूढ़ाङ्गिः कुण्डलो फणी।
पन्नगो वायुभच्य भोगी स्थाजिह्मगस सः ॥ ६० ॥
सर्पो दंष्ट्री भुजङ्गोऽहिर्भुजगस सरीस्रपः ।
कच्नती दीर्घपुच्छस दिजिह्न उरगस सः ॥ ६१॥

(मं हाबु।)

श्रथ विशेषविशेषसर्पंत्रचणम्। प्राण्डिताः। प्राण्डिताः विशेषविशेषसर्पंत्रचणम्। प्राण्डिताः। श्रम्ये रत्तादिवर्णाच्या बोध्याः सर्पादिनामिकः। १२॥ गोनसो मण्डलीत्युत्तसिवाङ्गो व्यन्तरो भवेत्॥ १२॥ क्रिलां स्राण्डिताः स्राण्डिता

त्रवाष्ट्रमहानागादीनां नामानि।— अनन्तो वासुकिः पद्मी सहापद्मीऽपि तचकः।

## राजनिषयुः।

कर्कीटः कुलिकः ग्रङ्घ दत्यमी नागनायकाः ॥ ६५ ॥ तहान्धवासु कुसुद-कम्बलाखतरादयः ॥ ६६ ॥ भय हिसुखान्तिमा ।—

आपहृत् हिसुखी चैव धासिणीत्यादयः परे ॥ ६० ॥ (मं इतिहा। वम्॰ इन्हुल। गौ राजसाप, श्रांखिनी साप।) [ इति सर्पविश्रेषाः।]

श्रय मूषिकनामानि।—

मूषिको मूषकः पिङ्गोऽप्याखुरुन्दुरुको नखी। खनको विलकारो च धान्यारिस बहुप्रजः॥ ६८॥

त्रय महामूषकनाम।—

श्रन्थी महामूषकः स्थान्मृषी विश्लेशवाहनः।

महाङ्गः शस्त्रमारी च भूपाली भित्तिपातनः ॥ ६८॥

(मं दोडुइलि।)

श्रय छछन्दरीनामानि।—

षुष्टिम् विका गन्धा श्रीखनी श्रीखना ॥ ७०॥
(गो क्रंचा)

त्रथ गोधानामानि।-

गोधा तु गोधिका ज्ञेया दारुमत्याज्ञया च सा। खरचर्मा पञ्चनखी पुलका दीर्घपुच्छिका॥ ७१॥ (मं जडु। हिंगोही। गोगोसाप।)

अय गौधेयनामानि।-

गीधाजः स्यात् तु गीधियो गीधारी गीधिकासुतः ॥ ७२ ॥

श्रय वर्षरीनामानि।— बर्बरी घोरिका घोरा दीर्घरूपा भगावहा। स्थूलचखुदीर्घपादा सर्पभची गुणारिका॥ ७३॥ (सं घुणारि।)

त्रय ग्रहगोधिकानामानि।—
ब्राह्मणी ग्रहगोधा च सुपदी रत्तपुक्तिका॥ ७४॥
( नं व्राह्मणी। कं त्रति। हिं क्रिपकली, विषखापरा।
गो टिक्टिकि।)

त्रय क्षवत्तासनामानिः।—
सरटः क्षव्यत्तासः स्थात् प्रतिस्थः प्रयानकः।
वृत्तिस्थः कार्यकागारो दुरारोष्टद्वमात्रयः॥ ७५॥
(मं गीसृवे। गौ गिरगिटि, कांक्लास्।)

श्रध जादकनामानि। (क्षणसरटः)। — जाहको गात्रसङ्गोची मण्डली बहुरूपकः। कामकृषी विरूपी च विलवासः प्रकीर्त्तितः॥ ७६॥ (कं येलुसरडु। रक्षश्रुष्ठनि बहुरूपी दति च वङ्गीया।)

अध पन्नीनामानि।-

पन्नी तु सुसली प्रोत्ना ग्टहगोधा ग्टहालिका। ज्येष्ठा च कुडामत्या च पन्निका ग्टहगोधिका॥ ७०॥ (गौ टिक्टिकिविशेष।)

त्रय जर्भनाभनामानि ।— तन्तुवायस्तूर्भनाभी जूता सर्वटकः क्रसिः॥ ७८॥ ( हिं मक्डो । गो माकड्सा । )

### राजनिष्युः।

#### श्रयाञ्चलिकानाम।—

हालाहला त्वेच्चलिका गिरिका बालमूिषका ॥ ७८ ॥ (गो नेंटे इँहर।)

त्रय वृश्चिकनामा नि।—

विश्वतः यूककीटः स्थादिन होणश्च वश्चिते ॥ ८०॥ (मं विश्वू। हिं विस्त्रू। गौ विद्या।)

श्रय वर्षेजलूकानामानि।—

अथ कर्णजनूका स्थाचित्राङ्गी शतपद्यपि॥ ८१॥ ( हिं काग्यखनूरा। गो काग्यकीटारी, केनी, क्याग्डाइ।)

अध पिपौत्तिकानामानि।—

पिपीलकः पिपीलश्च स्त्रीसंज्ञा च पिपीलिका ॥ ८२ ॥ (गौ चुदे पिंप् हे।)

. त्रय तेलिपगैलिकानामानि।—

उदङ्घा कपिजङ्घिका चेया वैर्ह्मापिपीलिका ॥ ८३ ॥ ाः (गौ राङ्गापिंप्ड़े।)

मथ कथापिपीलिकानामानि।—
कथाऽन्या च पिपोली तु स्थूला वचकहा च सा ॥ ८४॥
(शौ काट्पिंप्डे।)

त्रय मलुखनामानि —

मत्कुषो रत्तपायो स्याद्रताङ्गो मञ्जनात्रयो ॥ ८५ ॥

हारपोका ।)

ः [. दिति विविधयाः । ]

श्रय जलजन्तुनामानि।—

यादसु जनजन्तुः स्थाज्जनप्राणी जनिशयः। ततातिक्रूरकर्मा यः स जनव्यान उच्चते॥ ८६॥

त्रघ मत्यनाम।-

सस्यो वैसारिणो मीन: पृथुरोमा भाषोऽण्डज: । विसार: शक्कुली शक्की पाठीनोऽनिसिषस्तिमि: ॥८७॥

ज्ञय मत्यविश्रेषनामानि।—

राजीवः श्रञ्जालः शृङ्गी वागुसः श्रच्यपत्तवी ।
पाठीनः श्रञ्जलश्चैव नद्यावर्त्तश्च रोहितः ॥ ८८ ॥
सङ्गुरस्तिमिरित्याद्या च्चेयास्तद्वेदजातयः ।
तद्वेदो मकराख्योऽन्यो मातङ्गमकरोऽपरः ॥ ८८ ॥

चित्तिचिमस्तिमिश्चैव तथाऽन्यश्च तिमिङ्गितः।

तिमिङ्गिलगिलश्वेति महामत्स्या ग्रमी मताः ॥ ८० ॥

[ द्रति मत्याः । ]

श्रय ग्रिशुकनामानि।-

शिश्वतः शिश्वमारः स्थात् स च याही वराह्तः ॥८१॥

(मं सुसर। गौ शुशुक। "शुशु" इति वङ्गोयाः।)

त्रय कुम्भीरनामानि।—

भवेनक्रसु कुभौरो गलगाहो महाबल: ॥ ८२ ॥

त्रथ कच्छपनामानि।—

कच्छ्पः कमठः क्रुमो गूढ़ाङ्गो धरणोधरः।

कच्छेष्टः पत्नलावासी वृत्तः कठिनपृष्ठकः ॥ এই ॥

(मं कांसव। गौ काव्हिम, ग्रुन्दि, काठा, वारकोल।)

रा-३०

# राजनिषयुः।

श्रय कर्कर्नामानि।—

कर्कटः स्थात् कर्कटकः कुलीरस कुलीरकः। सन्दंशकः पङ्गवासस्तिर्थगामी स चोर्ड्वटक्॥ ८४॥

अय माड्कनामानि।—

मण्डूको दर्दी मण्डो हरिर्भेकश्च लूलकः। शालूरः स च वर्षाभूः प्रवः कटुरवस्तथा। समीडन्यश्च मुण्डो च प्रवङ्गश्च प्रवङ्गसः॥ ८५॥

त्रय राजमख्दुकनामानि।—

पीतोऽन्यो राजमण्ड्को महामण्ड्क इत्यपि। पीताङ्गः पीतमण्ड्को वर्षाघोषो महारवः॥ ८६॥ (गौ सोगाविङ्।)

त्रथ जलीकानामानि।—

जनुका तु जनीका स्थाद्रक्तपा रक्तपायिनी। रक्तसन्दोहिका तीन्छा चर्मेंटी \* जनजीविनी॥ ८७॥ (मं निग्रते।गौ नोंक।)

त्रथ दात्यू इनामानि।-

जलकाकसु दात्यूष्ठः स च स्यालालकग्रुकः॥ এদ॥
( मं निषकागे। गौ डाकपाखी।—

श्रथ कोपीनामानि।— जलपारावतः कोपी प्रोक्तो जलकपोतकः॥ ೭೭॥

(गौ जलपिपि। "भै पौ" इति लीने।)

• चर्मटी द्रखन वमनीति पाठान्तरं दृखते।

#### तथा च।--

ख्यने करितुरङ्गाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः। जन्नेऽपि ते च तावन्तो ज्ञातव्या जनपूर्वेकाः॥ १००॥ [ इति जनेश्रयाः। ]

ग्रयं पित्रसामान्यनामानि।-

खगविष्ठगविष्ठङ्गमा विष्ठङ्गः पिपतिषुपत्रिपतिष्रपत्रवाष्टाः । प्रकुनिप्रकुनविष्किराण्डजा विः पत्रगपतन्नभसङ्गमा नगीकाः ॥ १०१॥

वाजी पत्रस्थः पच्ची दिजो नीड़ोद्भवोऽनुगः। शक्जन्तः पत्रगः पिच्छन् पतङ्गो विकिरस्य सः॥१०२॥

श्रय राधनामानि।—

ग्रप्नस्ताच्यी वैनतेयः खगेन्द्रो भुजगान्तकः। वक्रतुग्डस दाचाय्यो गरुक्षान् दूरदर्भनः॥ १०३॥

श्रय ग्रेननामानि। (सञ्चानः)।—

खेन: ग्राद: क्रव्याद: क्रूरो वेगी खगान्तक:। कामान्यस्तीव्रसम्पातस्तरस्ती ताच्छीनायक:॥ १०४॥

(मं सिचया। गौ सञ्चाल, वाज, श्रिक्रे।)

त्रय काष्ठकुरुनाम।—

काष्ठजुद्दः काष्ठभङ्गी काष्ठकूट्य प्रन्दितः ॥ १०५॥ (मं कठकुटा। गौ काठ्ठीक्रा पाखी।)

### [862]

## राजनिष्ठणुः।

श्रध करकनामानि। (रणगोधः।)—करको नीलिपच्छः स्यात् लखकणे रणप्रियः।
रणपची पिच्छवाणः स्थूलनीलो भयद्भरः॥ १०६॥
श्रध कद्भनामानि।—

कङ्कस्तु लोइप्रष्ठः स्थात् सन्दंशवदनः खरः । रणालङ्करणः क्रूरः स च स्थादासिषप्रियः ॥ १००॥ (मं कागे। गौ काँक्पाखो। "द्वाङ्गिले" दति केचित्।)

त्रय काकनामानि।-

काकस्तु वायसो ध्वाङ्गः काणोऽरिष्टः सक्तग्रजः । बिलसुक बिलपुष्ट्य धूलिजङ्गो निमित्तक्वत् ॥ १०८ ॥ कौशिकारियिरायुय करटो सुखरः खरः । ग्राक्षघोषो महालोलियरजीवी चलाचलः ॥ १०८ ॥ ग्रथ द्रीयकाकनामानि ।—

द्रोणलु द्रोणकाकः स्थात् काकोलोऽरख्यवायसः। वनवासी महाप्राणः क्रूररावी फलप्रियः॥११०॥ (मं गूगे। गौ दंख्वाक।)

त्रयोलूकनामानि। (पेचकः)।—

छलूकस्तामसी घूको दिवान्धः कौश्रिकः कुविः। नक्तच्चरो निशाटस काकारिः क्रूरघोषकः॥ १११॥

श्रथ विषालीनामानि।— विषाली विक्राविष्ठा सा दिवान्धा च निशाचरी। स्वैरिणी च दिवास्तापा मांसेष्टा मात्ववाहिनी॥ ११२॥ (मं निचलु। गौ वाहुडू।)

## सिंहादिवर्गः।

[842]

ग्रथ चर्मकौनामानि।-

चर्मकी चर्मपची च चर्माङ्गी चर्मगन्धिका। कत्याम्यकारिणी चर्मी चर्मपत्नी च मेलिका। दिनान्धा नक्तभोजी च स्त्रामणी कर्णिकाह्नया॥ ११३॥

(सं वमेडो। गो चाम् विके।)

अध सयूरनामानि।—

मयूरश्रन्द्रकी वहीं नीलकग्छ: शिखी ध्वजी। निवानन्दी क्रलापी च शिखग्डी चित्रपिच्छक:॥ ११४॥ बर्हिण: प्रचलाकी च श्रुकापाङ्ग: शिखाबल:। केकी अुजङ्गभोजी च मेघनादानुलासक:॥ ११५॥

त्रध मयूरपचादीनां तत्कूजनस्य च नामानि।— वर्ष्टभारः कालापः स्याद्वर्षनेत्राणि चन्द्रकाः। प्रचलाकः शिखा चेया ध्वनिः केकेति कष्यते ॥ ११६॥

त्रय कोञ्चनामान ।-

कुररः खरग्रब्दः क्रुङ् क्रीञ्चः पङ्क्तिचरः खरः ॥११०॥
अय नीलक्रीञ्चन।मानि :—

नीलक्रीचुसु नीलाङ्गो दीर्घग्रीवोऽतिजागर: ॥ ११८॥ (मं वेद्विता गो को च वका)

त्रय वक्तनामानि।-

वकः कङ्को वकोटश्व तोर्थसेवी च तापसः। मीनघाती सृषाध्यानी निश्वलाङ्किश्व दास्मिकः ॥११८॥

### राजनिषयुः।

श्रध श्रक्षनौनामानि ।—

श्रव हर्गानामानि ।—

प्रमा सगवती चैव सैवोक्ता सत्यपाण्डवी ॥ १२१ ॥

श्रघ बलाकानामानि ।—

बलाका विषकण्डी स्थात् श्रष्काङ्गी दीर्घकम्थरा ॥ १२२ ॥

श्रघ चर्मान्तकामुकौनाम ।—

घर्मान्तकामुको खेता सेघनादा जलाश्रया ॥ १२३ ॥

(चिं वगुलीवक ।)

्रित्र अथरण ।

श्रय चक्रवाकनामानि ।—
चक्रः कोकश्रक्रवाको रथाङ्गो
भूरिप्रेमा दन्दचारी सहायः ।
कान्तः कामी रात्रिविश्लेषगामी
रामावचीजोपमः कामुकश्र ॥ १२४॥
(गी चक्राचको, रामचका।)

त्रध सारसनामानि।—
सारसी रसिकः कामी नीलाङ्गो भिष्तारवः।
नीलकण्ठो रक्तनितः काकवाक् कामिवक्तभः॥ १२५॥
त्रध टिष्टिभौनामानि।—

टिहिभी पीतपादस सदालूता नृजागर:। निशाचरी चित्रपची जलशायी सुचेतना॥ १२६॥ (मं टिटेडो। गौ टिटीपाखी।)

### सिंहादिवग:।

[808]

त्रय जलकुकुटकनाम।—

जलकुष्टुवस्थान्यो जलग्रायी जलस्थितः ॥ १२०॥ (गी पानकौड़ी।)

अध ठिकनामानि।—

ठिकः पाधगड़ो ठिको जलसार्यतिलामयः॥ १२८॥ जलपची महापची जलसावितवासकः॥ १२८॥

श्रय जलसर्पनामानि तहिशेषक्यनञ्च।-

जलभायी मण्डलीनी मन्दगः श्लेषालीऽनिषी। खराजी राजिमन्तस जलसर्पः स दुन्दुभिः॥ १३०॥ दिनिगोडो निससैन चित्री भ्रत्यी च गोसुखः॥ १३१॥

त्रय चुद्रसारसलच्यम्।—

श्रन्थे च प्लवगा ये ये ते सर्वे चुद्रसारसाः।
श्रेताश्विताश्व धृस्ताद्या नानावर्णानुगाह्वयाः॥ १३२॥
श्रव इंसनामानि।—

हंसी धवलपची स्थात् चक्राङ्गी मानसालय: ॥ १३३॥
श्रथ कलहंसनामानि।—

कलइंसस्य कादस्व: कलनादो सरासक: ॥ १३४ ॥ ( हिं करवा। गो वालिइंग्स । )

श्रय राजचंसादिनामानि।-

एतेषु चञ्चचरणेष्वरूणेषु राज-इंसोऽपि धूसरतरेषु च मिल्लकाचः।

### [805]

### राजनिष्ययुः।

कालेषु तेषु धवलो किल धार्त्तराष्ट्रः सोऽप्येष धूसरतनुखु भवेदभव्यः ॥ १३५ ॥ ( मं वह्नको । गौ राजहांस । )

त्रय इंशीनाम।-

हंसी तु वरटा च्रेया वरला वारला च सो। मराली मञ्जुगमना चक्राङ्गी म्टुगामिनी॥ १३६॥ [ द्रति प्रवगाः। ]

त्रय विष्कराः।—

त्रघ कुकुटनामानि।—

कुक्रुटस्ताम्नचूड्: स्थालालज्ञ सरणायुधः । नियोद्या क्रक्तवाकु स्थालालज्ञ सरणायुधः ॥ १३७॥ (ते कोड़ो। कं कुक्ष। हिं सुर्गा। गौ कुँ क्ड़ा।)

अध कपीतनामानि।-

स्थालपोतः कोकदेवो \* धूसरो धूसलोचनः। दहनोऽग्निसहायस भीषणो ग्रहनामनः॥ १३८॥ (मं होगलापनो। गौ घुषु। "होलापाखी" दति केचित्।)

श्रव पारावतनामानि ; तद्वेदाश्व ।—
पारावतः कलर्वोऽरूणलोचनश्व
पारायतो मदनकाकुरवश्व कामी ।
रक्तेचणो मदनमोहनवाग्विलासी
कण्ढीरवो ग्रहकपोतक एष उक्तः ॥ १३८॥

कोकदेव इत्यत कोकुटिक इति पाठान्तरं दृश्यते।

पारावतोऽन्यदेशीयः कासुको घुनुसारवः \* ॥ १४०॥ जलपारावतः कासी ज्ञेयो गलरवश्व सः ॥ १४१॥ (भं परेवा। ते पारवापिष्ट। हिं ववृतर। गौ पायरा।)

ज्ञय को किलनामानि।—

कोकिन्तः परपुष्टः स्थात् कानः परस्यतः पिकः । वसन्तद्वतस्तान्त्राचो गन्धर्वो सधुगायनः ॥ १४२ ॥ वासन्तः कनकर्णस्य कासान्धः क काकनीरवः । कुद्धरवोऽन्धपुष्टस्य सत्तो सदनपाठकः ॥ १४३ ॥ ( द्विं कोद्यन्त । गौ कोकिन्त । )

श्रय कोविलानामानि।—

कोिकला लन्यपुष्टा स्थान्मत्ता परस्रता च सा।
सुकग्छी सधुरालापा कलकग्छी सधूद्या ॥ १४४ ॥
वसन्तदूती तास्त्राची पिकी सा च कुइरवा।
वासन्ती कामगा चैव गन्धर्वा वनभूषणी ॥ १४५ ॥

श्रय शुक्तनामानि।—

शुकः कीरो रत्ततुख्डो मिधावी मञ्जुपाठकः॥ १४६॥ (मं हितिशि। हिं शुगा। गौ टेयापाखी।)

त्रथ राजगुकनामानि।—

श्रन्धो राजश्रकः प्राज्ञः श्रतपत्नो नृपप्रियः ॥ १४७॥ (मं हेगुग्गो। हिं राजश्रूगा। गौ मयना।)

चुनुसारव दत्यत्र घुल्घुलारव दित पाठान्तरं दृश्यते ।
 † कामान्य दत्यत्र कामग दित पाठान्तरं विद्यते ।

### राजनिषयुः।

म्रथ सारिकानामानि ; तडेदाय।—
सारिका मधुरालापा दूती मिधाविनी च सा।
कवरी कुल्सिताङ्गी च कष्कलाङ्गी च मारिका॥ १४८॥
(मं कवरीसाल्हो। गौ सालिकपाखी।)

श्रय राजसारिकानामानि।-

पीतपादाद्युष्ज्वलाची रत्तचश्र्य सारिका।
पठन्ती पाठवार्त्ता च बुद्धिमती भूसारिका॥ १४८॥
गोराख्टिका गोकिराटी गोरिका कलहिप्रया॥ १५०॥

त्रय चातकनामानि।—

चकोरसन्द्रिकापायी कौसुदोजीवनोऽपि सः। चातकस्तोककः सोऽपि सारङ्गो मेघजीवनः॥ १५१॥

( इं तोका। गौ फटिकजलपाखी।)

अध हारीतनामानि ; (गौरतित्तिरिः)।-

हारीतकसु हारीतस्तेजलस \* कपिञ्जल: ॥ १५२ ॥

(गौ पाक्वानाड़ापाखी।)

त्रय ध्रानामानि । ।-

भूसरी पिङ्गला स्ची भैरवी योगिनी जया।
कुमारी सुविचित्रा च माता कोटरवासिनी॥ १५३॥

(मंपिङ्गला। कं धूसरी।)

तेजल इत्यल गञ्जलचेति पाठान्तरं दृश्यते

### ज्ञच तैलपानामानि।

तैलपा तु परोच्यो स्थाज्जतुकाऽजिनपत्निका॥ १५४॥ (संगोजगुलु। गो तेलापोका, त्रार्मोला।)

ग्रय मृङ्गकाष्ठकुट्टकयोः नामानि ।—

सुङ्गः कुलिङ्गो धूस्याटो दार्वाघातः \* शतच्छ्दः॥ १५५॥ (सं वालियत्। गौ फिङ्गे। गौ दार्वाघाट, काठ्ठोक्रा।)

श्रध सरहाजादिपचिविश्रेषाणां नासानि ।— व्याचाटः खाद्वरदाजः खञ्जनः खञ्जरीटकः । समन्तभद्रः कृष्णस् खल्पकृष्णः सभद्रकः ॥ १५६॥ दीपवासी सुनिश्चेव चातुर्मास्यविदर्भनः । चाषः किकीदिविः प्रोत्तो नीलाङ्गः पुख्यदर्भनः ॥ १५०॥

त्रय वर्त्तकामानि।— वर्त्तको वर्त्तिको वर्त्तिर्गाष्ट्रिकायस कथ्यते॥ १५८॥ ( हिं वटेरिगंड्गुड़े। गौ भारदपाखौ।)

अध चटकामानि।—

कलिविङ्गस्तु चटकः कासुको नीलकख्ठकः॥ १५८॥। (मं चिमणा। हिं चवुड़ैया। गौ चड़ाइ।)

त्र्य चटका-बालचटकयोनीम ।—

चटका कलविङ्की स्थात् चाटकैरस्तु तब्सुतः ॥ १६०॥

श्रयारखवटक नामामि ; तद्वेदय ।—
धूसरोऽरखवटकः कुजो भूमिग्रयस सः।

त्रत टान्तलभेव युत्तं वार्त्तिके संज्ञायां टान्तत्वस्वैव साधनात्।

### राजनिष्ययुः।

भारीट: ग्यामचटक: ग्रेशिर: कणभचक: ॥ १६१॥ (गो गुड़गुड़े, नागरमडुद, क्षातार।)

भूसरोऽन्योऽतिस्त्यः स्थात् चटको धान्यभचकः।
ग्टहकत्यचमो भीरः क्षषिदिष्टः कणप्रियः॥ १६२॥

त्रय लावकनामानि।—

लावा तु लावकः प्रोक्तो लावः स च लवः स्मृतः ॥ १६३॥ (मं लावुगे। कं लावुकपिटः। चिं लाक्रोया। गौ वटेरपाखी।)

अथ तित्तिरिनामानि ; तद्भेदश्च।-

तित्तिरिस्तित्तिरश्चेव तैत्तिरो याजुषो गिरि: ॥ १६४ ॥ कृष्णोऽन्यस्तित्तिरि: शूर: सुभूति: परिपालक: ॥ १६५ ॥ (ते'तोत्तकपिटः। गौ तितिरपाखी।)

त्रय चुद्रोल्कनाम।—

गोत्रदेषी भूरिपचः ग्रतायुः सिद्धिकारकः। चुद्रोलूकः ग्राक्जनेयः पिङ्गलो ड्राड्डलस् सः। वचास्रयो वहद्रावः पिङ्गलाचो भयङ्गरः॥ १६६॥

(गौ मिंखपेँचा।)

त्रय ग्यामानामानि।—

स्थामा वराष्टी शकुनी कुमारी दुर्गा च देवी चटका च कष्णा। स्थात्पोतकी पाण्डविका च वामा सा कालिका स्थात् सितविस्थिनी च॥ १६०॥

# शिं हादिवर्गः।

[ ees ]

श्रय खद्योतनाम ।--

प्रभाकीटसु खद्योत: खज्योतिक्पसूर्य्यक: ॥ १६८॥
( सिं पटवीजना । गौ जोनाकीपोका । )
स्रय तेलकीटनाम ।—

तैलिनी तैलकीट: स्थात् षड्विस्वा दहुनाशिनी ॥१६८॥ শ্বয় दन्द्रगोपनाम।—

श्रक्तगोपसु वर्षाभू रक्तवर्णेन्द्रगोपकी ॥ १७० ॥ ( चिं लखनतो । गो छोठके हुद, आषाढ़े पोका । ''तीन वीरबद्दृष्टी'' द्रति खाते रक्तवर्णकोटे । )

अध समरनामानि।-

भ्रमरः षट्पदो सङ्गः कलालापः शिलीमुखः।
पुष्पन्थयो दिरेफोऽलिमेधुक्तन्मधुपो दिभः \*॥ १७१॥
भ्रमरश्रद्यीकोऽलिः भङ्गारी मधुलोलुपः।
दृन्दीन्द्रश्र मधुलिट् मत्तो घुमुघुमारवः॥ १७२॥
(मं हैननोषा। गौ मोम्रा।)

त्रय मधुमचिकानामानि।—

वर्वणा मिल्तका नीला सरघा मधुमिल्तिका ॥ १७३॥
( मं श्रडवियनीण । गौ मौमाछि ।

श्रय वरटानामानि।—

गस्रोती वरटा चुद्रा क्रूरा स्थात् चुद्रवर्षणा।

• हिम: दत्यत्र हिप: दति पाठान्तरं दृखते।

### राजनिष्युः।

रंतिक म्हलकारी च ती च्यादंष्ट्री सहाविषः । पीतवर्णा दीर्घपादी सत्सर्थः क्रूरदंष्ट्रकः ॥ १७४॥ (सं टाग्टाचाकाण्डरः। गी वीन्ता।)

अध दंग्रनामानि।—
दंग्रो दुष्टमुख: क्रूर: चुद्रिका वनमचिका॥ १७५॥
(गौ हाँग।)

श्रय मचिकानामानि।—

मिक्का लम्हतीत्पन्ना वमनी चापला च सा ॥ १७६ ॥ (मं नोरज्।)

त्रध मग्रवनामानि ; तङ्गेदश्व ।—

मग्रकी वज्रतुग्ड्स स्चास्यः स्ट्समिज्ञा ।

रात्रिजागरदो धूम्मो नीलाभस्वन्यजातयः ॥ १७०॥

श्रष्टाङ्गिरष्टपादस ग्रह्मासी च क्षण्यकः ॥ १७८॥

त्रघ कालिकनामानि।—
कालिक: कोकिल: प्रोत्त: कालुच्च: क्षण्यदंष्ट्रक:।
कसारिका दीर्घमूच्छी ग्रह्मवासा विलाययी॥ १७८॥
(मं कोलिया: कं कसारी। तें हेतु।)

श्रव यूकानामानि।—
यूका तु केशकीट: स्थात् खेदज: ष्रट्पद: स्मृत: ॥ १८०॥
( मं येवेयचेत्। गौ चक्कन।)
श्रव पत्मजानामानि।—

पद्मजा पद्मयूका स्थात् सूद्मा षट्चरणाऽपि सा ॥१८१॥ (मं कूरे।)

### श्रय श्वेतयूकानासानि।—

म्बेतयूकाऽङ्गवस्त्रोत्या लिचा यूकाङ्गवस्त्रके ॥ १८२॥ (गौ निकि।)

त्रय कीटसामान्यवचयम्।— कथितेष्वेषु यो जीवः चोदीयान् व्यक्षिकादिकः। तत्र तत्र बुधेर्ज्ञेयः स सर्वः कीटसंज्ञकः॥ १८३॥

त्रय कीटिकानामानि।— कीटिका चटिका प्रोक्ता वज्जदंष्ट्रा,बहुप्रजा। काशको तामसी शूरा कीरिसारा सहाबला॥ १८४॥

त्रय मङ्गोरनामानि।—

मङ्गोरो सङ्घटः लिष्णस्तीन्त्र्णदंष्ट्रो विश्वालुकः । षट्पादकासु सात्सर्व्यो साकोटस्तूर्ड्वगुद्यकः ॥ १८५॥ (सं चिंउटा । कं माकोडा ।) श्रय षड्विन्हकीटनासानि ।—

षड्बिन्दुर्बिन्दुकीटसु दीर्घकीटसु पादतः ॥ १८६ ॥ [ इति कीटाः। ]

प्रसद्दन-विलिख्ति-द्रुत-शय-प्रतुदास विष्किर:।
कीटा दित कथिता: नवधाऽत्र तिर्थेच्व:॥ १८०॥
दिखं नानातिर्थेगाख्याप्रपच्चव्याख्यापूर्णं वर्गमेनं विदित्वा।
बुद्धा सम्यक चाभिसन्धाय धीमान् वैद्यः कुर्य्थान्मांसवर्गप्रयोगम्
॥ १८८॥

येनेभास्यिपता सगाङ्गसुकुटः शार्दू कचर्मास्वरः सर्पा कङ्करणः सुपुङ्गवगतिः पञ्चाननोऽभ्यर्चते ।

### [850]

### राजनिष्युः।

तस्य श्रीतृहरीशितुः खलु क्षताविकोनविंशोऽभिधा-चूड़ापीठमणावगादविसितिं सिंहादिवर्गी महान् ॥ १८८॥ इति श्रीनरहरिपण्डितविरिचति निचण्टुराजापरनामाभिधान-चूड़ामणौ सिंहादिवर्गं एकोनविंश्रतिः।

# अध रोगादिवर्गः।

त्रघ व्याधिसामान्यनाम। -

गदो रुजा व्याधिरपाटवास-रोगासयातङ्गभयोपघाताः। रुद्मान्यभङ्गार्त्तितमोविकार-ग्लानिचयानार्जवसृत्युस्त्याः॥१॥

त्रथ राजयस्मनाम।—

राजयस्मा चयो यस्मा रोगराजो गदायणी:।

उषा गोषोऽतिरोगञ्च रोगाधीशो नृपामयः ॥ २ ॥

श्रय पार्ड्-विसर्प श्रोफ-कासनाम।—

पाखुरोगसु पाखुः स्यात् विसपः सचिवामयः।

गोफ: गोयसु खययु: कास: चवयुरुचिते ॥ ३ ॥

श्रय च्त-प्रतिप्याय-नेत्रामय-मुखरोगनाम ।-

चुतन्तु चवयुः चुच प्रतिश्यायसु पीनसः।

नेवामयो नेवरोगो मुखरोगो मुखामय: ॥ ४ ॥

अय कुष्ठ-श्वितनाम।-

दुयर्मा मण्डलं कोठस्वग्दोषसर्मदूषिका ।

कुष्ठन्तु पुण्डरोकः स्थात् खित्रन्तु चर्मचित्रकम् ॥ ५ ॥

श्रथ किलास-श्रिखी-पामा-क्ष्याह्नाम ।—

किलासिक्षे च श्रिखी खास: पामा विचर्चिका।

क्षय्हु: क्षय्हूतिकय्हूया-खर्जूकय्हूयनानि च ॥ ६ ॥

श्रथ सत्वार्यादिनाम।—

सञ्चारी श्रियुक्कास्कोट पामपाने \* विचर्चिका।

पीतस्कोट तु पामा च चुद्रस्कोट ने तु कञ्चिका॥ ७॥

श्रथ पिटका-नम्रिका-विक्कोट-इन्द्रलुप्तनाम।—

पिटका पिटिका प्रोक्ता मस्त्रामा मस्त्रिका।

विस्कोट: स्कोटक: स्कोट: क्षेश्रम्नाह्वन्द्रलुप्तकः॥ ८॥

त्रथ गलशुखी-गलगख-दन्तार्वुदनास ।— गलशुखी तु शुखा स्थात् गलगखी गलस्तनः । दन्ताबुदी दन्तसूलं दन्तशोधी दिजव्रयः ॥ ८ ॥ त्रथ गुस्र-पृक्षयम्थि-( कुछ ) परिखानशूलनाम ।—

गुल्मसु जाठरग्रन्थिः प्रष्ठग्रन्थी गड् भेवित् । पत्तिभूलन्तु भूलं स्थात् पाक्षजं परिणामजम् ॥ १०॥

श्रय जूता-नाड़ोत्रया-श्लीपदादिनाम ।— जूता चर्मत्रणो हक्षं नाड़ी नाड़ोत्रणो भवेत् । श्लीपदं पादवल्योकं पादस्फोटो विपादिका ॥ ११॥

प्रय विष्टम्भानाचार्यानास ।—

विष्टकासु विवन्धः स्थादानाही ससरीधनम्।

 <sup>&</sup>quot;पामपामे" इत्यत "सूच्यस्कोठे" इति पाठान्तरं दृश्यते ।

<sup>† &#</sup>x27;'चुद्रस्कोटे तु कच्चिका" दत्यत ''चुद्रस्कोटा विचर्चिका" दति पाठान्तरं दृष्यते।

# [ 8= 2 ]

# राजनिष्ययुः।

अर्थास गुदकीलाः स्युर्दुर्नामानि गुदाङ्ग्राः॥ १२॥
अय अतीसार-ग्रहणी-प्रवाहिका-विमनाम।—
सलवेगस्वतीसारो ग्रहणीक्क् प्रवाहिका।
वसयुर्वीन्तकद्वार-क्ट्रिविक्ट्रिटिका विमः॥ १३॥

अध हृद्रोग श्वास-व्यरनाम ।-

हिट्रोगो हृहदो हृहुगुत्राणः खास उच्चते। ज्वरतु स ज्वरातङ्को रोगश्रेष्ठो महागदः॥ १४॥

त्रय दन्द्वजादिनाम।—

इन्द्रजा इन्द्रदोषोत्थाः शीताद्या विषमज्वराः। श्रतीत्थागन्तवस्ते द्वैप्रकाष्ट्रिकच्याष्ट्रिकादयः॥ १५॥

श्रध रत्तिपित्तादिनाम।—

रत्तपित्तं पित्तरत्तं पित्तास्तं पित्तशोणितम् । इत्येवं रत्तवातादि-इन्ददोषमुदाहरेत् ॥ १६॥

त्रच तथा-मदात्यय-मदनाम।—

त्रणोदन्या पिपासा त्रण्सदातङ्को मदात्ययः। पानात्ययो मदत्याधिर्मदस्तूद्रिक्तचित्तता॥ १७॥

त्रय मूर्च्छा-खरमेदाचाग्रडारीचकनाम।--

मृक्क्षी तु मोही मृद्धिय खरसाद: खरचय:। अव्यवादनभिनाष: स्थादनियाप्यरोचक:॥ १८॥

अध प्रशेष्ठ-भूततः क्काध्मरीनाम।—-भूतदोषसु विज्ञेयः प्रमेष्ठो मेष्ठ दलाँप।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

# रोगादिवर्गः।

[828]

कच्छं तु सूत्रकच्छं स्थात् सूत्ररोधोऽस्त्ररी च सा ॥१८॥

श्रथ वातव्याधि-कम्पनाम।-

वातव्याधिय्वजातङ्गो वातरोगोऽनिजामय:। कम्प्रज्ञ वेपनं वेप: कम्पनं वेपघुस्तया॥ २०॥

त्रय जन्भाऽऽलखनाम।—

जृन्धा तु जृन्धिका जन्धा जृन्धणं जन्धिका च सा। घालस्यं मन्दता मान्यं कार्थ्यप्रदेष द्रत्यपि॥ २१॥

अध तुन्द-जलीदराम-रक्तामयनाम।—

तुन्दः स्थिवष्ठ दत्युक्तो जठरन्नो जलोदरः। श्रामो मलस्य वैषम्याद्रक्तार्त्तिः शोणितामयः॥ २२॥

त्रय जालगर्दभक्तनाम ।--

जालगर्दभकः प्रोक्तो जालरासभकामयः।

जालखरगदो ज्ञेयः स गर्दभगदस्तथा ॥ २३ ॥

श्रय विद्रधि-हृद्ग्रस्थि-भगन्दरनाम।—

विद्रिधिः स्यादिदरणं हृद्ग्रत्यिईद्रण्य सः।

व्रणो भगप्रदेशे यः स भगन्द्रनामकः॥ २४॥

त्रथ शिरःशूलादिनाम।—

शिर:श्रुलादयो च्रेयास्तत्तदङ्गाभिधानकाः

इस्यमन्येऽपि बोडव्या भिषम्भिर्देहतो गदाः ॥ २५ ॥

त्रय सन्तापान्तर्राचनाम।—

सन्तापः संज्वरस्तापः श्रोष उषा च कथ्यते।

# राजनिषयुः।

्यसापि कोष्ठसन्तापः सोऽन्तरीह इति स्वृतः ॥ २६ ॥ अध्य अवयवविश्रेषे दाइस्य विश्रेषविश्रेषनाम ।—
स टाहो सस्ततान्वीष्ठे टवथसन्तरादिष्ठ ।

स दाही सुखतात्वीष्ठे दवयुश्वचुरादिषु । पाणिपादांसमूलेषु शाखापिसं तदुच्यते ॥ २० ॥

श्रध तन्द्रा-प्रवयनामानि ।— तन्द्रा तु विषयाज्ञानं प्रमीला तन्द्रिका च सा । प्रवयस्त्रिवन्द्रियस्वापश्रेष्टानाभः प्रकानता ॥ २८ ॥

त्रय उत्साद-भूतीन्यादनान ।— उत्सादो मतिविश्वान्तिज्ञानायितमित्यपि । त्राविश्रो भूतसञ्चारो भूतक्रान्तिग्रीहागमः ॥ २८॥

श्रय श्रपस्मार-स्तैनित्यनान ।— श्रपस्मारोऽङ्गविक्ततिर्जीलाङ्गो भूतविक्रिया । स्तैमित्यं जड़ता जाडां श्रीतललसपाटवम् ॥ ३०॥

त्रघ वातजादिव्याधिनान।— वातिको वातजो व्याधिः पैत्तिकः पित्तसस्थवः। स्रीमिकः स्रेमसस्थतः सस्यूष्टः साम्निपातिकः॥ ३१॥

त्रघ रोगिनामानि।— व्याधितो विक्ततो ग्लाखुग्लीनो मन्दस्तयाऽऽतुरः। त्रभ्यान्तोऽभ्यमितो वग्नस्यामयाव्यपटुस्य सः॥ ३२॥

त्र्य रोगिविश्रेषनामानि ।— . तिद्योषासु विद्येयास्तन्यत्वर्थीययोगतः ।

### रोगादिवर्गः।

[ 844 ]

यथा ज्वरितक्र खूल-वातकचयदहुणाः॥ ३३॥

अथ रोगसुक्ती ग्राचारविश्रेषाः ।—

जलाही दिजदेवभेषजभिषग्भत्तोऽपि पथ्ये रती धीरो धर्मपरायणः प्रियवचा मानी खदुर्मानदः। विश्वासी ऋजुरास्तिकः सुचरितो दाता दयासुः ग्रचि-र्यः स्थालाममवञ्चकः स विक्षतो सुचेत खत्योरपि॥ ३४॥

अय चिकित्सानाम।—

उपचारस्तूपचर्या चिकित्सा क्क्प्रतिक्रिया। निग्रहो वेदनानिष्टा क्रिया चोपक्रमः समाः॥ ३५॥

त्रथ श्रीषधनाम।--

भैषच्यं भेषजं जैत्रसगदो जायुरीषधम् । ष्यायुर्योगो गदारातिरस्रतं च तदुच्यते ॥ ३६ ॥ े ः

श्रय श्रीषधय रसादिपञ्चभेदाः।—

तच पञ्चविधं प्रोत्तं स्वस्वयोगविश्रेषतः।

रससूर्णं कषाययावलेष्टः कस्क द्रत्यपि ॥ ३७ ॥

त्रय रसादीनां खरूपम्।—

रसो द्रषदि सिभवो \* दिव्यद्रव्यसमन्वतः। चूर्णेन्तु वसुभिः चुर्सैः कषायः क्षियतेसु तैः॥ ३८॥ तैः पक्षेत्रे रवसेद्धः स्थालस्को मध्यदिमदितैः॥ ३८॥

<sup>\* &</sup>quot;द्विद सम्भिनः" द्वित "पारदसम्भिनः" द्ति पाठान्तरमस्ति।

<sup>🕇</sup> तै: पर्केरित्यव्रानिकेरिति पाठान्तरं दृश्यते । 🦈 🦙

### [826]

### राजनिषयुः।

श्रथ सप्तविधकाधनाम ।— पाचन: ग्रोधनीयस क्लेदनस ग्रमस्तथा । दीपनस्तर्पण: ग्रोष इति सप्तविधा: स्मृता: ॥ ४० ॥

अय सप्तविधकायानां लचगम्।—

पाचनीऽर्ज्जावश्रेषय श्रोधनी दादशांशकः।

क्लेदनयतुरं यसु यमयाष्टांयको मतः ॥ ४१ ॥

दीपनस्तु षड़ंश्रय तपंणः पञ्चमांश्रकः।

भोषणः षोड्गांग्रस कायभेदा दतीरिताः॥ ४२॥

श्रथ प्रयोगकालभेदे श्रनुपानस्य नामभेदः ।—
श्रेयं रसादिकथनादनन्तरं किलानुपानं कथयन्ति स्र्यः ।
विवस्त्र च क्रामणमेतदौरितं राचौ पुनः पाचनमेतदूचिरे॥४३॥
श्रथ पथ्यनाम ।—

भात्मनीनन्तु पर्थं स्यादायुष्यं च हितश्व तत्॥ ४४॥
अथ भारोग्यनामानि।—

किलपाटवमारोग्यमगदं स्थादनामयम्। कल्पसु पटुरुज्ञाघो निरातङ्गो निरामयः॥ ४५॥ अगदो नीरुजो निरुगनातङ्गस्य कथ्यते॥ ४६॥

त्रय वैद्यनामानि ।— वैद्यः श्रेष्ठोऽगदङ्कारो रोगहारी भिष्ठिविधः ।

रोगचो जीवनी विद्वान् श्रायुर्वेदी चिकित्सकः॥ ४०॥

श्रय सद्वैद्यलच्चम्।— विप्रो वैद्यकपारगः ग्रुचिरनूचानः कुलीनः क्रती

भीरः कालकलाविदास्तिकमतिर्देचः सुधीर्धासिकः।

खाचारः समदृग्दयानुरखनो यः सिद्धमन्त्रक्रमः यान्तः काममनोनुपः क्षतयथा वैद्यः स विद्योतते ॥ ४८॥

त्रय कुवैयलचयम्।—

श्रधीर: कर्कश्रो लुख: \* सरोगो न्यूनश्रिचित: †। पञ्च वैद्या न युज्यन्ते धन्वन्तरिसमा श्रपि॥ ४८॥

अध वैद्यप्रशंसा।—

पुमर्थाश्वलारः खलु करणसीख्यैकसुभगास्तरेतद्वैषज्यानवरतिनिषेवैकवधगम् ।
तदप्येकायत्तं फलदमगदङ्कारकपया
ततो लोके लोके न परसुपकर्त्तेवमसुतः ॥ ५०॥
राजानो विजिगोषया निजसुजप्रक्कान्तमोजोदयात्
श्रीर्यं सङ्कररङ्कसद्मनि यथा संविश्वते सङ्कताः ।
यिस्मन्नीषधयस्तथा ससुदिताः सिध्यन्ति वीर्याधिका
विप्रोऽसौ भिषगुच्यते स्वयमिति श्रुत्याऽपि सत्यापितम् ॥५१॥

अय श्रोषधिखननविधिः तत मन्त्रश्च।—

यथावदुत्खाय ग्राचिप्रदेशजा दिजेन कालादिकतत्त्ववेदिना।
यथायथं चौषधयो गुणोत्तराः प्रत्याहरन्ते यमगोचरानिष ॥५२॥,
"येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते स्रगुः।
येनेन्द्रो येन वक्णः खनते येन केशवः।
तेनाहं त्वां खनिष्यामि सिद्धं कुक् महौषध !"॥ ५३॥

<sup>\*</sup> लुख द्रायत खब्बेति पाठान्तरं दृश्यते।

<sup>†</sup> न्यूनिप्रचित इत्यत्र नित्यशिचक इति पाठान्तरं इप्यते ।

### [ 844 ]

### राजिमघण्टुः।

विप्रः पठित्रमं सन्तं प्रयतात्मा सहीषधीम् ।

खात्वा खादिरकीलेन यथावत्तां प्रयोजयेत् ॥ ५४॥

श्रय श्रोषधमहिमा ।—

वीर्यं प्रकाश्य निजमोषधयः किलोचुदन्योऽन्यसुर्व्यपि दिवो सुवमाव्रजन्यः ।
जीवं सुसूर्षमपि यं हि वयं महिन्ना
स्वेन सुवीमहि स जालिप नैव नश्येत् ॥ ५५ ॥
प्रत्यायिताः प्रसुदिता सुदितेन राज्ञा
सोमेन साकसिदमोषधयः समूचुः ।
यस्मै दिजो दिश्यति भेषजमाश्य राजन् !
तं पालयाम इति च श्वतिराष्ट्र साचात् ॥ ५६ ॥
[इति श्वतिवाक्यम्।]

श्रासामीशो लिखितपिठतः स दिजानां हि राजा सिद्रैय यास दिजसञ्जिनं खास्रयं कासयन्ते । ताक्षेत्रान्यः प्रसरित सदाद्यस्तु जात्या च गत्या हीनः श्रुन्थो जगति कुपिताः पातयन्त्येनमेताः ॥ ५०॥

षय षष्ठाङ्गकयनम्।—
द्रव्याभिधानगदिनस्ययकायसीख्यं
प्रव्यादिभूतिवषग्रस्वालवैद्यम्।
विद्याद्रसायनवरं दृद्देस्त्रहेतुसायु:स्रुतेर्स्विचतुरङ्गमिस्तास् ग्रम्भु:॥ ५८॥
प्रव्यस्था—

अष्टाङ्गं भत्यभानाक्य-कायभूतिवषं तथा।

बाबो रसायनं वृष्यमिति कैश्विदुदाच्चतम् ॥ ५८ ॥ प्रथ त्रष्टाङ्गायुर्वेदाभिज्ञानभिज्ञयोः प्रशंसामग्रंसे ।— त्रष्टाङ्गज्ञः सुर्वेद्यो हि कियदीनो यथाऽङ्गतः । त्रुष्ट्रानः स विज्ञेयो न श्लाच्यो राजमन्दिरे ॥ ६०॥

ष्य परिष्ठतनामानि।—

प्राची विचः पिष्डितो हीर्घदर्शी भीरो भीमान् कोविदो लब्धवर्षः। दोषचः सन्दूरदर्शी मनीषी भेधावी चः स्रिविची विपश्चित्॥ ६१॥

वैज्ञानिकः क्षतमुखः संख्यावान् सितसान् क्षती।
कुणाणीयसितः क्षष्टिः कुण्यलो विदुरो वृधः ॥ ६२ ॥
निष्णातः णिचितो दचः सुदीचः क्षतमाः सुधीः।
ग्राभिज्ञो निपुणो विद्वान् क्षतकर्मा विवचणः ॥ ६३ ॥
विदम्धश्वतुरस्वैव प्रौढ़ो बोद्या विश्वारदः।
सुसेधाः सुमितस्तीच्याः प्रेचावान् विवुधो विदन् ॥ ६४ ॥

श्रथ बुद्धिनामानि।—

मनीषा धिषणा प्रज्ञा धारणा श्रेसुषी सित । धीर्बुडि: प्रतिपत् प्रेचा प्रतिपत्तिस्य चेतना ॥ ६५ ॥ संविज्ज्ञिप्तिस्थोपलब्धिस्थिन्सेधा सननं सन:। भानं बोधस्य हृक्षेख: संख्या च प्रतिभा च सा॥ ६६ ॥

अय रोगहित्वादिनाम।—

अय रोगहितादिनाम।—

अयदानं रोगहितुः स्थानिदानं रोगलच्चणम्।

चिकित्सा तत्प्रतीकारः श्रारोग्यं रुङ्निवर्त्तनम् ॥ ६० ॥ श्राय पथ्यभेदास्त्रज्ञचणद्य ।—

भार्डः पेया विलेपी च यवागृः पथ्यभेदकाः । भक्तेविना द्रवो मार्डः पेया भक्तसमन्विता ॥ विलेपी बहुभक्ता स्थाद्यवागूर्विरलद्रवा ॥ ६८॥

श्रथ विद्लनाम।—

विदलं माष्रमुद्गादि पक्षं सूपाभिधानकम् ॥ ६८ ॥ अय पथादिखरूपम् ।—

पादाहारं पष्यमाहुश्र वैद्या विद्यादर्षीहारमाहारसंज्ञम्। पादोनं स्थाद्गोजनं भोगमन्यदिद्याच्छेषं वातदोषप्रस्त्ये॥००॥

त्रयावनाम।नि ।—

ग्रनं जीवनमाहारः क्रं किष्पुरोदनम् । ग्रन्थो भिस्राऽदनं भोज्यमनाद्यमणनं तथा ॥ ७१॥

त्रधानभेदाः।—

भोन्यं पेयं तथा चोष्यं लेच्चं खाद्यञ्च चर्वणम्। निष्येयं चैव भच्चं स्थादनमष्टविधं स्मृतम्॥ ७२॥

अध व्यञ्जननामानि।-

व्यञ्जनं स्प्राकादि मिष्टात्रं तेमनं सृतम् । उपदंशो विदंशः स्थात् सन्धानो रोचकश्च सः ॥ ७३॥

श्रथ भीजननामानि।—

जिमनमभ्यवहारः प्रत्यवसानञ्च भोजनं जिष्धः । बल्सनमग्रनं स्वदनं निवसाहारौ च निगरणं न्यादः ॥ ७४ ॥

### रोगादिवगः।

[828]

त्रय भोजनभेदाः।--

जचणं भचणं लेष्टः खादनं रसनखदी। चर्वणं पानपीती च धयनं चूषणं भिदाः॥ ७५॥

त्रय षडुसनाम।-

सधुरी लवणस्तिकः कषायोऽन्तः कटुस्तथा। सन्तीति रसनीयत्वादनाचे षड्मी रसाः॥७६॥

त्रय मधुरसः।—

मधुरं लौख श्रमित्या हरिच्हादी च स लच्चते॥ ७७॥

त्रथ लवखरसः।—

लवणस्तु पटुः पप्रोत्तः सैन्धवादी स दृष्यते ॥ ७८ ॥ अय तिक्तरसः ।—

तित्तञ्च पिचुमन्दादी ३ व्यक्तमाखाद्यते रसः॥ ৩८॥

अय वाषायरसः।--

कषायसुवर: प्रोत्तः स तु पूगीफलादिषु ॥ ८०॥ अध ग्रस्तरसः।—

म्रम्बस्तु चित्राजम्बीर-मातुतुङ्गफलादिषु ॥ ८१ ॥ म्रय कट्टरसः।—

कट्सु तीन्स्संज्ञः स्थान्सरीचादी स चेन्यते॥ ५२॥

- त्रत गौल्य द्रत्येष पाठभेदः केषुचित् पुराकेषु द्रस्यते ।
- † पटु इत्यत्न वर इति पाठान्तरं दृखते; तत्त् चिन्त्यम्।
- ‡ पिचुमन्दादो पिचुमर्हादो, निम्बादाविति स्कुटार्थः।

### राजनिवखुः।

अध मधुर्वसगुवाः।—

मधुर्य रस्यिनोति केशान् वषुषः स्थैयीबलीजोवीयीदायी । अतिसेवन्तः प्रमेहशैली जड़तासान्यसुखान् करोति दोषान्॥ ८३॥

श्रय खववारसगुवाः।—

लवणो क्चिक्कद्रसोऽग्निदायो पचनः खादुकरय सारक्य । श्रतिसेवनतो जराञ्च पित्तं सितिमानच ददाति कुष्ठकारी ॥८४॥

त्रय तिहारसगुयाः ।—

तिक्तो जन्तून् इन्ति कुष्ठं ज्वरात्तिं कासं दाहं दीपनी रोचनञ्च। मर्च्यगीदं प्रत्यहं सेवितस्रेत्तीवं दत्ते राजयन्त्राणमेषः ॥ ८५॥

श्रष क्षायरसगुगाः।—

कषायनामा निक्षणि शोर्फं वर्णं तनोदींपनपाचनस्य। सन्तापहोऽसी शिथिललकारी निषेवितः पाण्ड् करोति गात्रम्॥८६॥

षायास्त्रसमुखाः।—

चक्काभिधः प्रीतिकरो क्चिप्रदः
प्रपाचनोऽग्नेः पटुताञ्च यक्कृति ।
भ्रान्तिञ्च क्रष्ठं कप्रपाण्डुताञ्च
कार्ण्याञ्च कासं क्रक्तिऽतिसेवितः ॥ ८७ ॥

ष्रय कटुरसगुगाः।—

कटुः कफं कच्छजदोषधोफसन्दानलिखतगदानिहन्ति । एषोऽपि दत्ते बहुसेनितस्रेत् चयावहो नीश्येबलचयस्र ॥ ८८॥

> त्रथ वातादिदीषप्रविविध्यनिर्देशः।— कटुः कषायस क्रफापहारिणी माधुर्य्यतिक्ताविष पित्तनाश्रनी।

पट्टक्ससंज्ञी च रसी सक्दरी दृश्यं दियोऽसी सक्तलासयापद्याः॥ ८८॥ [ दति षद्रसवीर्योक्तिः। ]

त्रध नियरसनिर्देशः।—

अन्योऽन्यं सधुरान्ती लवणान्ती कटुतिसकी च रसी। कटुलवणी च स्थातां सिश्रवसी तिक्तलवणी च॥ ८०॥

अय परस्परविरुद्धरसाः।—

लवर्षसध्रे विद्वावय कटुसध्रे च तिन्नसध्रे च। साधारणः कषायः सर्वेच समानतां धत्ते॥ এ१॥ प्रय रहानां विपाताः।—

संधत्ते सधुरोऽष्त्रतां च खवणो धत्ते यथायत् स्थितिं तित्ताख्यः कटुतां तथा सधुरतां धत्ते कषायाद्वयः। श्रक्तिस्तित्तविं ददाति कटुको यात्यन्ततस्तित्तता-सित्येषां खिवपाकतोऽपि कथिता षखां रसानां स्थितिः॥८२॥

मध्रोऽब्तः कटुस्तितः पटुस्तुवर इत्यमी । क्रमादन्योऽन्यसङ्गीर्णा नानात्वं यान्ति षड्नसाः ॥ ८३ ॥ अय विषष्टिरसभेदाः ।—

श्राद्याद्यो सधुरादिश्वेदेक्षेकेनोत्तरेण युक्।
हिकभेदाः पञ्चदम पर्यावैः पञ्चभिस्तया ॥ ८४ ॥
श्राद्यः सानन्तरः प्राम्बदुत्तरेण युतो यदा।
चतुर्भिरिप पर्यायैराचे प्रोक्ता भिदा दम ॥ ८५ ॥
एवं हितीये षड्भेदास्कृतीये च तयः स्मृताः ।
चतुर्थे चैक इत्थेते तिकभेदास्तु विंग्रतिः ॥ ८६ ॥

# राजनिष्यः।

त्राची सानन्तरी तिः षड़ेक्वैकाग्रिमयोगतः। त्यत्ते दितीये चलारः स्वाग्रिमैनैकसंयुते॥ ८७॥ त्राचे त्यत्ते तु पच्च स्यः स्वाग्रिमैकैकसंयुते। चतुष्कभेदा इत्येते क्रमात् पच्चदग्रीरिताः॥ ८८॥ ततः पञ्चकभेदाः षड्कैककत्यागतः स्मृताः। एक: सर्वसमासेन व्यासे षड़िति सप्त ते॥ এএ॥ एवं: त्रिषष्टिराख्याता रसभेदा: समासत:। तारतम्येष्वसंख्यातास्तान् वेत्ति यदि ग्रङ्करः ॥ १००॥ अय वं इयादिनामानि।-वं इणं पुष्टिदं पोष्यमुखं पोनलदञ्च तत्। वीर्ध्यवृद्धिकरं वृष्यं वाजीकरणवीजक्षत् ॥ १०१॥ ग्राप्यायनं तर्पणञ्च प्रीणनं तीषणञ्च तत्। निष्यन्दनमभिष्यन्दि नेत्रद्रावं सरच्च तत् ॥ १०२ ॥ इति बहुविधरोगव्याधितोपक्रमोऽच प्रक्रतिभवगनुकाचारपथ्यप्रयोगम् । इसमखिलमुदिला वर्गमुलागीसिडान् प्रवदतु स च विद्वानासयप्रत्ययांस्तान् ॥ १०३॥ येन व्याधिशतास्वकारपटलीनिष्कासनाभास्कर-प्रायेणापि पुनस्तरां प्रविह्तिता हन्त ! दिषां व्याधय: । तस्यायं क्रतिवाचि विंग्रतितमः श्रीमन्सिंहिपितुः श्रान्तिं नामिकरीटमण्डनमणी वर्गी गदादिर्गतः ॥ १०४॥ द्रित श्रीमनरहरिपण्डितविरचिते निचयुराजापरनाम्माभिधान-चूड़ामणो रोगप्रकरणं नाम विंग्नो वर्गः।

# अय सत्त्वादिवर्गः।

----

त्रघ सत्तादिगुणाः तदात्मकदोषाञ्च।-सच्चं रजस्तमश्रेति पुंसासुतास्त्रयो गुणाः। तेषु क्रमादमी दोषाः कफपित्तानिलाः स्थिताः ॥ १॥ सत्तं श्रेषा रजः पित्तं तमश्वापि समीरणः। द्रव्यस्य मानसुद्रितं पुंसि पुंस्यनुवर्त्तते ॥ २ ॥ त्रघ सत्त्वगुगस्तरूपम।— सत्तं मनोविकाशः स्थान्त्रत्वायत्ता तथा स्थितिः ॥ ३ ॥ श्रय रजीगुगस्क एम।-रजो रूषणसुद्रेक: कालुष्यं मतिविभ्नम:॥ ४ ॥ अय तमीगुणखरूपम्।-तमस्तिमिरमान्यञ्च चित्तोन्मादञ्च सूढ्ता। द्वद्यावरणं ध्वान्तमन्धकारो विमोहनम्॥ ५॥ श्रथ वायुनामानि।-वातो गन्धवही वायु: पवमानी महाबल:। स्पर्धनो गन्धवाची च पवनो सर्दाश्चगः॥ ६॥ श्वसनी मातरिष्वा च नभस्वान्मारुतोऽनिल:। समीरणो जगत्राण: समीर्य सदागति: ॥ ७ ॥

प्रधावनीऽनवस्थानी धूननी सोटन: खग: ॥ ५ ॥

जवनः पृषदखय तरस्वी च प्रभन्ननः।

श्वाचेऽपि वायवो देहे नाड़ीचक्रप्रवाहकाः। सया वित्तत्य नोक्षास्ते ग्रन्थगीरवभीक्णा॥ ८॥ श्रष्ट प्रकृतयः।—

सत्त्वादिगुणसिम्नन-दोषत्रयवशात्मना । ग्राभ्यन्तरच वाह्यच खरूपं सिन्नरचते॥ १०॥ ग्रथ सात्त्विकत्वसम्।—

सच्वाकाः श्रविरास्तिकः स्थिरमितः प्रष्टाङ्गको धार्मिकः कान्तः सोऽपि बहुप्रजः सुमधुरचीरादिभोज्यप्रियः । दाता पात्रगुणादृतो द्वततमं वाग्मी क्षपातुः समो गौरः स्थामतनुर्धनाम्बृतुहिनस्वप्रेचणः स्रोक्षतः ॥ ११ ॥

भ्रघ राजधिकलच्यम्।—

राजस्यो लवणान्त्रतित्तकटुकप्रायोश्णभोजी पटुः प्रौद्रो नातिक्षग्रोऽप्यकालपिलती क्रोधप्रपञ्चान्तितः । द्राघीयान् महिलाग्रयो वितरिता सोपाधिकं याचितो गौराङ्गः कनकादिदीप्तिललितः स्वप्नी च पित्तात्मकः ॥ १२ ॥

त्रय तामसिक्वचयम्।—

निद्रातुर्बेह्रभाषकः सुकुटिनः क्रूराययो नास्तिकः प्रायः पर्युषितातिश्रीतिवरसाहारैकनिष्ठोऽलसः । कार्येष्वत्यभिमानवानसमये दाता यथेच्छं क्षशः स्त्रे व्योमगितः सितीतरतनुर्वातृलकस्तामसः॥ १३॥

श्रध निश्रमकतिलच्चम्।— सन्तादयो गुणा यत्र मिश्रिताः सन्ति भूयसा। मिश्रमकतिकः सोऽयं विज्ञातन्यो मनीविभिः॥ १४॥

# सत्तादिवर्गः।

1 820 1

त्रपिच।-

सुल्वादिरजसा सिन्धे श्रेष्ठं सत्तादिताससे। सध्यसं रजसा सिन्धे कनीयो गुणसित्रणम्॥ १५॥

अध गुणतयलचणम्।—

सत्त्वं चित्तविकाशमाश्च तन्ते दत्ते प्रबोधं परं कालुष्यं कुरुते रज्ञस्तु मनसः प्रस्तीति चाव्याक्तिम् । श्रास्थ्यं इन्त हृदि प्रयच्छिति तिरोधत्ते स्वतत्त्वे धियं सन्धत्ते जड़तां च सन्ततसुपाधत्ते प्रमीलां तमः ॥ १६॥

श्रय वातस्य स्वरूपं प्रकोपकालय।—

वातः खैरः स्याब्रष्ठः शीतरूचः स्त्यस्यर्भज्ञानकस्तोदकारी।
माधुर्याने \* सोऽभ्नकालेऽपराच्चे प्रत्यूषेऽन्ने याति जीर्णे च कोपम्
॥ १०॥

अय पित्तस खरूपं प्रकीपकालय।—

पित्तञ्च तिक्ताम्बरसञ्च सारकं चोश्णं द्रवं तीन्त्यामिदं मधी बहु। वर्षान्तकाले स्थमर्बरात्रे मध्यन्दिनेऽन्नस्य जरे च कुप्यति ॥१८॥

श्रय श्रेषाणः खरूपं प्रकीपकालश्च।—

स्रोषा गुरु: श्रान्तामृदु: स्थिरस्तथा स्निग्ध: पटु: श्रीतजड़श्च गौत्यवान्। श्रीते वसन्ते च स्थां निशामुखे पूर्वेऽक्नि भुक्तोपरि च प्रकुप्यति॥ १८॥

<sup>\*</sup> पाठस्थास्य काऽपि ऋधैसङ्गतिन दृष्यते । "मेघाक्त्रने" वा "ग्रोते वाते" दति पाठकस्यनं सङ्गताधैकमिति दृष्टस्यम् ।

### राजनिष्धः।

अय दोषत्रयस तिषष्टिधा भेदनिरूपसम्।-

दोषत्रयस्य ये भेदा विषिचयिविकस्पतः ।

तानतः सम्प्रवच्चासि संचेपार्थं समञ्जसम् ॥ २०॥

एक्तेकवृषी स्युभेंदास्त्रयो ये वृष्ठिदास्त्रयः ।

तत्राप्येकतरा ह्यर्थं षड्वं द्वाद्येव ते ॥ २१॥

वृष्ठान्योऽन्यव्यत्ययाभ्यां षट् तिवृष्ठ्या तु सप्तमः ।

वृष्ठोऽन्योऽन्यो वृष्ठतरः परो वृष्ठतमस्त्रिति ॥ २२॥

तारतस्येन षडभेदास्त एवं पञ्चविंग्रतिः ।

एवं चयेऽपि तावन्तस्ततः पञ्चामदीरिताः ॥ २३ ॥ वडोऽन्योऽन्यः समोऽन्यञ्च चीणस्त्रिति पुनञ्च षट् । दिव्वदैप्रकचयादुत्त-व्यत्ययाच पुनञ्च षट् ॥ २४ ॥ एते दारम्यतः सर्वे दिषष्टिः समुदाहृताः ।

तिषष्टिस्विन्तिमो भेदस्त्रयाणां प्रक्तती स्थिति: ॥ २५ ॥ . एवं दोषत्रयस्थैतान् भेदान् विज्ञाय तत्त्वत: ।

ततो भिषक् प्रयुद्धीत तदवस्थोचिताः क्रियाः ॥ २६ ॥

त्रय कालस नाम भेदतयञ्च।—

कालसु वेला समयोऽप्यनेहा दिष्टञ्चलञ्चावसरोऽस्थिरञ्च। सोऽप्येष भूतः किल वर्त्तमानस्तथा भविष्यन्निति च त्रिधोक्तः॥२०॥

अतौतादिकालतयस्य नाम।—

भूते वृत्तमतीतञ्च ह्यस्तनं निस्तं गतम्। वर्त्तमाने भवचाद्य-तनं स्याद्धनातनम्॥ २८॥ श्रनागतं भविष्ये स्यात् खस्तनञ्च प्रगेतनम्। वर्त्यं इर्त्तिष्यसाणं च स्थादागासि च भावि च॥ २८॥

त्रय साधारणादीनां चतुर्थां नाम।-

साधारणन्तु सामान्यं तत्सर्वनानुवर्त्तते। विभीषणं विभीषय सक्षत्स्थाने च वर्त्तते। तुर्यं पादं चतुर्थांभ्रमीषिकिञ्चित्तयोच्यते॥ ३०॥

त्रय शिवस्तुतिः।—

भूषापीयुषां ग्रस्तव्ही चोतप्रस्यन्दासन्द-स्वच्छन्दापूराम्यःस्वर्गङ्गासङ्गोन्सी तनसी तिम् । मेरुत्रीके तासक्री ड़ासङ्घाटी शोभनाम्य:-स्नाघा जङ्घालस्रीगीरी गृढ़ाङ्गं वन्दे प्रस्मुम् ॥ ३१॥

श्रव पर्लादिनिक्ष्पणम्।—

श्रव्दोचारे सकलगुरुके षष्टिवर्षप्रमाणि

मानं काले पर्लामिति दश स्थात् चणस्तानि तैस्तु।

षड्भिनीड़ी प्रहर दति ताः सप्त सार्वास्तथाऽहोरात्नो च्रेयः सुमितिभिरसावष्टभिस्तैः प्रदिष्टः॥ ३२॥

त्रथ पच-मास-संवसरिन रूप गम्।— पचः स्थात्पञ्चदमभिरहोरात्रे रुभाविसी। मासो द्वादमभिर्मासै: संवसर उदाहृत:॥ ३३॥

त्रघतुं निरूपग्रम्।-

हिश्यसैतादिभिर्मासैविज्ञेया ऋतवस्र षट्॥ ३४॥ अधायनादिनिक्पणम्।—

विभिक्तिभि: क्रमादेतै: स्थाताञ्च विषुवायने ॥ ३५ ॥

## [ 400 ]

# राजनिषयुः।

#### श्रय पलादिनाम।-

पतं विघटिका प्रोत्ता नाड़ी तासु त्रिविंग्रति:। नाड़ी तु घटिका प्रोत्ता तर्द्वयञ्च सुइत्तेकम्॥ २६॥

त्रथ प्रहरनाम।—

यामः प्रहर दत्युत्ती दिनभागी दिनांशकः॥ ३७॥ अधाहोरावनाम।—

श्रहोरात्रदिवारात्राहर्दिवाऽहर्निशानि च ॥ ३८॥ ॥ अध दिवानाम ।—

घस्नो दिनोऽपि दिवसो वासरो भाखरो दिवा ॥ ३८ ॥ त्रष्ट दिनस्य त्रंग्रचतुष्टयम्।—

प्राह्मापराह्ममध्याङ्ग-सायाङ्गाः स्युस्तदंशकाः ॥ ४०॥

अध प्रातनीम।

प्रातर्दिनादिः प्रत्यूषो निशान्तः प्रत्युषोऽप्युषः । व्यष्टञ्चाहर्मुखं कत्वं प्रगे प्रात्वं प्रभातकम् ॥ ४१ ॥

श्रधातपनामानि।-

म्रातपस्त दिनच्योतिः स्थालोको दिनप्रभा \*। रिवप्रकाशः प्रद्योतस्त्रमोऽरिस्तपनद्युतिः॥ ४२॥

श्रय प्रभागामानि ।— रोचिर्दीप्तिर्द्युति: ग्रोचिस्त्विडोजो भा रुचि: प्रभा । विभा लोकप्रकाणय तेज श्रोजायितच रुक्॥ ४३॥

दिनप्रभा दत्यव प्रभाकरेति पाठान्तरं दृश्यते ।

अय सन्धानामानि।—

सार्यसम्या दिनान्तय निशादिर्दिवसात्ययः। सार्य पित्रप्रस्थाय प्रदोषः स्थानिशासुखन् ॥ ४४ ॥

त्रय छायानामानि।—

क्टाया विभानुगा म्यामा तेजोभीक्रनातपः । स्रभीतिरातपाभावो भावालीना च सा स्राता ॥ ४५ ॥

अध रातिनामानि।—

शक्वरी चणदा रातिर्विशा श्वामा तमस्विनी।
तमी तियामा शयनो चपा यामवती तमा ॥ ४६॥
नक्षं निशीयिनी दोषा ताराभूषा विभावरी।
ज्योतिष्मती तार्किणी काली साऽपि कलापिनी॥ ४०॥

त्रय च्योत्सी-तिमसाराविनाम।—

सा ज्यौत्स्नी चन्द्रिकायुक्ता, तिसस्रा तु तसोऽन्विता ॥४८॥

अधार्द्वरावनाम।—

अर्डरातो निग्रीये स्थानाध्यरात्रश्च स स्मृतः ॥ ४८॥

त्रघ च्योत्सानाम।—

ज्योत्स्ना तु चन्द्रिका चान्द्री कीसुदी कामवस्नभा। चन्द्रातपश्चन्द्रकान्ता शीताऽस्रततरङ्गिणी॥ ५०॥

श्रय कान्तिनाम।--

कान्तिस्त सुषमा शोभा कविन्काया विभा शुभा। त्रीर्लक्मीर्दक्पियाऽभिख्या भानं भातिकमा रमा॥ ५१॥

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanaşi

#### [402]

#### राजनिष्यण्टः।

ययान्यकारनाम।--

तमस्तमिस्रं तिमिरं ध्वान्तं सन्तमसं तमः। श्रन्धकारस भूच्छायं तचान्धतमसं घनम्॥ ५२॥

अधातपादिगुगाः।—

त्रातपः कटुको रूचम्छाया सधुरशीतला । कित्रोषश्मनी ज्योत्सा सर्वव्याधिकरं तमः ॥ ५३॥ श्रय प्रतिपन्नाम ।—

पचादि: प्रथमाऽऽद्या च पचति: प्रतिपच सा ॥ ५४ ॥ अथ पचदग्रीदय (पूर्णिमा-अमावस्या) नाम।—

पचान्तोऽर्केन्दुविश्लेषः पर्व पञ्चदशौ तथा। दितीयं तु भवेत्पर्व चन्द्रार्कात्यन्तसङ्गमः॥ ५५॥

त्रथ पचस्य खरूपं तद्भेदश्च।—

प्रतिपदमारभ्येताः क्रमात् हितीयादिकास पञ्चदश । पचे तिथयो चेयाः पच्चस सितोऽसितो हिनिधः ॥ ५६॥

अय शुक्कपचनामानि।—

सितस्वापूर्थमाणः स्थात् ग्रुक्तश्च विग्रदः ग्रुदि ॥ ५० ॥ त्रुष अष्णपचनामानि ।—

असितो मिलनः क्षणो बहुलो विद च स्मृतः ॥ ५८॥ । अध्य मण्डलिक्पणमः ।— ,

दिवसैर्यंत्र तत्नापि वसुसागरसिम्मतै:। भिषक्त्रियोपयोगाय मण्डलं भिषजां सतम्॥ ५८॥ त्रय पूर्णिमानाम।—

पूर्णिमा पौर्णमासी च ज्यौत्सी चेन्दुमती सिता। सा पूर्वाऽनुसतिर्ज्ञेया राका स्यादुत्तरा च सा॥ ६०॥

त्रयामावयानाम।-

दर्भसु स्थादमावास्थाऽमावस्थाऽर्नेन्दुसङ्गम:। सा पूर्वा तु सिनीवासो दितीया तु कुइर्मता ॥ ६१ ॥ श्रय पचस्रसम्।—

सासार्षस्त भवेत्पचः स पञ्चदश्ररात्ननः ॥ ६२ ॥ भ्रथ मास्रस्टपम्।—

हिपच्खु भवेन्सासस्रैताचा हादशास्र ते ॥ ६३ ॥

ग्रथ चैतनामानि।--

चैत्रसु चैत्रिकश्वेती सधुः कालादिकश्व सः ॥ ६४ ॥ श्रथ वैश्वाख-च्येष्ठनामानि ।—

वैशाखो साधवो राधो, ज्येष्ठः ग्रुक्रस्तपस्तथा ॥ ६५ ॥ अथ ग्राषादु-यावग्रनामानि ।—

त्राषाटः ग्रुचित्ततः, त्रावणितः त्रावणो नभाश्वापि ॥ ६६ ॥ त्रघ भाद्रपदनामानि ।—

भाद्रो भाद्रपदोऽपि प्रौष्ठपदः स्यान्नभो नभस्यस्य ॥ ६० ॥

श्रयाश्विननामानि।—

द्रषस्वाखयुजय स्यादाष्ट्रिनः ग्रारदय सः ॥ ६८॥

## राजनिषयुः।

अथ कार्त्तिकनामानि। -

कार्त्तिको बाहुलोऽिप स्थाटूर्जः कार्त्तिकिकश्च सः ॥ ६८॥ श्रय मार्गश्रीर्धनामानि । —

मार्गः सहा मार्गशीर्ष आग्रहायणिकोऽपि सः॥ ७०॥
त्रय पौषनामानि।—

पौषसु पौषिकस्तैषः सहस्यो हैमनोऽपि च ॥ ७१ ॥ त्रय माध-फाबाुननामानि।— माधस्तपाः, तपस्यसु फाबाुनो वस्तरान्तकः ॥ ७२ ॥

श्रय ऋतूनां खरूपम्।—

चैत्रादिमासी दी दी स्युनीना षडृतवः क्रमात्॥ ७३॥
प्रथ वसन्तादिऋतूनां खरूपम्।—

भवेदसन्तो मधुमाधवाभ्यां स्थातां तथा ग्रुक्तश्ची निदाघः। नभोनभस्थी जलदागमः स्थादिषोर्जकाभ्यां ग्रादं वदन्ति ॥७४॥ हैमन्तकालसु सहःसहस्थी तपस्तपस्थी शिश्रिरः क्रमेण। मासदिकेनेति वसन्तकाद्या धीमद्भिक्ता ऋतवः षड़ेते॥ ७५॥

श्रय वसन्तनामानि।-

ऋतुराजी वसन्तः स्थात् सुरिममीधवी मधः। पुष्पमासः पिकानन्दः कान्तः कामरसङ सः॥ ७६॥

श्रथ निदाघनामानि।-

निदाघस्तूषको घर्मी ग्रीष जषागमस्तपः। तापनसोष्णकालः स्यादुष्णसोष्णागमस्र सः॥ ७०॥

### सत्त्वादिवर्गः।

[ ५०५ ]

अध वर्षानामानि।—

वर्षाः प्रावृड्वर्षकालो घर्मान्तो जलदागसः । सयूरोत्तासकः कान्तञ्चातकाञ्चादनोऽपि सः ॥ ७८ ॥ श्रय श्ररत्-नामानि ।—

श्ररदर्षावसाय: स्थान्सेघान्त: प्रावृङ्खय: ॥ ७८ ॥ श्रथ देमन्तनामानि ।—

জন্মাपहरत हैमन्तः श्ररदन्तो हिमागमः॥ ८०॥
अथ शिशिरनामानि।—

शिशिरः कम्पनः श्रीतो हिमक्टिश्व कोटनः । दलेतनामतः प्रोक्तस्तुषट्कं यथाक्रमम् ॥ ८१॥

अध प्रात्य चिक्स सतुषर्कम्।—

प्रह सुरिभिनिदाघमैघकालाः

गरिष्ठमित्रिश्चियनाः क्रमेण ।

प्रितिद्दिनस्रतवः स्युरुष्ट्वेमर्की
दयसमयाद्द्यकेन नाड़िकानाम् ॥ ८२॥

श्रिष्ठोत्तरायणस्रूपम ।—

मकरक्रान्तिमारभ्य भानोः स्थादुत्तरायणम् ॥ ८३॥

त्रय दिचणायनखरूपम् ।—
कर्कटक्रमणादूष्ट्वं दिचणायनसुच्यते ॥ ८४ ॥
त्रय विष्वस्य खरूपं नाम च ।—
यदा तुलायां मेषे च स्र्य्यसंक्रमणं क्रमात् ।

तदा विषुवती स्थातां विषुवे खपि ते स्मृते ॥ ८५ ॥ अध वसरस्य भेदी नामानि च।—

कालज्ञै: षष्टिराख्याता वसराः प्रभवादयः। भरत्संवसरोऽब्द्य हायनो वसरः समाः॥ ८६॥

म्राच ऋतुविशेषे वायुपवह्यास्य दिग्विशेषः !—

वसन्ते दिचणो वातो भवेदर्षासु पश्चिम: । उत्तर: शारदे काले पूर्वी हैमन्तग्रीगिरे ॥ ८०॥

अय पूर्वादिप्रवाहितवायुगुणाः ।—
पूर्वश्व सधुरो वातः स्त्रिग्धः कटुरसान्वितः ।
गुरुर्विदाइग्रमनो वातदः पित्तनाग्रनः ॥ ८८
दिच्चिणः षद्रसो वायुश्चचुष्यो बलवर्षनः ।
रक्षपित्तप्रग्रमनः सौख्यकान्तिबलप्रदः ॥ ८८ ॥
पश्चिमो मारुतस्तोन्द्याः कफमेदोविग्रोषणः ।
सदाः प्राणापहो दुष्टः ग्रोषकारी ग्ररीरिणाम् ॥ ८० ॥
उत्तरः पवनः स्त्रिग्धो स्रदुर्मधुर एव च ।
सक्षायरसः ग्रोतो दोषाणाच्च प्रकोपणः ॥ ८१ ॥

त्रथ दिग्वचयम्।—

कलैकमविधं तस्मादिदं पूर्वेच पश्चिमम् । इति देशौ निदिश्येते यया सा दिगिति स्मृता ॥ এ২ ॥

त्रय दिङ्गम तस्या भेदय ।— दिगाशा च हरिलाष्ठा ककुम्सा च निदेशिनि । सा च देशिवभागेन दश्रधा परिकल्पाते ॥ ८३॥ श्रथ पूर्वदिक्परिचयः।-

ज्योतीं वि तपनादीनि ज्योति अक्रस्यसीक्रसात्। यतो नित्यसुदीयन्ते सा पूर्वाख्या दिगुचते॥ ८४॥

त्रय दिक्चतुष्यय सामान्यनाम।—

पूर्वा च दिच्छा चैव पश्चिमा चोत्तराऽपि च।
प्रादिच्छित्रभिषैताश्वतस्त्रः स्युर्महादिषः ॥ ८५॥

श्रय पूर्वदिचययोनीमानि ।—

पूर्वा प्राची पुरो सघीन्धैन्द्री साघवती च साः। श्रासनी दक्षिणाऽवाची यासी वैवखती च सा॥ ८६॥

त्रय पश्चिमोत्तरयोनीमानि।-

पश्चिमा तु प्रतीची स्थादाक्णी प्रत्यगित्यपि। उत्तरा दिक् तु कीवेरी दैवी सा स्थादुदीचपि॥ ८०॥

अध विद्याः।—

दिशोईयोर्भध्ये यो भागः कोणसंज्ञकः। विदिशस्ताञ्चतस्त्रञ्ज प्रोत्ता उपदिशस्त्रया॥ ८८॥

अध विदिक्चतुष्ट्यस्य पश्चियः।—

म्राक्वेयो स्थात्राचवाचोस्तु मध्ये नैर्म्हत्याख्या स्थादवाचीप्रतीचो: । वायव्याऽपि स्थादुदीचीप्रतीचो-रैमानी स्थादन्तरा प्राचुदीचो: ॥ ८८॥

#### [405]

#### राजनिषयुः।

अधोर्द्वाधोसध्यदिशां परिचयः।-

उपरिष्टाद्दिगृड्वें स्थादधस्तादधरा स्नृता । ग्रन्तस्वभ्यन्तरं प्रोत्तसन्तरं चान्तरालकम् ॥ १००॥

त्रवाङ्गुलादिक्रमेण मार्गपरिमाणम्।—
स्पष्टस्त्वष्टयवैर्देशो मितो ज्ञेयोऽङ्गलाह्वयः।
स्याज्ञतुर्विंगकैस्तैसु इस्तो इस्तचतुष्टयम्॥ १०१॥
देश्हो देग्हैदिसाइस्तैः क्रोशस्तेषां चतुष्टयम्।
योजनं स्यादिति ह्येष देशस्योक्तो मिति-क्रमः॥ १०२॥

#### श्रय धान्यमानम्।---

. इति प्रस्तावतो वैद्यस्थोपयुक्ततया मया।

परिमाणं तथोन्मानमिति दितयमीव्येते॥ १०३ ॥

धान्ये सा निष्टिका पुंसो यक्त् सृष्टिचतुष्टयम्।

तद्दयेनाष्टिका ज्ञेया कुड़वस्तद्दयेन तु॥ १०४ ॥

प्रस्यस्तु तच्चतुष्कोण तच्चतुष्कोण चाढ़को।

तास्रतस्तो भवेद्रोणः खारो तेषान्तु विंग्रतिः॥ १०५ ॥

#### अधौषधपरिमाग्यम्।—

गोधूमिद्दितयोगितिसु कथिता गुन्जा तया सार्द्वया वज्ञो वज्जचतुष्टयेन भिषजां माषो मतस्तचतुः। निष्को निष्कयुगं तु सार्द्वसुदितः कषैः पसं तचतु-स्तदत्तच्छृतकीन चाथ च तुला भारस्तुलाविंग्रतिः॥ १०६॥

[इति नूकक्रमः।]

## सियकादिवर्गः।

[402]

दृश्यं सत्तरज्ञस्तमस्तिगुणिकानुक्रान्तदोषतयप्रक्रान्तोचितकालदेशकलनाभिख्यानसुख्यापितम् ।
वर्गे स्वर्गसभासु भास्त्रभिषम्बर्ध्यापितम् ।
धंसाय्रथेकरौं प्रयाति मितमानेनं पठित्वा प्रथाम् ॥ १००॥
संयामोत्सद्गरिङ्गत्तरगखुरपटोडूतधाचीरजोभिः
संरश्यं याति सान्द्रे तमसि किल श्रमं यद्दिषां याति सत्त्वम् ।
तस्त्रिषोऽप्येकविंशः अयति खलु क्वतौ नामनिर्माणचूड़ारत्नापोड़े प्रशान्तिं नरहरिक्वतिनः कोऽपि सत्त्वादिवर्गः ॥१०८॥

द्ति श्रीनरचरिपण्डितविरचिते राजनिचग्छौ सत्तादिरैकविंशी वर्गः।

# अध मिश्रकादिवर्गः।

--0\*0--

त्रय वर्गपरिचयः।--

यान्यीषधानि मिलितानि परस्परेण संज्ञान्तरैर्व्यवहृतानि च योगक्षज्ञिः। तेषां स्वरूपकथनाय विमित्रकाख्यं वर्गं महागुणसुदारसुदीरयामः॥ १॥

## राजनिघंखः।

श्रघ विकटुनाम ।—

पिप्पली सिरचं श्रुपढी व्रयसेतिहिसिश्रितम् ।

त्रिकटु व्रूप्रणं व्रूप्रणं \* कटुव्रयकट्त्रिकम् ॥ २ ॥

श्रघ विक्रलानाम ।—

हरीतकी चामलकं विभीतकिसिति व्रयम् ।

निक्रला विक्रली चैव फलव्रयफलविके ॥ ३ ॥ १

त्रथ मधुरिक्षणानाम।— द्राचाकाश्मर्थ्य १६ खर्जूरी-फलानि मिलितानि तु। मधुरिनफला जेया मधुरादिफलत्रयम्॥ ४॥

त्राघ सुगन्धितिपालानाम।—

जातीपलं पूगपलं लवङ्गकिलकाप्पलम् । सुगन्धित्रिपला प्रोक्ता सुरभितिपला च सा॥ ५॥

त्रथ वराईकम् त्रायपुष्पञ्च — चन्दनं कुङ्कुमं वारि ॥ त्रयमेतद्दराईकम् । त्रिभागकुङ्कुमोपेतं तदुक्तं चाद्यपुष्पकम् ॥ ६ ॥

- \* लूषम् इत्यत्न व्योषम् इति पाठान्तरं वर्तते।
- † ग्रम्यान्तरे त्वेवमाइ। तथाइ,—

  "एका इरीतकी योच्या हो च योच्यी विभीतको।

  लोखि चामलकान्याइस्त्रिपलेषा प्रकीर्तिता॥"
- ‡ काम्मय्यः गामारीफलम्, "गामारफल" इति भाषा।

प वारि ज्ञीवेरकम्; सुगत्ववाला दित पश्चिमादौः; करम्बाल सृष्टिवालेति महाराष्ट्रकर्णाटादौ प्रसिद्धम्। श्रसाहेशे गन्धवालेति ख्यातम्।

## सियकादिवर्गः।

[488]

अध खवखतयनाम।—

सैन्धवञ्च विङ्ञ्चैव रुचकं \* चेति मिश्रितम्। खवणनयमाख्यातं तच विलवणं तथा॥ ७॥

त्रय चारतयनाम।—

सर्जिचारं यवचारं टङ्गणचारसेव च। चारत्रयं समाख्यातं तिचारञ्च प्रकोर्त्तितम्॥ ८॥

श्रय समितियनाम।—

हरीतकी नागरञ्च गुङ्श्वेति त्रयं समम्। समित्रितयमित्युक्तं त्रिसमञ्च समत्रयम्॥ ८॥

श्रय मधुरतयनाम।—

सितामाचिकसपी पि मिलितानि यदा तदा। सधुरत्रयमाख्यातं त्रिसधु स्थान्सधुत्रयम्॥१०॥ १

अध विश्वकरानाम।-

गुड़ोत्पना हिमोत्पना मधुजातेति मित्रितम् । तिमर्करा च तिसिता सितातयसितातिने ॥ ११ ॥

<sup>\*</sup> रुचंकम् सीवर्षं खलवणम् ; सचललवण इति भाषा ; चीचारकी ड्रा इति पश्चिमादी ।

<sup>†</sup> सिता 'ग्राक्षेरा। माचिकः किवनर्णातिस्यूनवनमचिकाभिः नानापुष्पेभ्यः समाहृत्योत्पादितः तैनवर्णमधुविग्रेषः। सिर्पः (सप् गतौ, इत्यस्य रूपम्) संस्कारात् सपंचात् सिर्पः, हम्धसम्भूतस्रेष्ठे, प्रतिति पदार्थे।

## राजनिष्युः।

त्रय त्रज्ञनितयनाम।—

कालाञ्चनसमायुक्ते पुष्पाञ्चनरसाञ्चने । ग्रञ्जनतितयं प्राहुस्त्रयञ्चनं चाञ्चनतयम् ॥ १२॥

त्रय तिदीषनाम ।— वात: पित्तं कफश्चेति त्रयंभेकत्र संयुतम् ।

दोषत्रयं तिदोषं स्थाहोषतितयमित्यपि ॥ १३ ॥

श्रय समितदोषनाम।—

वातिपत्तकफा यत्र समतां यान्ति नित्यशः। विदोषसमसित्येतत्समदोषत्रयं तथा ॥ १४॥

त्रय विकारं कनाम।—

वहती चाग्निदसनी दु:सार्था चेति तु त्रयम्। कार्यकारीत्रयं प्रोक्तं त्रिकार्यं कार्यकात्रयम्॥ १५॥ ॥

अय विकार्षिकम्।—

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतिचिकार्षिकम् ॥ १६॥

श्रय चातुर्भद्रकम्।—

गुड़्चा मिलितं तच चातुर्भद्रसमुचते ॥ १७॥

अथ विजातकं चातुर्जातकञ्च।—

विगेलापत्रकें सुर्खेस्त्रसुगन्धि त्रिजातकम्। नागकेशरसंयुक्तं चातुर्जातकसुच्यते॥ १८॥ १

<sup>\*</sup> कर्यात्रविषु वस्तो, गणिकारी, दुरालमिति च बोबच्या।
† समभागत्वगेलापत्रवेश्वरायां यद्यात्रमं—"दार्विनि, एलाच,
तैजपत्र, नागेश्वर" द्रति भाषा।

त्रथ कटुचातुर्जातकम्।—

एलात्वक्पत्रकौसुर्व्वर्भरिचेन समन्वितै:। कटुपूर्वमिदं चान्यचातुर्जातकमुचते॥ १८॥

श्रय देवकर्दमः।---

श्रीखग्डागुरुकपूर-काश्मारैसु समांशकै:। स्रगाङ्कमुकुटार्चीऽयं मिलितैर्देवकर्दम:॥२०॥

श्रय यचकर्षः।—

कर्प्रागुरुकस्त्री-कक्कोलैर्यचधूपकः। एकोक्कतिमदं सर्वे यचकर्दम द्रष्यते॥ २१॥

श्रन्यच ।---

कुङ्गुमागुक्कुरङ्गनाभिकाचन्द्रचन्दनसमांशसम्भृतम्। त्राचपूजनपरैकगोचरं यचकदेमसिमं प्रचचते ॥ २२ ॥

त्रघ पञ्चसुगन्धिकम्।—

कर्पूर-ककोल-लवङ्गपुष्प-गुवाक-जातीफल-पञ्चकेन। समांग्रभागेन च योजितेन मनोहरं पञ्चसुगन्धिकं स्यात्॥२३॥

त्रय पञ्चकोलकम्।—

पिप्पलोपिप्पलोमूल-चव्यचित्रकनागरै:। सर्वैरेकत्र मिलितै: पञ्चकोलकमुच्यते॥ २४॥

श्रय पञ्चवेतसम् ( पञ्चवक्तत्तम् )।— न्यग्रोधोदुम्बराष्ट्रस्य-प्रचवेतसवल्कतः। सर्वेरिकत्र मिलितः पञ्चवेतसमुच्यते॥ २५॥ \*

<sup>\*</sup> न्यग्रोघः वटः, उद्गबरः यज्ञाङ्गव्यः, त्रश्वत्यः खनामस्यातः, रा—२३

# [894]

# राजनिष्ठग्टुः।

त्रघ लघुप चमू जनम्।

श्रालिपणी पृत्रिपणी वहती कण्टकारिका।
तथा गोच्चरकश्चेति लिघ्दं पञ्चमूलकम् ॥ २६॥
अध महापञ्चमूलकम्।—

विस्तोऽग्निमन्थः श्योनाकः काश्मर्थः पाटला तथा।
सर्वेसु मिलितैरतैः स्थान्महापचमूलकम्॥ २०॥
पचमूलकयोरतद्वयच्च मिलितं यदाः।
तदा भिषग्मिरास्थातं गुणास्यं दशमूलकम्॥ २८॥

ग्रथ मध्यमपञ्चमूलकम्।—

बलापुनर्नवैरग्छ-स्प्यपर्णीदयेन \* च। एकत्र योजितेनैतन्मध्यमं पञ्चमूलकम् ॥ २८॥

त्रथ पञ्चामतयोगः †।--

गुडूची गोच्चरश्वैव सूषली सुण्डिका तथा। श्रतावरीति पञ्चानां योगः पञ्चास्रतासिधः॥ ३०॥

महाराष्ट्रकर्णाटतैलङ्गेषु पिप्पल, राविचेटु, कुलुजुब्बिचेटु दति प्रसिदः। प्रदः पर्कटौष्ठदः, पाकुड़ दति भाषा। वेतसः खनामख्यातः पत्रश्चाक-लतायाम्; "वेतस काल" दति भाषा।

- सूप्यपर्णीदयग्रव्देन सुद्गपर्णीमाषपर्णावेव ग्राच्ची।
- † "गुनुष्ठ, गोनुर, तानमूनो, मुग्डोरो, प्रतमूनो," द्रत्येषां पञ्चद्रव्याणां मिनितसमभागः।

## सियवादिवर्गः।

[ ५१५ ]

षय दिव्यपचासतम्।—

गव्यसाज्यं दिध चीरं साचिनं शर्नरान्वितम्। एकत्र सिलितं चेयं दिव्यं पचास्रतं परम्॥ ३१॥

अध पञ्चगव्यम्।---

गोस्त्वं गोमयं चीरं गव्यमाच्यं दधीति च। युक्तमेतद्वयायोगं पचगव्यमुदाहृतम्॥ ३२॥

ग्रय पञ्चनिम्बम्।—

निख्वस्य पत्रत्वक्षुष्य-फलस्त्रुवैर्विमित्रितैः। पञ्चनिस्वं समास्यातं तत्तित्तं निस्वपञ्चकम्॥ ३३॥

त्रय पञ्चास्त्रफलम्।—

कोल-दाड़िम-द्वचान्तं चुन्नको सान्तवितसा। फलं पञ्चान्त्रसुद्दिष्टमन्त्वपञ्चफलं स्मृतम्॥ ३४॥ ्\*

श्रय पालाम्हपञ्चकम्।-

जम्बीर-नारङ्ग-सहाम्बवेतसैः सितन्तिङ्गेकैय सवीजपूरकैः। समांग्रभागेन तु मेलितैरिदं दितीयमुक्तत्र फलाम्बपञ्चकम्॥३५॥\*

<sup>\* &</sup>quot;कुल, दाड़िम, तं तुल, चुल्लक, अखनेतस।" दति च यथाकम-मेतेषां वङ्गभाषा। एतानि समभागमिश्वतपचद्रव्याणि। "चुल्लकी" द्रत्यत्र "चुक्रिका" दति पाठान्तरं दृष्यते।

<sup>† &</sup>quot;गों ज़ालेवु, नाराङ्गालेवु, श्रस्तवेतस, ते तुल, टावालेवु।" इति च यद्यात्रममेतेषां भाषाः ; तेषां भाषान्तरं च खखपर्याये सम्यम्।

[ 48 £ ]

## राजनिष्ययुः।

अधास्त्रवर्गः।--

चाङ्गेरी लिकुचाक्तवेतसग्रतं जग्बीरकं पृरकं
नारङ्गं फलषाड्विस्तित तु पिग्डाक्तञ्च वीजाक्तकम्।
ग्रम्बष्टासिहतं दिरेतदुदितं पञ्चाक्तकं तद्दयं
विज्ञेयं करमर्दनिम्बुक्तग्रतं स्यादक्तवर्गोद्वयम्॥ २६॥ #
ग्रथ पञ्चिक्तवौष्टिकम्।—

तैलकन्दः सुधाकन्दः क्रोड़कन्दो क्दन्तिका ।
सर्पनेत्रयुताः पञ्च सिडीष्रधिकसंज्ञकाः ॥ ३० ॥
त्रथ पश्चग्रैरीषम् ।—
ग्रैरीषं कुसुमं मूलं फलं पत्नं लगित्ययम् ।

# चाङ्गरी श्रम्सली शिका, श्रामकल द्दात वङ्गमाषा; चिं चौपतिया;
मं श्राम्बवती; कं पुलुम्बु शिक्षे । लिकुचम् चुक्रम्; चुकापाल इदित वङ्गमाषा; (लिकुच दृत्वत लकुचिति पाठान्तरं दृष्ट्यते; मतान्तरे इस्वत्वचः; चिं वड्हर; डेलो द्दात वङ्गमाषा।) श्रम्बवेतस चिं श्रामलटास; "धैकल" द्दात लोकी। जम्बीरकः जामीर द्दात वङ्गमाषा; चिं निम्बू; मंदड़; कं किचिले; तें निम्बचिट्ट। पूरकः वीजपूरकः; टावालेव द्दात वङ्गमाषा; चिं विजीरा; मं माइलिङ; कं माघला; तें मादोपल पुचेट्ट; उत् कलम्बा। नार इं नागर इम् ; चिं सन्त्रा, नाराङ्गो; तें गञ्जनिमा; नार्राजिचेट्ट; तां किचिलिचेट्ट। प्रत्का खनायः द्दां स्वानर; तें डानिमाचेट्ट; तां मादल दचेचे डिड । पिग्रास्चं किपित्यास्तम्। वीजासं वृद्धास्त्रम्। श्रम्बष्टा श्राम्रातक्तम्। करमदेकं खनाम ख्यातम्। वीजासं वृद्धास्त्रम्। श्रम्बष्टा श्राम्रातकम्। करमदेकं खनाम ख्यातम्; "करमचा" दित वङ्गमाषा; चिं करी दा; मं करवन्दे; कं करिजिंगे। निम्बूकम् श्रस्त जम्बोरम्; "कागजीलेवु" दित वङ्गमाषा; मं निम्बे; कं निम्बू।

### सियकादिवर्गः।

[ ५१७]

कीटारि: कथितो योग: पच्च भैरीषकाभिध: ॥ ३८॥

अय पञ्चाङ्ग ।—

लक्पत्रज्ञसमं मूलं फलमेकस्य गाखिनः। एकत्र मिलितं तचेत् पञ्चाङ्गमिति संज्ञितम्॥ ३८॥

अध पञ्चगगः।-

विदारिगन्धा वृत्तती प्रश्निपणी निदिग्धिका। श्वदंष्ट्रा चेति संप्रोक्षो योगः पञ्चगणाभिधः॥ ४०॥ \*

अय पञ्चभूरसम्। —

श्रत्यन्त्वपर्णी-काग्छीर-सालाकन्द-दिशूरणै:। प्रोत्तो भवति योगोऽयं पञ्चशूरणसंज्ञकः॥ ४१॥

अय महापञ्चविषम्।—

मृङ्गिकः कालकूट्य मुस्तको वत्मनामकः। सक्तुकर्यति योगोऽयं सहापच्चिविषाभिषः॥ ४२॥ १ ग्रय उपविषाणि।—

सुद्धर्ककरवीराणि लाङ्गली विषमुष्टिका। एतान्युपविषाखाद्यः पश्च पाण्डित्यमालिनः॥ ४३॥ क

<sup>\*</sup> प्रालिपाणि, वृद्दती, चाकुले, किएकारी, गोचुर; दति च यथान्नममेतेषां वङ्गमाषाः।

<sup>†</sup> ग्रिङ्किः खावरविषमेदः। ग्रिङ्कि इत्यत ग्रिङ्को चेति पाठा-न्तरमस्ति। सत्तुकं इत्यत श्रोक्किकेयः ग्रङ्ककार्णैति च पाठमेदो हम्येते। सत्तुकः "कातारिविष" इति वङ्गभाषा।

<sup>‡</sup> सुची, "मनसा" इति वङ्गभाषा; चिं घुचर, तिधार, जाकुनिया; ते'चेसुड़चेटु; वम्० निवडुंग। अर्कः "आकन्द" इति वङ्गभाषा; चिं

### राजनिष्ययुः।

अध मूलपञ्चकम्।—

गवामजानां मेषीणां महिषीणां च मित्रितम्। मूत्रेण गर्दभीनां यत्तन्मूतं मूत्रपञ्चकम्॥ ४४॥

त्रय तिलोइं पञ्चलोइकच ।-

सुवर्षे रजतं ताम्बं त्रयमेतिचिनोच्चम् ॥ ४५ ॥ वङ्गनागसमायुक्तं तत्राद्यः पञ्चलोच्चमम् ॥ ४६ ॥

श्रध ग्रहाङ्गपञ्चलोहकम्।— सुवर्षे रजतं ताम्बं त्रपु क्षणायसं समम्। ग्रहाङ्गमिति बोद्धव्यं हितीयं पञ्चलोहकम्॥ ४०॥

त्रथ चारपञ्चकम्।—

यव-मुष्कक-सर्जानां पलाश-तिलयोस्तथा। चारैसु पञ्चभि: प्रोक्त: पञ्चचाराभिधो गण:॥ ४८॥

श्रथ लवगपचनं लवगषट्कच।— काच-सैन्धव-सामुद्र-विड्-सीवर्चलै: समै:॥ ४ ८॥ स्यात् पञ्चलवगं तच मृत्स्नोपेतं षड्।ह्वयम्॥ ५०॥

त्रिष्य चारष्ठ्कम्।— धवापामार्गकुटज-लाङ्ग्लीतिलसुष्कजै:। चारैरेतैसु मिलितै: चारष्ठ्कसुंदाहृतम्॥ ५१॥

मान्दार; मं रुद्द; कं त्रको; तें जिह्नेट्चेट्ट् । करवीर: करवी दति वङ्गमाधा; हिं कर्यों ली; मं कर्यों रू, कङ्कोर; कं वाफ या लिङ्के; तें गनेरु । लाङ्गलि: विष्ठलाङ्गलिया दति वङ्गमाषा। विष्रमुष्टिका केश-मुष्टि:, "विषदोड़ी" दति लोके।

## सियकादिवर्गः।

[482]

त्रय सप्तधातवः।—

रसास्रञ्जांसमेदोऽस्थि-मजाग्रज्जसमाह्नयै:। ग्रहोरस्थैर्थदैरेतै: सप्तधातुमयो गण:॥ ५२॥

अथ महारसाष्ट्रकम्।—

दरदः पारदं सस्यो \* वैक्रान्तं कान्तमभ्रकम् । माचिकं विमलचेति स्युरितेऽष्टौ महारसाः ॥ ५३॥

त्रयोपरसाः।-

खेचराञ्जन-कङ्गुष्ठ-गन्धाल-गैरिक-चिती:। ग्रैलेयाञ्जनसंसित्रा: ग्रंसन्त्युपरसान् बुधा:॥ ५४॥

अध सामान्यसाः। --

कम्पिन्न-गौरी-चपला-कपर्द-सग्रैल-सिन्ट्र्रक-विज्ञजारान्। पाषाणिनो वोदरशृङ्गयुक्तानित्यष्ट सामान्यरसानि चाहु:॥ ५५॥

अघाष्टलोहकम्।—

पञ्चलोच्चमायुक्तैः कान्तमुण्डकतीन्त्याकैः। कल्पितः कथितो धीरैरष्टलोच्चाभिधो गणः॥ ५६॥

त्रय चारदश्कम्।—

शियु-सूलक-पलाश-चुक्रिका-चित्रकार्द्रक-सनिस्वसक्थवै:।
दुच्च-श्रैखरिक-सोचकोद्भवै: चारपूर्वदशकं प्रकीत्तितम्॥ ५७॥१

- 🔹 । स्यो दत्यत प्रद्धः सोसचिति पाठमेदौ दृश्येते।
- ्र † स्विना, मूला, पलाग्र, तिन्तिड़ो, विता, ग्रादा, निम्ब, दच्नु, ग्रपानार्ग, नदलो दति च यद्याक्रममेतेषां वङ्गभाषा।

#### राजनिष्ठयुः।

अध मूलद्शाकम्।—

मूत्राणि इस्ति-सिंहषोष्ट्र-गवाजकानां मेषाध्व-रासभक-मानुष-मानुषीणाम्। यत्नेन यत्र मिलितानि दशेति तानि श्रास्त्रेषु मूत्रदशकाह्वयभाष्त्रि भान्ति॥ ५८॥

त्रय मधुरजीवकादिगयः।--

स्याज्जीवनर्षभक-युग्ययुग-हिमेदा-नाकोलिनाह्ययुतहिकस्प्यपर्णा । जीव्या मधूनयुतया मधुराह्मयोऽ योगो महानिह विराजति जीव ादि: ॥ ५८॥ #

त्रयाष्ट्रवर्गः ।-

जीवकर्षभकी मेरे काकोच्याव्यविविविक्त । एकत्र मिलितैरतैरष्टवर्गः प्रकोर्त्तितः ॥ ६०॥

श्रय सर्वीषधिगगः।—

कुष्ठ-मांसी-हरिद्राभिर्वचा-श्रेलीय-चन्दनै:। सुरा-कर्चूर-सुस्ताभि: सर्वीषधसुदाह्वतम्॥ ६१॥

त्रय विश्ववारः।—

श्रजाजी सरिचं शुग्ही ग्रन्थि धान्यं निशाह्वयम्।

<sup>\*</sup> जीवक, ऋषभक, ऋडि, वृडि, भेटा, महागेटा, काकोलो, द्वीरकाकोलि, मुझपर्यों, माषपर्यों, जीवन्तो, यष्ट्रमधु दति च यथाक्रम-भेतिषां वङ्गमाषा।

सर्वीविधिसमायुक्ताः शुष्काशासन्तवचः।

यदा तदाऽयं योगः स्थात् सुगन्धामलकाभिधः ॥ ६३ ॥

श्रय सन्तर्पेग्रम्।—

द्राचादाड़िमखर्जूर-कदलीयर्करान्वितम्। लाजाचूर्षं समध्वाच्यं सन्तर्पणसुदाच्चतम् ॥ ६४॥

अध मन्यः । ---

सक्त्मिः सिर्पेषाऽभ्यतैः श्रीतवारिपरिष्ठुतैः । नात्यक्की नातिसान्द्रस मन्यः दत्यभिधीयते ॥ ६५ ॥ अध रक्तवर्गः ।—

दाड़िमं निंग्रजं लाचा बन्धूकच निगाह्वयम्। कुसुक्षपुष्पं मिच्चिष्ठा द्रत्येते रक्तवर्गेकः॥ ६६॥ १ त्रय ग्रुक्तवर्गः।—

खटिनी खेतसंयुक्ताः शङ्घ ग्रुक्तिवराटिकाः । सृष्टा सम्प्रक्तरा चिति श्रुक्तवर्गे उदाहृतः ॥ ६०॥

त्रघ भार्यादिः किरातादिः दिविधाष्टादश्राङ्ग ।— अभार्गीशरीपुष्करवत्सवीजदुरालभाग्रङ्गिपरोलतिक्ताः ।
किरातविष्वेन्द्रकणिन्द्रवीजधान्यानि तिक्तं सुरदाक्तव्य ॥६८॥

<sup>\*</sup> दितौयमरिचग्रब्देन सितमरिचं ग्राह्मम्। ने चित्तु ग्रत्न सङ्गिति स्थातं सुमरौचनं गरह्यन्ति।

<sup>†</sup> निशाह्वयम् दत्यत निशादयम् दति तथा रत्तवभैकः दत्यत्र रस्त्रश्चेक दति च पाठान्तरं दृश्यते ।

## [ ५२२ ] राजनिष्युः।

শ্বष्टादशाङ्गाभिध एष योगः समागमे स्थाइशमूलकेन। दिधा च भार्ग्यादिक एक एष ज्ञेयो दितीयसु किरातकादिः ॥६८॥
ग्रथ श्रिखरियोधन्यानम्।—

दातिं भत्यसमितं दिध पत्तान्यष्टी च खण्डं पत्तस्थार्षे चेन्मरिचस्य तेन तुलितं युक्तं त्वगेलाह्नयम् ।

सध्वाच्यं च युतं \* तदर्षेमिलितं संभोधितैयौजिता
भाण्डे स्थादिमवासिते शिखरिणी श्रीकण्डभोग्या गुणैः ॥००॥
दस्यं नानामिश्रयोगामिधानादेनं वर्गे मिश्रकाच्यं विदित्ता ।
वैद्यः कुर्याद्योगमत्रत्यसंज्ञाप्रज्ञप्रद्यो बन्धुमिर्येन घीरः ॥ ०१ ॥
शीर्यासङ्गरता गमा स्वयमुमा श्रष्यच्छिवासङ्गिनी
सा वाणी चतुराननप्रणयिनी श्रीसिम्मता यं श्रिता ।
तस्यागादिमधानश्रखरमणी वर्गी त्रसिंहिशितुद्यिशेऽवसितिं क्षती क्षतिधयां यो मिश्रकाच्यो मतः ॥०२॥
दति श्रीनरहरिपण्डितविरिचते निघण्डराजापरपर्यायवत्यिभधानचूड़ामणी मिश्रकाच्यो वर्गी दाविंगः।

# अयैकार्यादवर्गः।

-0\*0-

तत्रेकार्घाः !-

श्रीय लच्मीफले जेया लगनो वीजव्रचकः। ग्रालूकं पद्मकन्दे स्थात् सदापुष्पो रिवद्वमे॥१॥

• युतम् इत्यव पटेति पाठान्तरं खच्यते।

## एकार्घादिवर्गः।

कुवेरको नन्दिवृद्धे गोकरहो गोचुरे तथा। दन्तफलस्तु विप्पल्यां कसेक्भेंद्रमुस्तके ॥ २ ॥ नागरोत्या कच्छक्हा ग्रङ्गोले दोर्घकोलके। वसकी ससकीविचे मातुतुङ्गे तु पूरकः॥ ३॥ ब्रह्मानी तु कुसारी स्यादङ्गोली गूट्मिनना। अतिविषा खेतवचीपकुष्वी स्थूलजीरके ॥ ४ ॥ कवच: स्यात्पर्यटकी लवगं तु पयोधिजम्। वृहत्त्वम् सप्तपर्णे स्थालास्थोजी वाकुची तथा ॥ ५ ॥ कीटपादी हंसपाद्यां कुनटी तु सन: शिला। वैकुर्द्धसर्जिक प्राइर्भूधालग्रान्तु तमालिनी ॥ ६॥ श्रतकुन्दः श्ररीरे \* स्यादिननाष्ठं तथाऽगुरी। द्यस्मपत्नी शतावर्थां चीरपर्खर्कसं चने ॥ ७॥ भीग्ही तु पिप्पली ज्ञेया कस्तूर्य्यां मदनी तथा। ब्रह्मपर्णी प्रिम्नपर्णी च सा स्मृता ॥ ८ ॥ क्रव्रपर्थ: सप्तपर्थं पीलुपर्थी तु तुरिष्डका। शाकश्रेष्ठसु दृन्ताके शङ्गरः १ शमिर्चते॥ ८॥ गोरट: ३ स्यादिट्खदिरे तुग्डिश्वार्खिविम्बना। विशागुप्तं तु चाणका-मूलेऽनन्ता यवासके ॥ १०॥ कपिकच्छरात्मगुप्ता वातपोयसु किंग्रुके। पीता तु रजनी चेया बोधिवचसु पिप्पलः॥ ११॥

- ग्ररीर इत्यव करीर इति पाठान्तरम्।
- † भाष्ट्र द्यात प्राष्ट्रर द्यान्यतरः पाठः।
- ‡ गोरट इत्यत भरट इत्यपरः पाठः।

उशोरे समगन्धिः स्थादिङ्ग्ले चूर्णपारदः। \* हिङ्गावगृद्गन्धः स्याद्गोदन्ते विस्तर्गन्धिने ॥ १२ ॥ श्रम्यामीशान इत्याद्वर्दिवान्धो घूक उच्चते। पयस्या चीरकाकोत्यां शतविध्यस्तवितसे ॥ १३ ॥ रोचनी नारिकेली च श्रूधात्रगं चाक्हा स्मृता। प्रियां प्रियङ्गुके प्राच्च: खराह्वा चाजमोदके ॥ १४ ॥ तगरं दण्डहस्ती स्याद्रसोनो वश्चने स्मृत:। तपित्वनी जटामांस्यां मेघपुष्येऽजयुङ्गिका ॥ १५ ॥ न्नेयं मातुलपुषां तु धुस्तूरे चोरके रिष्ठ:। श्रषां बालत्यणं प्रोत्तं शैलेयं चास्सपुष्मके ॥ १६ ॥ त्रोपुष्यं तु लवङ्गे स्याद्वालपुष्यो तु यूथिका। स्यूलपुष्यं तु भेग्डूके चित्रके दाक्णः स्मृतः॥ १७॥ श्रय स्याहिषपुषां तु पुषां भ्यामदलान्वितम्। बलभद्रः कदस्बोऽन्यः 🕆 शाखोटे भूतव्रचनः॥ १८॥ रामा तमालपत्रे स्थाझूर्जे चर्मदलो मतः। त्रात्मग्रत्या ग्रतावर्थां पिक्यां कलभवत्तमा 🕸 ॥ १८ ॥ विप्रप्रिया पलाभे च ज्वरारिख गुड़्चिका। काएकार्थ्यां तु खेतायां ज्ञेया तु कपटेखरी ॥ २०॥

<sup>\*</sup> चूरापारद इत्यत जोर्यपारद इत्यमीप पठ्यते।

<sup>†</sup> बलभद्रः कदम्बोऽन्य इत्यत्न बलभद्रे कदम्बेऽच्य इति पाठः साधु-तरं ज्ञेयम्।

<sup>‡</sup> पिक्यां वालभवद्वभा दत्यव पौली वालभवद्वभिति पाठान्तरमित।

पाण्ड्फलं पटोले स्थाच्छालिपण्डां स्थिरा मता। गायती खदिर प्रोत्ता स्यादिर्नावसु कर्कटो ॥ २१॥ नीवारेऽरख्यपालि: खात्यार्वेत्यां गजिपपतो ! स्प्रकायां देवपुची स्यादङ्गोले देवदाक् च॥ २२॥ रीठां प्रकीर्थ्यके प्राइदेन्त्यां केशक्हा स्मृता। ज्ञास्त्रस्तु सहकारे स्थात् इयस्ताले दुमेखरः॥ २३॥ दुष्पुत्रसीरके प्रोक्ती साड़े चैव वितानकः। साचिषा सग्डके प्रोत्ता सार्जारी स्टगनाभिजा ॥ २४॥ तिन्तिड़ीके तु वीजान्तः कद्खां तु सक्तत्फला। जितिबद्यारखितिले तार्च्धंग्रेलं रसाञ्जने ॥ २५॥ विभातने निलन्दः स्थाक्कालिईया तु पाटला। रङ्गसाता, तु लाचायामम्बिज्वाला तु धातकी ॥ २६॥ तिनिश्चे स्थाइक्षगर्भा सध्स्यां सधुकर्कटी। सितगुन्ता काकपोली चन्द्रायान्तु गुड्चिका॥ २७॥ नटयायोकवने स्यादाड़िम फलपाड़व:। निष्पावि तु पलङ्गः स्यात्मलघी प्रित्रपर्णिका ॥ २८॥ राजाने दीर्घमूलः स्याज्यरणः कृषाजीरवी। पिङ्गा चैव हरिद्रायां खेतशूके यवः स्नृतः ॥ २८॥ भ्यामाने तु त्रिवीज: स्यादाद्क्यां तुवरी स्नृता। गोधूमेध्य सदुः प्रोत्तः करला त्रिपुटा तथा॥ ३०॥ सूपश्रेष्ठो हरिसहे राजाने इस्तत्र्लः। सकुष्टो वनसुद्रे स्थायकुष्ठे च क्रमीलकः॥ ३१॥ क्षणाः काश्मीरवृत्ते स्थात् विषतिन्दुर्विषद्गमे ।

## राजनिष्युः।

पलागे पत्रकः प्रोक्तो न्ययोधो रोहिणः स्मृतः ॥ ३२ ॥ नारिकेले रसफलस्त्या ताले तु शस्वर:। विकङ्कतो मटुफले केसरे वकुल: स्मृत: ॥ ३३ ॥ ग्रेफाली सिन्ध्वारे च मत्याचे हिलमोचिका। वासुकी खेतिचित्ती स्थात् वित्तिका स्थादुपोदको ॥ ३४ ॥ त्रारामवित्तकायां तु मूलपोती तु विश्वता। मकरन्दः पुष्परसे जात्यां तु सुमना स्मृता॥ ३५॥ श्राम्त्रातके पीतनकः चौद्रे पुष्पासवः स्मृतः। मुदुः बन्या तु सम्प्रोता जीवा स्थाज्जीवने तथा ॥ ३६ ॥ किनायां तु गुडूची स्थानारायखां शतावरो । सर्जे तु बस्तकर्णों च शलाट्विं स्वके तथा ॥ ३०॥ सर्जान्तरे चाष्वकर्णी गोकर्णी समधी रसे। क्षणं नोलाञ्जने प्राहुराखुकणीं तु श्रम्बरी॥ ३८॥ दुर्गा तु खामयचो स्याद्रतो मुस्ताऽय दुर्यहः। त्रपामार्गोऽय रक्ता तु मिञ्जष्ठायां शटस्तया ॥ ३८॥ धुस्त्रे ब्रह्मजा ब्राह्मी गन्धर्वः कोकिले स्मृतः। सरटी तु दुरारोच्चा बाच्चल्यां तर्वटः स्मृतः ॥ ४०॥ सर्षपं तु दुराधर्षो च्रीवेरं बालके तथा। हैमवती चाल्परसा भिषद्माताऽटरूषकी ॥ ४१ ॥ ब्रह्मपुची तु भागीं स्थाडस्तिपर्णी तु कर्कटी। तुलसी बहुमञ्जर्थां कटभ्यां गर्दभी स्मृता ॥ ४२ ॥ कच्छुन्नो चतुषायाञ्च शाल्मली च यमद्भी। स्स्मेना चैव कोरह्यां गन्धाक्यां धूम्वपत्रिका ॥ ४३ ॥

शैलजा गजिपपत्यां चीरिणी तु कुटुस्बिनी। देवबलायां त्रायन्तो कटी च खदिरे स्मृता ॥ ४४ ॥ इन्दीवरा करस्थायां कन्दे चेन्दीवरं स्मृतम्। पुष्पान्तरे राजकन्या पार्थिवे तगरं तथा ॥ ४५ ॥ सागरे रत्नगर्भय रत्नगर्भा तु सेदिनी। सुवर्णे काञ्चनं ज्ञेयं हिसदुग्धा तु काञ्चनी ॥ ४६ ॥ प्रसारिज्यां राजवला कर्पूरे हिसवालुकः। हिमं कर्प्रके प्राहुगीशीर्षं चन्दनं स्मृतम् ॥ ४०॥ ब्रह्मदारः स्मृतः फच्चत्रां पख्यन्या पण्धा स्मृता । वसादनी गुडूचाच्च सोमवन्नग्रन्त्रवन्निका॥ ४८॥ नद्यास्त्रे च समष्टिलोऽय रजनी स्यात् कालमेश्यां बुधैः दुग्धाई स्तिलके पलाण्ड्रिति च स्याद्दीपने चोक्ततः। मोचा इस्तिविषाणके च कथिता भाग्यों तु पद्मा स्मृता निस्वे शीर्णदलस्तथाऽत कथितः स्थादान्यराजो यवे ॥ ४८॥ द्रायेकार्घाः।

# अध दार्थाः।

\_00-

सौराष्ट्रगं रुचिदे चैव सन्धानच्च प्रचचते।
पलाणिके गटी लाचा कितवसीरके गटे॥१॥
बलाका वर्ष्टिणस्वैव मेघानन्दः प्रकोर्त्तितः।
स्राकाग्रिऽस्रके गगनं जलूका मल्ल्णास्रपोः॥२॥

## राजनिष्युः।

नासा-नचत्रयोनींड़ी कीलायां ग्रुखिक कणा। ज्वरम्रिक्टिन्नवास्त्रेके सलना चारसजयोः॥ ३॥ मिञ्जष्ठायां गुडूचान्तु कुमारी नागपूर्विका। मुद्गरे सप्तपर्णे स्थात् सप्तक्क्ट्सुदाच्चतम् ॥ ४ ॥ क्तिमकं विड़े काचे पाकाच यवजे विड़े। सर्पान्तरे पटाले च कुलकः समुदाहृतः॥ ५॥ जन्तुकायान्तु वासुके विज्ञेया चक्रवर्त्तिनो । मधुरा जीवने प्रोक्ता मेदायाच तथा स्मृता ॥ ६ ॥ कर्कन्युश्रेति सन्योत्तीः बदरे पूरिमार्तिः। वासन्ती कोकिलायान्तु दन्त्यापुष्यं # प्रचचते ॥ ७॥ चन्द्राजे चोत्पलं कुष्ठे क्रकरश्रव्य-वातयो:। चपला मदा-मागध्योधरिखां खदिरे चमा ॥ ८ ॥ सिन्धपुषां कदस्बे च,वकुले चाथ लोमशा। काकोत्याञ्च वचायाञ्च स्त्रहेला चेन्द्रवारुणो ॥ ८ ॥ एन्द्रगं गोदावरी चैव गौतम्यां रोचना तथा। कुसुक्षेऽरखजे चैव कीसुक्षं कुसुमाञ्जने॥ १०॥ गरो गत्धनिगायाच्च चोरके चाय कर्करो। देवदाल्यां त्रपुर्याच शताह्वायां शतावरी ॥ ११ ॥ मिश्रिसु तुत्यनीलिन्यां स्वांनायां तथा साता। वितुत्रकन्तु भूधानगां ख्याता कुसुम्बरी तथा॥ १२॥ वर्हिर्दर्भे मयूरे च प्रच-मर्कटयो: प्रव: ।

<sup>\*</sup> दन्यापुष्पिमत्यत पुष्पनात्यामिति पाठान्तरं वर्त्तते।

श्राखुपणी सुतश्रेण्यां प्रत्यकश्रेण्यां तथा स्मृता ॥ १३ ॥ वस्ते तमालपते च श्रंशकः समुदाहृतः। दर्भे च कुश्चिक वर्ज कङ्ग्धान्धे प्रियङ्ग्के ॥ १४ ॥ कङ्गरङ्गारवस्री तु फञ्जी-हस्तिकरञ्जयोः। वक्रपुष्पमगस्ये च पलाभी च खपुच्छकम् ॥ १५ ॥ सावपर्यां ग्रनः पुच्छे चित्नो स्याच्छावानोध्रयोः। श्रयवा चेन्द्रवारुग्धां ग्रजाह्वेन्द्रयवं तथा ॥ १६॥ काकभाग्डो काकतुग्ड्यां ख्याता इस्तिकरञ्जने। दीर्घाङ्गध्यां पलाभे च याज्ञिकोऽय विदारिका ॥ १७ ॥ काश्मर्याञ्च शृगाच्याञ्च टेग्टो च सगधूर्त्तके। भन्नकोऽय क्दन्याञ्च गोत्तुरे चण्पनकः। कट्का-गजिपपच्योः ख्याता च शकुलादनी ॥ १८॥ मत्यानके समाख्यातो राजवृचस्तृणाधिपे। मदने कुटिले चैव तगरं चाथ रितका ॥ १८॥ गुज्जायां राजिकायाच पिश्रनचापि कुङ्मे। तगरेऽय यवाह्वायां यवचारं यवासिका ॥ २०॥ ग्रङ्गरीदनयोः कूरो दन्ती-मधुकपुष्पयोः। मधुपुष्पञ्च ग्रोफन्नी ग्रालिपणी-पुनर्नवे। बालपत्नो यवासे च खदिरे चाथ बालके ॥ २१ ॥ उदीचमुत्तरे देशे कपि: कोश-तुक्कयो:। लाङ्गली-दर्भयोः सीरी प्रयन्ने जलवेतसे । व्याधिघातो लवङ्गश्च श्रीगन्धे दिव्यचन्दने ॥ २२ ॥ खादुकर्एकमाच्ख्यगीचुरे च विकङ्कते।

रा-३४

### [430]

## राजनिवयुः।

वंशवीजे यवफलो वसके धान्यमार्कवे ॥ २३॥ देवप्रिय: अगस्य: स्यादचाम्बेतादिपिक्क्री। \* गोलोम्यां ग्रञ्जनं प्रोतं लग्जने वृत्तमूलने ॥ २४॥ कुङ्मि रामठे बाह्मिबलायामोदनी भवेत्। महासमङ्गा चैष्वयीं जटामांस्यां जटा स्मृता ॥ २५ ॥ कस्तूरी म्गनाभी च धुस्त्रे परिकीर्तिता। हंसपाद्यां सुसल्याञ्च खाता गोधापदो बुधैः ॥ २६ ॥ तपस्ती हिङ्ग्पत्रगञ्ज प्रकीर्ये रीप्य-सुक्तयो:। तारं स्थान्माषपर्कां तु लिङ्माञ्चाद्यः स्वयसुवम् ॥ २०॥ सहस्रविधी कस्तूर्थां रामठेऽयानकेसरे। पुत्रागे तुङ्गमाचच्युस्तिवद्वान्यविशेषयो: ॥ २८॥ मस्रोऽप्यय विश्वायां शुग्ही प्रतिविषा तथा। श्रीगन्धं गन्धपाषाणे गन्धसारेऽय पिक्किले ॥ २८ ॥ शालाली शिंशपे वासा-वहत्यी हिस्तिकाभिधे। मर्कटस्वजमोदायां वनीकसि च विश्वतः ॥ ३०॥ स्याबाङ्गली गुड्चां तु विश्वत्यामय तेजिनी। तिजीवत्यां तु सूर्व्वायां चाङ्गेरी-लीणशाकयो: ॥ ३१ ॥ लोणिका चापि पिख्याकं तिलकिइ-तुक्ष्मयोः। वहत्यां चैव वन्ताकी वार्ताकी च सदाफलम्॥ ३२॥ उद्खरे विल्वष्टचे लज्जा-खदिरवृचयो:। खदिरे चाय सामुद्रं लवणे चाब्धिफेनके ॥ ३३ ।

दिपिच्छरौत्यत दिपिच्छदौति पाठान्तरम्।

यत्यिको गोच्चरे विक्वे कटुका-मीनिपत्तयो:। सत्यपित्ताऽय रजनी हरिट्रा-नीलिकाख्ययो:॥ ३४॥ सिन्त्रेयके सुरस्याच वातपत्नोऽय सुस्तके। अब्दोऽभ्वते खेतपद्मे पुष्करं पुष्करे सतम्॥ ३५॥ तुग्डिकेयां च कार्पासे तुग्डिका च प्रशस्ति। धुस्तूरे च विड़े धूर्त्त: श्रीवेष्टे स्चिपत्रके ॥ ३६ ॥ वृच्चधूपो हिंसांशी स्थालपूरि च प्रकीर्तितः। अ जातीफलं तु ग्रैलूषि स्रीफले च सितावरी ॥ ३०॥ च्चिपत्रे तु वाकुचां शर्करा-गर्ड्टूवयोः। सत्यि जिल्ला तु द्राचायां चराच्दे तापसप्रिया ॥ ३८॥ फज्जो तु वोकड़ी चैव अजान्त्रान्तु प्रचचते। अर्कावर्त्तं रवी स्था: पेयं चीरे जले स्मृतम् ॥ ३८॥ कर्प्रे चुक्रके चन्द्रः चौद्रे ताप्ये च माचिकम्। मिच्चिष्ठा-तगरे भग्डी तूचटा गुच्च-मुस्तयो:॥ ४०॥ सुवर्चलं मातुलिङ्गे रुचने च सुवचला। त्रकावर्त्ते तु मण्डूकां क्रीवेर-पिचुमर्दयोः ॥ ४१ ॥ निक्बोऽय सप्तलायान्तु सप्तला नवमित्रका। लाङ्ग्यां गजिपप्यां खाता विज्ञिशिखा तथा ॥ ४२ ॥ च्योतिषात्यां काकजङ्घा पारावतपदी तथा। दुरालभा यवांसे च यासे च चुरको मत: ॥ ४३॥ गोच्चरे कोकिलाचे च चुरे गोकग्एके चुर:।

<sup>\* &</sup>quot;च प्रकीर्त्तेतः" इत्यत्र "त्विन्दुरीरित" इति पाठान्तरमिता।

# [५३२]

# राजनिवय्टुः।

पुष्तरञ्च पलाभे च चीरश्रेष्ठः प्रकोर्त्तितः॥ ४४॥ सोस्रो धान्याध्वकी सीसे प्रिया सद्येऽङ्गनान्तरे। सुनिद्धर्वरण्केऽगस्येऽघाम्यणालसुत्रीरके ॥ ४५ ॥ लामज्जने ब्रह्मवृत्ती रत्तागस्त्ये पलाश्की। वरे प्रचे च खड़ी स्थात् कान्तारी वनवंश्रयी: ॥ ४६ ॥ भूटणे धान्यके छतं मूजके शियुमूलके। मूलकञ्च यसानी तु दौपिका-वस्तमोदयो: ॥ ४७॥ एलबालुककर्वाचीर्ज्ञां चीरभूत्रहम्। तास्त्रं चीदुरबरे चाय सूर्जेन्द्रा अवणी तथा ॥ ४८ ॥ रीत्यां पुष्पाञ्जने रीतिः सचिवो मन्त्रि-धूर्र्ययोः। चाणका मूलके भिन्ने घालयोऽघाक सारिवे ॥ ४८ ॥ यास्कीतायान्त पर्जन्यो वृष्टि-दारुहरिद्रयोः। लक्षचं चुक्रवास्त्रके लिक्षचेऽय गुणा मता॥ ५०॥ दूर्वायां मांसरोहिखां खातला मांसरोहिणी। उमे चर्मकषायन्तु नीवारे पिग्डकर्बुरे \* ॥ ५१ ॥ सुनिप्रियो वरायान्तु गुड्ची तु विड्ङ्गके। रसन्तु पारदे बोले रसः पारद-चर्मणोः ॥ ५२ । भस्रुकः ग्रनके ऋचे पद्मिन्यां निलनीत्त्वभी। विंग्रने प्रवरी ख्याती चारूने परिकीर्त्तिता:॥ ५३॥ चित्रके मेथिकावीजे ज्योतिष्कश्चाय वार्षिके। तायमाचाऽन्यपुष्टाञ्च मेथिका-चित्रम्लयो:॥ ५४॥

<sup>🏥</sup> पिखडमर्बुर इत्यंत्र पिखड्खर्जुर इति पाठमेदः।

वसरी चाय कलभो धुस्तूरे च गजार्भके। तुटि-नोलिकयोरेला शिखण्डी च सय्रके ॥ ५५ ॥ सुवर्णय्यिकायाञ्च कारवे रूचके तथा। तस्रोतं स्राचालवर्षं दाड़िसे च कपिस्रके ॥ ५६॥ 💛 स्मृतं जुचफलं शाक-श्रेष्ठः जुषाण्ड्के तथाः। कालिङ्गे च स्कृतश्राय खगो वायौ च पिचिषि ॥ ५० ॥ धनुर्वेची धन्वनागि स स्याद्वसात दत्यपि। घेटुको खङ्गिष्काञ्च पृथ्मिष्काय चेतना॥ ५८॥ पथ्यारुष्कसु निच्ले अशोके वज्जुल: स्रृत: । कपिकच्छां त्वपासार्गं सर्कटी चान्यपचिगो। ५८॥ भारदाजो भवेदन्य-कार्णसे चाय गुमाली। दहनागुरौ पुरस्व प्रोक्ताऽय जतुपत्रिका ॥ ६० ॥ चुद्राध्मभेदे चाङ्गेर्यामतसी पालिपर्णिका। एकसूला तु कुसी स्थात्पाटली-द्रोणपुष्पयी: ॥ ६१ ॥ वाराष्ट्री च प्रित्रान्ता विष्णुक्रान्ताऽभिधा सता। सारङ्गश्वातको रङ्गा ग्रङ्घो वारिभवे नखे॥ ६२॥ मांसलं तु फले प्रोक्तं वृन्ताको तु कलिङ्गको। निष्पतिकायां वंशाग्रे करीरं सम्प्रकीत्तितम् ॥ ६३ ॥ माषपर्यान्तु गुञ्जायां कान्धोजी चाय पूतना। गन्धमांस्यां हरीतक्यां चिताङ्गं स्तेच्छ्तालयोः ॥ ६४ ॥ 🦪 ग्रङ्गोलके तु सदनं खातं गन्धोत्कटे बुधै:। तिनिधी शिंधपायान्तु भस्मगर्भः, प्रकीर्त्तितः ॥ ६५ ॥ वाते मर्हरे चैव खातो वैद्यै: समोरण:।

## राजनिष्यः।

चीरं दुग्धे तवचीरे \* चवयः चुतकासयोः ॥ ६६॥ सितमन्दारके पुष्प-विशेषे कुरवः स्मृतः। मुषवी कटुचुत्राच विश्वता स्थ्लजीरके ॥ ६०॥ कर्दकी खदिरे प्रोता हन्ताके चांघ नीलिका। सिन्दुवारे तु नीलिन्यां पिको चैवाय कोकिला ॥ ६८ ॥ कोकिलाचे च गान्धार्थां पत्नी स्थात्मा यवासके। चक्राङ्गी चैव रोहिखां मिल्लिष्ठायां प्रकोर्त्तिता ॥ ६८ ॥ मस्रा विष्ठतायाच प्रोत्ता धान्यविशेषके। गिरिजं गैरिकं प्रोक्तं शिलाजतु प्रशस्यते॥ ७०॥ चन्द्रिका चम्द्रकान्ती च निर्गृख्याञ्च प्रकोर्त्तिता। फच्नी योजनबल्यां तु भाग्यां चैवाय नीलिका ॥ ७१॥ मृगाची त्रीफलीकायां मृगाची धात्रिकाफलम्। ख्याताऽच्रतफले चाय ग्यामेचुः कोकिलाचकः॥ ७२॥ द्रचुरके वक्रशस्यां कटुविस्बी प्रचचते। दन्यन्तरे विभाग्ड्यां च प्रख्याता कर्त्तरी बुधै:॥ ७३॥ श्रभया च समाख्याता हरीतकासणालयोः। जन्तुकायां जनन्यान्तु भ्रामरी च भिषम्बरै: ॥ ७४ ॥ गीरसे रोचने गव्यं कार्पास्यां चव्यचव्यके। गोरोचना-रोचनायां ख्याता स्याइंग्ररोचना ॥ ७५ ॥ च्योतिश्वां पचिभेदे पिङ्गला च प्रकोर्त्तिता। श्रमृते ग्रालिपर्खान्तु सुधा च परिकोर्त्तिता। रसराज: समाख्यात: पारदे च रसाज्जने ॥ ७६ ॥

तवचीर द्रायत नवचीर्देद्रायपि पठ्यते ।

विद्योकरच्चे सितपाटलायां कुवेरनेत्नाऽथ जटादिमांस्याम् । मांसी कदन्त्यां लवणे महीजे कान्तायसाश्मे तु हि रोमकाख्यम् ॥ ७७॥

# अय तार्याः ।

Jet 125 jed og goden gren flytte flytte flytte

सितजे शतपते च वासन्यां साधवी भवेत्।
ज्योतिषात्यां किणिद्याञ्च सुपुष्पगां कटभी स्मृता ॥ १ ॥
पुनर्नवेन्द्रगोपौ तु वर्षाभूईर्द्शः स्मृताः।
सुकुमारसु श्यामाने चम्पने चनने तया ॥ २ ॥
स्मृक्षा तु सुकुमारायां नेपानी मानती स्मताः।
सहावना गवाची च गिरिकाणी गवादनी ॥ ३ ॥
श्रारिष्टस्तक्रमेदे च निम्ने च नग्दीविचेऽय नाङ्गनी।
जातिषात्यां पनाभे च नन्दीविचेऽय नाङ्गनी।
हिन्यां गजिपपत्यां नारिकेने प्रभ्यते ॥ ५ ॥
कदम्ने मिन्नवाख्ये च शिरोषे वक्तपुष्पनः।
गिरिकाणीन्द्रवाष्ट्यां पिण्डिन्याञ्च गवादनी ॥ ६ ॥

शिरीषे सधुके दन्यां सधुपुष्यन्तु वञ्जलः ! अशोके चैव भेरिखां निच्ले चाथ नाक्षली ॥ ७॥ सर्पाच्यां सितचुद्रायां यवतिक्रोऽय दर्दरः। भन्नातके ऋषभकेऽनड्डि च प्रशस्यते॥ ८॥ मयूरके मिथकायां चित्रके च भवेक्छिखी। कद्त्यामजमोदायां गर्ज हस्तीति संज्ञका ॥ ८॥ त्रमोघा पद्ममेदे स्थात् पाटल्याञ्च विलङ्गके ॥ कुल्माष: कान्त्रिके वंशे गन्धमाच्यां सुविश्वत: ॥ १०॥ सोमायां महिषीवज्ञी-बाह्मी-इमनताः स्मृताः। वंग्रे स्थानारिकेले च ताले च त्याराजकः ॥ ११ ॥ मुस्तायामभ्वको सेघे नश्चाय पित्रप्रियः। ग्रगस्ये सङ्गराजे च कालगाके च विश्वतः॥ १२॥ दन्तग्रठस्त चाङ्गेर्थां जम्बोरेऽय कपित्यके। दहनीऽकष्करे प्रोक्तो वश्वकात्याञ्च चित्रके ॥ १३ ॥ विडक्ने च जयन्याच मोटायां च बला स्मता। म्रास्त्रातको मिरोषे च प्रति चैव कपौतनः ॥ १४॥ कुड्ड्यां कारवन्नी काग्डीर चीरपद्मके। यवासे चुट्रखदिरे कार्पासे च मरुइवा ॥ १५॥ ससुद्रान्ता च स्प्रकायां कार्पासे च यवासके। मण्डकपणी मण्डकां मिल्लष्टाऽऽदित्यकान्तयोः॥१६॥ ऋषभके तु वासायां बलीवरें वृष: स्नत:। चाम्पेयं चम्पके प्रोत्तं किञ्जल्के नागकेसरे ॥ १०॥ उग्रीरे च लव्ङ्गे च श्रोखण्डे वारिसभ्रवः।

पिता ग्रेनि ग्रामि शुभ्वकेशे च विश्वतम् ॥ १८॥ कुन्दुक्को धूपभेदे शक्कवाच त्यान्तरे। पृथ्वीकायां हिङ्गुपची खूर्वेना किन्ता स्मृता ॥ १८ ॥ श्रतपत्नो राजकीर कमले पुष्पमेदके। न्यग्रोधस्त्वाखुपर्याच्च विषपर्यां वटे स्मृतः ॥ २०॥ चुद्राग्निसस्ये तर्कारो जीसूते चाग्निसस्यके। खेते रीप्ये च मीनाण्डां सिता च परिकीर्त्तिता ॥ २१ ॥ सोमवल्कसु रीठायां कदरिक्षणगर्भके। ग्रैलेयको ग्रिलाह्वा च कुनव्याच् ग्रिलाजती ॥ २२ ॥ पाटलायां माषपर्थां काष्स्रय्यां क्रणवन्तिका। जटामांस्याच मांसे च लाचायाच्च पलं देकृतम् ॥ २३ ॥ समङ्गायां रत्तपादी मिन्तिष्ठा च बला स्मृता। भन्नातके विल्वतरी पार्थे वीरतरः स्मृतः॥ २४॥ दु:स्पर्शायां काण्टकारी कपिकच्छर्दरालभा। वसादन्यां गुडूची च तार्ची च गजिपपाली ॥ २५॥ ग्रामण्डे पुष्करे कन्त्रे पद्मपतं प्रचचते। कालियकं तु दार्वाच कुङ्गमे इरिचन्दने ॥ २६॥ स्रीखण्डे चाजगन्धे स्थाच्छीवेष्टे तिलपणिका। लोध्ने:पूगीफले चैव तूले च क्रसुकः स्मृतः ॥ २७॥ पिप्पल्यां यूथिकायाच जीरके माधवी भवेत्। अजमोदा ग्रताह्वायां मिणिसैव ग्रतावरी ॥ २८॥ त्रपुर्यां कर्कटो तौसी तथा स्यादनकर्कटो। कुस्तुस्वर्याच भूधात्रां धान्यं त्रीच्चादिकं स्मृतम्।। २८॥

### राजनिष्ठच्टः।

त्रपुसी देवदाली च घोटिके शफले स्मृता। तण्ड्यां यवतिसा च ग्रभाण्डुखब्दनादयोः ॥ ३०॥ सुरदाक्रगैन्धबध्वीयखायां गन्धमादिनी। म्यामेत्तुके त्तुरकेऽपि काकाचे कोकिलाचकः॥ ३१॥ वराङ्गं मस्तके गुच्चे लचायाच्च प्रशस्यते। कर्ष्यां खेतकि णिह्याच्च कटभ्यां गिरिक णिका ॥ ३२ ॥ पतङ्गीऽर्के मध्रके च पहरञ्जनके तथा। द्राचा च शतवीर्यायां दूर्वा चैव शतावरी ॥ ३३ ॥ ग्रुग्ठौ प्रतिविषा चैव विश्वायाञ्च शतावरी। जया इरिद्रा विजया जयन्याञ्च प्रशस्यते ॥ ३४ ॥ कच्छ्रायां दुरालका खयंगुप्ता यवासकः। पुगड़े ची चाय गोधूमें रसाले च प्रचचते ॥ ३५॥ द्राचायान्तु रसाला स्थाइच्यते च भिषम्बरै:। हैमवत्यां वचा खेत-चीरिणी लोमणा स्मृता ॥ ३६ ॥ विल्वे धात्रीफले चैव श्रोफलं चार्ट्रचिक्कणे। जात्यां पचिविशेषे च कमलं सारसं स्मृतम्। तिलको च छिन्नकहा सुषवी केतकी भवेत्॥ ३७॥ वंश: सर्जद्वमे वेणी जुलामाये च कीर्त्तित:। सिलले वसनाभे च व्याले चैव विषं स्मृतम् ॥ ३८ ॥ ख्रुलकन्दो मुखातु: स्थात् शूरणं इस्तिकन्दकम्। **ज्याम्नातके पीतनकेऽप्यन्तिका च पलाशिका ॥ ३८ ॥** विषदोद्यां महानिखं मदने विषम्ष्टिकः। तगरे कुङ्गुमे प्रोत्तो धुस्तुरे च यठः स्मृतः॥ ४०॥

[472]

कपित्यः खर्षय्याच कुषाग्डे नागपुष्पके। तिलको चातिसुको च इच्छमेरे च पुग्छ्कः॥ ४१॥ श्राखोटे वारुणी चैव गवाच्यां चर्मवादिनी। तीयवल्लगाञ्च काण्डोरो सहादुग्धाऽसतस्रवा ॥ ४२ ॥ पृष्वां पुनर्नवा मेदा धारिणी च प्रशस्यते। सुचुकुन्दे जयापुष्पे गणेथ्यां इरिवन्नभा ॥ ४३ ॥ कासुको लघुकासमध्यां कौड्य्यीऽन्यकरज्जको। द्राचाऽन्तरे प्रिखरिणो नेवाल्यां दिधमेदको ॥ ४४ ॥ कुटजेन्द्रयवी प्रोत्ती पुष्पकासोसवत्सके। चौद्रे मद्यान्तरे प्रोक्तो मधुयध्यां मधुः स्मृतः ॥ ४५ ॥ चटके खरसे चैव नीलकारों मयूरके। शोणितं कुङ्कुमे रत्ते रत्तगम्य दति स्मतम्॥ ४६॥ तर्कारी देवदाल्याच अरखां विक्रमण्डले। वसर्थां व्यक्षिके चैव काकवन्था सक्तत्रजा॥ ४७॥ कटुङ्गाञ्च कटभ्याञ्च पटोच्यां दिधपुष्पिका। धुस्तूरे केसरे हेन्त्रि सुवर्षं सम्प्रचत्तते॥ ४८॥ सुवर्णायां इरिद्रायां वार्णी कणगुग्तुः। वाराच्चां शिशुमार्याञ्च कन्दभेदे च शूकरी ॥ ४८ ॥ पलाण्डुन्तरे लसुने सूले चाणकासंज्ञको। महाकन्दः समाख्यातो वैद्य-शास्त्रार्थ-कोविदैः॥ ५०॥ लोहे च वनरसायां लघुपाषाणभेदके। तिष्वेतेषु च गिरिजा प्रोक्ता यत्र भिषम्वरै: ॥ ५१ ॥ जरणः कासमर्दे तु रामठे क्रष्णजोरके।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

स ग्रमं जायते तीन्त्यां तगरे च प्रशस्त्रते ॥ ५२ ॥
दुरालभायां कपिकच्छुके स्थात्
तथा ग्रिखर्थां दुरिसग्रहा च ।
सहासमङ्गा बहुप्रतिका च
सा सारिवा स्थात् फणिजिह्विकायाम् ॥ ५३ ॥
दित त्रार्थाः ।

## श्रय चतुरर्थाः।

--00-

अस्तिकायान्तु चाङ्गेर्थां मोचिका चास्वचिञ्चके।
वयःस्थायाञ्च काकोत्यौ दार्वी च.सोमवल्लरी ॥१॥
जन्तुकायां प्रवदाव्यां षट्पद्यां भ्रमरी त्वचौ।
भ्रमरो चारको वैद्य-शास्त्रमायुभते स्मृतः॥२॥
अभया चिभिटा बस्या कर्कोटो च स्थादनी।
पथ्यायां संप्रवच्यन्ते चतस्त्रञ्च भिष्ठग्वरैः॥३॥
कुष्ठे कुन्दुक्ते निस्बे राजके राजभद्रकः।
कटके काचके लोहे तिलके ग्रम्भिद्कः॥४॥
मीनात्थायां महाराष्ट्रगं काकमाचां ततः परम्।
ब्रह्ममण्ड् किकायान्तु मत्याची च प्रचचते॥५॥
नक्तञ्चरः कौश्रिके स्थाद्दलुजे दुण्डुभे पुरे।
शिष्राऽजगन्थाकारयौ मिथका चाजमीदिका॥ ६॥

पञ्चास्ये सर्वटे चाम्बे सर्ष्ट्रके च हरि: सृत:। श्यामालङ्का तिपूटायां स्यूलैला वृत्तमन्निका ॥ ७ ॥ लोइच लोइजे कांस्ये क्षणलोहे तथाऽगुरी। खर्जूर्थां नारिकेले च ताले वंग्रे दुराक्हा । ८॥ श्रुग्ढोमिरिचपिप्पत्यां कणासू ले षडूषणम्। अग्निस्वरकारे जारे निस्वृते चित्रके तथा। ८॥ भूताङ्ग प्रस्वपामार्गे सुकुमार्य राजिका। लचे चाचबले चैव प्रोक्तस्तत्र भिष्यवरै:॥ १०॥ यसी हरिद्रा वृद्धिय लच्छी खात्पद्मवारिणी। जम्बूकी सोसमस्थाची क्रोड़ी ब्राह्मो च कोर्त्तिता ॥ ११ ॥ मार्कवे स्वासरे सङ्कर्वचे पचिविधेषके। रोचनं स्याद्दाङ्गिको जन्मे निक्वे च पूरके ॥ १२ ॥ सिताको दसने व्याघे क्रमेरे पुराहरीककः। जलजं मीतिके ग्रङ्के लोणचार लवङ्गके ॥ १३ ॥ बस्यानकारिकी चैन वहत्यन्यः च नच्मणा। सुतदा पुत्रदायान्तु चतस्तः पश्कितिताः॥ १४॥ उग्रीरं ग्रञ्जनचैव मधुपुष्पञ्च बञ्जलः। दीर्घपत्रे च केतक्यां कन्यायां दीर्घपतिका॥ १५॥ वासन्ते रुचके प्रचः कलिङ्गे देवसर्षपः। लामज्जने दीर्घमूलं यासे विज्ञन्तरे ग्रहे ॥ १६ ॥ तयां स्थाक्कालिपर्खाच दीर्घमूला स्मृता वुधै:। रामायां त्रायमाणायां कन्याऽयोकस्य सातला ॥ १७॥ श्रमृतं वेदनचारे सुधायाञ्च तथा विषे।

### राजनिवयुः।

वराहः शिशुमारे च वाराच्चां शुकरे घने ॥ १८॥ वाराई वञ्जले कासे नादेयी जलवेतसे। शारदो वक्तले राष्ट्रां सारिवाक्तरणसुद्रयोः॥ १८॥ क्रजने वार्षिकायाच फलिन्यां योषिति प्रिया। काश्मीरं कुङ्गमें देशे पौष्करे स्गनाभिजे ॥ २०॥ केसरो वकुले हिन्ति किञ्जले च कसीसके। जम्बीर: स्थानात्वके गुच्छे चार्जनयुग्मके ॥ २१॥ वसुको वसुराजार्क-कृष्णागुक् पुनर्नवाः। जपानृकन्दान्यचुद्रा-सुचुकुन्देषु लच्मणा #॥ २२॥ हर्षण सारसे कामी चक्रे पारावते तथा। मूवको कुक्टे क्रौडां वृश्विको च बहुप्रजः ॥ २३॥ अजगृङ्गो च मिञ्जिष्ठा-युता कर्केटगृङ्गिका। प्रतिविषासमायुक्ता यङ्ग्राञ्चैव प्रशस्यते ॥ २४ ॥ सुरसे तुलसी ब्राह्मी निर्मुखी कणगुमालुः। चीनायां कारबच्याञ्च वचायां लवणे पटुः ॥ २५ ॥ पाटल्यां ग्यामिकिणिही तास्त्रविही तथाऽपरम्। जीवन्तिका ताम्त्रपुष्पो कथिताः शास्त्रकोविदैः ॥ २६ ॥ हिङ्ग्ली कुङ्गुमे रत्तमस्ते चोताञ्च पद्मके। दुग्धी गोडुर्भूपलाश्र काकोल्यां दुग्धफीनके ॥ २०॥ मुसली खर्णुंली चैव कर्एकारोन्द्रवारुणी। त्राख्याता हेमपुष्पराच नानार्यज्ञविशारदै: ॥ २८॥

<sup>\*</sup> अधिकोऽयं श्लोकः पुस्तकान्तरे दृश्यते।

[ ५8₹]

निश्रायाचिव नीलिन्यां चित्र्हायामलक्तके। रजनीति समाख्याता आयुर्वेदेषु धीमता॥ २८॥ इति चतुरर्थाः।

### श्रथ पञ्चार्थाः ।

-·:()\*():0-

अजमोदाऽजगन्धा च शिखण्डी कोकिलाचकः। श्रपामार्गेलु पञ्चेते मट्र इति शब्दिता:॥१॥ कदली शाल्यलो सोचा नीली शोभाज्यनं तथा। पञ्चखेतेषु मोचाख्यां प्रयुद्धन्ति भिषम्बराः ॥ २ ॥ सुरभि: शक्तकी वीकं कदक्बश्रम्पक: सुरा। ययो दभी हरिद्रा च पवित्रे हिज्जलस्तिल: ॥ ३॥ यमानी जीरकश्चैव मोदाऽका रक्तचित्रकः। निम्ब् सेति च पञ्चैवं दीप्यकाः समुदाहृताः॥ ४॥ कपिकच्छः कोविदारः पत्रगः कतमालकः। तथा किनरहा चेति कुग्डलीपञ्चकं स्मृतम्॥ ५॥ श्वाट्रिग्निमत्यश्च चुद्राग्निमथनं तथा । काश्मीरी शिंश्रपा चैव श्रीपर्णी पञ्चधा स्मृता ॥ ६ ॥ महासमङ्गा वन्दाका जतुका चामृतस्रवा। महामेदा च पञ्चेता जेया वचकहार्बुधै: ॥ ७॥ गोविशेषे सगादन्यां शिंशपारेण्काह्योः। रीत्यन्तरे च विबुधैः कपिला पञ्चसु स्मृता ॥ ८ ॥

## राजनिषयः।

कायस्यायाच्य काकोल्यी पर्येला बहुमच्हरी। व्यालसु चित्रक-व्याघ्र-सिंह-दुष्टिदिपादिषु ॥ ८ ॥ व्रन्ताके चान्यवारुखां चुद्रायां चिभिटाह्वये ! लिङ्गिन्याञ्चेति पञ्चसु ज्ञेया चित्रफला बुधै:॥ १०॥ वर्बरी हिङ्गले वाले भारङ्गां हरिचन्दने। असिते चार्जने चैव कथितः शास्त्रकोविदैः ॥ ११ ॥ यमान्यामजमोदायां वचायां दोप्यके तथा। अरक्तलश्रने चैव श्रुयगन्धा तु पञ्चसुं॥ १२॥ महाबलायां सम्प्रोक्ता सहदेवी तु नोलिनी। वसादनी देवसहा पिप्पली पञ्चसु स्मृता ॥ १३॥ च्योतिषात्यां काकतुग्ह्यां काकमाच्यां तथैव च। वायसी काकजङ्घायां काक्याचीव तुर्पञ्चधा ॥ १४ ॥ लिङ्गिनी स्वर्षजीवन्ती रौद्रो स्यानाजुली तथा। बस्याकर्कीटकी चैव ईखर्या सम्प्रचत्तते ॥ १५॥ वसन्तद्र्यां गणिकारिकाऽऽस्रवासन्तिकापाटलकोकिलाञ्च। वत्सादनी वाकुचिका गुड़्ची सीमा समग्डू किकसीमवन्नग्राम्॥१६॥ चक्री नखान्तरे कोके दहुन्ने तिनिशे खरें। सिन्धुजे तिलके धालगां पारदे टङ्कणे शिवम् ॥ १७॥ जाती सुरीरी कटुतुब्बिनी च कुकुन्दरी रेखुरसाऽजपुत्री। स्त्रचेंऽप्यथो गुगुलुर्वेसराखु-श्रठेषुःधीराः कनकं वदन्तिः॥ १८॥ दति पञ्चार्धाः।

[ ५४५']

## अय षड्यीः।

-----

व्रच्चला वरी ताली कट्काऽतिविषा तथा। काकोली चैव षड्वर्ग वीरायाञ्च प्रचचते॥१॥ सातला चोरवाकोली विभाग्डी चाजम् द्विका। कुञ्जरो दर्रसैव षड्विषाणीति कीर्त्तिता॥ २॥ े नीलदूर्वा निशाऽऽह्वयं रोचना च हरीतकी। बहुपुष्पी भिष्रवर्यों: शिवायां षड्मी सृताः ॥ ३॥ निम्ब-खर्जूरि-तालीसं मरिचं वृत्तसूलकम्। पलाण्ड्येति षड्मी निम्बसंज्ञाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ४ ॥ मूर्वा स्टका सहदेवा देवद्रोणी च केसरम्। म्रादित्यभक्ताः षड़िति देवीसंज्ञाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ५ ॥ ब्राह्मणः चित्रयो वैश्यो दन्तः सर्पः खगस्तया । दिज-दिजन्मशब्दाभ्यामीरिताः स्रिभिः सदा ॥ ६ ॥ गवादनी चैव दूर्वी गग्डदूर्वी च इस्तिनी। प्रतीची मदिरा चेति वारुखां षट् सुसस्पताः॥ ७॥ हपुषा पीतनिर्गण्डी विश्वाक्रान्ता जयन्तिका। शिताद्रिकर्णी-प्राङ्घन्यी षडेता श्रपराजिता: ॥ ८ ॥ कुमारी च वराही च बन्धाककीटकी सदुः। स्यू लेला स्थलपणीं च षट्क न्याय कुमारिका: ॥ ८॥

रा—३५

### राजनिघयः।

वीजद्रमें गर्ज चैव सीसके नागकेसरे।

विषे च पत्री चैव षट्सूको नाग इत्यिषि॥ १०॥

स्द्मैला च महाराष्ट्री मत्याची काकमाचिका।

गण्डदूर्वा च गण्डूको मत्यादन्यां षड़ीरिताः॥ ११॥

माणे कलिङ्गे कोशाम्त्रे श्रत्ये काके च धूर्तके।

मदनश्व समाख्यातः षड़मी समुदाहृताः॥ १२॥

दोड़ी गुडूची मेदा च काकोली हरिणी तथा।

जीवन्ती चैव षट् प्रोक्ता जीवन्त्याञ्च भिषम्वरैः॥ १३॥

धूम्बाट-सृद्धोः खलु मांसले च प्रचे श्रिरीषे कुटजे कुलिङ्गः।

दाचा च दूर्वा जरणा कणा च क्रणाभिधा वाकुचिका कटुश्व॥१४॥

इति षड्याः।

## श्रथ सप्तार्थाः।

-:\*:-

भद्रायान्तु बला नीली दन्ती काश्मरी सारिवा।
खेताद्रिकणी गौरी च सप्त प्रोक्ता भिष्ठम्बरै: ॥१॥
मिष्ठिष्ठा कटुका पथ्या काश्मरी चन्द्रवन्नभा।
वन्दाको रजनी चैव रोहिखां सप्त च स्मृता: ॥२॥
धाती बहुफलायां स्थाच्छर्दिनी काकसाचिका।
कास्भोजी च श्रशाख्रूली कटुहुन्नी च बालुकी॥३॥

[684]

सण्ड्की ब्रह्मजा ग्रह्ण-पृष्पी ज्योतिषाती सुनि:।
विष्णुकान्ता वचा खेता मध्यायां सप्त सस्प्रता:॥ ४॥
श्राखुकणीं सुतश्रेणी इन्द्राह्मा च कलिङ्गकः।
गण्डदूर्वा गवाची च चित्रायास्रचमेकतः॥ ५॥
रास्ता पाठा प्रियङ्गुश्च सितचुद्रा हरीतकी।
श्रेयस्थान्नेति सम्प्रीक्ता श्रस्बष्टा गजपिपाली॥ ६॥

द्वित सप्तार्थाः।

### अय अष्टार्थाः।

-- o k o ---

विजया काञ्चनहन्हं मिज्जिष्ठा च वचा तथा।
स्थात्तथा खेतिनगुँग्छी जयन्ती काञ्जिकाऽभया॥११॥
एरण्डनद्याम्बलताकरज्जाः स्थाद्वह्यदण्डी पनसः कुसुन्धः।
स्थाद्वीचुरः कण्टफले च धूर्त्ती भिष्यिभरष्टाविति सम्प्रदिष्टाः॥२॥
स्वर्णे किपच्छे दिधनारिकेलयोः स्थाज्जीवके चेत् स्थलपद्मके तथा।
मयूरकेती समधूकके तथा माङ्गल्यसष्टाविति सम्प्रचचते॥ ३॥

द्रखणार्थाः।

[485]

राजनिष्धयुः।

### भ्रध नवार्थाः।

-0\*0-

वातारिर्जतुकायाच्च भन्नगां नीलदवज्जयोः ।

टेन्दुकामण्डयोभीग्यां निर्मुण्डगां श्रूरणे स्मृतः ॥ १ ॥

धात्री गुडूची राम्ना च दिधा दूर्वा हरीतकी ।

लिङ्गिनी तुवरी मद्यं धीमतायां नवीषधी ॥ २ ॥

बाह्मी वराही लग्ननी विषच्च श्रुक्कादिकन्दः सितकण्टकारी ।

भूभ्याहुली चेदपराजिता च श्रुग्छीति चैतासु महीषधी स्थात् ॥३॥

इति नवार्धाः ।

### अथ द्यार्थाः।

--00-

सितायां वाकुची दूर्वा मद्यं धावो कुटुब्बिनी। चन्द्रिका च प्रिया पिङ्गा वायमाणा च तेजिनी॥१॥ इति दशार्थाः।

## अयैकादशार्धाः।

--00×00-

स्यादभ्त्रमांसी तुलसी हरिद्रा तालन्तया रोचनहेममाचा:। जनप्रिया योजनविक्षका स्थात् समिक्कता चन्द्रशशी च गौर्थाम्॥१॥ दूर्वा निशा ऋषिवचा प्रिया च सा माषपणी शिमिरोचना त्वय । त्रायन्तिका जीवनिका महाबला मङ्ख्यकायामिति चन्द्रमाह्नयाः ॥ २ ॥ प्रियङ्गुक्तिका त्रिवता कणाह्नया वन्दाकदूर्वाः तुलसी च नीलिनी । दुर्गा खगः कसुरिक्षणसारिवा श्यामा महीन्दुः कथिता भिष्णवरैः ॥ ३ ॥ इत्येकाद्रशार्थाः ।

द्रस्थं विचिन्त्य विनिविधिततत्त्तदेकानेकार्थनाम-गण-संग्रह पूर्णमेनम् ।
वर्गं विचार्थ्य भिषजा बहुभिक्तभाजा
ग्नेया खर्यं प्रकरणानुगुणाः प्रयोगाः ॥ ४ ॥
एको यश्च मनिखनामचतुरो यश्च द्रयोरिखनोस्यचाचाचतुरो नृपञ्चवदनो नान्नाऽरिषणां जयो ।
एकार्थादिरमुष्य नाम-रचना-चूड़ामणी यस्त्रयोविंश्रोऽसी समपूरि सार्ष्वममुना ग्रन्थेन वर्गो महान् ॥ ५ ॥
दित श्रीनरहरिपिखतिवरिचित निच्छुराजापरपर्यायवत्यभिधानचूड़ामणाविकार्याविभिधानस्त्रयोविंग्रो वर्गः।

SRI JAGADGURU VIENWARADH! सम्मूर्वीद्यं ग्रन्थः Unana SIMHASA ....ANAMA.... LIBEARY.

Jangamwa Jata VARA

1 Applicant

**ENDITION TO THE THE THE** 

1 32 4

THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE OWNER.

BY DRIVE OF FOR HOUSEN SHOWS THOUSEN

of an independent of a second second of

The transfer of the section of the s

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS



Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi प्रकाशक—

पण्डित-श्रीषाग्रबीधविद्याभूषण तथा पण्डित-श्रीनित्सबीधविद्यारतः।

प्राप्तिस्थान—

२न॰, रमानाथ मजुम्दार प्रोट, बाव्हार्ड-प्रोट्-पोष्ट-ब्राफन। कालकाता।

प्रिग्टर—वि, वि, मुखर्जी। २ न॰, रमानाय मजुनदार ट्रीट, कानिकाता।